R E V

# आपकी वित्तीय क्रांती

## उदारता की सामर्थ

O L U

## गैरी कीसी

T I O N

मसीह में प्रिय मित्र,

हमारी प्रार्थना है कि आप इस शिक्षण संसाधन को अपने लिए आशीर्वाद और प्रोत्साहन के रूप में पाएँ! कृपया इस सामग्री को अपने दोस्तों, परिवार और अपने चर्च के सदस्यों के साथ साझा करने में संकोच न करें। इसके अलावा, आप **FLNFree.com** पर जाकर अतिरिक्त प्रतियाँ डाउनलोड कर सकते हैं और अपनी भाषा में और अधिक निःशुल्क शिक्षाएँ प्राप्त कर सकते हैं।

परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और उसके पास आपके जीवन के लिए एक अद्भुत योजना है! परमेश्वर के राज्य के संचालन के तरीके को जानने से हमारा जीवन बेहतर हो गया है, और हमें विश्वास है कि यह आपके लिए भी ऐसा ही करेगा!

मसीह में प्रेम के साथ,

गैरी और ड्रेंडा कीसी

P.S. अपनी भाषा में और अधिक निःशुल्क शिक्षाएं डाउनलोड करने के लिए हमारी निःशुल्क डाउनलोड वेबसाइट **FLNFree.com** पर जाना न भूलें!

R E V

# आपकी वित्तीय क्रांती

## उदारता की सामर्थ

O L U

गैरी कीसी

T I O N

***Your Financial Revolution: The Power of Generosity, Hindi***
Copyright © 2024 by Gary Keesee

Originally published in English
Copyright © 2021 by Gary Keesee
ISBN: 978-1-945930-52-2

Gary Keesee Ministries,
P.O. Box 779, New Albany,
OH 43054, USA

GaryKeesee.com

This book is a FREE GIFT
from Gary Keesee Ministries and is
NOT FOR SALE

Printed in India

***आपकी वित्तीय क्रांति: उदारता की सामर्थ, हिंदी***
कोपीराइट © 2024 द्वारा गैरी किसी

मूलतः अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित
कोपीराइट © 2021 द्वारा गैरी किसी
ISBN: 978-1-945930-52-2

गैरी किसी मिनिस्ट्रीज,
पी.ओ. बॉक्स 779, न्यु अल्बेनी,
ओएच 43054, युएसए

GaryKeesee.com

यह पुस्तक गैरी कीसी मिनिस्ट्रीज की ओर से
**निःशुल्क उपहार** है और **बिक्री के लिए नहीं है**

भारत में मुद्रित

# समर्पण पृष्ठ

यह पुस्तक 40 वर्ष की मेरी खूबसूरत पत्नी ड्रेनडा को समर्पित है। मेरे जीवन भर मैं जिनसे भी मिला हूँ, उनमें से वह सबसे उदार व्यक्ति है। वह हमेशा दूसरों के बारे में सोचती रहती है और उसने मुझे लोगों से प्रेम करने के बारे में बहुत कुछ सिखाया है, जिसके लिए मैं हमेशा धन्यवादित हूँ!

–गैरी कीसी

# विषय सूची

**परिचय** . . . . . 9

**अध्याय 1:** उदारता की सामर्थ . . . . . .15

**अध्याय 2:** उत्तर: अनुग्रह . . . . . .31

**अध्याय 3:** क्या आप सक्षम हैं? . . . . . 55

**अध्याय 4:** यह किसका धन है? . . . . . .71

**अध्याय 5:** आपको साथी की ज़रूरत है! . . . . . 85

**अध्याय 6:** दशमांश का रहस्य . . . . . 97

**अध्याय 7:** आपको बटुए की ज़रूरत है : भाग एक . . . . . 113

**अध्याय 8:** आपको बटुए की ज़रूरत है : भाग दो . . . . . 141

**अध्याय 9:** माप का नियम. . . . . 151

**अध्याय 10:** एक उदार राजा . . . . . .165

**अध्याय 11:** जो उदार हैं उनके लिए प्रतिगयाएं . . . . . 181

# परिचय

जब परमेश्वर ने मुझे और ड्रेनडा को टीवी में कार्य करने के लिए बुलाया, मुझे यह स्वीकार करना होगा कि इस बात का विचार मेरे मन से बहुत दूर था। मैं बस अल्बानिया से लौटा ही था, जहां मैंने परमेश्वर के राज्य पर आधारित पाँच सभाओं को आयोजित किया और उन्हें बताया कि कैसे राज्य के नियमों का अनुसरण करते हुए ड्रेनडा और मैं कर्ज़ से मुक्त हो गए थे।

यदि आपने मेरी पिछली पुस्तकों को पढ़ा है, तो आपको याद होगा कि कैसे उस रात को जब हमने आखरी सभा की, तब परमेश्वर की महिमा के ब्लू हेज़ (नीले धुंध) ने सेवकों के कमरे को भर दिया था। उसी जगह प्रभु ने मुझसे कहा, *"मैंने तुम्हें राष्ट्रों के लिए बुलाया है कि तुम लोगों को मेरी आर्थिक आशीष की वाचा के बारे में सिखाओ। और जहां भी मैं तुम्हें भेजूँगा, मैं उसका भुगतान करूंगा।"*

उस रात ने मेरे जीवन को बदल दिया। हालांकि मैं नहीं जानता था कि प्रभु इन शब्दों से क्या कहना चाहता था, "मैंने तुम्हें राष्ट्रों के लिए बुलाया है।"

मुझे ऐसा लग रहा था, कि टेलीविजन ही वह माध्यम हो सकता है जो प्रभु के मन में है। फिर, यह ऐसा कार्य नहीं है जिसे मैंने करने के बारे में सोचा या इसे करना चाहता था। एक बात जो मैं जानता था वह यह थी कि उस एक बात की खोज करने में, मैं लोगों की मदद करने के लिए जुनून से भरा था जिसकी खोज मैंने और ड्रेनडा ने की थी – परमेश्वर का राज्य।

भारी कर्ज़ में डूबे हुए, सभी प्रकार के ग्रहणाधिकार के साथ, और दुर्बल करने वाले तनाव के दौरों से लड़ते हुए हमें नौ वर्ष हो गए थे। डॉक्टरों द्वारा दी गई हताशारोधी (डिप्रेशन) दवाइयों से भी कुछ मदद नहीं मिली थी। मुझे लग रहा था कि मैं पीछे हटता जा रहा हूँ, भय के अंधकार ने मेरे हर विचार को जकड़ लिया था। मैं भय से इतना बंध गया था कि मैं ऐसे स्थान में भी पहुँच गया था जहां मैं अपने घर से बाहर निकालने के लिए भी डरता था, और निश्चित रूप से यह मेरे व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं था। हम तेज़ी से कंगाली की ओर बढ़ रहे थे, और मैं इसे रोकने में असमर्थ था। शर्म अब जीवन का एक तरीका बन गया और मैं हारा हुआ महसूस करता था। सबसे बड़ी असफलता मैंने अपनी सुंदर पत्नी और बच्चों के प्रति महसूस की। उन वर्षो में,

आवश्यक पैसों का प्रबंध न करने के अलावा, मैं एक महान पिता या पति भी नहीं था।

हम 1850 के दशक के एक पुराने से फार्म हाऊस में रह रहे थे, जहां सब कुछ टूटा हुआ था। खिड़कियों को डक्ट टेप से एक साथ जोड़ा हुआ था। फर्श पर बिछा हुआ कालीन हम सड़क के किनारे कूड़े के ढेर से उठाकर लाएं थे। मेरे लड़कों के कमरे के गद्दे एक नर्सिंग होम के कूड़े के ढेर में पड़े हुए थे। हमारी गाड़ियां अच्छी स्थिति में नहीं थीं। हमें हर रोज़ लगातार वकीलों और बहुत सारे क्रेडिट कार्ड कंपनियों से और जिनसे हमने उधार लिया था उन कंपनियों के कॉल आते रहते थे, और यहीं हमारा जीवन बन गया था। मैं आशाहीन हो गया था! हाँ, मैं परमेश्वर से प्रेम करने वाला मसीही था। मैं कलीसिया में जाता था और मैंने पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाया था। मेरे पास पुराने नियम की डिग्री भी थी और मैं एक वर्ष बाइबल विद्यालय में भी गया था, लेकिन फिर भी कुछ गलत हो रहा था, बहुत गलत!

एक दिन निराशा में, मैंने परमेश्वर को पुकारा, और उसने तुरंत मुझे उत्तर दिया। ऐसा बिलकुल नहीं था कि मैंने उन कठिन नौ वर्षो में उसे कभी नहीं पुकारा; मैंने पुकारा था। लेकिन इस समय, मुझे मालूम था कि मुझे सुनने की ज़रूरत है।

शायद उस समय तक, मुझे ऐसा लगता था कि मैंने खुद को उस आर्थिक गड्ढे से निकाल सकता हूँ जो मैंने खुद अपनी सामर्थ में काम करने के द्वारा खोदा है। लेकिन उस सुबह मुझे ऐसा लगा कि अब मैं थक चुका था। मैंने अपने सब दोस्तों से उधार ले लिया था, मैंने अपने परिवार से भी हज़ारों डॉलर उधार लिए, और वह हर मार्ग जहां से मैं और उधार ले सकता था सब नष्ट हो गए।

जब उस सुबह मैंने प्रार्थना की, मैं बहुत हताश था, और फिर भी उसकी आवाज़ इतनी जल्दी सुनकर आश्चर्यचकित हो गया था। मेरी आत्मा के भीतर से मैंने उसे फिलिपियों 4:19 कहते हुए सुना:

> *और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा।*

मैंने प्रभु से कहा, "प्रभु, मैं इस वचन को जानता हूँ, लेकिन मैं इसे अपने जीवन में पूरा होते हुए नहीं देखता हूँ।" उसने फिर से कहा और मुझे इस समस्या का कारण बताया कि यह इसलिए हुआ क्योंकि मैंने कभी यह नहीं सीखा कि परमेश्वर का राज्य कैसे कार्य करता है। मैं नहीं जानता था कि इस बात से वह क्या कहना चाहता है, लेकिन ड्रेन्डा और मैंने इस बात की खोज करने पर अपना ध्यान केंद्रित किया।

पहले वचनों में से एक जो परमेश्वर ने हमें दिखाया वह था लूका 6:20;

*"तब उस ने अपने चेलों की ओर देखकर कहा; धन्य हो तुम, जो दीन हो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है।"*

क्या परमेश्वर का राज्य ही हमारा उत्तर था?! एक बार फिर, हमें सच में कुछ ज्ञात नहीं था कि इससे उसका क्या मतलब है, लेकिन हम जानते थे कि हमें इसकी खोज करनी होगी।

एक मिनट में हम परमेश्वर के राज्य के बारे में और अधिक बात करेंगे, लेकिन मैं आपको इसके परिणाम बताना चाहता हूँ।

पवित्र आत्मा हमें बाइबल में कुछ ऐसी बातें दिखाने लगा जो पहले कभी नहीं देखी थी। प्रभु हमें राज्य के बारे में जो बातें सिखा रहा था, उन्हें कार्य में लाने के द्वारा, हम ढाई वर्ष में सम्पूर्ण रीति से कर्ज़मुक्त हो गए थे। हम अपनी गाड़ियों के लिए नकद धन देने लगे और नकद पैसों को देकर 55 एकड़ की ज़मीन खरीद ली, जो एक सुन्दर जंगल और हरियाली से भरपूर भाग था, जहां मैं शिकार कर सकता और अपने बच्चों का पालन पोषण खुले वातावरण में कर सकता था।

और ड्रेनडा को अपने स्वप्नों के घर को आकृत करते और बनाते हुए देखना, यह मेरे जीवन का सबसे बड़ा आनंद था, जिससे हमें बिना किसी कर्ज़ के खरीदा था।

उन बातों के बाद जिनसे मैं गुज़रा था और परमेश्वर के राज्य को अपने जीवन में कार्य करते हुए देखने के बाद, हम प्रतिदिन उत्सव मनाने की स्थिति में जीने लगे। असल में, जश्न अभी बंद नहीं हुआ है। हम आज भी हर दिन उत्सव मना रहे हैं। अपने बच्चों के लिए एक समय का भोजन खरीदने के लिए सोफ़े के तकिये के नीचे कुछ पैसे ढूँढने से लेकर आज कर्ज़ मुक्त जीवन तक और विश्व भर में सुसमाचार को फैलाने के लिए अब हज़ारों को दान देना निश्चयी उत्सव मनाने का कारण है।

ड्रेनडा और मैं लोगों को परमेश्वर के अद्भुत राज्य के बारे में बताने के लिए जुनून से भरे हुए हैं। इसी कारण मैं अल्बानिया को गया था।

जैसा मैंने बताया, जब परमेश्वर ने अल्बानिया में मुझे राष्ट्रों में जाने के बारे में कहा, तब मैं निश्चित नहीं था। इसका क्या मतलब है? उस समय, मैं एक कलिसिया की अगुवाई कर रहा था जिसे ड्रेनडा और मैंने दस वर्ष पहले शुरू किया था। क्या मुझे कलिसिया से इस्तीफा देकर यात्रा की शुरुआत करनी होगी?

परमेश्वर द्वारा दिए गए निर्देशों के चक्र–व्यूह के द्वारा, मेरा और ड्रेनडा का परिचय कुछ ऐसे लोगों से हुआ जो टेलीविजन में कार्य करते थे और ऐसे दल जो टीवी संचालन का काम करते थे। ऐसा नहीं था कि मैं उनकी खोज कर रहा था; लेकिन परमेश्वर उन्हें हमारे सामने ले आया था। फिर से कहूँगा, मुझे टीवी में कार्य करने में कोई दिलचस्पी

नहीं थी, लेकिन मुझे वो दर्शन याद आया जो मुझे कई वर्ष पहले मिला था। हमारी कलिसिया की एक सभा में, मैं प्रार्थना कर रहा था, जब अचानक, प्रभु ने मुझसे कहा कि मैं टीवी और रेडियो में कार्य करूंगा। मैंने उसके बारे में ज़्यादा नहीं सोचा था क्योंकि उस समय भी मुझे इसमें कुछ दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन इस बात ने मेरा ध्यान आकर्षित किया और मैंने यह बात ड्रेनडा को बताई।

एक लंबी कहानी को छोटी करते हुए, परमेश्वर ने कुछ अद्भुत द्वार खोले और कुछ अद्भुत लोगों को हमारे मार्ग में लाया जिन्होंने हमें टीवी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया, फिर भी हमें टीवी के बारे में कुछ ज्ञान नहीं था। और जब मैंने कहा कुछ नहीं तो उसका मतलब है कुछ नहीं। लेकिन हमें महसूस हुआ कि जो परमेश्वर ने हमें दिखाया है उसके अनुसार कार्य करते रहना चाहिए।

हमारे पास कुछ भी सामान नहीं था और हम नहीं मालूम था कि टीवी में कार्य करने के लिए किन चीजों की ज़रूरत थी, लेकिन उन लोगों को सारी जानकारी थी जिन्हें परमेश्वर हमारे पास ला रहे थे। अंतत: हम ऐसे स्थान पर आए जहां हमें एक निर्णय लेना था। एक टीवी प्रदर्शन कंपनी ने हमें कम दाम पर प्रदर्शन का कार्य करने का अनुबंध प्रस्तुत किया था। टीवी कार्यक्रम को शुरू करने में हवाई समय और सभी चीजों का दाम गिना जाए, तो हमने जाना कि इसमें लगभग $300,000 का खर्च होगा। ये $300,000 थे, जो उस समय हमारे पास नहीं थे। लेकिन इसके लिए प्रार्थना करने के बाद और परमेश्वर से कुश्ती लड़ने के बाद, मैंने अंत में हाँ कर दी। (निश्चय रूप से परमेश्वर के साथ कुश्ती में आप कभी जीत नहीं सकते।)

तो प्रदर्शन कंपनी हमारे शहर में आ गई (वे तो टेक्सास में स्थित थे), और हमें अपने पहले टीवी कार्यक्रम को बनाना शुरू कर दिया था। हालांकि हमारे पास कोई तैयार स्थान नहीं था, तो हमने पूरा एक वर्ष चिमनी के सामने के कमरे में अपने कार्यक्रम का फिल्मांकन किया। इस बात को कहना थोड़ा अजीब होगा कि पहली टेपिंग के दौरान मैं घबराया हुआ था। मुझे क्या अपेक्षा करनी चाहिए मैं नहीं जानता था। और सिर्फ असली टीवी कार्यक्रम करना ही मेरी घबराहट का कारण नहीं था। मुझे सभी विषयों के साथ तैयार रहकर ड्रेनडा की मदद के साथ सम्पूर्ण कार्यक्रम को संभालना था। प्रदर्शन दल ने हमें अच्छी सलाह दी और प्रशिक्षित किया, लेकिन मैं फिर भी उलझन में था।

कृपया इस बात को समझें कि मैं स्वाभाविक रूप से मिलनसार व्यक्ति नहीं हूँ, तो मेरे लिए टीवी में कार्य करना यह कार्य आरामदायक क्षेत्र से बाहर था। इसके आलावा, प्रदर्शन दल उस दिन बहुत परेशान था। दल का प्रमुख बीच रात को ही काम छोड़कर चला गया था क्योंकि सड़क पर पड़ोसी की गाड़ी के नीचे आने से उसके जवान बेटे

की मृत्यु हो गई थी। उन्होंने यह बात मुझे उसी सुबह को बताई जब हम फिल्मांकन करना शुरू करने वाले थे। मैंने ठान लिया कि फिल्मांकन समाप्त होने तक मैं ड्रेनडा को यह बात नहीं बताऊँगा। वाह, यह कठिन था। फिर, फिल्मांकन करने के बाद ही हमारा एक स्टाफ मेरे बेटे टिम की गंदी बाइक चलाते हुए दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। टिम घर में चिल्लाते हुए आया कि डेविड की मृत्यु हो गई। वह मरा नहीं था, बस घायल हो गया था, लेकिन यह कैसी अच्छी शुरुआत थी।

हमने यह टेप करने के हफ्ते को अच्छे से निकाल लिया था, और कार्यक्रम हमारे एक स्थानीय रेडियो स्टेशन में पहुँच गया था। हमने महीने में एक सप्ताह टेप रिकार्ड करना जारी रखा, लेकिन दूसरे महीने के अंत में, यह आसान नहीं था; और मैं हर समय असंतुष्टि और हताशा से संघर्ष कर रहा था। आखिरकार मैंने प्रदर्शन कंपनी के मालिक को बताया कि मैं यह अब और नहीं कर सकता था। उन्होंने मुझे एक पल के लिए देखा और कहा, "नहीं! आपको टीवी में कार्य करना ही चाहिए!"

फिर उन्होंने मुझसे बैठने के लिए कहा क्योंकि वह मुझे कुछ दिखाना चाहते थे। उन्होंने टेलीविजन को चलाया और ईसाई टीवी संपर्क दिखाए। सच कहूँ तो, मैंने कभी ज़्यादा ईसाई टीवी कार्यक्रम नहीं देखे थे, लेकिन उस दिन जो मैंने देखा था उसके कारण मैं बीमार हो गया था और ईसाई टीवी में कार्य करने के बारे में, मैं फिर से सोचने लगा था।

एक कार्यक्रम पर, वे "पवित्र जैतून का तेल" बेच रहे थे जिसके बारे में वे सफलता के महान अभिषेक को लाने का दावा कर रहे थे। और दूसरे पर, प्रचारक "अभिषेकित नमकीन" के बारे में बता रहे थे जिसको खाने से नया प्रकाशन प्राप्त होता है। और किसी दूसरे कार्यक्रम पर, मैंने सुना कि यदि अगले तीन मिनट में आप दान देंगे, तो आपको सम्पन्न होने का तीन गुणा अभिषेक प्राप्त होगा। और दूसरे में, जमा हुआ सूखा भोजन दिया जा रहा था। हर किसी कार्यक्रम में लोगों के दान देने पर कुछ अजीब वस्तुएं दी जा रही थी।

लेकिन मैंने देखा जिस एक बात की कमी देखी वह यह थी कि किसी ने भी लोगों को यह नहीं बताया कि जो उन्हें चाहिए वह कैसे प्राप्त करें– राज्य असल में कैसे कार्य करता है। वे लोगों को बता रहे थे कि उन्हें बीज बोने की ज़रूरत है, लेकिन मैं यह जानता था कि लोगों को यह बताना ज़रूरी था कि बीज की फसल को कैसे काटें!

चक्र–व्यूह के बहुत सारे भाग थे जिन्हें सफल होने के लिए लोगों को सीखने की ज़रूरत थी। लोगों को केवल बीज बोने के बारे में सिखाना और फसल काटने के बारे में नहीं सिखाना, इससे मैं जानता था कि लोग परमेश्वर के बारे में यह सोचेंगे कि जब वह कुछ बातों की अपेक्षा कर रहे थे तब सब कुछ वैसा नहीं हुआ और परमेश्वर ने

उन्हें छोड़ दिया था।

लोगों को राज्य के नियमों को जानने की आवश्यकता थी और इस पृथ्वी क्षेत्र में राज्य की बहुतायत में चलने के लिए देना एक मुख्य भाग क्यों है। फिर से, सबसे महत्वपूर्ण, उन्हें यह मालूम होना ज़रूरी था कि देने के बाद क्या करना चाहिए। उनको यह जानना ज़रूरी था कि परमेश्वर से जो उन्हें चाहिए उसे कैसे प्राप्त करें।

मैंने यह जाना कि मेरी फसल में मेरा बड़ा किरदार है—जिसमें पहली बात जो सीखनी थी वह यह थी कि विश्वास क्या है और यह क्यों ज़रूरी है। मुझे यह सीखना था कि कैसे पवित्र आत्मा मुझे मेरी फसल तक ले जाता है और मेरी फसल का महत्वपूर्ण समय और उसके बारे में अन्य बाते क्या हैं। मैंने इसकी खोज करके जाना कि ऐसे आत्मिक नियम हैंजो हमारी फसल को प्रभावित करते हैं, जिन्हें नैसर्गिक क्षेत्र में कार्य कर रहे नियमों के समान सीखने और लागू करने की ज़रूरत है।

यह सारे कार्यक्रम ऐसे सुनाई दे रहे थे जैसे कि आपके खाते में पैसे आने ही वाले हैं।

मैं सहमत हूँ कि कभी कभी पैसे सच में आपके खाते में आ जाएंगे, लेकिन यदि आप इन बातों को ध्यान से देखें, तो आप आत्मिक चिन्हों को पाएंगे कि पैसे क्यों और कैसे आए।

इन कार्यक्रमों को देखने के बाद, मैं बहुत शर्मिंदा हुआ। मुझे कोई आश्चर्य नहीं कि संसार इन बातों पर क्यों ध्यान नहीं देता है। लेकिन मैं क्रोधित भी था। मैंने उस क्षण जान लिया कि यहाँ मेरी ज़रूरत थी, क्योंकि मेरे पास बताने के लिए कुछ था।

मैंने टीवी पर बने रहने का निर्णय लिया क्योंकि मेरे पास लोगों को बताने के लिए एक कहानी थी। और मैं आज तक पिछले 14 वर्षों से टीवी में कार्य कर रहा हूँ और मैंने हज़ारों को राज्य की खोज कर प्राप्त करते हुए देखा है—धर्म नहीं लेकिन राज्य—और उनके जीवन में भी ड्रेनडा और मेरे समान परिणाम दिखाई दिए हैं।

मैं जानता हूँ कि आपको भी ऐसा ही परिणाम प्राप्त होगा।

यह पुस्तक, आपकी वित्तीय क्रांति: उदारता की सामर्थ, हमारी वित्तीय क्रांति की शृंखला की पाँचवी और आखरी पुस्तक है। मैं पूरी शृंखला के लिए और इस आखरी पुस्तक के लिए भी बहुत उत्सुक हूँ।

—गैरी किसी

अध्याय 1

# उदारता की सामर्थ

एक रात हम परिवार सहित अपने मनपसंद स्थानीय होटल में खाना खा रहे थे। वहाँ एक युवा महिला वेट्रेस काम कर रही थी और वो गर्भवती थी। जैसे मैं बिल का भुगतान करने जा रहा था, तभी मुझे अचानक अगुवाई हुई कि मैं उसे 22–25% के बदले जो मैं हमेशा देता हूँ, एक अच्छी बखशीश दूँ, तो मैंने $100 की धनराशि बिल में जोड़ दी। उसने बिना देखे हस्ताक्षण की गई वीजा की पर्ची उठाई और रसोई की तरफ चली गई।

एक मिनट में, वह वापिस लौटकर आई, उसकी आँखों से आँसू टपक रहे थे। वह हमें धन्यवाद देने के लिए आई थी। उसने हमें बताया कि वह किस प्रकार के कठिन आर्थिक हालातों में थी और विचार कर रही थी कि गुज़ारा कैसे करे। हमें उसके साथ मसीह को बांटने का और निकालने से पहले उसके साथ प्रार्थना करने का एक अच्छा अवसर मिला था।

हमने कुछ नहीं किया सिर्फ उसके हृदय में सेवकाई के खुले हुए द्वार के प्रति उदारता दिखाई।

> *क्या तू उस की कृपा, और सहनशीलता, और धीरज रूपी धन को तुच्छ जानता है और कया यह नहीं समझता, कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव को सिखाती है?*
>
> –रोमियों 2:4

रोमियों 2:4 का किंग जेम्स अनुवाद बताता है कि परमेश्वर की भलाई पश्चाताप की ओर हमारी अगुवाई करती है।

**उदार होने का मतलब परमेश्वर की नकल करना है**

मत्ती 5:45 कहता है:

*जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भलों और बुरों दोनो पर अपना सूर्य उदय करता है, और धमिर्यों और अधमिर्यों दोनों पर मेंह बरसाता है।*

परमेश्वर भला है, और वह उदार है! हम उसकी संतान हैं, और मसीह में हमारा नया स्वभाव उदार होना भी है। जैसा कि इस कहानी में है, उदार होना यानि परमेश्वर के हृदय को लोगों से बांटना है। यह एक बहुत गर्म दिन पर ठंडा पानी पीने के समान है, ऐसे संसार में जहां गरीबी का रेगिस्तान है, उदारता शांति को लाती है।

स्वतंत्रता से देने के प्रभाव के बारे में पौलूस ने 2 कुरिन्थियों 9:10–15 में बताया है, कुरिन्थ की कलिसिया को लिखी गई पत्रिका:

*सो जो बोने वाले को बीज, और भोजन के लिये रोटी देता है वह तुम्हें बीज देगा, और उसे फलवन्त करेगा; और तुम्हारे धर्म के फलों को बढ़ाएगा। कि तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिये जो हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करवाती है, धनवान किए जाओ।*

*क्योंकि इस सेवा के पूरा करने से, न केवल पवित्र लोगों की घटियां पूरी होती हैं, परन्तु लोगों की ओर से परमेश्वर का बहुत धन्यवाद होता है। क्योंकि इस सेवा से प्रमाण लेकर वे परमेश्वर की महिमा प्रगट करते हैं, कि तुम मसीह के सुसमाचार को मान कर उसके आधीन रहते हो, और उन की, और सब की सहायता करने में उदारता प्रगट करते रहते हो। ओर वे तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं; और इसलिये कि तुम पर परमेश्वर का बड़ा ही अनुग्रह है, तुम्हारी लालसा करते रहते हैं। परमेश्वर को उसके उस दान के लिये जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो॥*

आपकी उदारता का कारण लोग परमेश्वर को स्तुति और धन्यवाद देते हैं!! ध्यान देन कि पौलूस कहता है कि उदारता परमेश्वर के प्रति तुम्हारी सेवा है।

सेवा शब्द की परिभाषा इस प्रकार है: अपने कार्य या नौकरी का प्रदर्शन किसी प्रभुख के लिए करना या एक नौकर के समान कार्य करना है।

इस पृथ्वी क्षेत्र में, आपको परमेश्वर की तरफ से लोगों से उनके हृदय और उनके विचारों को बांटना है। परिणाम स्पष्ट है—यह लोगों के हृदयों को स्पर्श करता है और उन्हें मसीह को प्राप्त करने के लिए खोल देता है।

मुझे ऐसा लगता है कि हम सब याद कर सकते हैं उन समयों में जब कोई हमारी

मदद करने के लिए आया और यह हमारे लिए कितना मायने रखता था।

मुझे याद है जब मेरा विवाह हुआ था मेरे पास कर चुकाने के लिए 4000 नहीं थे और मुझे पता भी नहीं था कहाँ से यह पैसे लाऊँगा। कई रात मैं इस परिस्थिति के खौफ में जागता रहा। उस समय हम तुलसा में रहते थे और छुट्टियों में ओहिओ जाने की योजना भी थी।

जब मेरे पिताजी ने मुझसे पूछा कि स्थिति कैसी है, तब मैंने उन्हें आईआरएस बिल के बारे में बताया। उन्होंने कहा, "वैसे, इस स्थिति को ठीक किया जा सकता है," और उन्होंने ने चेक में सारी रकम मुझे लिखकर दे दी। उस पल उनकी तीव्र उदारता ने मेरे अंदर मेरे पिताजी के प्रति और अधिक प्रेम बढ़ा दिया था। क्योंकि उस समय मैंने उनके हृदय में मेरी परवाह को देखा था।

मेरे पिता ने हमेशा अपने हृदय की बातों को छिपाते थे। असल में, उन्होंने कभी भी लोगों को यहाँ तक कि मेरी माँ को भी, अपनी भावनाएं कभी खुलकर नहीं दिखाईं थी। जहां तक मुझे याद है, उस पल तक मेरे पिता ने यह कभी नहीं जताया कि वह मुझसे कितना प्रेम करते थे। केवल एक बार, जब मेरी माँ ने उन्हें कहने के लिए मजबूर किया तब बहुत नाटकों के बाद उन्होंने यह कहा था। मुझे वह दिन ऐसा याद है जैसे वह कल ही था। माँ उनसे यह कहने के लिए विनती कर रही थी, "तुम अपने बेटे से यह नहीं कह सकते कि तुम उससे प्यार करते हो?" लेकिन वह शांत रहे।

अंत में, जब उन्होंने कहा कि वह मुझसे प्रेम करते हैं तब मेरी माँ की आँखों में आँसू आ गए थे। लेकिन मुझे उस समय उस बात पर इतना भरोसा नहीं था क्योंकि उन्होंने मुझे दबाव में आकर कहा कि वह मुझसे प्रेम करते हैं।

वह हमसे प्रेम करते हैं ऐसा शब्दों में कहने के बजाय, हमारे पिता कई बार हमारे हमारे लिए कुछ बहुत अच्छी चीज़ें खरीद कर लाते थे, और हम चारों जानते थे कि पिताजी हमसे बहुत प्रेम करते हैं। मैंने अपने पिता का हृदय उनके कार्यो में ही देखा है, उनके शब्दों में कभी नहीं। वह पल मेरे बहुत करीब हैं और मैंने उनको ऐसा थाम कर रखा है क्योंकि वे मेरी अंधेरी रातों में ज्योति का काम करते हैं।

जिस दिन उन्होंने आईआरएस कर्ज़ के लिए चेक लिखा, मेरा हृदय धन्यवाद से भर गया था। आँसूओं के साथ, मैंने अपने पिता को गले लगाया और उन्हें धन्यवाद दिया। उनकी प्रतिक्रिया ने मुझे चौंका दिया। उन्होंने कहा, "जब तक मेरे पास है, मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ।"

मुझे यकीन है कि आपके पास भी किसी की उदारता की ऐसी यादें होंगी, ऐसे पल जिसने आपके ध्यान को खींचा था। तो इस मानसिक विचार पर ध्यान दे:

**उदारता लोगों को आपका हृदय दिखाती है और परमेश्वर का हृदय उनके**

## लिए दिखाती है।

उदारता बहुत सामर्थी है। यह शब्दों से आगे सीधा हृदय में प्रवेश करती है। इस बात को याद करना अद्भुत है कि किसी ने हमारी सराहना की या हमें उपहार दिया था।

मेरे जीवन में वह ऐसा पल था जब मैंने अपने पिता के हृदय को देखा था तब मैं छटी कक्षा में था। मैं और मेरे भाई बहन उस समय मॉडल रॉकेट में ज़्यादा दिलचस्पी रखते थे, और मैंने उनमें से एक अच्छी नोंक वाला खरीदा था जिसमें चीज़ें डालकर उसे आकाश में भेज सकते थे।

एक दिन, मैंने और मेरे भाई ने सोचा कि हम उस नोंक में एक मेंडक को डालेंगे और उसे इस तरह से जोड़ दिया था कि पैराशूट खोलने के बजाय वह टकरा जाएगा। हमारा इरादा यह देखने का था, कि मेंडक का क्या होगा, जिसकी आप कल्पना कर सकते हैं।

हालांकि हमने रॉकेट को उड़ाया और सबसे खतरनाक बात यह हुई कि हमारे पिता इसे देखने के लिए बाहर आए थे। हम जानते थे कि वह मेंडक की हत्या से खुश नहीं होंगे।

रॉकेट वैसे ही ऊपर गया जैसे उसे जाना चाहिए था और फिर धनुषाकार होकर नीचे की ओर पहले नाक से लगकर ज़मीन पर टकराया। जैसे ही मैं उसे उठाने गया, मैंने देखा कि मेरी अपेक्षा अनुसार उसकी नोंक के टुकड़े टुकड़े हो गए और मेंडक मर गया था।

जैसे मैंने रॉकेट को उठाया, मैंने तुरंत मरे हुए मेंडक को फेंक दिया जिससे अपने पिता से हमारे इरादों को छिपा सकूँ। वह चलकर आए और उन्होंने रॉकेट के बारे में पूछा था। मुझे अब भी याद है हमारे रॉकेट के लिए वह अपनी चिंता को दिखा रहे थे। जैसे उन्होंने उसे अपने हाथ में लिया, उन्होंने मुझे बताया कि कैसे इसे जोड़ा जा सकता है और कैसे उसके टकराने का उन्हें दुख था। फिर वह और गहराई में जाकर बताने लगे कि कैसे टूटे हुए टुकड़ों को जोड़ा जा सकता है। उनकी आवाज़ में वह सच्ची परवाह और कोमलता ने मुझे मेरी गलती का एहसास दिला दिया था। उनको कभी उस मेंडक के बारे में पता नहीं चला, लेकिन मैं कभी मेरे और मेरे रॉकेट के लिए उनकी उस चिंता को कभी नहीं भूल सकता था। उस समय मैं इस बात को जान गया था कि उन्हें सच में मेरी परवाह है।

फिर ऐसे समय भी थे जब परमेश्वर ऐसे लोगों जिन्हें हम नहीं जानते हमें उत्साहित करने के लिए और हमारी मदद करने के लिए उपयोग करता है।

एक ऐसा समय जो बहुत यादगार था जब ड्रेनडा और मैं हमारे दोस्तों के साथ तीतर का शिकार करने के लिए गए थे। हाल ही में, मेरी और ड्रेनडा का विवाह हुआ

था और हम तुलसा में रहते थे। मेरा सबसे मनपसंद साथी कन्सास में रहता था और उसने हमें तीतर शिकार के उत्घातन दिवस पर वार्षिक समारोह में आमंत्रित किया था। मैं कम से कम कहने के लिए रोमांचित था। हमने गाड़ी में कन्सास की ओर 5 घंटे यात्रा की, और शिकार के दिन का आनंद उठाया, और कुछ पक्षियों का शिकार कर पाए थे। लेकिन तुलसा में वापिस आते हुए यात्रा के दौरान, हमारे दोस्तों का ईंधन फट गया था। हम रास्ते के बीचों बीच थे और घर से कई घंटे दूर थे। यदि आप कभी कन्सास में गए हैं तो आप जानते हैं कि वह कितना असहाय स्थान है।

हम अंधेरा हो चुका था, और हमें दूर दूर तक सिर्फ एक रोशनी दिखाई दे रही थी। हम उस किसान के घर तक गए और उसे अपनी स्थिति के बारे में बताया। मैं बहुत अचंभित हुआ जब उसने कहा,"वैसे मैं आपको आपके घर तक पहुंचा दूंगा। मैं आपकी गाड़ी को अपनी खींचने वाली गाड़ी पर रखूँगा और मैंने आपको सोमवार से पहले आपके घर तक पहुंचा दूंगा।" (ड्रेनडा को सोमवार के दिन एक नई नौकरी के लिए एक होटल में जाना था और वह बहुत निराश थी कि उसे उन्हें कॉल करके ऐसा कहना पड़ेगा कि वहाँ नहीं पहुँच पाएगी।)

अद्भुत रूप से, इस आदमी ने, जिससे हम कभी नहीं मिले थे, 5 घंटों की यात्रा पूरी करके सुबह होने से पहले हमें तुलसा में पहुंचा दिया और फिर घूमकर कन्सास की ओर वापिस लौट गया। उसने पूरी रात गाड़ी को चलाया था!

मैं इस भलाई के निस्वार्थ कार्य को कभी नहीं भूलूँगा। उसने गैस के लिए पैसे भी नहीं लिए थे। मैं हमेशा उस आदमी का आभारी रहूँगा। जब मैं उसके बारे में सोचता हूँ, तो मैं उसकी उदारता के उपहार के बारे में सोचता हूँ।

जब लोग आपके बारे में सोचेंगे, तब वह आपकी उदारता के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देंगे।

**लोग परमेश्वर को उनके अधिक बढ़ते हुए अनुग्रह के लिए धन्यवाद देंगे, जो उदार लोगों को दिया गया है!**

मुझे यकीन है कि आप अपने जीवन में ऐसी स्थितियों के बारे में सोच सकते हैं। तब आपको याद आएगा कि आप लोगों की ऐसी निरस्वार्थ चिंता और परवाह के लिए कितने आभारी थे। हालांकि, पौलूस इस कलिसिया को यह बताना चाहता था– कि उनकी उदारता परमेश्वर के हृदय के साथ लोगों तक पहुँच रही थी जिसके कारण लोग, परमेश्वर की मदद के लिए स्तुति और धन्यवाद दे रहे थे। [लोग परमेश्वर को धन्यवाद देने जा रहे हैं उनके बहुतायक के अनुग्रह के लिए जो उदार लोगों को प्रदान किया गया है!]

जब मैं मसीह के पास आया, मैंने जाना कि मेरा हृदय कोमल हो गया था, और मैंने देखा कि मैं सच में लोगों के लिए सच में परवाह करने लगा था। जब मैंने एक ज़रूरत को देखा, मुझे हमेशा मदद करने का मन करने लगा, लेकिन यह बहुत परेशानी की बात थी कि मैं अधिकतर इसे नहीं कर पाता था मेरे पास कुछ भी पैसे नहीं बचे थे।

मैंने इस बात को जाना कि अधिकतर लोगों को ऐसा ही महसूस होता है। बस भीड़ में आवाज़ उठाओ और रास्ता पूछने के लिए मदद को मांगे, और आपके पास दर्जन भर लोग होंगे जो आपकी मदद करना चाहेंगे।

लेकिन जैसे मैंने बाइबल की खोज की, तब जाना कि उदार होना सबसे सामर्थी बात है। 2 कुरिनथियों 9 में राज्य का एक ऐसा नियम प्रगट हुआ जिसने देने के बारे में मेरी सोच को बदल दिया:

क्योंकि इस सेवा के पूरा करने से, न केवल पवित्र लोगों की घटियां पूरी होती हैं, परन्तु लोगों की ओर से परमेश्वर का बहुत धन्यवाद होता है।

> *क्योंकि इस सेवा से प्रमाण लेकर वे परमेश्वर की महिमा प्रगट करते हैं, कि तुम मसीह के सुसमाचार को मान कर उसके आधीन रहते हो, और उन की, और सब की सहायता करने में उदारता प्रगट करते रहते हो।*
>
> *ओर वे तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं; और इसलिये कि तुम पर परमेश्वर का बड़ा ही अनुग्रह है, तुम्हारी लालसा करते रहते हैं।*
>
> *परमेश्वर को उसके उस दान के लिये जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो॥*
>
> –2 कुरिनथियों 9:12–15

लोग परमेश्वर को उनके अधिक बढ़ते हुए अनुग्रह के लिए धन्यवाद देंगे, जो उदार लोगों को दिया गया है!

इस जगह पौलूस जो कह रहे हैं उसे प्राप्त करने के लिए, हमें अपनी मानसिकता को परिभाषित करना होगा।

अधिक बढ़कर का अर्थ है: कोई बड़ी रकम या उच्च स्तर की बात; अत्यंत बड़ा, श्रेष्ठ होना, या सामान्य से बढ़कर: *श्रेष्ठ भव्यता की संरचनाएं।*

आपके जीवन में एक बड़ी राशि में क्या आपको क्या मिलनेवाला है? आपके जीवन में असामान्य और भव्यता से बढ़कर क्या होने वाला है? परमेश्वर का अनुग्रह!!

ठीक है, अब अनुग्रह की परिभाषा को जानना ज़रूरी है।

अनुग्रह का मतलब है परमेश्वर की अनुपयुक्त कृपादृष्टि

यह अनुग्रह की सही परिभाषा है, लेकिन यह इसे परिभाषित करने के लिए काफी

नहीं है। आइए मैं आपको एक बेहतर परिभाषा देता हूँ।

दैवीय अनुग्रह के बारे में निम्नलिखित उद्धरण विकिपीडीया से है:

*सामान्य ईसाई शिक्षा यह है कि अनुग्रह एक ऐसी अनुपयुक्त दया (कृपा) है जो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजने के द्वारा मानवजाति को दी, जहां वह क्रूस पर मरा, जिसके द्वारा उसने अनंतकाल का उद्धार प्रदान किया। हालांकि, यह परिभाषा अकेले ही शास्त्रों में अनुग्रह शब्द के उपयोग को समझा नहीं सकती है। उद्धारण के लिए, लूका 2:40 (किंग जेम्स अनुवाद), "और बालक बढ़ता, और बलवन्त होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया; और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था।" इस उद्धारण में जब अनुग्रह की परिभाषा का उपयोग अनुपयुक्त कृपादृष्टि के रूप में करते हैं तो यह ठीक नहीं लग रहा क्योंकि मसीह जो पापरहित है उसे इसकी ज़रूरत नहीं है।*

*जेम्स राइल ने कहा "अनुग्रह परमेश्वर की सशक्त करने वाली उपस्थिति है जो आपको वह बनने के लिए बलवंत करती है जैसा बनने के लिए आप बुलाए गए हैं, और जैसा करने के लिए आप बुलाए गए हैं।" बिल गोथर्ड ने भी कहा "अनुग्रह हमें परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने के लिए इच्छा और सामर्थ प्रदान करती है।" दोनों ही परिभाषाएं सम्पूर्ण बाइबल में अनुग्रह शब्द को अच्छे से दर्शाती हैं।*

तो, हम देखते हैं कि पौलूस जिस बात के बारे में इन वचनों में बातें कर रहा है, वह अनुग्रह है, या सम्पन्न होने की सामर्थ। यह उपहार, अनुग्रह का उपहार, का उत्सव इसलिए मनाया जाता था क्योंकि यह लोगों को सम्पन्न होने के लिए सशक्त करता था। और जैसे–जैसे वह इसके बदले और उदार बनते जाते थे, लोगों की ज़रूरतें पूरी करते हुए, वह परमेश्वर की और अधिक आराधना करने लगे थे।

पौलूस अपनी बातचीत को इससे समाप्त करता है, **"परमेश्वर को उसके उस दान के लिए जो वर्णन से बाहर है धन्यवाद हो!"**

ठीक है, एक और परिभाषा। वर्णन से बाहर का मतलब है जैसे कि यह स्पष्टता से दर्शाता है, कि इसको सही रीति से समझाने के लिए कोई शब्द नहीं बचे हैं। अनुग्रह का उपहार इतना ही अच्छा है जिस तरह पौलूस ने बताया, शब्दों से परे, और विशेष करके उन लोगों के लिए जिनकी सेवकाई उस धन के द्वारा हुई जो उन्होंने दिया था।

अब यह वह सामर्थ है जो आपको आर्थिक बंधन से आज़ाद कर सकती है। यह सामर्थ, परमेश्वर का अनुग्रह है, और सभी विश्वास करनेवालों के लिए उपलब्ध है।

लेकिन यहाँ एक समस्या है। हम पौलूस ने क्या करने के लिए कहा इस विषय में काफी समय बिता कर सकते हैं—यानि देना। लेकिन यदि हम अनुग्रह को समझेंगे नहीं, जो सम्पन्न होने के लिए परमेश्वर की सामर्थ द्वारा हमें सशक्त करता है, तो हम उस फसल को खो देंगे जो परमेश्वर हमें देना चाहता है। यह ऐसा होगा जैसे अपने बगीचे को एक बड़े पेड़ के नीचे लगाना—जहां कोई धूप नहीं, अपेक्षित परिणाम को लाने की कोई सामर्थ नहीं है।

ड्रेनडा और मैं बाइबल में इन कहानियों को पढ़ते थे जहां परमेश्वर का सामर्थ प्रगट हुआ और परिस्थिति को भलाई के लिए सम्पूर्ण रीति से बदल दिया था। मुझे स्वीकार करना होगा कि जैसे हम बड़े हुए हमने अपनी कलीसिया में बहुत कम ऐसी कहानियाँ सुनी थी। उद्धार के अलावा, किसी ने कभी परमेश्वर के अनुग्रह को अपनी परिस्थितियों में लाने के बारे में नहीं बताया था।

अब, मैं समझ गया था कि हमारा उद्धार सबसे महत्वपूर्ण बात है। लेकिन जैसा मैंने बताया, मैं चाहता था कि वही अनुग्रह मेरे जीवन के हर एक क्षेत्र में कार्य करे, लेकिन यह कैसे होगा मैं नहीं जानता था। और मेरी अज्ञानता के कारण, हम टूटे हुए, बीमार और निराश थे। हमें उद्धार के बारे में मालूम था—हमने उद्धार प्राप्त भी किया था—लेकिन हम यह जानते और समझते नहीं थे कि कैसे स्वर्ग को अपने जीवन में लाएं और परमेश्वर की सामर्थ को प्रगट होता हुआ देखें। जैसा मैंने आपको बताया था, कि हम आर्थिक रूप से बर्बाद हो गए थे!

लेकिन उस दिन प्रभु मुझे यही बताना चाहता था जब उसने राज्य के बारे में मुझे कहा, *"तुम इस समस्या में इसलिए हो क्योंकि तुमने कभी नहीं सीखा कि मेरा राज्य कैसे कार्य करता है!"*

दूसरे शब्दों में, वह कह रहे थे कि मैं यह नहीं जानता था कि राजा के अधिकार को इस पृथ्वी पर कैसे लाया जा सकता है। मैंने कभी नहीं सीखा था कि मैं इसे पृथ्वी पर ला सकता हूँ या कैसे ला सकता हूँ। मुझे नहीं मालूम था कि अनुग्रह जो परमेश्वर की सामर्थ है उसको कैसे प्राप्त करूँ।

ओह, वैसे, जब परमेश्वर ने राज्य के बारे में उस दिन मुझसे बातें की इसमें और बातें हैं। फिर उसने कहा, *"मेरी कलीसिया ऐसे जी रही है जैसे इस्राएल गुलामी में फिरौन के लिए ईटें बनाते हुए जी रहा था। वे गुलाम हैं! मेरे लोग कर्ज़ में हैं, और मैं उन्हें स्वतंत्र देखना चाहता हूँ!"*

यहाँ मैं एक बात बताना चाहता हूँ: यदि आप आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं हैं तो आप कभी स्वतंत्र नहीं होंगे। और जैसे ड्रेनडा और मैं पिछले 30 वर्षों से कहते आ रहे हैं, आप कभी जान नहीं पाएंगे कि आप कौन हैं और आपके जीवन के लिए आत्मिक

योजना में नहीं चल पाएंगे जब तक आप धन की समस्या को ठीक न कर दें।

और मैं यह भी कहना चाहता हूँ: **आप स्वतंत्र हो सकते हैं!**

इसे मैंने और कई हाज़रों लोगों ने भी साबित किया है। परमेश्वर का अनुग्रह आपकी मदद करने के लिए तैयार है। ऐसी बातें हैं जिन्हें पूरा करने के लिए आपको बुलाया गया है जिसे आप गुलाम बनकर कभी पूरा नहीं कर सकते हैं। आपको आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना होगा केवल अपने लिए और अपने परिवार के लिए ही नहीं बल्कि इसलिए कि लोग परमेश्वर के राज्य को आपके जीवन में कार्य करता हुआ देख सकें, और, ऐसे पेड़ के समान जो पके हुए फलों से भरा है, यह लोगों को राज्य की ओर आकर्षित करेगा।

**लोग उत्तरों की खोज में हैं। वह एक असली लेन-देन को ढूंढ रहे हैं। वह तीव्रता से राज्य को देखना चाहते हैं, धर्म को नहीं।**

लोग उत्तरों की खोज में हैं। वह एक असली लेन–देन को ढूंढ रहे हैं। वह तीव्रता से राज्य को देखना चाहते हैं, धर्म को नहीं।

आइए मैं आपको एक दिन एक नर्स के साथ अपनी बातचीत के बारे में बताता हूँ। वैसे, वहाँ दो नर्स थीं।

मेरी माँ 88 वर्ष की युवा स्त्री हैं और स्वस्थ हैं, लेकिन उन्हें चलने फिरने के लिए मदद की ज़रूरत होती हैं, आप कल्पना कर सकते हैं। तो, इस दिन, मुझे उन्हें डॉक्टर को दिखाने के लिए ले जाना था।

पहली बार जब मैं डॉक्टर को दिखाने के लिए गया था, तब वहाँ मेरी बात एक नर्स से हो रही थी, वह मुझसे पूछने लगी कि मैं क्या काम करता हूँ। मैंने उसे अपनी कलीसिया और अपनी वित्तीय कंपनी के बारे में बताया और यह कि हम कर्ज़ से बाहर आने में लोगों की मदद करते हैं। बस, इस बात ने उसका ध्यान आकर्षित किया। उसने मुझे बताया कि वह एक मुश्किल में थी, कर्ज़ से थक चुकी थी, और नहीं जानती थी कि कैसे वह अपना जीवन बिताएगी।

जब मैं उस दिन दूसरी बार डॉक्टर को दिखाने के लिए गया, फिर से उस नर्स से मेरी यही बातचीत हुई। जैसे वह अपनी आर्थिक स्थिति के बारे में मुझे बता रही थी, उसकी आँखों में आँसू थे।

दोस्तों, वे अनोखे नहीं थे। सम्पूर्ण अमरीका आज इसी तरह से जीवन जी रहा है।

मेरा हृदय और मेरा जुनून यह समझने में है, कि मैं जीवन जीने के बेहतर तरीके को ढूँढने में लोगों की मदद करूँ – वह है राज्य का तरीका।

जब ड्रेनडा और मैं परमेश्वर के राज्य के बारे में सीखने लगे और जो परमेश्वर

अपने राज्य के विषय में हमें सिखा रहे थे उसे लागू करने लगे, हमारा जीवन ज़बरदस्त रूप से बदलने लगा था। हम उस अनुग्रह को देखने लगे थे जिसके बारे में पौलूस ने हमारे जीवन में दिखने की बात की थी।

एक रात, मुझे अपना व्यापार शुरू करने का स्वप्न आया जिससे मैं कर्ज़ से बाहर आने में लोगों की मदद कर सकूँगा। यह अजीब है, है न? मेरा मतलब है कि एक पोस्टर वाले बच्चे की तरह जिसका पैसों से कोई लेना देना नहीं था अब कर्ज़ से बाहर आने में लोगों की मदद करने के लिए कंपनी खोल रहा है। ऐसा सिर्फ परमेश्वर कर सकता है, है न?

आप सोच रहें होंगे, "यह कैसे हुआ? कर्ज़ से बाहर आने में अन्य लोगों की मदद करने के लिए आप कर्ज़ से कैसे बाहर आए यह बात आपको कैसे पता चली?" यह एक अच्छा प्रश्न है!

एक लंबी कहानी को छोटा करते हुए, पवित्र आत्मा ने मुझे दिखाया कि इसे कैसे करते हैं।

निश्चयी, मुझे स्वाभाविक संसार में कई बातें सीखनी थीं, और मुझे ज़रूरत थी कि लोग मुझे अपनी कंपनी को संचालित करने के लिए प्रशिक्षित करें, लेकिन पवित्र आत्मा ने प्रक्रिया का मार्गदर्शन किया और अनोखे सुझाव और तरीकों से हमारी मदद की। कंपनी ने उन्नति की और इसी तरह यह हमारी आर्थिक स्वतंत्रता में सहायक हुई।

वैसे, मैं जानता हूँ कि आप यह सोच रहे हैं कि: आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के लिए हमने लोगों की मदद करने के लिए उनसे काफी पैसा लिया होगा।

नहीं। जैसा मैंने कहा, पवित्र आत्मा ने हमें बहुत अनोखे व्यापार का ढांचा दिया है, और यह इस तरह कार्य करता है:

हम अपने ग्राहकों के साथ मुफ़्त काम करते हैं। मैं ऐसे लोगों से जो अपने बिल भरने में संघर्ष कर रहे हैं उन्हें स्वतंत्र करने के लिए शुल्क कैसे ले सकता हूँ? नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता हूँ। परमेश्वर ने मुझे अपनी कंपनी की आर्थिक सहायता के लिए अलग स्रोत दिया है। ऐसा कभी न था और न कभी होगा कि कंपनी ग्राहकों से कर्ज़ मुक्त होने के लिए शुल्क की मांग करे। मेरी कंपनी की विशेषता है कि वह ग्राहकों को अपनी आय में बदलाव किए बिना सात वर्षों से कम समय में कर्ज़ मुक्त होने के लिए सुझाव बताती है, जिसमें उनका गिरवी घर भी शामिल होता है।

हम अपने ग्राहकों की सहायता से नहीं बल्कि दर्जन से अधिक संगठनों, विक्रेता, कई व्यवसायी जिन्हें हमने समाधान और हमारे ग्राहकों को फिर से बनाए गए विकल्प देने के लिए चुना है। अपने ग्राहकों को उनका परिचय देने के लिए, वे हमारी सहायता करते हैं।

उदाहरण के लिए, हमारी पुनर्गठन प्रक्रिया में, यदि मैं जानता हूँ कि कोई कंपनी XYZ मेरे ग्राहक का बीमा बिल आधा कर सकती है, तब मैं उन्हें XYZ कंपनी के बारे में बताता हूँ। मेरा ग्राहक अब XYZ कंपनी से खुद बात कर सकता है और निर्णय भी ले सकता है कि वह पुनर्गठित योजना के अनुसार XYZ के सस्ते दाम में दिलचस्पी रखता है कि नहीं।

तो, ग्राहक के लिए, सब कुछ मुफ़्त है। और मैं यकीन है कि इस बात का कंपनी की अद्भुत बढ़त में सबसे मुख्य योगदान रहा है। हमारी कंपनी के विषय अन्य जानकारी आप forwardfinancialgroup.com पर प्राप्त कर सकते हैं।

हम सुरक्षित निवेश करने में भी लोगों की मदद करते हैं। यह ऐसा ही है जैसा सुनाई देता है: रिटाइअर्मन्ट के कीमती धन को बाज़ार की गिरावट के जोखिम के बिना निवेश करें।

मैंने यह सब इसलिए बताया कि पिछले 30 वर्षो से हमने हज़ारों लोगों को देखा है, और हमने उस गड़बड़ी को देखा जिसमे कई अमरीकी फंसे हुए जी रहे हैं।

एक उद्धारण मुझे याद आता है जो कई अमरीकी लोगों के जीवन को दर्शाता है।

एक महिला ने मुझे उससे मिलने के लिए बुलाया, उसे उसके कर्ज़ के विषय में मदद चाहिए थी। मैं और मेरा संगी कार्यकरता, उससे मिलने गए, जैसे उसने अपनी परिस्थिति को समझाया मैं अविश्वसनीय हो गया था। उसके पास 32 भिन्न प्रकार के क्रेडिट कार्ड थे, सभी की सीमाएं खत्म हो गई थीं। (हाँ, आपने सही सुना – उसके पास 32 क्रेडिट कार्ड थे।)

उसने सफलतापूर्वक अपने लिए बंदीगरह तैयार कर लिया था, और वह मुझसे इससे बाहर आने का तरीका पूछ रही थी। मेरे मन में, उत्तर बहुत आसान था: क्रेडिट कार्ड का उपयोग करना बंद कर दो। यही एक अच्छी शुरुआत होगी। तो, मैंने उसे अपने कार्ड कम करने के लिए बताया और उससे अपनी आमदनी के अंदर जीवन जीने के लिए विनती की। फिर मैंने उसे एक कार्य सौंपा कि वह अपने सभी खर्चों की सूची बनाए ताकि मैं इस बारे में उसको सम्मति दे सकूँ। उसकी स्थिति बदतर न हो इसलिए मैंने उसे यह भी सलाह दी कि वह बैंक के कार्ड के बजाय डेबिट कार्ड का उपयोग करना शुरू कर दे।

मेरी सलाह पर उसने अपने कार्ड का उपयोग करना बंद कर दिया, वह तुरंत फूट–फूटकर रोने लगी और उसने मुझसे चौंका देनेवाला प्रश्न पूछा: "मैं नए जूते कैसे खरीद पाऊँगी?"

क्या मैंने सही सुना? उसके पास खाने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं थे, लेकिन वह जूतों के बारे में पूछ रही थी?

हो सकता है आप सोचें कि यह बड़ी लापरवाह महिला थी। जितने क्रेडिट कार्ड उसके पास थे उस हिसाब से, हाँ वह थी। लेकिन आर्थिक बंदीगृह में रहने के रूप में वह लापरवाह नहीं थी। अमरीका के नए आंकड़ों को देखें:

- 57% लोगों के पास बैंक खाते में $1000 नहीं हैं।
- 44% लोग अनपेक्षित बिल का भुगतान नहीं कर सकते।
- 23% अमरीकी महीने का बिल चुकाने में असमर्थ हैं इसलिए वे हर महीने और अधिक कर्ज़ में डूबते जा रहे हैं।

दोस्तों, अमरीकी वैसे ही हैं जैसा परमेश्वर ने मुझे बताया था – वे गुलाम हैं।

एक गुलाम क्या करता है इसके बारे में सोचें।

- वह अपने लिए काम नहीं करता है। हालांकि वह काम कर रहा (या रही) है और मुनाफा हो रहा है, मुनाफा हर महीने उधार देनेवालों को जाता है, जिसके कारण सिर्फ कुछ पैसा बचत है जिससे अगले महीने परिवार का गुज़ारा हो सकता है।
- गुलाम ऐसे घरों में रहते हैं जिसके वो मालिक नहीं हैं। (इसका अर्थ है उनका घर गिरवी रखा गया है।)
- वे उन गाड़ियों को चलाकर जो उनकी नहीं है, नौकरी करने जाते हैं उस घर के लिए जो उनका नहीं है।
- वे उन कपड़ों में नौकरी करने जाते हैं जो क्रेडिट कार्ड से खरीदे गए हैं, उस कार और घर के भुगतान करने के लिए जो उनका है ही नहीं, पढ़ाई करने का कर्ज़ इसमें शामिल है जो वे पिछले 20 वर्षों से भर रहे हैं।

क्या आपको अब यह बात समझ आई।

*धनी, निर्धन लोगों पर प्रभुता करता है, और उधार लेने वाला उधार देने वाले का दास होता है।*

–नीतिवचन 22:7

क्या आप जानते हैं कि अधिकतर लोगों को उनकी नौकरी पसंद नहीं है? असल में, गलोप पोल कहता है कि 85% कर्मचारी अपनी नौकरी से घृणा करते हैं। 8

फिर वह उस जगह काम क्यों करते हैं? क्योंकि वे गुलाम हैं, और गुलामों के पास कोई विकल्प नहीं होता है!

तो, क्या गुलामी से बाहर कोई रास्ता है? हाँ!

क्या आप मुझ पर विश्वास नहीं करते हैं? आइए मैं आपको बताता हूँ।

*क्योंकि इस सेवा के पूरा करने से, न केवल पवित्र लोगों की घटियां पूरी होती हैं, परन्तु लोगों की ओर से परमेश्वर का बहुत धन्यवाद होता है।*

*क्योंकि इस सेवा से प्रमाण लेकर वे परमेश्वर की महिमा प्रगट करते हैं, कि तुम मसीह के सुसमाचार को मान कर उसके आधीन रहते हो, और उन की, और सब की सहायता करने में उदारता प्रगट करते रहते हो।*

*ओर वे तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं; और इसलिये कि तुम पर परमेश्वर का बड़ा ही अनुग्रह है, तुम्हारी लालसा करते रहते हैं। परमेश्वर को उसके उस दान के लिये जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो!*

–2 कुरिन्थियों 9:12–15

आइए हम उस उत्तर पर केंद्रित रहें—यानि परमेश्वर का अनुग्रह, संपन्नता के लिए सशक्त करने वाला अनुग्रह!

आइए हम यह बात भी जान लें कि शत्रु चाहता है कि हम कर्ज़ में डूबे रहें और बाहर आने का तरीके को न जानें। इसीलिए यू.एस. में 1.1 दस खरब सक्रिय क्रेडिट कार्ड हैं। इसीलिए चार से आठ अरब क्रेडिट कार्ड ऑफर प्रति वर्ष भेजे जाते हैं।

कोई चाहता है कि आप कर्ज़ में रहें, और यह सिर्फ वह बैंक ही नहीं जो आपसे उनके क्रेडिट कार्ड लेने के लिए विनती कर रहे हैं।

शैतान जानता है कि यदि आप कर्ज़ में रहेंगे, तो आप अपने आत्मिक लक्ष्य में कभी नहीं बढ़ेंगे, जिससे वह जानता है कि उसके राज्य में बड़ी हलचल मच जाएगी।

तो मैं आपको एक मिनट के लिए फिर से दोहराता हूँ। यह पुस्तक उदारता के बारे में है, क्या यह सही है? हाँ या नहीं । हाँ, हम इसमे देने के सभी लाभों के बारे में बात

करेंगे और उदार होने के विषय में भी। लेकिन सिर्फ देना ही उत्तर नहीं है। आपको इस बात की जान कारी होनी चाहिए कि अनुग्रह और परमेश्वर की सामर्थ को कैसे स्वीकार करें।

तो, मैं फिर कहना चाहूँगा: देने का नियम खुद में, सिर्फ एक नियम है, कुंजी नहीं। यह इसका भाग ज़रूर है, लेकिन आपको और मुझे सम्पन्न होने के लिए उस अलौकिक, असाधारण सामर्थ की आवश्यकता है जिसे अनुग्रह कहते हैं।

डस्टिन और केंडाल ने इस बात की खोज की है। वे एक युवा दम्पत्ति हैं जिन्हें तब तक यह मालूम नहीं था कि उन्हें उनकी अर्थव्यवस्था में परमेश्वर के अनुग्रह की ज़रूरत है जब तक वह किसी समस्या में नहीं फंसे। उन्होंने केवल एक नए व्यवसाय के सुझाव को देखा और आगे बढ़ने के लिए सोचा। उसकी कीमत क्या थी? $150,000 और सब कर्ज़ के द्वारा ही।

उसी महीने उन्होंने व्यवसाय को खरीद लिया, आईआरएस के द्वारा उन पर $53,000 कर चुकाने का बिल बनाया गया। डस्टिन ने कहा कि वह $200,000 से भी अधिक कर्ज़ में डूब गए थे और जिससे वह बाहर नहीं या सकते थे, विशेष करके क्योंकि इस व्यवसाय को खरीदने से पहले ही उनकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी।

उन्होंने अपने अंतिम बच्चे के इलाज के लिए अस्पताल का भुगतान करने के लिए पैसे उधार लिए थे और उसी को चुका रहे थे। और उस ऑडिट ने उन्हें और बदतर स्थिति में ला दिया था, डस्टिन अन्य विकल्पों को ढूँढने लगा।

बड़ी खोज बाद, उसको एक ऐसा ऑफर $30,000 क्रेडिट के लिए, और इसकी अनुमति भी प्राप्त हो गई, और वह इस सुझाव को अपनी पत्नी के पास ले गया। उसे यह नहीं पता था कि केंडाल मेरी पुस्तक, आपकी वित्तीय क्रांति: विश्राम की सामर्थ को पढ़ रही थी, जो परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त करने के बारे में बताती है।

तो जब डस्टिन उसके पास इस कर्ज़ के सुझाव के साथ आया, केंडाल निराश हो गई, उसे यह आशा थी कि वह कर्ज़ के बजाय परमेश्वर की ओर अपने मन को करेगा। उसने उस निर्णय के विषय में उसके पति से बात करने और उसे परमेश्वर पर भरोसा करने के लिए उत्साहित किया। अनुग्रही रूप से, डस्टिन को अपनी पत्नी से बुद्धि प्राप्त हुई।

जैसे उन दोनों ने मिलकर प्रार्थना की, उन्होंने बीज बोने के विषय में पवित्र आत्मा की आवाज़ को सुना। निश्चयी, उस समय, उनके पास वो रकम नहीं थी जो परमेश्वर ने उन्हें बोने के लिए बताया था, तो उन्होंने अगले 28 दिनों तक काम किया उतने पैसों को कमाने के लिए जो परमेश्वर ने उन्हें दिखाया था।

परिणाम क्या हुआ? उनका व्यवसाय बढ़ने लगा।

अगले वर्ष तक, वे $175,000 के कर्ज़ का भुगतान कर सके, और डस्टिन ने बताया कि उसने उस वर्ष अपनी पूरे जीवन की आय से बारह गुना ज़्यादा पैसे कमाए थे!

केंडाल और डस्टिन ने यह जाना कि राज्य हमेशा कार्य करता है!

उनका उत्तर क्या था? परमेश्वर का राज्य और अनुग्रह!

आपका उत्तर क्या है? परमेश्वर का राज्य और अनुग्रह!

अध्याय 2

# उत्तर: अनुग्रह

पिछले अध्याय में, हमने सीखा कि कैसे उदारता लोगों की आत्मिकता पर प्रभावित डालती है— और कैसे यह इनके हृदय को परमेश्वर और लोगों के प्रति धन्यवादित रहने के द्वारा कोमल बनाती है। हमने यह भी देखा कि पौलूस कहता है, कि उदार होने की क्षमता हमारे जीवन में उपस्थित परमेश्वर के अनुग्रह से आती है।

> *ओर वे तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं; और इसलिये कि तुम पर परमेश्वर का बड़ा ही अनुग्रह है, तुम्हारी लालसा करते रहते हैं। परमेश्वर को उसके उस दान के लिये जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो।*
>
> –2 कुरिन्थियों 9:14–15

जब पौलूस ने समझाया कि परमेश्वर द्वारा दिया गया अनुग्रह हमारी संपन्नता के लिए है, तब हमने पौलूस द्वारा सिखाए गए शब्द 'अधिक बढ़कर' के विषय में भी बातें की। हमने यह जाना कि अनुग्रह का मतलब है किसी कार्य को पूरा करने के लिए एक असाधारण सामर्थ का होना। पौलूस परमेश्वर के अनुग्रह की इस सामर्थ को एक अद्भुत वरदान कहता है! मैं सोचता हूँ सभी इस बात से सहमत होंगे कि यदि परमेश्वर खुद उन्हें जीवन में सफल होने के लिए मदद कर रहा है, तो यह बहुत बड़ा लाभ है।

परमेश्वर उस कार्य की तीव्रता और अद्भुत सामर्थ को थामने के लिए जो वह आपके जीवन में करना चाहता है, आपकी मदद करता है, आइए वचन छह से पढ़ें।

> *परन्तु बात तो यह है, कि जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा। हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे न कुढ़ कुढ़ के, और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है। और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक*

*हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो। जेसा लिखा है, उस ने बिथराया, उस ने कंगालों को दान दिया, उसका धर्म सदा बना रहेगा।*

*सो जो बोने वाले को बीज, और भोजन के लिये रोटी देता है वह तुम्हें बीज देगा, और उसे फलवन्त करेगा; और तुम्हारे धर्म के फलों को बढ़ाएगा। कि तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिये जो हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करवाती है, धनवान किए जाओ।*

–2 कुरिन्थियों 9:6–11

अब यहाँ कुछ बातें बड़ी रोमांचक हैं!

हम देखते हैं कि वही शब्द अनुग्रह, जिसका उपयोग यहाँ हुआ है, इस पद के अलावा पौलूस सब प्रकार विशेषण को जोड़ता है ताकि पढ़नेवाला यह समझे कि परमेश्वर की सब प्रकार की सामर्थ अनुग्रह शब्द में छिपी है। पौलूस स्पष्ट रूप से यहाँ देने और लेने के विषय में बात कर रहा है और यह बताता है कि एक बार आप देते हैं, तो परमेश्वर का सब प्रकार का अनुग्रह आपकी उपज को लाने के लिए उपलब्ध है।

परमेश्वर का अनुग्रह जो सब प्रकार का है इस बात को दर्शाता है कि परमेश्वर की सामर्थ, उसकी बुद्धि, कृपादृष्टि, और उसका दर्शन अब आपके लिए उपलब्ध है कि आप उस बीज की तैयार उपज को प्राप्त कर सकें। मैं आपके बारे में तो नहीं जानता, लेकिन यह बात मुझे बहुत उत्साहित करती है!

लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि उपज अपने आप ही आ जाएगी।

यदि कोई बड़ा धनी किसान आपसे कहता है कि वह फसल को लगाने और काटने के लिए अपनी खेती की सारी सामग्री उधार देना चाहता है, जिसकी कीमत लगभग कई अरब डॉलर है, लेकिन आपको खेती के बारे में कुछ भी जानकारी नहीं, तो इससे आपको कुछ लाभ नहीं होगा।

परमेश्वर ने हमारे लिए अपनी सारी सामर्थ को उपलब्ध किया है, लेकिन फिर भी हमें कुछ योगदान देना है, जैसे एक किसान जानता है कि एक खेती में भूमि पर बीज बोने के अलावा और भी बहुत सारी बातें होती हैं।

**आप परमेश्वर के व्यवसाय को संभालें, और वह आपके कार्य को संभालेगा।**

अभी के लिए, मैं चाहता हूँ कि आप यह समझ लें कि परमेश्वर की सारी क्षमताऐं न केवल बोने के बाद फसल काटने में आपके साथ हैं बल्कि आपको कब और कहाँ बोना है इसकी जानकारी में मदद करने के लिए भी आपके साथ है। और इसके

कारण, आपके पास असीमित आर्थिक भविष्य है!!

अब, हमें एक कदम आगे बढ़कर इन वचनों के स्पष्ट प्रकाशन यानि पैसों के उद्देश्य के विषय में बातें करनी हैं।

> *परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो।*

हम देखते हैं कि पहली बात जिसका वर्णन परमेश्वर ने किया है वह यह है कि आपके पास ज़रूरत  के लिए सब कुछ हो। ध्यान दें, यह सिर्फ पैसों के बारे में नहीं है। वह कहता है सब बातों में और सब समयों में!

मैं हमेशा इसे इस प्रकार कहता हूँ, "आप परमेश्वर के व्यवसाय को संभालें, और वह आपके कार्य को संभालेगा।" तो, "सब बातों में और सब समयों में" मेरे लिए इसका मतलब है कि अर्थव्यवस्था में कुछ भी क्यों न हो, आपको कभी कमी नहीं होगी। जब परमेश्वर कहता है कि आपकी ज़रूरतें पूरी होंगी, तब वह सिर्फ काम को पूरा करने के बारे में नहीं कह रहा है।

> *और तू बहुतेरी जातियों को उधार देगा, परन्तु किसी से तुझे उधार लेना न पड़ेगा। और यहोवा तुझ को पूंछ नहीं, किन्तु सिर ही ठहराएगा, और तू नीचे नहीं, परन्तु ऊपर ही रहेगा; यदि परमेश्वर यहोवा की आज्ञाएं जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं, तू उनके मानने में मन लगाकर चौकसी करे;*
>
> –व्यवस्थविवरण 28:12ब–13

जब परमेश्वर सभी जरूरतों के पूरे होने के विषय में बात करता है, तब उनका मतलब है कर्ज़रहित होकर सम्पूर्ण आर्थिक स्वतंत्रता के स्थान में चलना, अपने कार्य में सम्पूर्ण उत्साह के साथ चलना, और भूमि की उत्तम उपज का लाभ उठाना है। इसका अर्थ है कि सिद्ध शांति और सम्पूर्ण स्वास्थ में जीना।

दूसरी बात यह है कि, आपकी ज़रूरतें पूरी होने के बाद, आप न केवल गुज़ारा कर रहे हैं बल्कि संपन्नता में जी रहे हैं।

> *आप सब प्रकार से धनी किए जाएंगे ताकि आप सब प्रकार से उदार हो जाएं।*

अंतिम परिणाम यह है कि उदार बनने के लिए, लोगों को देने और उनकी सहायता करने के लिए, और इस पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्यों में मदद करने के लिए आपके पास आर्थिक क्षमता हो।

परमेश्वर का उद्देश्य है कि वह अपना हृदय लोगों पर प्रगट करे और लोगों के हृदय को उसकी ओर मोड़ ले।

जैसा मैं हमेशा कहता हूँ, "परमेश्वर लोगों में दिलचस्पी रखता है।"

उन गलत धारणाओं के प्रति जो मैं अकसर सुनता हूँ, इनके विषय में कुछ कहना चाहूँगा।

एक दिन मैं बहुत धनी व्यक्ति से बातचीत कर रहा था, और उसने कहा, "मुझे और अधिक पैसे नहीं चाहिए; मेरे पास बहुतायत से है।"

अब, मैं जानता हूँ वे क्या कहना चाहते थे—यही कि उनकी देखभाल अच्छे से होती है, और उन्हें व्यक्तिगत रूप से और पैसों की ज़रूरत नहीं है। लेकिन असल में, उन्हें और अधिक पैसों, और बहुत सारे पैसों की ज़रूरत है।

यदि हम सिर्फ व्यक्तिगत तरीके से देखें कि पैसा हमारे लिए क्या कर सकता है, तो मुझे लगता है कि अधिक पैसों को कमाने की कोई ज़रूरत नहीं है। लेकिन यदि आप जान जाएंगे कि परमेश्वर का हृदय लोगों तक पहुंचना चाहता है और बहुतों तक जिन्होंने अब तक राज्य के उत्तम जीवन का अनुभव नहीं किया है—लेकिन यह लोग एक वास्तविक स्थान में जा रहे हैं जिसे नरक कहते हैं—तब आप जान जाएंगे कि परमेश्वर को बहुत सारे धन की आवश्यकता है!!

मैं फिर से कहूँगा, **"परमेश्वर को बहुत सारे धन की ज़रूरत है!"**

अभी काम पूरा होना बाकी है।

> *परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो।*

आपको हर एक अच्छे काम में भाग लेना है। हर एक भला कार्य राजा की ओर से किया गया कार्य है। असल में, आपको एक विशेष कार्य करना है, इफिसियों 4:7,11–12अ के अनुसार।

> *पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण से अनुग्रह मिला है। उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त*

*करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिस से पवित्र लोग सिद्ध हों जाएं, और सेवा का काम किया जाए।*

–इफिसियों 4:7,11–12अ

देखिए, कई लोग आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना चाहते हैं क्योंकि वे चूहों की दौड़ से थक गए हैं। वे शांति की खोज कर रहे हैं। और क्योंकि अधिकतर लोग नौकरी के कामों को पसंद नहीं करते हैं, वे पैसों से आने वाली स्वतंत्रता को ढूंढ रहे हैं।वे उन कामों को करने की स्वतंत्रता ढूंढ रहे हैं जो वे करना चाहते हैं न कि जिसे उन्हें करना चाहिए। उन्हें अपने जुनून का पीछा करना है और अपने जीवन के उद्देश्य को ढूँढना है।

यहाँ एक ऐसा कथन है जो धर्म शास्त्री लोगों को बेचैन कर देगा:

*आप हर तरह से धनी किए जाएंगे।*

हाँ, यह ऐसा ही कहता है। आप धनी किए जाएंगे!

अब धनी शब्द व्यक्तिपरक है, और अधिकतर हमारी संस्कृति में इसे गलत समझा गया है। हम यह नहीं कह सकते हैं कि ऐसा व्यक्ति जिसके पास एक अरब डॉलर है वह $100,000 वाले व्यक्ति से अधिक खुश है। नहीं, अलग–अलग लोगों के लिए "धनी" होने का अर्थ भिन्न प्रकार का है। लेकिन, निश्चयी, यह बताता है कि हमारी सारी ज़रूरतें पूरी होगी, हम कर्ज़–मुक्त होंगे, और भूमि की उत्तम उपज का आनंद लेंगे।

*यदि तुम आज्ञाकारी हो कर मेरी मानो, तो इस देश के उत्तम से उत्तम पदार्थ खाओगे*

–यशायाह 1:19–20अ

धनी होना केवल पैसों के बारे में नहीं है। इसमें नाती–पोतों के साथ खेलना, अपनी पत्नी के हाथों को थामना, और जीवन की कई सारी खूबसूरत बातें हैं। ड्रेनडा और मेरे पास पाँच अच्छे बच्चे हैं, सभी परमेश्वर से प्रेम करते हैं और एक तरह से सेवकाई में भी कार्य करते हैं। हम सभी एक दूसरे के करीब रहते हैं, और, विशेष करके, हम एक दूसरे के साथ घूमना पसंद करते हैं। मैं इसे धनी होना कहता हूँ!

**परमेश्वर चाहता है कि संसार में उसके कार्य को करने के लिए आपके पास पर्याप्त प्रबंध होना चाहिए।**

आप देखेंगे कि धर्म शास्त्री अधिक पैसों की प्राप्ति को लालच कहते हैं। लेकिन यदि आप परमेश्वर के साथ लोगों की सेवा में हैं तो आपके पास बहुत ज्यादा पैसें नहीं हो सकते हैं। हमेशा कोई नए कार्य या नई सीमाओं को थामना होता है।

तो मैं फिर से कहूँगा, परमेश्वर चाहता है कि संसार में उसके कार्य को करने के लिए आपके पास पर्याप्त प्रबंध होना चाहिए।

परमेश्वर चाहता है कि आप उसके लिए उदार हो जाएं, लोगों की सहायता करें, और उसके कार्यों में आर्थिक समर्थन करें। यदि हर अवसर पर आप उदार होना चाहते हैं तो आपके पास हमेशा कुछ पैसे होने चाहिए।

मेरा मतलब है, हर अवसर हर दिन या एक दिन में कई बार भी हो सकता है। ईमानदारी से, इसे करने के लिए, आप महीने से महीने के खर्च तक नहीं रहेंगे, आपके पास बिल के भुगतानों से अधिक पैसे होने चाहिए, और ज़्यादा होने चाहिए! मुझे लगता है सभी इस बात से सहमत होंगे।

लेकिन, आइए हम उस मुद्दे पर आएं जहां सड़क से पहिये मिलते हैं, जब हम उदार होने और सामान्य रूप से देने के विषय में बात करते हैं:

जब आप देते हैं तब आपको डर का सामना करना होगा।

मैं यह नहीं कह रहा कि आपको डर को सहना होगा। मैंने कहा जब आप देते हैं तब आपको डर के साथ व्यवहार करना होगा। और डर का सामना करने का सबसे उत्तम तरीका है सच्चाई!

तो देने का डर क्या है? सरल रूप से, यह ऐसा है कि मेरे लिए पर्याप्त नहीं बचेगा, है न?

आप सोचेंगे,कि मुझे उन पैसों की ज़रूरत है। लेकिन परमेश्वर को भी इसकी ज़रूरत है। और परमेश्वर वापिस लौटाने के वादे के बिना, निवेश के लाभ के बिना आपसे कभी आपका धन नहीं मांगेंगे, क्या वह कभी आपसे इस तरह मांगेगे? मैं सोचता हूँ कि इस वचन में वह बहुत स्पष्टता से समझाता है:

> *दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा: लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे,*
>
> –लूका 6:38अ

परमेश्वर अधिक समय आपको क्या करना है यह निर्देश देने के बजाय आपको उनके राज्य में सहायता करने के फ़ायदों के बारे में समझाने में बिताता है। वह आसानी से एक शब्द में कहता है, "दो", लेकिन उसके लाभ को समझाने में 23 शब्दों का

उपयोग करता है। मुझे लगता है ऐसे किसी भी अनुबंध पर हस्ताक्षण करने के लिए मैं तैयार हूँ!

ध्यान रखें कि आप अच्छा जीवन जीएं, इसमें परमेश्वर का निहित स्वार्थ है। इस बारे में सोचें: परमेश्वर को अपनी कार्यसूची को पूरा करने के लिए धन कहाँ मिलेगा?

निश्चयी, धन आप से, मुझसे, और कई अन्य संगी विश्वासियों से आएगा। शैतान के लोग परमेश्वर के कार्यो के लिए आर्थिक सहायता नहीं देंगे।

दुखद बात यह है कि, अधिकतम विश्वासी यह कहते हैं कि देने पर परमेश्वर से वापिस पाने की उम्मीद मत करो। वे विश्वास करते हैं कि परमेश्वर को देना और उनसे वापिस पाने की अपेक्षा करना लालच पर आधारित है और यह परमेश्वर की सच्ची आराधना को घटाता है।

क्या आप मानते हैं कि एक किसान यह विश्वास करने में असमर्थ है कि उसके बोने से आने वाली उपज, उसके और उसके परिवार के लिए लाभदायक होगी? वह सिर्फ उस नियम का उपयोग करता है जो परमेश्वर ने उसे दिया है।

परमेश्वर हमें सम्पन्न होता देखकर आनंदित होता है। उसने हमें बोने और काटने का नियम हमारे लाभ के लिए दिया है। समय के आरंभ से, शैतान कलीसिया से पैसों को देने के विषय में झूठ कहता आया है। कुछ संस्थाएं गरीबी की शपथ लेने में महान बात समझते हैं, यह नहीं जानते हुए कि वे सीधा शैतान के झूठ में फंस रहे हैं। यीशु को अपनी सेवकाई के दौरान कई बार इस व्यवहार का सामना करना पड़ा था। वास्तव में, यीशु ने इस समस्या के लिए अपना सबसे प्रसिद्ध दृष्टांत बताया, सामरी स्त्री का दृष्टांत।

*और देखो, एक व्यवस्थापक उठा; और यह कहकर, उस की परीक्षा करने लगा; कि हे गुरू, अनन्त जीवन का वारिस होने के लिये मैं क्या करूं?*

*उस ने उस से कहा; कि व्यवस्था में क्या लिखा है तू कैसे पढ़ता है?*

*उस ने उत्तर दिया, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।*

*उस ने उस से कहा, तू ने ठीक उत्तर दिया है, यही कर: तो तू जीवित रहेगा।*

*परन्तु उस ने अपनी तईं धर्मी ठहराने की इच्छा से यीशु से पूछा, तो मेरा पड़ोसी कौन है?*

*यीशु ने उत्तर दिया; कि एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को जा रहा*

*था, कि डाकुओं ने घेरकर उसके कपड़े उतार लिए, और मार पीट कर उसे अधमूआ छोड़कर चले गए। और ऐसा हुआ; कि उसी मार्ग से एक याजक जा रहा था: परन्तु उसे देख के कतरा कर चला गया। इसी रीति से एक लेवी उस जगह पर आया, वह भी उसे देख के कतरा कर चला गया। परन्तु एक सामरी यात्री वहां आ निकला, और उसे देखकर तरस खाया। और उसके पास आकर और उसके घावों पर तेल और दाखरस डालकर पट्टियां बान्धी, और अपनी सवारी पर चढ़ाकर सराय में ले गया, और उस की सेवा टहल की। दूसरे दिन उस ने दो दिनार निकालकर भटियारे को दिए, और कहा; इस की सेवा टहल करना, और जो कुछ तेरा और लगेगा, वह मैं लौटने पर तुझे भर दूंगा।*

*अब तेरी समझ में जो डाकुओं में घिर गया था, इन तीनों में से उसका पड़ोसी कौन ठहरा?*

*उस ने कहा, वही जिस ने उस पर तरस खाया:*

*यीशु ने उस से कहा, जा, तू भी ऐसा ही कर।*

–लूका 10:25–37

मुझे लगता है कि हम सबने इस कहानी को सुना है यह सीखते हुए कि: यदि परमेश्वर मार्ग में चलते हुए इस व्यक्ति को देखते तो क्या करते? हम जानते हैं कि वह उसे मार्ग के किनारे मरने के लिए नहीं छोड़ते।

अधिकतर बच्चों को संडे स्कूल में इस कहानी से सिखाया जाता है कि एक अच्छा पड़ोसी बनें। लोगों का ध्यान रखें। लोगों का ध्यान रखना, परमेश्वर के हृदय को दर्शाना है, और मैं कह सकता हूँ कि मैं इस बात से सौ प्रतिशत सहमत हूँ। हालांकि, इससे अधिक और भी कुछ है।

इस व्यवस्था के शिक्षक के प्रति यीशु की फटकार को सच में समझने के लिए, आपको आज के सामाजिक वातावरण को समझने की ज़रूरत है। यहूदी सामरियों को तुच्छ जानते थे और उन्हें अशुद्ध और सांसारिक समझते थे। इसी कारण, यहूदी खुद को परमेश्वर की दृष्टि में सामारियों से अधिक इस स्तर तक पवित्र और धार्मिक मानते थे कि वे उनसे संगति करना भी ठीक नहीं समझते थे। तो यीशु की कहानी व्यवस्था के इस शिक्षक के गाल पर एक थप्पड़ के समान है, उसके घमंडी रवैये के लिए एक फटकार है। मुझे लगता है हम सब इस बात को समझ गए हैं।

लेकिन एक भाग जो मैंने कभी बताते हुए नहीं सुना, संडे स्कूल में भी कभी सिखाया नहीं गया, वह है दो चांदी के सिक्कों की कहानी। यीशु ने दो चांदी के सिक्कों के विषय में क्यों बातें की, जब उन्होंने शास्त्री की सामरियों के प्रति गलत मानसा की

बात को स्पष्ट कर दिया था। आइए इसे देखते हैं।

> *और अपनी सवारी पर चढ़ाकर सराय में ले गया, और उस की सेवा टहल की। दूसरे दिन उस ने दो दिनार निकालकर भटियारे को दिए और कहा; इस की सेवा टहल करना, और जो कुछ तेरा और लगेगा, वह मैं लौटने पर तुझे भर दूंगा।*
>
> –लूका 10:34अ–35

इस कहानी में यीशु सिखा रहा था, हम देख सकते हैं कि यह उस कार्य की परछाई है जो वह हमारे लिए करने जा रहा था। हम मानवजाति को शैतान द्वारा पीटा गया और घायल किया हुआ देखते हैं। हम जानते हैं कि तेल और दाखरस भविष्यवाणी के रूप में पवित्र आत्मा और लहू की वाचा को दर्शाता है जो यीशु उन सभी को देगा जो उसके पास आते हैं। और हम इस कहानी में देखते हैं, तेल और दाखरस लगाने के बाद, सामरी एक कदम आगे बढ़कर इस घायल व्यक्ति को ठीक होने के लिए सराय में ले जाता है। उस सामरी को पता है कि इस व्यक्ति को ठीक होने में समय लगेगा, और वह उसे ठीक होने के लिए एक सुरक्षित स्थान में ले जाता है और सारा भुगतान करता है।

मैं विश्वास करता हूँ कि वह सराया एक स्थानीय कलीसिया है। जो जीवन के मार्ग में घायल किए गए और मारे गए हैं यीशु उन लोगों को इसी स्थान पर लाता है। वे फिर से नया जन्म पाते हैं, लहू की वाचा से पापों के छुटकारे को प्राप्त करते हैं और पवित्र आत्मा द्वारा जीवित हो जाते हैं, फिर भी वे अपने साथ पृथ्वी पर श्राप की प्रणाली के अनुसार दर्द और कलंक को लिए चलते हैं। उन्हें चंगा होने के लिए और नई रीति से जीना सीखने के लिए थोड़ा समय लग जाएगा। यीशु उन्हें स्थानीय कलीसिया में स्थापित करते हैं और एक रखवाले की अधीनता में, जो स्थानीय पासवान होता है, जो उनकी प्रगति पर निगरानी रखता है।

लेकिन, हम कलीसिया में भी उस शास्त्री के स्वभाव को पाते हैं। लोग सराय में मदद करना नहीं चाहते हैं। उन लोगों की तरह जो घायल व्यक्ति को देखकर चले गए, उन्होंने उसकी समस्या को किसी और की समस्या के रूप में देखा था। वह क्यों इसमें शामिल हो? केवल समय और पैसों के खर्च के अलावा उन्हें क्या लाभ था?

इस स्वभाव के कारण, पासवान अकसर लोगों से छोटे शिशुओं के समान छोटे दलों की अगुवाई करने के लिए विनती करते हैं। लेकिन ऐसा लगता है कि लोग अपने कामों को करने में व्यस्त हैं और उनके लिए समर्पण करना कठिन है। धर्म खुद कोई प्रोत्साहन नहीं देता, केवल कर्तव्य और नियम देता है। धर्म लोगों को दोषी महसूस

कराता है और कहलाता है कि, "तुम इस बात के लिए परमेश्वर के कर्जदार हो, तुम ही इसका ध्यान रखो, और देखो परमेश्वर ने तुम्हारे लिए क्या किया है।" और मैं इस बात से सहमत हूँ, कि हमारे अंदर हमेशा परमेश्वर के प्रति इच्छुक और धन्यवादित हृदय होना चाहिए और दूसरों की मदद करने की इच्छा होनी चाहिए, लेकिन परमेश्वर "तुम मेरे कर्ज़दार हो" इस प्रणाली से काम नहीं करता है। वह कहता है, "मैं सभी खर्चो के लिए तुम्हें दो सिक्के देता हूँ और जब मैं वापिस लौटूँगा तो **सारा भुगतान** कर दूंगा।"

अब जो धर्म की मानसिकता के लोग हैं वे इस वाक्य को ऐसे समझेंगे कि जब हम स्वर्ग जाएंगे, यीशु हमारे कामों के लिए जो हमने पृथ्वी पर उसके राज्य के लिए किया है, प्रतिफल देगा। नहीं, जब यीशु इस कहानी को सुना रहा था, वह बता रहा था कि जिस समय व्यवसायी अपने नगर की ओर यात्रा करके वापिस जाएगा। यीशु उस सराय के रखवाले की वास्तविक आर्थिक मदद के विषय में बात कर रहा था। लेकिन लोग अब यह कहेंगे, "बढ़िया, परमेश्वर उस व्यक्ति का ध्यान रखते हुए सराय का भुगतान भी करेगा लेकिन यहाँ मेरे पास अपने घर के कई खर्चे हैं। मैं अपने समय और पैसों को खर्च करने में योगदान नहीं दे सकता हूँ। इस कार्य में शामिल होकर उसमें खर्च हुए पैसों का भुगतान वापिस प्राप्त करने की मानसिकता, लोगों को किसी भी रीति से प्रेरित नहीं करती है। इससे मदद मिलती है, लेकिन उन लोगों के लिए जो यह सेवा करते हैं यह मदद परमेश्वर के प्रेम को नहीं दर्शाती है।

हाँ, मैं जानता हूँ आप यह कहेंगे: "हमें सराय में लोगों की मदद सिर्फ परमेश्वर के प्रेम में करना है।" हाँ, आप इसे अपने पासवान के प्रति वफादारी और परमेश्वर के प्रति आपके प्रेम और कर्तव्य में भी कर सकते हैं, और कभी कभी यह ज़रूरी होता है.... लेकिन परमेश्वर चाहते हैं कि आप "सराय में काम करने के लिए" *उत्साहित* हो जाएं।

और यही मुद्दा है—हम **परमेश्वर के लिए** काम नहीं करते हैं बल्कि, **परमेश्वर के साथ** करते हैं। परमेश्वर, खुद पौलूस के द्वारा कहता है कि:

> *कौन कभी अपनी गिरह से खाकर सिपाही का काम करता है? कौन दाख की बारी लगाकर उसका फल नहीं खाता? कौन भेड़ों की रखवाली करके उन का दूध नहीं पीता? क्या मैं ये बातें मनुष्य ही की रीति पर बोलता हूं? क्या व्यवस्था भी यही नहीं कहती? क्योंकि मूसा की व्यवस्था में लिखा है कि दावने में चलते हुए बैल का मुंह न बान्धना: क्या परमेश्वर बैलों ही की चिन्ता करता है? या विशेष करके हमारे लिये कहता है। हां, हमारे लिये ही लिखा गया,*

*क्योंकि उचित है, कि जोतने वाला आशा से जोते, और दावने वाला भागी होने की आशा से दावनी करे।*

–1 कुरिन्थियों 9:7–10

परमेश्वर यह नहीं चाहता है कि आप उसकी सेवा डर से या मात्र कर्तव्य के रूप में करे। ध्यान दें कि उन्होंने क्या कहा, *"कि जोतने वाला आशा से जोते और दावने वाला भागी होने की आशा से दावनी करे।"* परमेश्वर को केवल आपके कार्य के परिणाम यानि कटनी ही की चिंता नहीं है। वह उनकी भी चिंता करता है जो उसके साथ काम कर रहे हैं, और वह चाहता है कि वे भी उस कटनी के आनंद में भागीदार हो, जैसा वह भी है।

यीशु ने इस कहानी में सराय के रखवाले को बहुत महत्वपूर्ण कारण के लिए चुना है। हम जानते हैं कि सराय का रखवाला एक व्यवसाय को नियंत्रित कर रहा है। उसे अपने मालिक और कर्मचारियों को देने के लिए प्रतिदिन के दाम को इकट्ठा करना है। लेकिन इस सराय को चलाने के लिए आवश्यक खर्चों के अलावा वह उसमें लाभ को भी पाता है। हाँ, लाभ।

हर बार जब सराय का रखवाला अपने अतिथि से रात में रुकने के लिए किराया लेता है, वह लाभ कमाता है। इस वजह से, सराय के रखवाले का दृष्टिकोण, उस घायल व्यक्ति के प्रति एकदम अलग था। उस व्यक्ति का ख्याल रखने के लिए उसको कोई कीमत चुकानी नहीं है, क्योंकि यात्री ने उसे पूरा भुगतान करने का वादा किया है। लेकिन सराय का रखवाला एक हकीकत को जानता था जिसकी वजह से बिना कुड़कुड़ाए, वह उस व्यक्ति की मदद करता है। वास्तव में, वह अपने आप को उस स्थान में देखकर इसे एक अवसर समझता है।

सराय का रखवाला इस बात को समझता है कि जितनी रातें वह व्यक्ति उस स्थान में सोएगा, उसे लाभ प्राप्त होता रहेगा, और उस व्यवसायी द्वारा दी गई एक खुली चेकबुक के साथ, वह और ज़्यादा खुश हो जाता है। मैं केवल कल्पना कर सकता हूँ कि उस रखवाले ने यात्रा में जाने से पहले उस व्यवसायी से क्या कहा होगा: "सुनो, यदि तुम्हें और कोई दिखे जिसे मार्ग में मदद की ज़रूरत हो, तो उन्हें यहाँ ले आना। जिसे

**दुखद रूप से, वे परमेश्वर के हृदय को नहीं जानते हैं, कि वह लोगों तक पहुँचने के लिए वह सारा भुगतान करना चाहता है, और वह हमेशा हमारे निवेश से ज़्यादा ही देता है। हमेशा।**

तुम लाओगे उन सबको मैं स्वीकार करूंगा, और यदि जगह कम पड़े तो और कमरे इसमें जोड़ दूंगा!"

जैसा आप देख सकते हैं, यीशु इस समय क्या करते इससे अधिक इस कहानी में और भी कई बातें है। यीशु परमेश्वर और सामारियों के प्रति धर्म शास्त्रियों की उस मानसिकता को, सही कर रहा था। वह उसे यह भी बताना चाहता था कि वह उस अद्भुत अवसर को भी खो रहा था जिसे उस सामरी ने प्राप्त कर लिया था – यानि लाभ!

मैं हमेशा इस बात से दुखी होता हूँ जब लोग कहते हैं कि परमेश्वर अच्छे लोगों के साथ बुरा करता है, या फिर जब मैं देखता हूँ कि लोग परमेश्वर की सेवा सिर्फ एक कर्तव्य के समान कर रहे हैं, उस रोमांचक जीवन के बजाय जो इस कार्य से उन्हें प्राप्त होगा। शैतान ने परमेश्वर के लोगों से परमेश्वर की भलाई को छिपाया है ताकि वे इच्छापूर्वक सम्पूर्ण हृदय से उसकी सेवा न करें।

अधिकतर लोगों के लिए, कलीसिया सिर्फ एक अन्य कार्यक्रम है, यह समझने के बजाय कि वह खुद एक कलीसिया हैं, एक ऐसा सराय जहां परमेश्वर लोगों को स्वस्थ होने के लिए भेजते हैं। दुखद रूप से, वे परमेश्वर के हृदय को नहीं जानते हैं, कि वह लोगों तक पहुँचने के लिए वह सारा भुगतान करना चाहता है, और वह हमेशा हमारे निवेश से ज़्यादा ही देता है। हमेशा।

कई वर्ष पहले मुझे याद है कि मैं ड्रेनडा के भाई के साथ इस मुद्दे पर चर्चा कर रहा था ––– कि परमेश्वर भला है और प्रतिफल देता है, और उसने हमारी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए हमें उसका राज्य दिया है। राज्य की यह समझ, जॉनी और उसकी पत्नी कैंडी के लिए नई बात थी, क्योंकि वह एक परंपराओं की कलीसिया से आए थे जहां सच्चाई की बातें कम सिखाई जाती हैं।

जॉनी और कैंडी दोनों जॉर्जिया विद्यालय प्रणाली में शिक्षक थे, और पढ़ाने के साथ साथ, जॉनी दिन के बाकी समय मेरी वित्तीय कंपनी में काम भी करता था, फॉरवर्ड फाइनैन्शल ग्रुप। ऐसा लग रहा था जैसे जॉनी स्वाभाविक रूप से व्यवसायी है। जब कंपनी में उसका पहला वर्ष था, उसने पढ़ाई से अधिक समय व्यवसाय में दिया, फिर उसने शिक्षक का काम छोड़कर पूरे समय के व्यवसाय में जाने का निर्णय लिया था।

शुरुआत में, जॉनी ने बहुत अच्छे से काम किया था। लेकिन उसी वर्ष के अंत में, मैंने देखा कि उसके काम की गति धीमी हो गई थी, और मैं समझ गया था कि अब वह इस काम पर लंबे समय तक बना नहीं रहेगा।

ड्रेनडा और मैंने क्रिसमस के ऋतु में जॉर्जिया जाने की योजना बनाई थी, और मेरा इरादा पूरे रूप से यही था कि मैं जॉनी के साथ कुछ समय बिताऊँ, जिससे मैं उसके

व्यवसाय में सफल न होने के कारणों की जांच कर सकूँ। इससे पहले कि मैं जॉनी को कॉल करता, उसने मुझे कॉल किया और मुझसे व्यवसाय से संबंधित बात को समाप्त करने के लिए विनती की। निश्चयी, मैं इसे करने के लिए तैयार था।

मैं बता सकता हूँ कि जॉनी और कैंडी डरे हुए थे। उनके पास इस महीने के बिल लगभग $5,000 के थे, और अगले महीने के $5,000 के लिए उनके पास पैसों का कोई प्रबंध नहीं था। मैं जॉनी के साथ बैठ गया और उसके शब्द यह थे, "कुछ भी ठीक नहीं हो रहा है।" मुझे मालूम था कि राज्य की समझ जॉनी और कैंडी के लिए एक नई बात थी, और मुझे ऐसा लगा कि उन्हें मेरे द्वारा प्रशिक्षण की ज़रूरत है कि आत्मिक रूप से इस पर कैसे नियंत्रण करें। क्योंकि मैं जानता था कि राज्य हमेशा कार्य करता है! तो मैंने उनके साथ दो घंटे बिताए यह समझाते हुए कि राज्य के नियम क्या हैं और अपने विश्वास को कैसे कार्य में लाया जा सकता है। जैसा मैंने बताया, मुझे महसूस हो रहा था कि डर जा रहा है और विश्वास बढ़ रहा है। मुझे मालूम था कि जॉनी अगले कदम को बढ़ाने के लिए तैयार था।

"जॉनी" मैंने कहा, "तुम्हें परमेश्वर के साथ एक बीज को बोने की ज़रूरत है और जो धन तुम्हें चाहिए उसके लिए विश्वास करने की ज़रूरत है।"

जॉनी और कैंडी इस पर सहमत हुए, लेकिन उनके पास कोई पैसे नहीं थे। और ऐसा हुआ कि मैं जॉनी के लिए कार्यस्थल से अपने साथ एक $160 का पेचेक लाया था। मैं जानता था कि उन्हें उन पैसों की आवश्यकता होगी, लेकिन मैंने उन्हें उत्साहित किया कि भुगतान करने के बजाय इसे बीज के रूप में बो दिया जाए क्योंकि हम जानते हैं कि $160 से हम $5,000 के बिल को नहीं भर सकते, उन्हें आने वाले $5,000 के लिए भी आवश्यकता थी। इस बात पर वे सहमत हो गए।

जैसे हम संग मिलकर प्रार्थना करके विश्वास करने जा रहे थे, मैंने जॉनी से पूछा,"जैसे तुम इस धन को बो रहे हो तुम क्या पाने की आशा रखते हो?" जैसे ही शब्द मेरे मुख से निकले, पवित्र आत्मा ने मुझसे कहा, "उससे पूछो अगर 30 दिनों में $12,000 पर्याप्त होंगे।"

तो मैंने वैसे ही किया। मैंने उसे उत्तर देने से रोका और उससे पूछा यदि 30 दिनों में $12,000 पर्याप्त होंगे। जैसे ही मैंने प्रभु द्वारा बताई गई रकम बताई उसकी आँखें बड़ी हो गई थीं। मैं जानता था कि जॉनी ने अपने जीवन भर में 30 दिनों में $12,000 नहीं कमाए थे। वह कुछ समय तक चुप चाप बैठ गया और फिर उसने कहा, हाँ, उसे मेरे साथ इस पर विश्वास था। मैंने कैंडी से भी यही प्रश्न पूछा, और उसने भी हाँ ही कहा था। हमने एक साथ हाथ थामकर इसे चेक पर रखा, और 30 दिनों में $12,000 पर विश्वास किया।

तीन सप्ताह बाद, मुझे जॉनी से एक कॉल आया। वह तो बहुत उत्साहित लग रहा था। उसने पिछले 3 सप्ताहों में इतना व्यवसाय किया कि न केवल $12,000 बल्कि $17,000 आ गए थे। उसने कहा अब वह सच में एक विश्वासी बन गया है।

दुखद रूप से, दो महीनों के बाद, एक बरसाती रात में जब जॉनी घर जा रहा था तभी उसने अपनी गाड़ी पर नियंत्रण खो दिया था। गाड़ी खतरनाक तरीके से टकराई लेकिन जॉनी जीवित बच गया था, यह अपने आप में परमेश्वर का एक महान कार्य था। हालांकि, दुर्घटना के कारण, जॉनी स्वस्थ होने तक काम नहीं कर सकता था। उस समय में, उसका घर मोचन– निषेध में चला गया और शेरिफ़ बिक्री में डाल दिया गया था। उसे अपने घर को उस बिक्री से छुड़ाने के लिए $10,000 की आवश्यकता थी।

उस समय में, जॉनी और कैंडी ने निर्णय लिया कि वे ओहीओ में रहेंगे ताकि उस राज्य के विषय में और अधिक सीखें जिसने उनके जीवन को बदल दिया था। तो, उन्होंने सूचीबद्ध किया, हालांकि वे जानते थे कि शेरिफ़ बिक्री से पहले उनके पास सिर्फ एक महीने का समय था।

जैसे वह दिन निकट आने लगा, कोई असली खरीदार नहीं आया था बिक्री के कुछ दिन पहले एक व्यक्ति ने उस घर को खरीदने की इच्छा जताई थी। लेकिन उसने एक विनती की। उसे पूछना था कि क्या वह इस समय जॉनी को $10,000 देकर घर की बिक्री को रोक सकता है, और बाकि भुगतान कुछ व्यवसाय का कार्य पूरा होने के बाद कर देगा।

जॉनी अचंभित था। उसे मालूम था कि अगर वह अपने घर को शेरिफ़ की बिक्री से छुड़ाना होगा, तो उसे नकद खरीदार चाहिए होगा क्योंकि बिक्री सिर्फ कुछ दिन बाद थी। खरीदार जॉनी को उसी समय $10,000 का चेक लिखकर देने वाला था कि आगे पूरा भुगतान कर सके। यह वही रकम थी जिसकी जॉनी को ज़रूरत थी। जॉनी जानता था कि इसका कारण परमेश्वर है, उसने $10,000 के चेक को लिया, और घर का वर्तमान भुगतान किया। ओ, और वह $10,000 सूची में सबसे महत्वपूर्ण रकम थी।

तो जॉनी और कैंडी ओहीओ में एक किराए के घर में रहने लगे। वे फेथ लाइफ चर्च में शामिल हो गए, और एक नई ऊर्जा के साथ जॉनी आर्थिक व्यवसाय में छलांग लगाने लगा। लेकिन अब उनके पास एक नई समस्या थी। उनके पास केवल एक कार थी, और जॉनी सप्ताह के दौरान उसके दफ्तर की सभाओं में ग्राहकों से मिलने के लिए उसी का उपयोग करता था। हालांकि, उन्हें मालूम था कि उन्हें इसके विषय में क्या करना था। उन्होंने मरकुस 11:24 के अनुसार नई गाड़ी के लिए बीज को बोया और प्रार्थना करके विश्वास किया।

तब सबसे असामान्य बात हुई। जॉनी के एक बचपन के दोस्त ने उसे कॉल किया..

"जॉनी, क्या मैंने तुम्हें कभी साइकिल के पैसे वापिस किए थे जो छटी कक्ष में तुमने मुझे दी थी?" उसने पूछा।

"नहीं", जॉनी ने कहा।

तब उसके दोस्त ने पूछा, "मैं इसी समय तुम्हारा भुगतान कर दूंगा। मैं तुम्हारे लिए एक बीएमडब्ल्यू खरीदने जा रहा हूँ।"

बचपन में, यह दोनों लड़के हमेशा गाड़ियों के बारे में बात करते थे, और उसे मालूम था कि जॉनी को हमेशा बीएमडब्ल्यू चाहिए थी। यह दोस्त अपने शब्दों पर कायम रहा और जॉनी को एक बीएमडब्ल्यू खरीदने के लिए पैसे दे दिए। लेकिन जैसे ही जॉनी को पैसे मिले, उसने जाना कि बढ़ते हुए परिवार के साथ, एक बीएमडब्ल्यू गाड़ी का होना उसकी ज़रूरत नहीं थी। उसने और कैंडी ने निर्णय लिया कि कैंडी के लिए एक पारिवारिक एसयूवी गाड़ी और जॉनी के व्यवसाय के लिए एक छोटी गाड़ी लेंगे क्योंकि कैंडी की छोटी गाड़ी जो वे चला रहे थे वह पुरानी हो गई थी और उसमें काफी खराबी थी। तो ऐसा ही हुआ।

मुझे वह रात याद है जब जॉनी ने मुझे कॉल किया था। वह मार्ग पर अपनी नई गाड़ी के साथ खड़ी नई एसयूवी में बैठा था और रोते हुए मुझे बता रहा था कि जीवन में पहली बार उसके पास दो गाड़ियां थी जिनका भुगतान कर दिया गया था और इस बात से वह आश्चर्यचकित था।

जॉनी एक नया व्यक्ति बन गया था। वह जानता था कि परमेश्वर कुछ भी कर सकता है।

एक दिन वह मेरे दफ्तर के पास आया और उसने बताया कि वह घर का किराया देते देते थक गया था, यह कि वह और कैंडी ज़मीन के साथ खेत भी चाहते थे और वह इसकी तलाश में थे। मैं जानता था कि नुकसान के कारण जॉनी के पास काफी धन नहीं था और मैंने उसे कुछ और समय किराए पर गुज़ारने के लिए सलाह दी जिससे वह अपनी कमाई बढ़ाकर कुछ पैसें जमा कर सके। लेकिन जॉनी ने मेरी बातों पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया था।

उसने मुझे बताया कि सड़क के उस पार उसने एक खेत की ज़मीन देखी है जो बिक्री के लिए तैयार है, और वह खरीदने से पहले उसे देखने जा रहा था। उस समय क्योंकि मैं एक ऋण कंपनी का मालिक था, मैं जानता था कि जॉनी किसी भी तरह से उस खेत को खरीदने के लिए सशक्त नहीं था। मैं यह भी जानता था कि उसके पास डाउन पेमेंट के लिए नकद पैसे भी नहीं थे।

मैं एक सप्ताह के बाद आश्चर्यचकित हो गया जब वह मेरे दफ्तर में हस्ते हुए आया

और उसने बताया कि वह खेत अब उनका हो गया था। जब उसने मुझे बताया, तब मैं जान गया था कि मुझे यही कहानी को सुनना था। निश्चयी, उसने और कैंडी ने परमेश्वर के कार्य में बीज को बोया था क्योंकि उन्हें सिखाया गया था कि जब तुम प्रार्थना करो तो विश्वास करो कि तुमने प्राप्त कर लिया है। फिर जॉनी वह सारी बातें मुझे विस्तार से बताने लगा।

ज़मीन खरीदने के लिए वह अपने बैंक में गया था, मैनेजर ने उसकी क्रेडिट रिपोर्ट निकाली और उसके साथ बैठकर बातचीत करते हुए कहा, "जॉनी तुम अपने क्रेडिट के बारे में सही कह रहे थे, तुम किसी भी चीज़ को खरीदने के लिए योग्य नहीं हो।"

लेकिन फिर मैनेजर ने कुछ अजीब बात कही। उसने क्रेडिट फाइल को अलग रखकर कहा, "लेकिन मैं तुम्हें पसंद करता हूँ। मैं देखता हूँ कि मैं क्या कर सकता हूँ।"

लंबी कहानी को संक्षिप्त करते हुए, बैंक ने 100% वित्त का प्रबंध किया, और उस समय उस पर जो लगाम थी उसका भुगतान करने के लिए उसे चार महीने दिए गए थे, वह अंदर जाकर रहने लगा, प्रोपेन टैंक को भरा, संपत्ति कर चुकाया, और और जॉनी को $5,000 सामने के बरामदे के दीवार की दरारों को ठीक करने के लिए $5,000 का चेक दिया था।

जैसे जॉनी राज्य के बारे में और अधिक बताता गया मैं आश्चर्यचकित रूप से सुनता रहा। "वाह!" मैं बस यही कह रहा था।

एक महीने बाद, जॉनी ने मुझे बताया कि उसने एक फोर्ड ट्रैक्टर के लिए बीज को बोया है। उसने बताया कि उसके नए खेत में उसे एक ट्रैक्टर की ज़रूरत थी और उसने विशेष करके ब्लू डीज़ल फोर्ड ट्रैक्टर के लिए बीज को बोया था। फिर से, क्योंकि वह मेरे लिए काम करता था, और ट्रैक्टर की कीमत मालूम होते हुए, मैं जानता था कि उसके पास पर्याप्त पैसे नहीं हैं।

लेकिन निश्चय रूप से, कुछ सप्ताह बाद मैंने जॉनी को सड़क के उस पार ब्लू फोर्ड डीज़ल ट्रैक्टर घर की ओर चलाते हुए देखा। जब मैंने उससे पूछा कि उसे यह ट्रैक्टर कब और कैसे प्राप्त हुआ, उसने बताया कि कलिसिया में एक स्त्री ने अचानक उसके पास आकार उससे पूछा कि क्या वह किसी को जानता है जिसे एक ट्रैक्टर की ज़रूरत है। वे उसके माता–पिता के खेत को बेच रहे थे और उन्हें इस ट्रैक्टर को भी बेचना था। तो जॉनी ने बताया कि उसे इसकी ज़रूरत थी।

हालांकि उस स्त्री ने जॉनी से कहा कि वह भुगतान करने की चिंता न करे, जब उसके पास हो तब दे, उसे कोई जल्दबाज़ी नहीं थी। तो ऐसे उसे यह ट्रैक्टर मिला।

उसकी सफलता जारी थी। उसके अगले महीने, उसने एक महीने में $72,000 कमाए। यदि आप जॉनी से पूछेंगे कि यह कैसे हुआ, वह यही कहेगा कि यह सब

परमेश्वर के प्रति उदार रहने से और राज्य के नियमों की समझ प्राप्त करने से हुआ है।

यह कितनी अद्भुत कहानी है! मुझे अब भी याद है जब मैं उस रात राज्य की शिक्षा देने के लिए जॉनी और कैंडी के साथ उनके जॉर्जिया के घर में बैठा था। वे $5,000 के बिल को लेकर परेशान थे और क्रिसमस भी आ रहा था और $5,000 के कुछ और बिल आने वाले थे जिसके लिए उन्हें कोई पैसे नज़र नहीं आ रहे थे। मुझे लगता है आप भी उन बातों को सुनने के लिए उत्सुक हैं, जो उस रात मैंने उन्हें सिखाया था।

मैं यह जानता था कि मुझे बस उस धुंधली परिस्थिति में परमेश्वर की ओर देखने में उनकी मदद करनी है। मैं उन्हें 2 कुरिन्थियों 9:10–11 के विषय में बताने लगा:

> *सो जो बोने वाले को बीज, और भोजन के लिये रोटी देता है वह तुम्हें बीज देगा, और उसे फलवन्त करेगा; और तुम्हारे धर्म के फलों को बढ़ाएगा। कि तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिये जो हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करवाती है, धनवान किए जाओ।*

मैंने इस बात पर ज़ोर दिया कि परमेश्वर न केवल तुम्हें बोने के लिए बीज को देगा बल्कि तुम्हारी तुम्हारी ज़रूरतों के लिए रोटी भी देगा। रोटी का मतलब है आपके जीवन की सारी ज़रूरते भी। उसी से, वह और अधिक देने के लिए आपकी क्षमता को बढ़ाएगा। इसका मतलब है कि आप बढ़ने वाले हैं।

देने में किस प्रकार का डर शामिल है? यही कि आप अपनी ज़रूरतों को पूरा नहीं कर पाएंगे।

लेकिन परमेश्वर की बातों पर ध्यान केंद्रित करें। वह बोने वाले को बीज देता है और भोजन के लिए रोटी भी देता है। अब, यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न है, और यह प्रश्न मैंने जॉनी से भी पूछा था।

**आपके हाथ में जो है क्या वह बीज है या फिर भोजन? यह आपका चुनाव है।**

मेरी माँ के पिता, यानि मेरे नाना, अपने जीवन भर एक किसान थे। मैं जब छोटा था तब मुझे याद है मैं उनके बीज की गाड़ी में खेलता था। आपने कभी बीज की गाड़ी के बारे में नहीं सुना होगा। यह एक असल शब्द भी नहीं है, लेकिन नाना के साथ रहते हुए यह हमारे लिए एक असली चीज़ थी। प्रति वर्ष फसल के समय में, नाना हमेशा उनके खलिहान में स्थित बीज की गाड़ी के लिए पर्याप्त बीज इकट्ठा करते थे। यह गाड़ी बीजों से भारी हुई थी जिसे वो अगले वर्ष की फसल में बोने के लिए इकट्ठा करते थे।

ठंडी के मौसम में, नाना जी सोयाबीन से भरी हुई गाड़ी को देखते थे, वह जानते थे कि वर्तमान की ज़रूरत के लिए वह इन्हें बेच सकते हैं या फिर इसे वसंत ऋतु में

फिर से बोकर एक बड़ी फसल को प्राप्त करें। उनके पास चुनाव था, लेकिन वह उन नियमों को जानते थे जो बीज बोने और काटने को नियंत्रण में रखते हैं, और उन्होंने इसमें अपना सम्पूर्ण जीवन बिताया।

जॉनी और कैंडी को $160 का चेक लेते हुए ऐसे ही निर्णय का सामना करना पड़ा था। वह इसे बेचकर अपनी ज़रूरतों को पूरा कर सकते थे, लेकिन इसके बजाय, वह जानते थे कि परमेश्वर के प्रति उदार होना उन्हें लंबे समय तक एक बड़ी फसल को दे सकता है। और वे सही थे।

> *ऐसे हैं, जो छितरा देते हैं, तौभी उनकी बढ़ती ही होती है; और ऐसे भी हैं जो यथार्थ से कम देते हैं, और इस से उनकी घटती ही होती है*
>
> –नीतिवचन 11:24

इससे पहले कि हम इस अध्याय को समाप्त करें, मैं एक और दृष्टांत की ओर आपका ध्यान खींचना चाहूँगा – मत्ती 25:14–30, तोड़ों का दृष्टांत।

> *क्योंकि यह उस मनुष्य की सी दशा है जिस ने परदेश को जाते समय अपने दासों को बुलाकर, अपनी संपत्ति उन को सौंप दी। उस ने एक को पांच तोड़, दूसरे को दो, और तीसरे को एक; अर्थात हर एक को उस की सामर्थ के अनुसार दिया, और तब पर देश चला गया। तब जिस को पांच तोड़े मिले थे, उस ने तुरन्त जाकर उन से लेन देन किया, और पांच तोड़े और कमाए। इसी रीति से जिस को दो मिले थे, उस ने भी दो और कमाए। परन्तु जिस को एक मिला था, उस ने जाकर मिट्टी खोदी, और अपने स्वामी के रुपये छिपा दिए।*
>
> *बहुत दिनों के बाद उन दासों का स्वामी आकर उन से लेखा लेने लगा। जिस को पांच तोड़े मिले थे, उस ने पांच तोड़े और लाकर कहा; हे स्वामी, तू ने मुझे पांच तोड़े सौंपे थे, देख मैं ने पांच तोड़े और कमाए हैं।*
>
> *उसके स्वामी ने उससे कहा, धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो।*
>
> *और जिस को दो तोड़े मिले थे, उस ने भी आकर कहा; हे स्वामी तू ने मुझे दो तोड़े सौंपें थे, देख, मैं ने दो तोड़े और कमाएं।*
>
> *उसके स्वामी ने उस से कहा, धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा अपने*

*स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो।*

*तब जिस को एक तोड़ा मिला था, उस ने आकर कहा; हे स्वामी, मैं तुझे जानता था, कि तू कठोर मनुष्य है, और जहां नहीं छीटता वहां से बटोरता है। सो मैं डर गया और जाकर तेरा तोड़ा मिट्टी में छिपा दिया; देख, जो तेरा है, वह यह है।*

*उसके स्वामी ने उसे उत्तर दिया, कि हे दुष्ट और आलसी दास; जब यह तू जानता था, कि जहां मैं ने नहीं बोया वहां से काटता हूं; और जहां मैं ने नहीं छीटा वहां से बटोरता हूं। तो तुझे चाहिए था, कि मेरा रुपया सर्राफों को दे देता, तब मैं आकर अपना धन ब्याज समेत ले लेता।*

*इसलिये वह तोड़ा उस से ले लो, और जिस के पास दस तोड़े हैं, उस को दे दो। क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे और दिया जाएगा; और उसके पास बहुत हो जाएगा: परन्तु जिस के पास नहीं है, उस से वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा। और इस निकम्मे दास को बाहर के अन्धेरे में डाल दो, जहां रोना और दांत पीसना होगा।*

–मत्ती 25:14–30

यह कहानी भी उसी के समान है। स्वामी नगर को छोड़कर जा रहा है और उसने तीन सेवकों को नियंत्रण सौंप दिया है। एक को वह सोने के पाँच झोले देता है, अगले को दो झोले और एक को सिर्फ एक झोला।

पहले दो सेवक तुरंत काम करने निकाल जाते हैं और सोने के झोलों को दुगना करके वापिस लौटते हैं। स्वामी उनके कार्य के लिए उनकी सराहना करता है। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप तीसरे सेवक को देखें। उसके पास सोने का एक झोला था लेकिन उसने उसके साथ कुछ नहीं किया। असल में, उसने अपने स्वामी के आने तक उसे ज़मीन में गाड़ दिया था।

*तब जिस को एक तोड़ा मिला था, उस ने आकर कहा; हे स्वामी, मैं तुझे जानता था, कि तू कठोर मनुष्य है, और जहां नहीं छीटता वहां से बटोरता है। सो मैं डर गया और जाकर तेरा तोड़ा मिट्टी में छिपा दिया; देख, जो तेरा है, वह यह है।*

इस पहले वाक्य की ओर ध्यान दें : *"हे स्वामी, मैं तुझे जानता था, कि तू कठोर मनुष्य है, और जहां नहीं छीटता वहां से बटोरता है।"*

वह क्या कह रहा है? मैं आपको बताता हूँ कि वह क्या कह रहा है। वह कहता है, "मैं क्यों इसमें शामिल होऊँ? जब तू जहां बीज को नहीं बोता वहाँ से काटता है, तो किसने बीज का भुगतान किया और किसने इसे बिखेरा और किसने इसे बढ़ाया?"

अब, हम समझते हैं कि स्वामी ने उसे बीज खरीदने के लिए पैसे दिए, लेकिन उसका स्वभाव था कि यह उसके लिए समय देने योग्य कार्य नहीं है। उसके लिए इसमें कोई लाभ नहीं था। सारा फ़ायदा, उसके सारे कार्य की मेहनत उसके स्वामी को जाएगी। क्योंकि उसने स्वामी का ऐसा चित्र अपने मन में बना रखा था, जिसे वह कठोर स्वामी के रूप में देखता था, उसने इसमें शामिल होने से इनकार किया। वह अपने स्वामी के प्रति उसके सच्चे इरादे को छिपाना चाहता था और उसने पैसों को यह कहकर छिपाया कि उसे इसके खोने का डर था, और इसलिए उसने सुरक्षा के लिए सोने को गाड़ दिया था। लेकिन उसके स्वामी ने इस व्यक्ति को बुलाया और उससे कहा कि यदि वह इसकी इतनी परवाह होती तो इसे बैंक में डाल देता कम से कम इसमें ब्याज बढ़ता रहता।

लेकिन नहीं सेवक को सोने के खोने का डर नहीं था; उसे इस बात का डर था कि उसे इसमें शामिल होने की मेहनत करनी होगी। उसके मन में स्वामी के प्रति कठोर और दुष्ट चित्र था, बल्कि वह इसका विपरीत था। स्वामी एक कठोर स्वामी नहीं था। बाकी दो सेवकों को प्रगति का प्रतिफल प्राप्त हुआ और स्वामी के पैसों के साथ अच्छे से काम करने के बाद स्वामी के साथ रहने के लिए उन्हें बुलाया गया। लेकिन यह सेवक, केवल स्वामी के प्रति गलत सोच रखने के कारण, इसने काम में भाग नहीं लिया। और धर्म हमें यही सिखाता है—कि परमेश्वर एक कठोर स्वामी है और उसके साथ काम करने में हमारा कोई फ़ायदा नहीं है, तो इस काम में हम शामिल ही क्यों हों?

लेकिन परमेश्वर का यह चित्र एकदम ही खराब है और सच नहीं है। परमेश्वर को अन्यायी कहना ही दुष्टता है। परमेश्वर एकदम इसका विपरीत है। वह भला है और प्रतिफल देता है।

लेकिन अब मैं एक महत्वपूर्ण मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ। ध्यान दें कि स्वामी उस सोने के साथ क्या करता है जिसे वह दुष्ट सेवक के हाथों से लेता है।

> *इसलिये वह तोड़ा उस से ले लो, और जिस के पास दस तोड़े हैं, उस को दे दो। क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे और दिया जाएगा; और उसके पास बहुत हो जाएगा: परन्तु जिस के पास नहीं है, उस से वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा। और इस निकम्मे दास को बाहर के अन्धेरे में डाल दो, जहां रोना और दांत पीसना होगा।*

क्या मैंने इसे सही पढ़ा? स्वामी ने अयोग्य सेवक से वह सोने का झोला लेकर उसे दिया जिसके पास दस थे न कि जिसके पास चार थे? मैं यह नहीं जानता कि मैं सही हूँ कि नहीं, लेकिन उसने ऐसा ही किया। **बहुत ही ध्यान से सुनें!!!**

परमेश्वर अपने महान सुझाव और कार्य अपनी संतानों को देते हैं जो अपने मन में उनके फ़ायदों को रखते हैं और उन्होंने अपने आपको पहले छोटे कामों में विश्वासयोग्य और वफादार साबित किया है।

**परमेश्वर अपने महान सुझाव और कार्य अपनी संतानों को देते हैं जो अपने मन में उनके फ़ायदों को रखते हैं**

परमेश्वर मूर्ख नहीं है। वह अपने पैसों का निवेश उसी स्थान में करेंगे जहां उन्हें लाभ दिखाई देगा।

मैंने जो अभी कहा उसके बारे में सोचें – परमेश्वर अपने पैसों का निवेश सबसे अधिक मुनाफे में करेगा!

अब, निश्चयी, परमेश्वर केवल पैसों का व्यवसायी नहीं है, बल्कि वह लोगों के व्यवसाय में है। और जैसे हम उसके साथ काम करने में विश्वासयोग्य हैं, वह हमें बढ़ाएगा और अपने भले कार्यो में हमें कृपादृष्टि देगा।

हाँ, परमेश्वर के मनपसंद लोग होते हैं जब वह भिन्न लोगों को कामों को सौंपते हैं। जिन्होंने अपने आपको विश्वासयोग्य साबित किया है वे परमेश्वर के भरोसे को बड़े कार्यो के लिए प्राप्त करेंगे और उनसे अधिक प्रतिफल के कार्यो को प्राप्त करेंगे।

उन दो सेवकों के स्वभाव को देखें जो सफल हुए—वे तुरंत गए और अपने स्वामी के पैसों के साथ काम किया! तुरंत क्यों? क्योंकी वे जानते थे कि यह एक अवसर है, न कि गुलामी का बोझ।

परमेश्वर के कई लोग परमेश्वर की सेवा करना गुलामी की बात जानते हैं, या फिर एक कर्तव्य समझते हैं न कि एक अवसर जानकार काम करते हैं।

जब मैं और ड्रेनडा नाउ सेंटर कॅम्पस को बना रहे थे, हमें एक निर्णय को लेना था। उस समय जब हमने बढ़ते हुए विश्वासियों की देह के लिए एक स्थायी और बड़े घर को बनाने का निर्णय लिया तब हम सिर्फ 300 के परिवार की कलिसिया थे।

तब हमने $6 अरब के प्रोजेक्ट के लिए राशि इकट्ठा करना शुरू कर दी। उस समय यह एक बड़ी रकम थी। हमारी योजना यह थी कि $4.2 अरब की इमारत को बनाएंगे और फिर उसमें $2 अरब के सामान लाएंगे और फिर बाहर जैसे पैसें आएंगे बनाते जाएंगे।

परमेश्वर के कार्य के प्रति उदार होने का यह हमारा पहला अनुभव नहीं था, लेकिन यह अनुभव एक सबसे बड़ा भाग था उन सारे भागों में से।

हालांकि, उन सेवकों के समान जो परमेश्वर की भलाई को जानते थे, हम तुरंत

पैसों को डालने में भागीदार होना चाहते थे, और हम ऐसे स्तर पर देना चाहते थे जहां विश्वास को चुनौती देने की और आज्ञापालन की आवश्यकता हो।

उसी दिन सारी कलिसिया ने इस प्रोजेक्ट में बोने के लिए सहमति दी, ड्रेनडा और मैंने बताया कि हम $200,000 देंगे। अब, उस समय में, हमारे पास $200,000 लेकिन हमारे पास $20,000 का बीज था जो हम बचे हुए भुगतान के लिए बोने वाले थे।

हम जानते थे, जैसे उसने पहले भी किया था, कि परमेश्वर हमें दिखाएगा कि कैसे और कहाँ उस धन की फसल को काटना है अधिक बचत के साथ।

बीज बोने के बाद हमारे पास जो बचा, उसे लेकर हम पवित्र आत्मा में प्रार्थना करने लगे, दिशा और निर्देश के इंतजार में कि बची हुई रकम को कैसे और कहाँ से लाएं। आपको समझाने के लिए कि परमेश्वर ने किस प्रकार पैसों का प्रबंध किया, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि पिछले 39 वर्षो से हम एक वित्तीय कंपनी के मालिक हैं। यह कंपनी भिन्न प्रकार के  विक्रेता और पेशेवर के साथ काम करते हैं, जैसा मैंने पहले बताया भी है। हम जिन बड़े विक्रेताओं के साथ काम करते हैं उनके साथ वार्षिक सम्मेलन और ग्राहकों के साथ सम्मेलन आयोजित होता है।

इस वर्ष, हमारे एक विक्रेता ने ड्रेनडा और मुझे लंदन, इंग्लैंड में एक सभा के लिए हमें आमंत्रित किया था। हम लंदन के डाउनटाउन के एक अच्छे होटल में रुके थे, और यह बहुत सुंदर था जैसा लंदन के विषय में कहा जाता है।

हालांकि, कंपनी का एक समारोह था जो नगर के उस तरफ था, और उपराष्ट्रपति ने मुझे और ड्रेनडा को कार्यक्रम तक यात्रा में आमंत्रित किया था, जिसे हमने ग्रहण किया। उस यात्रा के दौरान, उपराष्ट्रपति ने उन सभी कार्यो के लिए जो हमने उन्हें दिया उन्होंने धन्यवाद किया और फिर वो हमें उस वर्ष नए के समारोह में शुरू होने वाले नए बोनस कार्यक्रम के बारे में बताने लगी।

उन्होंने हमें बताया कि बोनस संरचना क्या है और यह कैसे काम करता है और यह कि वे उन सहायकों को जो उनकी चीज़ की अनुशंसा करेंगे उन्हें उस अनुसार भुगतान किया जाएगा। जैसे वह बता रही थीं मैं बहुत उत्साहित हो गया, क्योंकि मैं जानता था कि हमारा व्यवसाय इस बोनस में शामिल होने योग्य है।

फिर, जब मैंने अन्य जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की, उन्होंने तुरंत मुझे बताया कि उनकी कंपनी के साथ हमारे संबंधों की संरचना नहीं होने के कारण हमारी कंपनी इस बोनस कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सकती है।

मुझे विश्वास नहीं हो रहा था। उन्होंने मुझे इस महान योजना के विषय में इतनी जानकारी क्यों दी जब अंत में इसे मुझसे छीनना ही था? मुझे भी समझ नहीं आया कि

मेरी कंपनी की संरचना किस प्रकार की गई थी कि वह बोनस के लिए सक्षम नहीं थी।

हालांकि मैंने और प्रश्न पूछे, लेकिन उन्होंने स्पष्ट उत्तर नहीं दिए। एक बात जो मुझे मालूम थी वह यह थी कि मैं इस बोनस के लिए सक्षम नहीं हूँ; जिसे उन्होंने स्पष्ट किया।

एक वर्ष बीत गया और उस वर्ष हमारा उत्पाद बहुत अच्छा हुआ, तो मैंने फिर से उन्हें कॉल करके बोनस के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए कॉल करने का विचार किया। हालांकि, इस बार जब मैं कॉल कर रहा था, मेरा संपर्क उन तक नहीं पहुंचा, तो मैंने उनकी सहायक के पास मेरे प्रश्न के साथ अपना संदेश भेज दिया।

अगले दिन उनकी सहायक ने मुझे कॉल किया, एक सख्त आवाज़ के साथ, यह बताते हुए कि उपराष्ट्रपति ने पिछले वर्ष ही मुझे बता दिया था कि मैं इसके लिए सक्षम नहीं हूँ और अब वह इसके बारे में कुछ नहीं कर सकती हैं।

**परमेश्वर प्रतिफल देने वाला है! और परमेश्वर के कार्य के प्रति उदार होने में लाभ है।**

हालांकि ठीक है, मैंने कोशिश तो की ।

अब जैसे मैं प्रार्थना कर रहा था कि $180,000 कहाँ से प्राप्त करें, मैंने पवित्र आत्मा को यह कहते हुए सुना कि उपराष्ट्रपति को फिर से कॉल करके बोनस की मांग करो। मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि इसे सुनकर मैं बहुत खुश नहीं हुआ। दो वर्ष उनसे पूछने के बाद मेरे अनुभव के हिसाब से मैं जानता था कि उनकी पदवी क्या है। उन्होंने इसे बहुत स्पष्ट कर दिया था। तो, मैंने सोचा मैं बात करने से पहले वातावरण को जाँचने के लिए उन्हें पहले ई–मेल भेज दूंगा।

सात दिनों के बाद मुझे उनका उत्तर मिला, जिसमें उन्होंने बताया कि उन्होंने इस बारे में विचार किया है और मेरी कंपनी को बोनस देने के लिए तैयार हैं। अद्भुत रूप से, बोनस $200,000 प्रति वर्ष था।

क्या आप देख रहे हैं, परमेश्वर प्रतिफल देने वाला है! और परमेश्वर के कार्य के प्रति उदार होने में लाभ है।

तो मुझे और ड्रेनडा को $200,000 बोने में कितनी कीमत चुकानी पड़ी? लगभग पाँच वर्ष बीत गए, और हमने निर्णय लिया कलिसिया होने के नाते हमें कुछ पैसे जमा करने और कलिसिया के कामों के लिए कुछ चीज़ें खरीदने की ज़रूरत थी। फिर से मैंने और ड्रेनडा ने निर्णय लिया कि इन कार्यों के लिए हमें कितना बीज बोने की आवश्यकता थी, और हमने विचार किया कि हम $500,000 को देंगे।

वाह, यह काफी सारा पैसा था। लेकिन हमें ऐसा लगा कि यह देखने के बाद कि परमेश्वर ने $200,000 के साथ क्या किया, हम परमेश्वर पर भरोसा करेंगे। फिर

से, हम जो दे सकते थे हमने दिया, जो $50,000 था, और हम पवित्र आत्मा पर विश्वास कर रहे थे कि वह हमें बाकि के $450,000 को प्राप्त करने में सहायता करे।

मेरे हिसाब से लगभग छह सप्ताह बीत गए, मुझे सूचित किया गया कि हमारी कंपनी में वेतन संबंधित संविदात्मक परिवर्तन हो रहा है। सभी परिवर्तन के बाद, हमने जोड़कर पाया कि पहले से भी अधिक अगले तीन वर्षो में $630,000 की कमाई को प्राप्त करेंगे। यह अच्छा है, है न? हालांकि अंदाज़ा लगाइए, संविदात्मक परिवर्तन पिछले 11 वर्षो से उसी स्तर पर है, लेकिन प्रति वर्ष अनुबंध का स्तर बढ़ता ही जा रहा है।

फिर एक बार, ड्रेनडा और मुझे इसके लिए कितना भुगतान करना पड़ा और परमेश्वर के कार्यो के प्रति कितनी उदारता दिखानी पड़ी?

तो याद रखें कि हमारा परमेश्वर मुनाफ़ों का परमेश्वर है। वह भला है और प्रतिफल देता है।

अध्याय 3

# क्या आप सक्षम हैं?

मुझे लगता है सभी ने क्रिसमस की कहानी और उन तीन राजाओं के विषय में सुना है जिन्होंने यीशु के पास सोना, मर, और लोबान को लाया था। क्या आपने कभी सोचा है कि इनकी क्या कीमत होगी? इससे अच्छा प्रश्न है कि, "वह यह चीज़ें उसके पास क्यों लाए?"

कुछ जांच के बाद, मैंने यह पाया कि उन दिनों में राजकुमारों का इन वस्तुओं के साथ आदर करना बहुत सामान्य बात थी, क्योंकि उन्हें भविष्य के राजा के रूप में देखा जाता था।

सबसे उत्तम अनुमान हो सकता है कि इन उपहारों की कीमत लगभग $100,000 या कई हज़ार डॉलरों की होगी।

उन तीन बुद्धिमान पुरुषों ने आनेवाले मसीहा के विषय में शास्त्रों और भविष्यवाणियों का अध्ययन किया होगा, और सितारे को देखने के बाद उन्हें यकीन हो गया कि वह आ गया है, और फिर उन्होंने उसे उपहार देने के लिए एक लंबी यात्रा की।

यह धारणा जिसमें ऐसा बताया है जैसा कि क्रिसमस के नाटक में दिखाया जाता है कि उन्होंने आकर यीशु को एक चरनी में पाया ऐसा बिलकुल भी नहीं है। हम यह इसलिए जानते हैं क्योंकि मत्ती कहता है:

> *और उस घर में पहुंचकर उस बालक को उस की माता मरियम के साथ देखा, और मुंह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया; और अपना अपना थैला खोलकर उसे सोना, और लोहबान, और गन्धरस की भेंट चढ़ाई।*
>
> –मत्ती 2:11

उन्होंने यीशु से उसके घर में भेंट की, एक चरनी में नहीं। इस वचन में बताया गया है कि वह एक छोटा बालक था, एक नया जन्मा शिशु नहीं। तो इसका मतलब उन बुद्धिमान पुरुषों को वहाँ तक पहुँचने के लिए काफी समय लग गया था।

दूसरी बात यह है कि, कोई नहीं जानता कि वहाँ कितने बुद्धिमान पुरुष थे। बाइबल यह नहीं बताती कि कितने लोग आए, लेकिन यह बताती है कि वे क्या लाए। उस समय, मर और लोबान, सोने से भी अधिक बहुमूल्य थे, तो जो उपहार आए थे वे बहुत महंगे थे।

तो मैं यह क्यों बता रहा हूँ? मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि, "आपको क्या लगता है कि यह बुद्धिमान पुरुष उपहारों को क्यों लाए?"

मैं आपको बताता हूँ क्यों—क्योंकि यूसुफ को उसके कार्यों के लिए प्रबंध की आवश्यकता थी।

याद रखें....

परमेश्वर हमेशा अपने कार्यों के लिए प्रबंध करेंगे—हमेशा!

फेथ लाइफ कलीसिया हमेशा भरी हुई रहती थी। वह सप्ताह के अंत में हमेशा भरी रहती थी, और सप्ताह भर भी काफी भीड़ होती थी क्योंकि हम छोटे झुंड और कार्यकर्ताओं से परिपूर्ण 200 बच्चों को पढ़ाते थे। हमें और कमरों की ज़रूरत थी। हमने विचार किया कि क्या हमें दूसरे कॅम्पस को खोलना चाहिए कि इसी इमारत का पुनःनिर्माण करें। हमने निर्णय लिया कि हम दोनों काम करेंगे।

तो, हमने एक दल को बनाया जो कॅम्पस के लिए जगह को ढूंढें, और हमने उन्हें नगर में जगह की ओर निर्देशित किया जहां हमें ऐसा लगा कि हमें देखना चाहिए।

फिर उसी समय हमने अपनी इमारत की आकृति, इंजीनियरिंग की शिक्षा, और अन्य कार्यों की ओर कदम बढ़ाया, जिससे कार्य का विस्तार हो। हमने एक निर्माता और इमारत बनानेवाले को शामिल किया और एक परिमार्श– सम्मति को नियुक्त किया, उन सभी को जिनके पास निर्माण का अनुभव था।

हमने यह जाना कि निर्माण को लेकर कुछ समस्याएं थी। सबसे बड़ी समस्या थी कि हमारी इमारत में कोई नाली और पानी का प्रबंध नहीं था। हम कुंए के पानी का उपयोग करते थे और नाली की तरह स्वयं—निहित गंदगी को साफ करने की प्रणाली थी।

प्रबंध मण्डली ने हमें पहले ही बताया था कि जब तक हमारी इमारत के लिए नाली और पानी का प्रबंध हो, हम अपने 36 एकड़ के कॅम्पस में अतिरिक्त इमारतें नहीं बना सकते, क्योंकि हमारी क्षमता अधिकतम हो गई थी और अब हमें इसके अनुमति नहीं थी। हम यह जानते थे लेकिन हमारे अगल बगल में बहुत सारी इमारते बन रही थीं और मुझे ऐसा लग रहा था कि जल्द ही यहाँ पानी और नालियों की सुविधा आ रही है।

लेकिन अभी तक हमारी सड़कों में भी पानी और नालियों की प्रणाली नहीं आई थी, तो इन सेवाओं को शुरू करना आसान नहीं था। बल्कि वहाँ कोई सेवाएं ही नहीं थी।

लोग हमें अपने यहां पानी और सीवर की लाइनें लाने के लिए कहने लगे, जिसके निर्माण के लिए हमें ही भुगतान करना होगा और फिर लागत का अधिकांश हिस्सा वसूल विकास ने लाइनों में टैप शुल्क का भुगतान किया। आपको अंदाज़ा भी नहीं है कि इसमें कितना खर्चा होता है।

तो हम शहर में वापिस आए और यह सेवाएं कब प्राप्त होगी उनके समय और योजनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की और आशा यही थी कि वे इन्हें जल्दी हमारे इलाके में लाएंगे क्योंकि यह जगह बढ़ रही थी और इस समय इन सुविधाओं की सबसे अधिक आवश्यकता थी। लेकिन उन्होंने इस बारे में कुछ नहीं किया। तो उन्होंने कब तक बताया कि सेवाएं उपलब्ध की जाएंगी? उन्होंने बताया कि यह जल्दी नहीं होगा।

**परमेश्वर हमेशा अपने कार्यों के लिए प्रबंध करेंगे—हमेशा!**

हम जानते थे कि हम अपने इलाके में पानी और नालियों की सेवाओं के लिए वर्षों तक इंतज़ार नहीं कर सकते थे, तो हमने निर्णय लिया कि हम इसे रोक देंगे और किसी दूसरे स्थान की खोज को जारी रखेंगे। (उस समय से लेकर इस अध्याय को लिखने तक, चार वर्ष हो गए हैं लेकिन शहर के इस भाग में इन सेवाओं के उपलब्ध होने की कोई चर्चा नहीं है।)

हालांकि हमारी मंडली ने कॅम्पस के लिए छह महीनों तक सबसे उत्तम स्थान की खोज की, लेकिन कुछ प्राप्त नहीं हुआ। ऐसी कोई इमारत नहीं थी जो हमारे हिसाब से किराए पर या खरीदने के लिए उपलब्ध हो। तो, हमने सोचा कि उसी स्थान पर एक ईवेंट सेंटर को किराए पर लेंगे, या सिर्फ कुछ दिनों के लिए, जिसकी कीमत $30,000 प्रति महिना थी। लागत के अलावा हमें सामान को हर सप्ताह लगाना और फिर निकालना था। मैं अपने लोगों को इस परिस्थिति में नहीं डालना चाहता था। मुझे एक स्थायी जगह चाहिए थी। उस ईवेंट सेंटर के विषय में भी हमारे मनों में शांति नहीं थी।

फिर हमने स्ट्रिप मॉल में एक जगह किराए पर लेने का विचार किया। लेकिन मरम्मत और बदलाव के सभी खर्चों को ध्यान में रखते हुए हमने विचार किया कि यह भी एक अच्छा सुझाव नहीं था।

इस इमारत को ढूँढने का उद्देश्य है कि सप्ताह के दौरान यह बच्चों की शिक्षा के लिए सहायक हो। हमारी कलीसिया में कई सौ गृह शिक्षा परिवार हैं, और हम प्रति सप्ताह व्यवसाय और पढ़ाई के कोचिंग भी संचालित करते हैं। हमने कई बार इस विषय में बताया है कि हम विद्यालय चलाएंगे, हमारे पास शिशुओं को संभालने का भी केंद्र होगा, और फिर विद्यालय के कार्यक्रम के बाद, स्थानीय सामाज के लिए कई

सारे कार्यक्रम भी होंगे। हमें एक स्थान चाहिए था जहां हम यह सब कर सकें। हमने अपनी इमारत को प्राप्त करने के लिए बीज को बोया था, दावा करते हुए कि हमें अपनी ज़रूरतों के लिए सबसे उत्तम स्थान मिलेगा, लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हो रहा था।

ड्रेनडा और मुझे टेक्सास में एक न्यू विक्ट्री टेलीविजन नेटवर्क के समार्थन में फोर्ट वर्थ में एक सभा के लिए जाना था। उस समय जब मैं सेट पर बैठा था, प्रभु ने मुझसे बातें की। उसने कहा, *"मैं चाहता हूँ कि तुम इस संपर्क में $100,000 दो। अपनी कलीसिया में जाओ घर को जाओ, एक चेक बनाओ, और हर सभा में बीज को लेकर इस पर यह घोषणाएं करो कि तुम्हें एक उत्तम इमारत मिलेगी। शैतान को फटकारो और उसे आदेश दो कि मेरे काम में दखल देना बंद करे। जैसे तुम बीज को बोगे, घोषित करो कि कार्य पूरा हो गया है।"*

तो हमने ऐसा ही किया। हम घर गए और मैंने अपने खजांची को बुलाया और उससे कहा विक्ट्री टेलिविज़न नेटवर्क के नाम पर $100,000 का एक चेक बनाया जाए। फिर मैंने उस चेक को लिया और हर सभा में गया, और जैसे हमने अपने उत्तम स्थान के लिए बीज को बोया सम्पूर्ण कलीसिया मेरे साथ सहमत हुई। हमने शैतान को फटकारा और उसे आदेश दिया कि हमारे प्रबंध में दखल देना और इसमें देरी को लाना बंद कर दे।

अगले दिन, सोमवार की सुबह को, हमारी बेटी ने हमें कॉल किया, जिसने बताया कि जब हम टेक्सास की सभा में थे, संपत्ति के दलाल ने बहुत ही दिलचस्प जगह पेश की। यह किराए पर नहीं थी और हमारे बजट में भी नहीं थी, क्योंकि इसकी रकम $7.9 अरब थी। लेकिन इसकी कीमत बहुत ज़्यादा थी क्योंकि यह बैंक के अधीन गिरवी रखी हुई इमारत थी। उसने कहा हमारे कॅम्पस के लिए यह सबसे उत्तम जगह होगी, लेकिन, वह जानती थी कि आर्थिक रूप से यह हमारे लिए सही विकल्प नहीं था। लेकिन वह बस यह जानना चाहती थी कि क्या हम उस जगह को देखने के लिए तैयार हैं। हमने कहा, हम ज़रूर देखेंगे।

तो, मंगलवार की सुबह, हम उस स्थान को देखने के लिए गए। वह संपत्ति सात एकड़ की थी और यह एक निजी रूप से किसी विद्यालय का कॅम्पस था। यह तीन मंज़िला हाई स्कूल इमारत थी और उसके साथ दो बड़ी इमारतें भी थी, और उस संपत्ति में एक घर भी था। उसमें दौड़ने का ट्रैक था, चार टेनिस कोर्ट भी थे, वज़न के कमरे, फ़ोटोलैब के साथ कला की इमारत, दो मिट्टी के बर्तन बनाने के स्थान, सिलाई के समान से भरा हुआ कमरा और कलाकृति के समान, कई दर्जन संगीत के यंत्र जो संगीत घर में थे, और बहुत कुछ। सम्पूर्ण जगह सामग्री से भरी हुई और पूरी तैयार थी।

जैसे हम उस जगह को देख रहे थे, यह हमारे लिए एकदम सही थी। लेकिन, हम

जानते थे कि हम इसके लिए कर्ज़ में नहीं जा सकते थे। हमारे पास इस स्थान के लिए $3 अरब डॉलर जमा थे, लेकिन इसके बाद भी हमें और $5 अरब के उधार को लेना होगा।

उस रात, हमारी सेवकाई के एक भागीदार के साथ हम रात का खाना खा रहे थे। अब, इस भोजन की योजना कई बार बनाई गई और चार बार हमें इसे टालना पड़ा क्योंकि हम दोनों बहुत व्यस्त थे, लेकिन उस रात को यह संभव हुआ।

जैसे हम बात कर रहे थे, यह व्यक्ति मुझे इस इमारत के प्रोजेक्ट के बारे में पूछने लगा, और मैंने उसे देरी के बारे में बताया जिसे हम सुलझाने की कोशिश कर रहे थे, उसने मेरी ओर देखा और कहा, "क्या आप जानते हैं, कि मुझे यह सही नहीं लग रहा। मुझे ऐसा लगता है कि आपको एक कॅम्पस खोलना चाहिए।" मैंने उसे बताया कि हम इससे सहमत हैं, असल में, हम छह महीनों से इमारत की तलाश में हैं लेकिन कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई। हालांकि, हमने उसे बताया कि हमने उस दिन एक सबसे उत्तम जगह देखी थी लेकिन यह किराए पर नहीं है और उसका भुगतान हमारी पहुँच से बाहर है।

उसने इसके बारे में कुछ और प्रश्न पूछे, फिर उसने ड्रेनडा को देखकर पूछा, "क्या होगा अगर वह जगह आपको मुफ़्त में मिल जाए?" ड्रेनडा ने कोई उत्तर नहीं दिया क्योंकि वह इसे मज़ाक समझ रही थी। उसने फिर से कहा, "ड्रेनडा, मैंने कहा, अगर वह मुफ़्त में मिल जाए तो?"

उसने पूछा, "आप क्या कहना चाहते हैं?"

"मैं इसके लिए एक चेक दूंगा!" उसने कहा।

ड्रेनडा और मैं आश्चर्यचकित रह गए।

लंबी कहानी को संक्षिप्त करते हुए, उसने इसका भुगतान किया। हमने बस उस स्थान को चमकाने में और उसे अपनी जरूरत के हिसाब से सुंदर बनाने में कुछ खर्चा किया। और इसका परिणाम एक उत्तम कॅम्पस था। और इस इमारत का भुगतान कर दिया गया था।

मैं अपनी ज़रूरतों को देखते हुए, इससे अधिक उत्तम कॅम्पस के बारे में सोच भी नहीं सकता था। इसमें सब कुछ एकदम सही है। हमने अपनी बीमा कंपनी के लिए एक मूल्यांकन कराया था, और इसमें हमें $11 अरब प्राप्त हुए।

इसके बारे में सोचें: अब हमारे पास $11 अरब का कॅम्पस है 89,000 वर्ग फुट की जगह के साथ जिसका भुगतान कर दिया गया है! क्या आपको ऐसी कहानियाँ अच्छी लगती हैं?

जैसा मैंने बताया कि परमेश्वर अपने कार्यों के लिए प्रबंध करता है। यह उसकी

सेवकाई है, हमारी नहीं। हम सिर्फ उसके साथ पारिवारिक व्यवसाय में काम कर रहे हैं।

अब, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि उस दम्पत्ति के साथ क्या हुआ जिन्होंने हमारी इमारत के लिए पैसों का प्रबंध किया था। पहली बात, अब एकदम से सारे पैसों को देने के कारण अब उनका डोनैशन लेना संभव था और कर देने में भी उनका बिल कम कर दिया गया था। कैसे? वह इमारत दो वर्ष में उनके नाम पर होने वाली थी। उन्होंने वर्तमान के मूल्य के अनुसार उस इमारत को सेवकाई के लिए दान के रूप में समर्पित कर दिया था।

## राज्य हमेशा काम करता आया है

यदि आप पासवान हैं और आपको एक इमारत की ज़रूरत है तो आपको यह रणनीति मालूम होनी चाहिए। तो इमारत हम दोनों के लिए एकदम मुफ़्त की हुई और उस दम्पत्ति के लिए कर को संभालने में बुद्धिमानी का कार्य था। लेकिन सिर्फ यही इस कहानी का अद्भुत भाग नहीं था।

अब यह दम्पत्ति इसी नगर में दूसरे व्यवसाय को खरीदने का विचार कर रहे थे जब हमने उस संपत्ति को देखा था तब उस समय ये बिक्री के लिए तैयार थी। हालांकि यह भागीदार नकद प्रस्ताव दे रहा था, वह सुविधा जिसे वह खरीदना चाहता था उसकी बोली के लिए मालिकों की अनुमति चाहिए थी, दुर्भाग्य से, उन्होंने वापिस आकार बताया कि वह किसी और को दे दी गई है। वह उनके निर्णय को लेकर बहुत निराश था। उसने मुझे बताया कि वह इसे हाथ से जाने नहीं देना चाहता था; उसने अपनी आत्मा में जान लिया कि सब कुछ खत्म नहीं हुआ है।

तो जब उसने हमारी इमारत के लिए पैसों को बोया, उसने मुझे बताया कि उसने विश्वास करते हुए बोया कि व्यवसाय के मालिक अपने मन को बदल देंगे, क्योंकि वह अन्य लोगों की तुलना में आर्थिक रूप से मजबूत था, और वह नकद पैसे देने के लिए तैयार था।

हालांकि, जैसे ही हमारी संपत्ति पर यह धन निवेश किया गया, उसे उन मालिकों से यह कहते हुए एक कॉल आया कि पिछला सौदा खत्म हो गया था और अब यदि उसे यह संपत्ति चाहिए तो अब उसके पास अवसर है। उसने कहा हाँ, क्यों नहीं, उसे ज़रूर चाहिए थी।

फिर कुछ सप्ताहों के बाद जब वह अपने नए व्यवसाय की संपत्ति का सौदा कर रहा था, उसके पास अपेक्षा से बढ़कर एक प्रस्ताव आया जिसने सारे पैसों का प्रबंध कर दिया जो उसे अपने व्यवसाय के भुगतान के लिए चाहिए थे। उसे उस नकद पैसों को हाथ भी नहीं लगाना पड़ा जो उसने संपत्ति को खरीदने के लिए रखे थे। उसने मुझे बताया कि यह मुफ़्त व्यवसाय करने के समान है।

ओ, वैसे, एक बार जब उसने व्यवसाय को खरीद लिया, उसकी कीमत बढ़कर दुगनी भी हो गई। जब उसने संपत्ति का सौदा कर लिया था तब उसने मुझे उस दिन बुलाया था, और वह बहुत उत्साहित था।

राज्य हमेशा काम करता आया है (सहायक रहा है)!

अब यह भागीदार, परमेश्वर के कार्यों के लिए बहुत उदार था और अनुसरण करने में आज्ञाकारी और देखिए परमेश्वर ने हम दोनों के लिए कितना अद्भुत काम किया है। हमने एक नए टीवी स्टेशन में धन को बोया, परमेश्वर के नियुक्त किए गए किसी अन्य की सेवा में, और देखिए कि हमारे साथ क्या हुआ है।

परमेश्वर और परमेश्वर के लोगो के प्रति उदार होने से ऐसे दरवाज़ें खुलेंगे जिनका कोई अस्तित्व ही नहीं था।

लोग हमेशा मुझसे पूछते हैं कि, "गैरी, राज्य के धन के बारे में आप मुझे कौन सी महत्वपूर्ण कुंजी देंगे?

हालांकि, बहुत सारी बातें हैं जो मैं आपको बताना चाहता हूँ। लेकिन यह सलाह बहुत मूल्यवान होगी। तो ध्यान दें और निम्नलिखित राज्य के सिद्धांतों को लिख लें।

यदि आपको इस पुस्तक से कुछ और प्राप्त नहीं होता है: तो इसे प्राप्त कर लें!

जैसे मैं राज्य के इस महान नियम को खोलने जा रहा हूँ, मैं आपको लूका 4 में ले जाना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि निम्नलिखित लेख सामान्य वाक्य से थोड़े लंबे हैं, लेकिन पूरा वाक्य पढ़ने से आपको यहाँ क्या हो रहा है और यीशु ने ऐसा उत्तर क्यों दिया इसका भेद समझ आएगा।

> *और वह नासरत में आया; जहां पाला पोसा गया था; और अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन आराधनालय में जा कर पढ़ने के लिये खड़ा हुआ। यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे दी गई, और उस ने पुस्तक खोलकर, वह जगह निकाली जहां यह लिखा था।*
>
> > *कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है, कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं। और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं।*
>
> *तब उस ने पुस्तक बन्द करके सेवक के हाथ में दे दी, और बैठ गया: और आराधनालय के सब लोगों की आंख उस पर लगी थीं। तब वह उन से कहने*

*लगा, कि आज ही यह लेख तुम्हारे साम्हने पूरा हुआ है।*

*और सब ने उसे सराहा, और जो अनुग्रह की बातें उसके मुंह से निकलती थीं, उन से अचम्भा किया; और कहने लगे; क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं?*

*उस ने उन से कहा; तुम मुझ पर यह कहावत अवश्य कहोगे, कि हे वैद्य, अपने आप को अच्छा कर! जो कुछ हम ने सुना है कि कफरनहूम में किया गया है उसे यहां अपने देश में भी कर।*

*और उस ने कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कोई भविष्यद्वक्ता अपने देश में मान–सम्मान नहीं पाता। और मैं तुम से सच कहता हूं, कि एलिय्याह के दिनों में जब साढ़े तीन वर्ष तक आकाश बन्द रहा, यहां तक कि सारे देश में बड़ा आकाल पड़ा, तो इस्राएल में बहुत सी विधवाएं थीं। पर एलिय्याह उन में से किसी के पास नहीं भेजा गया, केवल सैदा के सारफत में एक विधवा के पास।*

–लूका 4:16–26

यह सब यीशु के जंगल में परीक्षा से आने के बाद हुआ और फिर वह अपने घर पहुंचते हैं और यहाँ इस कहानी को लिखा गया है।

क्योंकि यीशु नासरत में बड़ा हुआ, इसलिए वे उसको और उसके परिवार को अच्छे से पहचानते थे, और हम अंदाज़ा लगा सकते हैं कि उसने स्थानीय मंदिर में कई बार शास्त्रों को पढ़ा होगा। अब यहाँ उस वचन को जानने की ज़रूरत है जो यीशु ने उन्हें पढ़कर सुनाए। वह यशायाह 61:1–2 से पढ़ रहा था। और उसने यहाँ तक पढ़ा, ***"और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं"।***

अब जहां उसने पढ़ना बंद किया वह सबसे दिलचस्प बात है कि वह वाक्य के बीच में ही रुक गया, तो हम जानते हैं कि वह ज़रूर वहाँ किसी कारण से रुका था।

प्रभु का वर्ष जयंती का वर्ष था, और यह पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को पुनर्स्थापित करने को दर्शाता है। मसीहा जो करने वाला था यह उन बातों की परछाई थी। तो, जब यीशु उस वाक्य पर रुके और उसने कहा, ***"आज तुम्हारे सुनते हुए यह वचन पूरा हुआ है,"*** वह इस बात की घोषणा कर रहा था कि वही मसीहा है!

वह फिर भविष्यवाणी करता गया कि वे भविष्य में उसके बारे में क्या कहेंगे, जो असल में यह था कि, "हम तुझ पर विश्वास नहीं करते हैं: हमें साबित करके दिखा," क्योंकि वे उस पर विश्वास नहीं करते थे।

*"उस ने उन से कहा; तुम मुझ पर यह कहावत अवश्य कहोगे, कि हे वैद्य, अपने आप को अच्छा कर! जो कुछ हम ने सुना है कि कफरनहूम में किया गया*

*है उसे यहां अपने देश में भी कर।"*

कफ़रनहूम वह स्थान है जहां यीशु ने अपनी सेवकाई के मुख्यालय को खड़ा किया था यानि अधिकतर चमत्कार उसी स्थान पर हुए थे। वह भविष्यवाणी करके कह रहा था कि जब वे कफ़रनहूम में उन महान अद्भुत कार्यों की चर्चा सुनेंगे और जब यह बातें सुनेंगे तब कहेंगे कि यहाँ नासरत में आकार भी ऐसे ही चमत्कार कर ताकि हम तुझ पर विश्वास करें। सच्चाई यह है कि, वह उन्हें उनके कठोर हृदय और अविश्वास को दिखा रहा था। यीशु जानता था कि वे उसका विश्वास नहीं करते हैं, और वे उस पर कभी विश्वास नहीं करेंगे। हम यह जानते हैं क्योंकि उसने कहा वे ऐसा भी कहेंगे, "हे वैध, अपने आपको अच्छा कर!" यह उसके कूसित होने के विषय में है।

> *और आने जाने वाले सिर हिला हिलाकर उस की निन्दा करते थे। और यह कहते थे, कि हे मन्दिर के ढाने वाले और तीन दिन में बनाने वाले, अपने आप को तो बचा; यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ। इसी रीति से महायाजक भी शास्त्रियों और पुरनियों समेत ठट्ठा कर करके कहते थे, इस ने औरों को बचाया, और अपने को नहीं बचा सकता। यह तो "इस्राएल का राजा है"। अब क्रूस पर से उतर आए, तो हम उस पर विश्वास करें।*
>
> –मत्ती 27:39–42

यीशु अपनी सेवकाई की शुरुआत से उसके अंत तक, कहता रहा कि सारी बातें सुनने के बावजूद, वे उसके संदेश को ग्रहण नहीं करेंगे। वह अपने संदेश को उन्हें एलिय्याह और विधवा की कहानी के द्वारा समझाता रहा, जहां परमेश्वर को एलिय्याह को इस्राएल के बाहर भेजना पड़ा क्योंकि इस्राएल के लोगों के हृदय इतने कठोर हो गए थे कि वे विश्वास नहीं कर सके। इस बात ने व्यवस्था के शास्त्रियों को इस हद तक क्रोधित किया कि वे यीशु को मार डालने के लिए बाहर ले गए, लेकिन बाइबल बताती है कि वह वहाँ से बच निकला।

अब मैं चाहता हूँ कि आप मेरे लिए एक शब्द लिखे और इसे ऐसी जगह रखें जहां आपको याद रहेगा, क्योंकि यह आपके आर्थिक भविष्य के लिए एक कुंजी है। इस शब्द को लिखें **"भेजा गया"**। हाँ यह सही है, **"भेजा गया"**। यह बहुत महत्वपूर्ण है!

## भेजा गया

मैं 1 राजा 17:7–16 में जाना चाहता हूँ जहां हम एक सामर्थी रहस्य को ढूँढेंगे जो

आपके जीवन को बदल देगा।

> *कुछ दिनों के बाद उस देश में वर्षा न होने के कारण नाला सूख गया। तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा, कि चलकर सीदोन के सारपत नगर में जा कर वहीं रह: सुन, मैं ने वहां की एक विधवा को तेरे खिलाने की आज्ञा दी है। सो वह वहां से चल दिया, और सारपत को गया; नगर के फाटक के पास पहुंच कर उसने क्या देखा कि, एक विधवा लकड़ी बीन रही है, उसको बुलाकर उसने कहा, किसी पात्र में मेरे पीने को थोड़ा पानी ले आ। जब वह लेने जा रही थी, तो उसने उसे पुकार के कहा अपने हाथ में एक टुकड़ा रोटी भी मेरे पास लेती आ।*
>
> *उसने कहा, तेरे परमेश्वर यहोवा के जीवन की शपथ मेरे पास एक भी रोटी नहीं है केवल घड़े में मुट्ठी भर मैदा और कुप्पी में थोड़ा सा तेल है, और मैं दो एक लकड़ी बीनकर लिए जाती हूँ कि अपने और अपने बेटे के लिये उसे पकाऊं, और हम उसे खाएं, फिर मर जाएं।*
>
> *एलिय्याह ने उस से कहा, मत डर; जा कर अपनी बात के अनुसार कर, परन्तु पहिले मेरे लिये एक छोटी सी रोटी बना कर मेरे पास ले आ, फिर इसके बाद अपने और अपने बेटे के लिये बनाना। क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि जब तक यहोवा भूमि पर मेंह न बरसाएगा तब तक न तो उस घड़े का मैदा चुकेगा, और न उस कुप्पी का तेल घटेगा।*
>
> *तब वह चली गई, और एलिय्याह के वचन के अनुसार किया, तब से वह और स्त्री और उसका घराना बहुत दिन तक खाते रहे। यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उसने एलिय्याह के द्वारा कहा था, न तो उस घड़े का मैदा चुका, और न उस कुप्पी का तेल घट गया।*
>
> –1 राजा 17:7–16

मुझे वातावरण को तैयार करने दीजिए। अब यहाँ एक भयंकर आकाल है, और जिस नाले में एलिय्याह है वह सूख गया है। अब उसे खाने और पानी की खोज में किसी नए स्थान पर जाना होगा। परमेश्वर उससे सीधे और स्पष्ट बात करते हुए कहता है, ***"कि चलकर सीदोन के सारपत नगर में जा कर वहीं रह: सुन, मैं ने वहां की एक विधवा को तेरे खिलाने की आज्ञा दी है।"*** अब इसपे ध्यान दें कि सारपत एक कनानी नगर था और उस समय यह इस्राएल देश का भाग नहीं था।

जैसे ही एलिय्याह नगर में आता है, वह एक विधवा को लकड़ियाँ बीनते हुए देखता

है, और वह उससे थोड़ा पानी माँगता है। ***"जब वह लेने जा रही थी, तो उसने उसे पुकार के कहा अपने हाथ में एक टुकड़ा रोटी भी मेरे पास लेती आ।"*** वह बताती है कि उसके पास भोजन की घटी है, उसके पास सिर्फ उसके बेटे और उसके लिए एक समय का भोजन बचा है।

लेकिन फिर भविष्यवक्ता कुछ अद्भुत और अनोखा करता है, ऐसा कुछ जिसके बारे में आप सोचेंगे कि इस परिस्थिति में कोई ऐसा करने का सोच भी नहीं सकता है। वह उसे अपने घर जाकर उसके लिए एक रोटी बनाने के लिए कहता है कि अपने परिवार के लिए बनाने से पहले वह एलिय्याह के लिए लेकर आए। इस समय कैसा लग रहा है, मैं समझ सकता हूँ, वह निर्देश के पहले यह भी कहता है कि, *"मत डर"*। और फिर वह उससे कहता है:

> *"क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि जब तक यहोवा भूमि पर मेंह न बरसाएगा तब तक न तो उस घड़े का मैदा चुकेगा, और न उस कुप्पी का तेल घटेगा।"*

वाह, अब वह क्या करेगी? क्या वह उस पर विश्वास करके अपने बेटे के आखरी भोजन को उसे दे देगी?

> *तब वह चली गई, और एलिय्याह के वचन के अनुसार किया, तब से वह और स्त्री और उसका घराना बहुत दिन तक खाते रहे। यहोवा के उस वचन के अनुसार जो उसने एलिय्याह के द्वारा कहा था, न तो उस घड़े का मैदा चुका, और न उस कुप्पी का तेल घट गया।*

उसने उस पर विश्वास किया, और परिणाम पर बहुत ध्यान दें—एलिय्याह और उस स्त्री और उसके परिवार के लिए प्रति दिन खाने का प्रबंध था। मैं एक शब्द को बदलकर फिर से कहता हूँ, "परमेश्वर के कार्य के लिए हर दिन भोजन का प्रबंध था और उस स्त्री और उसके परिवार के लिए हर दिन भोजन था।"

हमने पिछले अध्याय में देने को लेकर डर के बारे में बात की, कि अगर आप परमेश्वर के कार्य में देंगे तो आपकी ज़रूरतों के लिए पर्याप्त नहीं बचेगा। जैसा आप देख सकते हैं, और हमेशा देखेंगे, ऐसा कभी नहीं होगा!

तो मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ, "क्या उस विधवा को अपने आखरी भोजन के लिए कोई कीमत चुकानी पड़ी?" नहीं, कोई कीमत नहीं। बल्कि इसने

उसके जीवन को बचा लिया।

अब, इससे पहले कि मैं **भेजा गया** इस शब्द को लेकर चर्चा करूँ, मैं एक और प्रश्न पूछना चाहता हूँ। उस भविष्यवक्ता ने *पहली* रोटी की मांग क्यों की? उसके *साथ* नहीं लेकिन एक *अलग* रोटी। उसने उस स्त्री से ऐसा भी कहा कि अपने लिए बनाने से *पहले* वह उसके लिए लाए। (याद रखें, आपको आत्मिक वैज्ञानिक बनकर प्रश्नों को पूछना चाहिए।)

यह कहानियाँ आपको राज्य के नियम और इसके संचालन के बारे में ज़रूरी बातें दिखा रही हैं। क्या एलिय्याह इतना भूखा था कि वह तब तक इंतजार करना नहीं चाहता था जब तक वह स्त्री अपने परिवार के लिए भोजन न बना ले? नहीं, उसने ऐसा क्यों किया इसके पीछे एक कारण है। भविष्यवक्ता जानता था कि जब वह अपने लिए बनाने से पहले उसे पहली रोटी देगी, उसका यह कार्य उसके सारे आटे और तेल को परमेश्वर के कार्यो और उनके राज्य के कानूनी क्षेत्राधिकार की आधीनता में रख देगा। मैं इसे फिर से कहूँगा।

जब उसने पहली रोटी भविष्यवक्ता (परमेश्वर के कार्य) को दी, उसके तेल और आटे ने राज्यों में परिवर्तन को लाया। अब वे परमेश्वर के राज्य के कानूनी अधिकार की आधीनता में आ गए हैं। तभी परमेश्वर ने आटे और तेल को जायज़ रूप से बहुगुणित किया।

आप इसी सिद्धांत को आगे यीशु की सेवकाई में कार्य करते हुए देखेंगे जब उन्होंने 5000 लोगों को पाँच रोटी और दो मछलियों के द्वारा खिलाया।

यदि आपको कहानी याद है तो, यीशु ने चेलों से कहा कि जाओ और देखो कि तुम्हारे पास क्या है। वे वापिस आए और उन्होंने बताया कि उनके पास पाँच रोटी और दो मछलियाँ हैं। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि रोटी और मछली को उनके पास लाएं। बाइबल इस बात को दर्ज करती है कि उसने उन्हें लिया और आशीष दी और फिर शिष्यों को दे दिया। मैं जानता हूँ कि यीशु ने कुछ भी धर्म का काम नहीं किया, तो उसने ऐसा क्यों किया?

उसे ऐसा करना पड़ा नहीं तो रोटी और मछली बहुगुणित नहीं होते। देखिए, पाँच रोटी और दो मछलियाँ कानूनी रूप से उस समय में मनुष्य के नियंत्रण मे थीं। परमेश्वर का उनपर कानूनी रूप से कोई नियंत्रण नहीं था। लेकिन जब उन्होंने इसे यीशु को दिया और उन्होंने इसे आशीष दी, तब वे परमेश्वर के राज्य के कानूनी अधिकार क्षेत्र में आ गए थे। तभी रोटी और मछलियाँ बहुगुणित हो गई।

यही सिद्धांत लूका के अध्याय 5 में दिखाई देता है। याकूब और यूहन्ना ने मछली पकड़ने के लिए सारी रात मेहनत की लेकिन कुछ प्राप्त नहीं हुआ। पतरस की नाव को

मांग कर यीशु चढ़कर नाव को तट से दूर ले गए और वहाँ से भीड़ को प्रचार किया, जिसके बाद उन्होंने पतरस से मछली पकड़ने के लिए गहरे जल में जाल डालने के लिए कहा।

जैसा कि आप जानते हैं कि उनके पास दो नाव भरके मछलियाँ मिली, इतना कि वे डूबने लगे थे। जब यीशु ने नाव को मांगा, वह सच में मछलियों के व्यवसाय को मांग रहे थे कि अब से प्रचार का काम शुरू हो जाए, जिस समय उन्होंने इसका नियंत्रण लिया, सारा व्यवसाय परमेश्वर के राज्य के अधिकार क्षेत्र में आ गया। इस कार्य ने स्वर्ग को अनुमति दी कि यीशु को बुद्धि के वचन भेजकर बताए कि मछलियाँ कहाँ हैं, और ऐसे ही बड़ी पकड़ प्राप्त हुई। (मैं हमेशा कहता हूँ कि यदि यीशु बताएं कि मछली कहाँ है और इसे कैसे पकड़ सकते हैं तो कोई भी मछली पकड़ सकता है। जब आप परमेश्वर के कार्यों के लिए देंगे, इसी सिद्धांत का आप भी उपयोग करेंगे। )

अब, एलिय्याह की कहानी की ओर वापिस जाते हुए, इस विधवा ने एलिय्याह और उसके कार्यों के साथ भागीदारी की और उसी के समान प्रतिफल भी प्राप्त किया। इसलिए एलिय्याह **और** वह विधवा और उसके परिवार के लिए भी प्रबंध था। क्या आप देख सकते हैं?

मैं इस पुस्तक में इस सिद्धांत के बारे में और अधिक बातें करूंगा, लेकिन अब मैं इस बड़ी कुंजी की ओर जाना चाहता हूँ, यह शब्द **भेजा गया**।

आइए इसे देखें। परमेश्वर ने एलिय्याह को एक कार्य के लिए नियुक्त किया था। उसको इस कार्य को पूरा करने के लिए प्रबंध की ज़रूरत थी। हम जानते हैं कि एलिय्याह एक भविष्यवक्ता था, तो जहां कहीं परमेश्वर उसे भेजता था वह परमेश्वर के वचन को लेकर चलता था। लेकिन परमेश्वर को अपने कार्य के लिए प्रबंध चाहिए था, और इसमें लोगों का किरदार आता है।

इस कहानी में, परमेश्वर को इस्राएल में कोई ऐसी विधवा नहीं मिली जिसमें उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए विश्वास हो। परमेश्वर जानते थे कि उन्हें यह करना है लेकिन उनको ऐसा कोई चाहिए था जो स्वर्ग के साथ सहमत हो और जिस प्रबंध की ज़रूरत एलिय्याह को थी वह करने में मदद करे।

याद रखें, वहाँ कोई भोजन नहीं था। हर जगह लोग मर रहे थे। यह सिर्फ थोड़े से खाने की खोज करने की बात नहीं थी, या बाज़ार जाकर इसे ढूँढना नहीं था, क्योंकि कोई भोजन ही नहीं था। एलिय्याह का प्रबंध परमेश्वर की आत्मा के द्वारा आने वाला था।

क्योंकि इस्राएल में ऐसा कोई नहीं था जिसमें भरोसा करने के लिए विश्वास हो, परमेश्वर को इस्राएल के बाहर जाकर दूसरे देश में एक विधवा को ढूँढना पड़ा जिसमें

विश्वास का हृदय था। और जैसे हमने पहले भी कहा, कि एलिय्याह व्यक्तिगत रूप से इस विधवा के पास भेजा गया क्योंकि परमेश्वर जानते थे कि वह उन पर विश्वास करेगी।

परमेश्वर को पहले स्थान पर रखकर और प्रभु के वचनों का पालन करने के द्वारा, परमेश्वर का कार्य हुआ, जितने दिन अकाल रहा एलिय्याह और उस स्त्री के परिवार का भी ख्याल रखा गया।

तो बात यह है कि....

जब परमेश्वर को कोई कार्य करवाना होता है, वह पृथ्वी पर ढूंढते हैं कि कौन है जिस पर मैं भरोसा कर सकता हूँ, कोई जो मेरी आज्ञा को माने और उसकी योजना को लेकर चले। परमेश्वर को भी अपने कार्य के लिए लोगों की ज़रूरत है जो आर्थिक सहायता करें।

तो, मैं इसे स्पष्ट करना चाहता हूँ: यदि आपको बड़े सुझाव चाहिए, यदि आप चाहते हैं कि परमेश्वर आपके लिए महान व्यवसायिक सुझावों को दें, तो आपको इसके लिए सक्षम बनना होगा! परमेश्वर आपके हृदय को जानते हैं, और वह पृथ्वी भर में ढूंढ रहे हैं कि वह किस पर अपने कार्यों के लिए भरोसा करें। वह ढूंढ रहे हैं कि कौन उनके कार्यों के लिए प्रबंध करेगा। फिर वह उस व्यक्ति को उस कार्य के लिए प्रबंध करने की योजना को भेजेंगे।

क्या आप समझ रहे हैं?

याद रखें, इस विधवा को प्रभु का वचन भेजा गया, और इसने उसके जीवन को बचा लिया!

मुझे याद है जब प्रभु का वचन मेरे व्यवसाय की शुरुआत करने के लिए मेरे पास आया था जिसमें नई प्राथमिकताएँ और आदेश थे। मैंने इसे ग्रहण किया और मेरा जीवन बच गया।

परमेश्वर उनकी खोज कर रहा है जो उसके कार्यों के लिए प्रबंध करने में आज्ञाकारी हृदय को रखते हैं!

आइए हम इस कहानी में पाए गए सिद्धांतों को फिर से देखते हैं।

1. परमेश्वर के पास पृथ्वी पर ऐसे कार्य हैं जिन्हें वह पूरा करना चाहता है।
2. हर कार्य को लोगों की ज़रूरत होती है।
3. हर कार्य को धन की ज़रूरत होती है।
4. परमेश्वर पृथ्वी पर ऐसे लोगों को ढूंढ रहे हैं जो उनके कार्यों को लेकर चल सकें।
5. और परमेश्वर पृथ्वी भर में ऐसे लोगों को ढूंढ रहा है जो उनके कार्यों के

लिए प्रबंध कर सकें।

6. जब हम परमेश्वर के कार्यों में धन को देते हैं, तब न सिर्फ परमेश्वर के कार्यों के लिए प्रबंध करने में स्वर्ग को हमारा उपयोग करने के लिए कानूनी अधिकार देते हैं बल्कि जो बहुतायक आती है उससे हमारे जीवन के लिए प्रबंध होता है।

उदार होने के लिए आपको कभी कोई कीमत चुकानी नहीं पड़ेगी! मैं अपनी कलीसिया से कहता हूँ "हमेशा हाँ कहें।"

अध्याय 4

# यह किसका धन है?

क्या आपको कभी इस बात का एहसास हुआ है कि आपके पास जो धन है वह आपका नहीं है?

मुझे मालूम है यह अजीब है, लेकिन क्या आपको कभी ऐसा लगा है कि परमेश्वर ने आपके हाथ में यह धन किसी और के लिए दिया है?

मैं जानता हूँ, हो सकता है कि आपने, अपने जीवन में कभी इस तरह से कभी नहीं सोचा, लेकिन आपको सोचना चाहिए क्योंकि यह आपके जीवन में बढ़त की दूसरी कुंजी है।

मैं जो कह रहा हूँ, इसके बारे में सोचें। हमने परमेश्वर के कार्य में धन का प्रबंध करने के बारे में बातें की, सही है न? और हमने कहा कि परमेश्वर पृथ्वी भर में ऐसे लोगों को ढूंढ रहा है जिनके पास राज्य के लिए हृदय है और वे उसके कार्यो में प्रबंध करेंगे। हम जानते हैं कि धन मनुष्य के हाथों में है, और यदि परमेश्वर को अपने कार्यो के लिए प्रबंध करना है, तो उसे पैसे उन लोगों के हाथों में देने होंगे जो इसे बोने की भी इच्छा रखें और वे परमेश्वर और उसके लोगों के प्रति उदार भी हों।

तो, आपके हाथों में क्या है? जब आप देखते हैं कि आपके पास क्या है, तब क्या आप जानते हैं कि जो आपके पास है उसे परमेश्वर ने किसी और के लिए दिया है? या उसने आपको दिया है ताकि आप किसी ऐसे प्रोजेक्ट में दें जिसे परमेश्वर पूरा करना चाहता है?

निश्चयी, कानूनी रूप से, जो आपके पास है वह आपका है और इसमें निर्णय भी आपका है कि इसका उपयोग कैसे करें। लेकिन जब परमेश्वर लोगों के हाथों में पैसों को डालते हैं, तो मैं उनकी अनुमोदित सूची में आना चाहता हूँ। क्या आप नहीं चाहेंगे?

> *सो जो बोने वाले को बीज, और भोजन के लिये रोटी देता है वह तुम्हें बीज देगा, और उसे फलवन्त करेगा; और तुम्हारे धर्म के फलों को बढ़ाएगा। कि तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिये जो हमारे द्वारा परमेश्वर का*

*धन्यवाद करवाती है, धनवान किए जाओ।*

–2 कुरिन्थियों 9:10–11

हमने पहले भी इन वचनों को देखा है, लेकिन हो सकता है आपने इसमें कुछ खो दिया है। वचन 10 कहता है परमेश्वर बोने वाले को बीज देता है और खाने वाले को रोटी।

विचार करें कि वह क्या कह रहा है: परमेश्वर बोनेवाले को बीज देता है और खाने वाले को रोटी। खाने के लिए रोटी उन सारी आवश्यकताओं को दर्शाती है जो आपके अपने घर में है उस बहुतायत के जीवन को जीने के लिए जो आपके लिए परमेश्वर के पास है। लेकिन वह बोनेवाले को बीज देता है।

क्या आपने किसी बगीचे को उगाया है या फिर अपने बगीचे में घास के बीज को बोया है? आप भूमि में बीज को डालते हैं, और जैसे आप बो रहे हैं, पहले बीज को बोने के बाद, आप और अधिक बीजों को लेने के लिए अपने हाथ को बढ़ाते हैं। इसमें एक निश्चित प्रवाह है। जैसे ही आप अपने हाथों से बीज को जाने देते हैं, वैसे ही आपका हाथ फिर से ताज़े बीजों से भर जाता है जिसे आप फिर से बो देते हैं। इस कथन में, परमेश्वर बोनेवाले को बीज देता है, इसका यही मतलब है, यानि परमेश्वर उसे बीज दे रहे हैं जो बोने की प्रक्रिया में लगा हुआ है।

## परमेश्वर बीज उसे देता है जो इसे बो रहा है!

पौलूस यह बताता है कि परमेश्वर हमें वह रोटी भी देता है जिसकी हमें ज़रूरत है, निश्चयी, लेकिन इस पद में बोना हमारे जीवनों पर और उनपर इसका कैसा प्रभाव पड़ता है जिनके प्रति हम उदारता दिखाते हैं इस बात पर महत्व दिया गया है। जैसा कि हमने पहले भी सीखा, यह लोगों के हृदय को परमेश्वर की ओर फेर देता है।

इसे ध्यान में रखते हुए, मुझे लगता है कि हम इससे सहमत हैं कि परमेश्वर अधिक से अधिक बीज को बोना चाहता है ताकि एक विशाल फसल को काटे। तो, यदि आप परमेश्वर होते, तो आप किसको बीज देते? उसे जो आलसी है और कभी बोने का विचार नहीं करता या वह जो लगातार बोता रहता है? मुझे लगता है इसका उत्तर बहुत स्पष्ट है।

जैसे हम उसके प्रति जो हमारे पास विश्वासयोग्य रहते हैं, वैसे ही परमेश्वर कहते हैं कि वह हमारे बीजों के भंडार को बढ़ाएगा ताकि हम और अधिक बो सकें और उसके राज्य के लिए पृथ्वी पर एक बड़े प्रभाव को ला सकें।

क्या आपने ध्यान दिया कि पौलूस कहता है कि जैसे आप बीज को बोते और

काटते हैं, आपके बीज का भंडार बढ़ता जाएगा, जिससे आप हर अवसर में उदार रहेंगे? यदि यह सच है (और हाँ यह है), तो आपके बीज का भंडार आपका धन है जिसे आपने उस अवसर के लिए संभालकर रखा है जहां आप अपनी उदारता को दिखाएंगे। इससे पहले कि आप उदार बनें, आपके बीज का भंडार एक स्थान पर होना चाहिए।

मैं यह कहना चाहता हूँ कि जिन पैसों को आपने थामकर रखा है वह सब आपके लिए नहीं हैं। इसमें से कुछ परमेश्वर द्वारा एक बीज होने के लिए आपको दिया गया है। बोने और काटने का यह चक्र एक प्रवाह है। हम बोते हैं, फिर हम काटते हैं; और जैसे हम ऐसा करते रहते हैं, और जब तक हमें अपने बीज की ज़रूरत नहीं है, हमारी फसल बढ़ती ही रहेगी, और हमारे उदार होने की क्षमता भी बढ़ती रहेगी।

यह सच है कि जब आपको भूख लगती है और आपको रोटी चाहिए, तब आप अपने व्यवसाय के बीज में से भी लेते हैं। जैसे आपके बीज का व्यवसाय बढ़ता है, तब उससे रोटी प्राप्त करने की क्षमता भी बढ़ती है।

लेकिन इस मानसिकता में मैं और गहराई में जाना चाहता हूँ।

मैं कहना चाहता हूँ कि, परमेश्वर अपना बीज उसे देता है जो बोने का हृदय रखता है, उसे नहीं जो इसे एक दिन याद करेगा। वह सिर्फ बोनेवाले को देता है।

तो यहाँ प्रश्न यह है कि: क्या आप अपने जीवन को सिर्फ अपने पैसों को संभालने में बिताना चाहते हैं, या क्या आप अपने और परमेश्वर दोनों के पैसों को संभालने में जीवन को बिताएंगे?

जेम्स और एला हमारी कलीसिया में इसलिए आए क्योंकि उन्होंने ऐसी बातों को सुना जो आमिश समाज में कभी नहीं सुना था जहां वे बड़े हुए। उनके लिए परमेश्वर के राज्य के सुझाव बहुत नए थे, और वे राज्य के बहुत महान विद्यार्थी थे। जो संदेश हम परमेश्वर के राज्य के बारे में फेथ लाइफ चर्च से सिखाते थे उन्हें वे बार बार सुनते थे।

**आपको सिर्फ अपने पैसों को संभालना है कि अपने और परमेश्वर के भी?**

एक दिन, जेम्स ने प्रभु से कहा कि वह दूसरों से इन सारी कहानियों को सुनता था कि परमेश्वर के राज्य ने लोगों के जीवनों में कैसे महान कार्य किए, और उसे भी इस गवाही का अनुभव करना था। उसने निर्णय लिया कि जिन राज्य के नियमों को वह सीख रहा है उसे वह लागू करेगा। वे छुट्टियों के लिए गए और उन्होंने अपना अधिकतर समय दुगने भाग से संबंधित संदेशों को सुनने में बिताया, जो मैं उस समय सिखा रहा था। मेरी पुस्तक, आपकी वित्तीय क्रांति: विश्राम की सामर्थ उसी समय छपी थी, और

मैं उसी से सिखा रहा था। तो उन्होंने ठान लिया कि वे बीज बोने से पहले खुद को वचन की गहराई में ले जाएंगे।

उन्होंने निर्णय लिया कि वे $10,000 की फसल के लिए बीज को बोएंगे, जो उन्हें परिवार की ज़रूरतों के लिए और कुछ मरम्मत के कामों के लिए चाहिए था। वे नहीं जानते थे कि पैसे कहाँ से आएंगे, लेकिन वे उस समय तक राज्य को इतना पढ़ चुके थे कि उन्हें महसूस हुआ कि उनके अंदर इस कार्य के लिए विश्वास उत्पन्न हुआ है।

उस समय, जेम्स का मोटर की मरम्मत का व्यवसाय था। जैसे ही वह काम के लिए जा रहा था, $10,000 को बोए हुए ज़्यादा समय नहीं हुआ था कि, उसने एला को बताया कि दुगने भाग को पढ़ने के बाद, उसे सच में लगा कि उन्हें अपने बीज के लिए दुगने भाग पर विश्वास करना चाहिए। उसने कहा कि वह $20,000 के लिए विश्वास कर रहा था। एला ने बताया कि वह थोड़ी अचंभित थी, लेकिन उसने अपने पति का साथ दिया। जैसे ही वह दरवाजे के बाहर जाने लगा, उसने कहा, "$20,000 ठीक है"।

वह दिन हमारी दुकान पर एक सामान्य दिन था। जेम्स के प्रतिदिन के ग्राहकों में से एक कुछ मरम्मत के लिए लेकर आया, और जैसे ही उसने हिसाब लिखा, ग्राहक जेम्स के दफ्तर में बैठ गया और उसे बताया कि वह हाल ही में अपनी गायों को लेकर कितना परेशान था। वे उसके बाड़ों को तोड़कर भाग गई थीं। उसकी ज़मीन राष्ट्रीय जंगल के बॉर्डर से जुड़ी हुई थी, तो यह गायें हर जगह भटक रही थीं। जेम्स का ग्राहक एक बूढ़ा व्यक्ति था, जो कहता रहा कि अब वह इतना बूढ़ा था कि वह इन गायों को भागकर भी पकड़ नहीं सकता था, और वह इसे करते करते थक गया था। उसके शब्दों ने जेम्स को ऐसा चौंका दिया कि उसने खुद से प्रश्न किया कि क्या उसने सही सुना है?

उसके दोस्त ने कहा, "मैं इन गायों से थक गया हूँ और इसलिए आज मैं इन सबको तुम्हें देता हूँ। आज से, यह तुम्हारी हैं।" जेम्स नहीं जानता था कि उसे क्या कहना चाहिए। उसके पास कोई भूमि नहीं थी। वह शहर में एक चौथाई एकड़ ज़मीन पर रहता था, और वह एक मोटर मिस्त्री था। हाँ, वह एक आमिश के रूप में पला बड़ा और गायों के साथ बड़ा हुआ था, लेकिन इस बात को कई वर्ष बीत गए थे। वह उस व्यक्ति से कहने जा रहा था कि मुझे यह नहीं चाहिए लेकिन फिर उसे अपना वह बीज याद आया। उसने सोचा हो सकता है इसमें कुछ देखने योग्य बात छिपी है।

अपने दोस्त से और प्रश्न पूछने के बाद, उसने जाना कि उसके पास 23 काली एंगस गायें और तीन घोड़े भी थे। जेम्स को याद आया कि कुछ समय पहले किसी ने उसे बताया था कि उन्हें मवेशियों के झुंड को खरीदना है। उन्हें एक बार में थोड़े नहीं बल्कि उन्हें किसी और के मवेशियों को खरीदना था। जेम्स ने उन्हें कॉल किया, और

हाँ, उस व्यक्ति ने कहा कि वह इन्हें खरीदना चाहते हैं। फिर जेम्स ने उनसे पूछा कि वह मवेशियों के लिए कितना दाम देना चाहेंगे, और उस व्यक्ति ने थोड़ी देर विचार करके कहा, "ओ, लगभग $20,000।"

जेम्स जो सुन रहा था उस पर उसे विश्वास नहीं हुआ। यह सब, उस दिन उसके घर से निकालने के बाद हुआ और जैसा उसने एला से कहा था कि उसे पवित्र आत्मा से दुगना भाग प्राप्त होगा, वैसा ही हुआ। उसने मुझे बताया कि गायों को एक झुंड में लाकर उन्हें उनके नए घर की ओर ले जाना, बड़ी मेहनत का काम था, लेकिन उसने इस काम को कर दिखाया। फिर जेम्स ने मुझे बताया कि उसे अब इस बात पर विश्वास हो गया है कि परमेश्वर का राज्य कुछ भी कर सकता है और यह कि अब वह अपनी शक्ति की सीमाओं में बंधा नहीं है।

जब वह पहले दिन घर को लौटा और उसने एला को गायों के बारे में बताया, तब उसने कहा कि वह चकित रह गई थी। यदि आप जेम्स और एला से परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में पूछेंगे, तो बेहतर होगा कि आप कुछ घंटे निकाल लें क्योंकि उनके पास बताने के लिए बहुत कुछ होगा।

यह इस बात का एक बड़ा उद्धारण है कि कैसे पवित्र आत्मा एक व्यक्ति की अगुवाई इस विषय में करता है कि परमेश्वर के प्रति उनकी उदारता के कारण आनेवाली फसल को कहाँ काटें। एक बार जब हम बोते हैं, तब हमें याद रखना होगा कि पवित्र आत्मा अजीब बातों को दिखाता है, शब्दों की कमी के कारण, इसे अजीब कह सकते हैं! मेरा मतलब है, जेम्स मानसिक रूप से विकल्पों के बारे में सोचने के बाद भी इस सुझाव को नहीं ला सकता था, एक कागज और पेंसिल के साथ टी–बार को बनाने के बावजूद भी नहीं।

पतरस ही को देखें, मुझे यकीन है कि उसने कभी अपने ख्यालों में भी नहीं सोचा होगा कि उसे अपने कर को चुकाने के लिए एक मछली के मुँह से सिक्का मिलेगा, या समुद्र तट से चलकर एक रब्बी आकर उसे बताएगा कि अपने जीवन की सबसे बड़ी पकड़ को पाने के लिए जाल को कहाँ डाले।

मुझे और ड्रेनडा ही को देखिए जब हम तनाव और संघर्ष के उन नौ वर्षों में थे। यह विचार कि हम किसी दिन एक ऐसी कंपनी के मालिक होंगे जो लोगों को कर्ज़ से बाहर आने में मदद करेगी, यह और भी चकित करनेवाली बात है, या फिर हमारा अपना एक टेलिविज़न संचालन होना जो विश्व भर में सभी समयों पर संचालित होता है, *पैसों की समस्या का हल निकालना*, यह असंभव होता।

आप कभी परमेश्वर को सीमित करना नहीं चाहेंगे।

तो, आइए इसे देखें, और याद करें कि परमेश्वर बीज बोने वाले को बीज देता

है—उसको जिसे बोने की इच्छा हो और जो बो रहा है!

आइए आगे बढ़ें। अब मैं आपको सबसे मुख्य दृष्टांतो में से एक बताऊँगा जिसके द्वारा यीशु ने सिखाया कि परमेश्वर कैसे लोगों के साथ काम करता है और कैसे लोगों को इसके लिए सक्षम बनना होगा। यह दृष्टांत आपको ज़रूर रुककर सोचने पे मजबूर कर देगा।

> *"फिर उस ने चेलों से भी कहा; किसी धनवान का एक भण्डारी था, और लोगों ने उसके साम्हने उस पर यह दोष लगाया कि यह तेरी सब संपत्ति उड़ाए देता है। सो उस ने उसे बुलाकर कहा, यह क्या है जो मै तेरे विषय में सुन रहा हूं? अपने भण्डारीपन का लेखा दे; क्योंकि तू आगे को भण्डारी नहीं रह सकता।*
>
> *तब भण्डारी सोचने लगा, कि अब मैं क्या करूं क्योंकि मेरा स्वामी अब भण्डारी का काम मुझ से छीन ले रहा है: मिट्टी तो मुझ से खोदी नहीं जाती: और भीख मांगने से मुझे लज्ज़ा आती है। मैं समझ गया, कि क्या करूंगा: ताकि जब मैं भण्डारी के काम से छुड़ाया जाऊं तो लोग मुझे अपने घरों में ले लें।*
>
> *और उस ने अपने स्वामी के देनदारों में से एक एक को बुलाकर पहिले से पूछा, कि तुझ पर मेरे स्वामी का क्या आता है?*
>
> *उस ने कहा, सौ मन तेल; तब उस ने उस से कहा, कि अपनी खाता–बही ले और बैठकर तुरन्त पचास लिख दे।*
>
> *फिर दूसरे से पूछा; तुझ पर क्या आता है? उस ने कहा, सौ मन गेहूं; तब उस ने उस से कहा; अपनी खाता–बही लेकर अस्सी लिख दे।*
>
> *स्वामी ने उस अधर्मी भण्डारी को सराहा, कि उस ने चतुराई से काम किया है; क्योंकि इस संसार के लोग अपने समय के लोगों के साथ रीति व्यवहारों में ज्योति के लोगों से अधिक चतुर हैं। और मैं तुम से कहता हूं, कि अधर्म के धन से अपने लिये मित्र बना लो; ताकि जब वह जाता रहे, तो वे तुम्हें अनन्त निवासों में ले लें।*
>
> *जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है, वह बहुत में भी सच्चा है: और जो थोड़े से थोड़े में अधर्मी है, वह बहुत में भी अधर्मी है। इसलिये जब तुम अधर्म के धन में सच्चे न ठहरे, तो सच्चा तुम्हें कौन सौंपेगा। और यदि तुम पराये धन में सच्चे न ठहरे, तो जो तुम्हारा है, उसे तुम्हें कौन देगा?*
>
> *कोई दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता: क्योंकि वह तो एक से*

*बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा; या एक से मिल रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा: तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते॥*

*फरीसी जो लोभी थे, ये सब बातें सुन कर उसे ठट्ठों में उड़ाने लगे। उस ने उन से कहा; तुम तो मनुष्यों के साम्हने अपने आप को धर्मी ठहराते हो: परन्तु परमेश्वर तुम्हारे मन को जानता है, क्योंकि जो वस्तु मनुष्यों की दृष्टि में महान है, वह परमेश्वर के निकट घृणित है।"*

–लूका 16:1–15

इस दृष्टांत में सीखने के लिए बहुत कुछ है। पहली बात हम देखते हैं कि एक धनी व्यक्ति ने अपने भण्डारी को सारे कार्यों पर नियंत्रण दिया है, लेकिन भण्डारी अपने स्वामी की संपत्ति को बर्बाद कर रहा था और उसने खुद को भण्डारी होने की योग्यता से बाहर कर दिया था। यह जानते हुए कि अब वह अपनी नौकरी को खो देगा, उसने तुरंत उन सभी लोगों को बुलाया जो उसके स्वामी के कर्ज़दार थे और उन्हें बताया कि वह उनके बिल में बड़ी कटौती करेगा, और यदि वे इसका भुगतान जल्दी करेंगे तो रकम को आधा भी कर देगा।

अब, निश्चयी, भण्डारी क्या कर रहा था इसके बारे में स्वामी को कुछ नहीं पता था। लेकिन उस अधर्मी भण्डारी ने सोचा यदि वह इन लोगों को बड़ी छूट देगा, तो वे नौकरी से निकले जाने के बाद उस पर कृपादृष्टि को दिखाएंगे, और उसे आशा थी कि इस कारण वे उससे अच्छा व्यवहार करके उसे नौकरी देंगे। जब स्वामी ने सुना कि अधर्मी भण्डारी ने क्या किया है, तब उसने उसे अंदर बुलाया और कहा:

***स्वामी ने उस अधर्मी भण्डारी को सराहा, कि उस ने चतुराई से काम किया है।***

चतुराई की परिभाषा इस प्रकार है: विशेष रूप से व्यवहारिक मामलों में चालाकी दिखाना या सतर्क होना या साधन संपन्न का होना। धूर्त कार्यों को करना या धूर्त प्रथाओं द्वारा चिन्हित होना या कुछ कार्य को निपटा देना : कपटी होना।

स्वामी ने जान लिया था कि भण्डारी के पास ऐसी योजना को बनाने और लागू करने की क्षमता है जो सिर्फ लाभ को लाएगी, लेकिन इस किस्से में लाभ स्वामी के लिए नहीं बल्कि उसके खुद के लिए—ऐसा कुछ जो उसने स्वामी के लिए इस भण्डारी में नहीं देखा था। हालांकि, जब अपना ध्यान रखने की बात आई, तो उसने ऐसा ही किया, असल में, बहुत चतुराई से और बहुत ध्यानपूर्वक। उसने अपने स्वामी

के लाभ नहीं बल्कि अपने फायदे के लिए अपने मामलों में और अपनी भलाई के लिए इस कदम को बढ़ाया। मैं यहाँ साफ साफ कहता हूँ—कि वह एक किराए पर लिया हुआ व्यक्ति था।

अब, मैं बहुत कठिन प्रश्न करने वाला हूँ: क्या आप किराए पर लिए गए मसीही हैं?

क्या आपको परमेश्वर के व्यवसाय से बढ़कर सिर्फ अपनी भलाई की परवाह है? क्या आपको परमेश्वर की ज़रूरतों और चिंताओ से बढ़कर अपनी ज़रूरतों की चिंता है? क्या आप परमेश्वर के धन को बर्बाद कर रहे हैं?

वाह, मैं जानता हूँ यह कठोर प्रश्न हैं। इसीलिए मैंने कहा कि यह दृष्टांत बहुत गहरा है, क्योंकि यह हृदय को छेदता हुआ हृदय में छिपे सारे गलत इरादों को प्रगट करता है।

यीशु हमें इसका चित्र दिखाते हैं और यूहन्ना 10:11–13 में किराए पर लिए जाने का अर्थ बताते हैं।

> *अच्छा चरवाहा मैं हूं; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है। मजदूर जो न चरवाहा है, और न भेड़ों का मालिक है, भेड़िए को आते हुए देख, भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है, और भेड़िया उन्हें पकड़ता और तित्तर बित्तर कर देता है। वह इसलिये भाग जाता है कि वह मजदूर है, और उस को भेड़ों की चिन्ता नहीं।*
>
> –यूहन्ना 10:11–13

एनकेजेवी अनुवाद (व.13) में इस प्रकार बताता है:

> *किराए का व्यक्ति भाग जाता है क्योंकि वह किराए का व्यक्ति है और उसे भेड़ की कोई चिंता नहीं है।*

उस अधर्मी भण्डारी के मामले में,स्वामी के धन को संभालने के लिए उसे अयोग्य जाना गया क्योंकि उसे स्वामी की भलाई की कोई परवाह नहीं थी: उसे सिर्फ अपनी चिंता थी। यह सच है, कि अब, उसके पास बाहर जाकर पैसे कमाने की क्षमता थी, लेकिन अब उसके पास अपने **और** अपने स्वामी के पैसों को संभालने का अवसर नहीं था।

मैं विश्वास करता हूँ कि हम ऐसे समयों में जी रहे हैं जहां अमरीका और विश्व भर में किराए की मानसिकता बहुत ज़्यादा चल रही है।

मुझे यकीन है कि आप कभी होटल में गए होंगे और गंदी मेज़ और एक गंदे फर्श को देखा होगा, और कुछ कर्मचारियों को मूर्खता से काम करते हुए भी देखा होगा। या फिर आप कभी होटल बंद होने के 30 मिनट पहले नाश्ते के स्थान में जाएं, तब आप मेज़ पर कुर्सियों को रखा देख कर चकित हो जाएंगे, वहाँ कर्मचारी एक कतार में निकलने के लिए घड़ी देखते हुए खड़े रहते हैं। तब आप बिना पूछे जान जाएंगे कि मालिक वहाँ नहीं है। यह सब किराए के लोग हैं। उन्हे व्यवसाय के फायदे की कोई परवाह नहीं है। वे सिर्फ अपने पेचेक के लिए वहाँ हैं।

कई मालिक मुझे बताते हैं कि वे इस बात से परेशान हैं कि यदि कर्मचारी समय पर काम करने आए तो वह बाहर भीड़ में खड़ा होता है। मालिक रो रहे हैं उन मालिकों के लिए, टेकर्स के लिए नहीं। उन्हे ऐसे कर्मचारी चाहिए जो व्यवसाय का इस प्रकार ध्यान रखें कि जैसे वह उनका है। वे कहते हैं कि ऐसा कर्मचारी जो भले स्वभाव का है उसे बढ़ाया जाएगा और नियुक्त किया जाएगा।

परमेश्वर इनसे कुछ अलग नहीं है। वह भी ऐसे लोगों की खोज कर रहा है जो उन बातों की चिंता करे जिसकी परमेश्वर चिंता करता है और उस बात से बैर रखे जिससे परमेश्वर बैर रखता है।

1 शमूएल 15 में, परमेश्वर राजा शाऊल से कहता है जैसा अमालेकियों ने इस्राएलियों के साथ मिस्र से निकलते समय किया था उसके कारण उन पर आक्रमण करो। राजा शाऊल से कहा गया था कि राजा और पुरुषों को जीवित नहीं रखना है। उन्हें किसी पशु को भी अपने साथ जीवित वापिस नहीं लाना था, लेकिन शाऊल ने ऐसा ही किया:

> *परन्तु अगाग पर, और अच्छी से अच्छी भेड़–बकरियों, गाय–बैलों, मोटे पशुओं, और मेम्नों, और जो कुछ अच्छा था, उन पर शाऊल और उसकी प्रजा ने कोमलता की, और उन्हें सत्यानाश करना न चाहा; परन्तु जो कुछ तुच्छ और निकम्मा था उसको उन्होंने सत्यानाश किया*
>
> –1 शमूएल 15:9

देखिए परमेश्वर वचन 10–11 में क्या कहते हैं:

> *तब यहोवा का यह वचन शमूएल के पास पहुंचा, कि मैं शाऊल को राजा बना के पछताता हूं; क्योंकि उसने मेरे पीछे चलना छोड़ दिया, और मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं किया। तब शमूएल का क्रोध भड़का; और वह रात*

*भर यहोवा की दोहाई देता रहा।*

तब हम देखते हैं कि परमेश्वर 1 शमूएल 16:1 में शाऊल के विषय में शमूएल से क्या कहता है:

> *फिर यहोवा ने शमूएल से कहा, मैं ने शाऊल को इस्राएल पर राज्य करने के लिये तुच्छ जाना है, तू कब तक उसके विषय विलाप करता रहेगा? अपने सींग में तेल भर के चल; मैं तुझ को बेतलेहेमी यिशै के पास भेजता हूं, क्योंकि मैं ने उसके पुत्रों में से एक को राजा होने के लिये चुना है।*

उस अधर्मी भण्डारी के समान जिसे स्वामी के मामलों में ध्यान देने के लिए अयोग्य जाना गया, वैसे ही शाऊल को अयोग्य जाना गया था। क्या आपको पता है? आप और मैं भी इसमें अयोग्य गिने जा सकते हैं।

परमेश्वर किस बात की खोज कर रहा है? वह किस पर भरोसा करेगा?

> *फिर उसे अलग करके दाऊद को उन का राजा बनाया; जिस के विषय में उस ने गवाही दी, कि मुझे एक मनुष्य यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल गया है। वही मेरे सारी इच्छा पूरी करेगा।*
>
> –प्रेरितों के काम 13:22

अगर हम अयोग्य गिने जा सकते हैं, तो हम योग्य भी पाए जा सकते हैं। आप कहेंगे, "तो, गैरी मैं इसे कैसे करूँ?" यह दृष्टांत आपके प्रश्नों का उत्तर देगा।

> *जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है, वह बहुत में भी सच्चा है: और जो थोड़े से थोड़े में अधर्मी है, वह बहुत में भी अधर्मी है। इसलिये जब तुम अधर्म के धन में सच्चे न ठहरे, तो सच्चा तुम्हें कौन सौंपेगा। और यदि तुम पराये धन में सच्चे न ठहरे, तो जो तुम्हारा है, उसे तुम्हें कौन देगा?*
>
> *कोई दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता: क्योंकि वह तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा; या एक से मिल रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा: तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते॥*
>
> –लूका 16:10–13

मैं इसे स्पष्ट करना चाहता हूँ: कि आपको वफादारी की परीक्षा में सफल होना होगा। यदि आप पर थोड़े के लिए भरोसा किया जा सकता है, तो बहुत के लिए भी भरोसा किया जा सकता है। परीक्षा की शुरुआत हमेशा स्वाभाविक से होती है और इसका अंत आत्मिकता में होता है। पहले आपको सांसारिक धन को संभालने में भरोसेमंद होना होगा इससे पहले कि परमेश्वर को आप पर अपने धन के लिए भरोसा हो। यदि आप किसी और के धन को लेकर वफादार नहीं हैं, तो आपको अपना धन कौन सौंपेगा? परमेश्वर तो बिलकुल नहीं करेगा।

ठीक है तो, अब हम इस दृष्टांत को अपने जीवन में लागू करेंगे।

## अधिकतर मसीही परमेश्वर को अंत में बचा हुआ देते हैं।

अधिकतर मसीही अपने बजट को देखकर निर्णय लेते हैं कि, "मैं इतना ही दे सकता हूँ।" लेकिन उसी दिन बाहर जाकर उन्हें एक नए कोट को खरीदने में कोई दिक्कत नहीं होती है।

अब, मैं किसी को दोषी महसूस कराना नहीं चाहता, और हाँ परमेश्वर को आपके अच्छे कोट में कोई दिलचस्पी नहीं है। मैं आपसे बस यह पूछ रहा हूँ कि: आपको सिर्फ अपने पैसों को संभालना है कि अपने और परमेश्वर के भी?

यदि आप गूगल करें कि औसत ईसाई कितना दान देता है, मैंने एक जगह पढ़ा कि औसत ईसाई एक सप्ताह में सिर्फ $13 देता है।

मैंने देने के विषय में आँकड़े देखे हैं, और यह सभी निराशाजनक थे। जैसा कि मैंने बताया कि अधिकतर ईसाई परमेश्वर को अंत का बचा हुआ भाग देते हैं। कृपया इसे समझें मैं आपको दोषी या अपराधी महसूस कराना नहीं चाहता हूँ। मैं सिर्फ एक मुद्दे को समझा रहा हूँ—और मुझे लगता है कि परमेश्वर का वचन मुझसे सहमत है—कि परमेश्वर किराए के लोगों की खोज में नहीं है; वह मालिकों को ढूंढ रहा है।

दूसरी बात यह है कि परमेश्वर ऐसे लोगों की खोज भी नहीं कर रहा जो दोष भावना में आकर दान करें। 2 कुरिनथियों 9:7 के अनुसार परमेश्वर हर्ष से देने वालों से प्रेम करता है।

शाऊल अयोग्य गिना गया क्योंकि उसने परमेश्वर की बात नहीं मानी, लेकिन दाऊद योग्य पाया गया क्योंकि वह आज्ञाकारी था और परमेश्वर के कार्य को पूरा करने के लिए एकदम सही था।

मैं यहाँ एक नए दृष्टिकोण को लाना चाहता हूँ। क्या होगा अगर हम अपनी दुनिया को उलट–पुलट करके पहले परमेश्वर के लिए जीवन को बिताएंगे और हम खुद अंत में बची हुई चीजों को लेकर रहेंगे? मैं सिर्फ अनुमान लगा सकता हूँ कि आपका बचा

हुआ जीवन जल्द ही समाप्त हो जाएगा और आप धन्य जीवन को जीएंगे।

यह आर.जी ले टूरण्यु के लिए भी लाभदायक था। नम्र शुरुआतों और केवल सातवीं कक्षा की पढ़ाई से लेकर, उन्होंने अपने आपको सिखाया, और अंत में, अपने लिए एक विनिर्माण साम्राज्य को बनाया। उनकी पृथ्वी–चालित मशीनों ने द्वितीय विश्व युद्ध जीतने के लिए और आधुनिक अमरीका की राजमार्ग बुनियादी ढांचे का निर्माण करने के लिए मदद की। अपने जीवन के अंत तक, उन्होंने 300 सुविधाएं उपलब्ध कराई।

उनका रहस्य क्या था? उन्होंने परमेश्वर को अपनी बनाई हुई चीजों का 90% दिया था।

अब मैं आपसे ऐसा ही करने के लिए नहीं कह रहा हूँ। जब वह 30 वर्ष के थे और बहुत गहरे कर्ज़ में थे तब यह उनके और परमेश्वर के बीच में एक सहमति थी। उन्होंने परमेश्वर को अपने व्यवसाय का भागीदार बनाया (वह ऐसा ही कहते थे), और इस बात ने ऐसा ही साबित भी किया।

जब परमेश्वर ने मुझे एक कलीसिया की शुरुआत करने के लिए बुलाया था, तब मैं पहले ही से फॉरवर्ड फाइनैन्शल ग्रुप नामक अपनी कंपनी को चला रहा था। यह बहुत सफल रही और हमारे प्राथमिक विक्रेता के साथ राष्ट्रव्यापी 5,000 कार्यालयों में से नंबर एक बन गई थी। जब परमेश्वर ने मुझे पास्टर होने के लिए बुलाया तब मैंने उनसे पूछा,"फॉरवर्ड फाइनैन्शल ग्रुप के बारे में क्या? क्या मैं इसे बंद करके अपनी कलीसिया की अगुवाई करने पर ध्यान लगाऊँ?"

तब प्रभु ने मुझे उत्तर दिया और कहा, "नहीं, इसे करते रहो क्योंकि यह बहुतों की सहायता करती है।" तो मैंने ऐसा ही किया।

मैं मानता हूँ कि इन दोनों को एक साथ करना कई बार बहुत कठिन था, लेकिन कई वर्षो से इसने हज़ारों लोगों की मदद की है। जैसे मैं अपनी कलीसिया की अगुवाई कर रहा था, मुझे ऐसा लगा कि इसमें मेरी उपस्थिति कम होने के कारण उत्पाद कम हो जाएगा। लेकिन जैसे ड्रेनडा और मैंने परमेश्वर के कार्यो को पूरा करने के लिए अपने जीवन को समर्पित किया, मैंने इसका विपरीत होते हुए देखा। हालांकि मैं खाली समयों में ही कंपनी को समय देता था, यह फिर भी शानदार प्रदर्शन कर रही थी।

हज़ारों कार्यालयों में से, हो सकता है हम विश्वभर में पहले पाँच से दस कार्यालयों में आते थे और मंच पर हमारी पहचान होनी थी। फिर भी मैं मुस्कुरा रहा था, यह जानते हुए कि मैं इसे सिर्फ थोड़ा ही समय दे रहा था और अपना अधिकतर समय कलीसिया की अगुवाई करने के लिए दे रहा था। परमेश्वर ने कृपादृष्टि और बुद्धि से मुझे सम्मानित किया ताकि वे जो इस संसार में सम्पूर्ण हृदय से पैसों के पीछे भाग रहे

हैं वे रुककर सोचें कि यह मैंने कैसे किया।

मुझे याद है कि मैं एक सभा में बैठा था और मेरे पास बैठा यह व्यक्ति मुझसे पूछता है कि मैंने कितनी बिक्री की। मैंने मुस्कुराकर उसे देखा और कहा, "कुछ भी नहीं।" उसने फिर पूछा, "तो आप इतना व्यवसाय कैसे करते हैं?" मैंने उसे बताया कि हम सिर्फ मुँह के वचन से कार्य करते है और परमेश्वर हमे आशीष देता है। उसने सिर्फ अपना सिर हिलाया क्योंकि उसे समझ नहीं आया था।

एक बार हमारे विक्रेताओं में से एक मुख्या ने मुझे कॉल किया और वह जानना चाहते थे कि क्या मैं एक सभा में दर्शकों को बताऊँगा कि हम इतना उत्पाद कैसे कर पाते हैं। मैंने कहा मुझे यह करने में बड़ी खुशी होगी। वह फिर मुझसे प्रश्न करने लगा कि यह कैसे कार्य करता है और यह कि हमने कैसे इतना व्यवसाय किया। निश्चयी, मुझे उन्हें बताना था कि हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और उन्होंने हम पर कृपादृष्टि की। जब मैंने उन्हें बताया कि मैं सिर्फ कुछ ही घंटों के लिए काम करता हूँ और पूरा समय कलीसिया की अगुवाई में लगाता हूँ, तब उन्होंने कहा, "मुझे लगा आपके पास विस्तृत विपणन रणनीति तैयार है और आप इसके बारे में हमारे साथ बाँटेगे। मैं इसके बारे में नहीं सोच रहा था, लेकिन मैं साझा करने की आपकी इच्छा की सराहना करता हूँ।" ओ, इसमें उनका नुकसान था। मैं वहाँ पर बहुतों की मदद कर सकता था।

**परमेश्वर इसे देखते हैं। हर कार्य में, आप अगले कार्य के लिए प्रशिक्षित किए जाते हैं, तो अपनी छोटी शुरुआतों को कभी तुच्छ ना जानें।**

मैंने इस सम्पूर्ण पुस्तक में बताया है कि यदि आप परमेश्वर के कार्य का ध्यान रखेंगे, तो वह आपके कार्य का भी ध्यान रखेगा!

तो मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ, "यह किसका धन है?"

क्या आप सिर्फ अपने पैसों को संभालेंगे, उस अधर्मी भण्डारी के समान, या आप परमेश्वर के धन को भी संभालना चाहते हैं? जब आप परमेश्वर के धन को संभालते हैं, आपके व्यवसाय का बीज परमेश्वर के ज्ञान और अनुग्रह के द्वारा सशक्त किया जाता है, जिसमें आपकी रोटी की व्यक्तिगत फसल भी बढ़ती जाती है।

मैं यह बात जानता हूँ कि अगर आपके पास अरबों धन है परमेश्वर को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता जब तक उनके पास आपका हृदय है!

याद रखे, इसकी शुरुआत एक छोटे से कार्य से होती है जब कोई आपका नाम नहीं जानता है। हालांकि आप सोचते होंगे कि किसी को परवाह नहीं कि आप थोड़े से

समय में कौन सा काम कर रहे हैं, लेकिन परमेश्वर इसे देखते हैं। हर कार्य में, आप अगले कार्य के लिए प्रशिक्षित किए जाते हैं, तो अपनी छोटी शुरुआतों को कभी तुच्छ ना जानें।

इस प्रकार से देखें जैसे आप इसके मालिक हैं और अपना उत्तम दें। मैं आपको सुनिश्चित करता हूँ कि आप रात में सितारों के समान चमकेंगे और बढ़त और कृपादृष्टि के लिए अपने आपको सही स्थान में लाएंगे।

अध्याय 5

# आपको साथी की ज़रूरत है!

जैसा कि आप जानते हैं कि मैं इस आर्थिक व्यवसाय में लगभग 40 वर्षों से हूँ। इस दौरान, कई लोगों ने मुझसे पूछा कि व्यवसाय को कैसे शुरू करना है और ऐसा क्या है जो इसकी बढ़त में मदद करेगा।

निश्चयी, बहुत सारी बातें हैं जो लोगों को जानना ज़रूरी है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्हें एक साथी की ज़रूरत है।

अब, कई वर्षों से एक पास्टर होने के नाते, मैंने देखा है कि कई लोग ऐसा सोचते हैं कि अपनी कलीसिया में एक दोस्त के साथ व्यवसाय की शुरुआत करना बहुत शानदार होगा, और फिर सारी गड़बड़ हो जाती है। दोस्त एक दूसरे की बातों से चोंट खाते हैं, कई बार एक दूसरे से बात करना बंद कर देते हैं, और फिर संबंध खराब हो जाते हैं। क्योंकि मैंने कई बार ऐसा होते हुए देखा है, मैं इस बात की आपको बहुत कम सलाह दूंगा, अपने दोस्त के साथ आप व्यवसाय में तब तक न जाएं जब तक आपके बीच सेमाओं को तय किया गया और लिखा गया न हो।

हालांकि, मैं हमेशा आपको ऐसे एक साथी को साथ लेकर चलने के लिए विनती करूंगा, और वह है परमेश्वर।

पिछले अध्याय में, हमने उस स्त्री के बारे में बातें की जिसने भविष्यवक्ता एलिय्याह को अपना आखरी भोजन भी दे दिया था। हमने देखा कि कैसे भविष्यवक्ता के लिए, परमेश्वर के कार्य के लिए और स्त्री के परिवार के लिए हर दिन भोजन का प्रबंध होता गया। उस स्त्री ने एलिय्याह के साथ उस कार्य में योगदान दिया, और ऐसा करने से, जो प्रबंध और अभिषेक एलिय्याह के कार्य में शामिल था वह उस स्त्री के भाग में भी आ गया था। अब वे भागीदार बन गए थे।

इस पुस्तक में, हमने परमेश्वर के प्रति उदार रहने और उनके कार्यों में बोने के बारे में बातें की। मैंने आपको यह भी बताया कि कैसे आपकी उदारता लोगों के हृदय को आपके प्रति और परमेश्वर के प्रति भी खोल देती है।

इस अध्याय में, मैं आपके साथ परमेश्वर के राज्य का एक और सामर्थी सिद्धांत

को बांटना चाहता हूँ जो आपके धन को एक नए स्तर पर ले जाएगा ––– यह है साझेदारी का सिद्धांत।

> *जब भीड़ उस पर गिरी पड़ती थी, और परमेश्वर का वचन सुनती थी, और वह गन्नेसरत की झील के किनारे पर खड़ा था, तो ऐसा हुआ। कि उस ने झील के किनारे दो नावें लगी हुई देखीं, और मछुवे उन पर से उतरकर जाल धो रहे थे। उन नावों में से एक पर जो शमौन की थी, चढ़कर, उस ने उस से बिनती की, कि किनारे से थोड़ा हटा ले चले, तब वह बैठकर लोगों को नाव पर से उपदेश देने लगा।*
>
> *जब वे बातें कर चुका, तो शमौन से कहा, गहिरे में ले चल, और मछिलयां पकड़ने के लिये अपने जाल डालो।*
>
> *शमौन ने उसको उत्तर दिया, कि हे स्वामी, हम ने सारी रात मिहनत की और कुछ न पकड़ा; तौभी तेरे कहने से जाल डालूंगा।*
>
> *जब उन्होंने ऐसा किया, तो बहुत मछिलयां घेर लाए, और उन के जाल फटने लगे। इस पर उन्होंने अपने साथियों को जो दूसरी नाव पर थे, संकेत किया, कि आकर हमारी सहायता करो: और उन्होंने आकर, दोनो नाव यहां तक भर लीं कि वे डूबने लगीं।*
>
> –लूका 5:1–7

मैं जानता हूँ मैंने इस कहानी का वर्णन पहले भी किया है जब नावों और मछली को पकड़ना कैसे राज्यों (या अधिकार क्षेत्र) को बदल देता है इस बारे में बताया था, यह भी कि पतरस (शिमौन) ने यीशु को प्रचार करने के लिए अपनी नाव दी। मैंने यह भी बताया कि मछलियों की कितनी बड़ी पकड़ प्राप्त हुई और नावें लगभग डूब गई थी। याद कीजिए, पतरस ने बताया था कि वह रात भर मेहनत करता रहा लेकिन कुछ पकड़ में नहीं आया था। अब, कुछ घंटों के बाद ही, उसके पास इतनी मछलियाँ थीं कि वह इन्हें जल्दी इकट्ठा नहीं कर पाया। पहले की स्थिति और बाद में क्या अंतर था? परमेश्वर का राज्य ही वह अंतर था, निश्चयी यही वह अंतर था, लेकिन इसमें साझेदारी भी थी। मैं आपको इसके बारे में समझाता हूँ।

> *कि उस ने झील के किनारे दो नावें लगी हुई देखीं, और मछुवे उन पर से उतरकर जाल धो रहे थे। उन नावों में से एक पर जो शमौन की थी, चढ़कर, उस ने उस से बिनती की, कि किनारे से थोड़ा हटा ले चले, तब वह बैठकर*

*लोगों को नाव पर से उपदेश देने लगा।*

आइए अब इस बात को अपने मन में स्पष्ट कर लें। कि वे कहाँ थे, और जब यीशु आए तब वे क्या कर रहे थे? वे मछलियों को नहीं पकड़ रहे थे; बल्कि रात भर मेहनत करके कुछ प्राप्त न करने के बाद किनारे पर वे अपने जालों को धो रहे थे।

यीशु, देखते हैं कि नावे उपलब्ध हैं, वह पतरस से कहते हैं कि वह किनारे से थोड़ा दूर ले जाए ताकि वह नाव पर से भीड़ को प्रचार कर सकें। तो, जब पतरस यीशु को नाव से ले जा रहा था, तब उसके साथी, याकूब और यूहन्ना कहाँ थे? वे अपने जालों के साथ अब भी तट पर दूसरी नाव में थे।

प्रचार करने के बाद यीशु ने पतरस से कहा कि गहरे जल में अपने जाल को डाल। और फिर आप आगे की कहानी को जानते हैं। तब वह इतनी मछलियाँ पकड़ने लगा कि उसके जाल फटने लगे। तो उसने मछलियों की पकड़ को खींचने में मदद करने के लिए अपने साथियों को बुलाया। और बाइबल बताती है, कि दोनों नावें इतनी भर गई थी कि वे डूबने लगी।

> *जब उन्होंने ऐसा किया, तो बहुत मछिलयां घेर लाए, और उन के जाल फटने लगे। इस पर उन्होंने अपने साथियों को जो दूसरी नाव पर थे, संकेत किया, कि आकर हमारी सहायता करो: और उन्होंने आकर, दोनो नाव यहां तक भर लीं कि वे डूबने लगीं।*

अब, यहाँ लाखों का सवाल है: याकूब और यूहन्ना ने कितना विश्वास किया जिससे उनकी नावें इतना भर गई कि डूबने लगी?

इस बारे में सोचें—वे अपने जालों के साथ अब भी तट पर ही थे। वह पतरस था, जो यीशु को ले जाने के लिए सहमत हुआ था। उसी ने कहा था, "तौभी तेरे कहने से जाल डालूंगा।" तो सही उत्तर है कि उन दोनों में से किसी ने भी विश्वास नहीं किया था! याकूब और यूहन्ना ने अपने विश्वास के कारण मछलियों से भरी नाव की फसल नहीं प्राप्त की; यह पतरस के विश्वास के कारण हुआ। पतरस ने बस अपने साथियों को बुलाया कि वह आकर मछलियों को उठाने में उसकी मदद करें। अद्भुत रूप से, उनकी भी नावें पतरस के समान भरते हुए उमड़ रही थीं।

> *शमौन ने उसको उत्तर दिया, कि हे स्वामी, हम ने सारी रात मिहनत की और कुछ न पकड़ा; तौभी तेरे कहने से जाल डालूंगा।*

तो यदि यह पतरस का विश्वास था जिसने मछलियों को लाया और नाव को भरा, फिर याकूब और यूहन्ना की नावें भी पतरस की नाव के समान उतनी ही मछलियों से भरी हुई क्यों थी?

वचन इसका उत्तर देता है ---- इसमें लिखा है कि वे साथी थे।

कॉलिन के शब्दकोश में साथी की परिभाषा ऐसी है:

**एक व्यक्ति जो दूसरे के साथ जुड़ा हुआ है या कुछ कार्यों को बांटता है; अधिकतर जोखिमों और लाभों को भी बांटता है।**

साझेदारी एक कानूनी स्थिति है जिसमें जोखिम, कीमत और व्यवसाय में लाभों में दोनों का बराबरी से हिस्सा होता है। तो, जब पतरस ने यीशु को नाव दी, वह सच में यीशु को न केवल अपनी नाव बल्कि कानूनी रूप से अपना व्यवसाय उधार के समान दे रहा था। याकूब और यूहन्ना का भी उस नाव में हिस्सा था जो पतरस द्वारा यीशु को दी गई थी, और उस साझेदारी के कारण, दोनों नावें बराबरी से भर गईं थीं।

याकूब यूहन्न ने भी पतरस के समान उतनी ही फसल को काटा हालांकि उन्होंने उस परस्थिति में अपने विश्वास को कार्य में नहीं लाया था। मुझे निश्चय है कि उस दिन वे बहुत खुश हुए होंगे कि पतरस उनका साथी है। आपको क्या लगता है? मैं तो यही सोचता हूँ। मैं इस सिद्धांत के बारे में आपको एक व्यक्तिगत उद्धारण देना चाहता हूँ।

ड्रेनडा और मैं लकड़ियों और गीली मिट्टी और घास से भरी हुई 60 एकड़ सुंदर की भूमि के मालिक हैं। यह हिरण का शिकार करने के लिए सबसे बढ़िया जगह है। हमारी संपत्ति के चारों तरफ फसल, और लकड़ियाँ और गीली मिट्टी है जो हिरणों को आकर्षित करती हैं।

मैंने अपने गराज के ऊपर कार्यालय बनाया है, जिसमें किताबों को रखने के लिए लकड़ी की अलमारी और एक सिगड़ी है। यह एकदम शांत,आरामदायक, गुफा के समान कार्यालय है, जहां मुझे काम करना पसंद है। एक ही बात की कमी थी वह था मेज़ पर बढ़िया सा मृग का ढांचा। सही बताऊँ तो, मुझे कभी हिरणों का शिकार करने में दिलचस्पी नहीं थी, क्योंकि मैं मांस का शिकार करता था। मैंने कभी इतने बड़े मृग को मारा नहीं जिसे मैं दीवार पर लटका न सकूँ।

हम उस जगह पर पाँच वर्ष तक रहे जब तक ड्रेनडा ने बड़े हिरण का शिकार करके हमारे दफ्तर के लिए एक ढांचा लाने को नहीं कहा। तब से अब तक, मैंने कभी हमारी जगह पर इतने बड़े हिरण को नहीं देखा था। मैं हमेशा हिरणों के ऋतु में बाहर जाता था और मैंने अच्छे आठ–नोंक के बॅक को मारा, और माउंटिंग क्लास का विचार नहीं

किया।

लेकिन उसी वर्ष, जितना अधिक मैंने इसके बारे में सोचा, उतना ही मैं ड्रेनडा के साथ सहमत हुआ। मैंने ड्रेनडा से कहा कि मैंने यह विचार किया है कि मैं दीवार पर बड़े हिरण को लगाऊँगा। एक बार फिर कहूँगा, मैंने लकड़ियों के उस स्थान में इतना बड़ा हिरण कभी नहीं देखा था। हमारे रसोई की खिड़कियां खेत और लकड़ियों के स्थान की ओर थीं, फिर भी मैंने कभी इतना बड़ा हिरण नहीं पाया।

तो ड्रेनडा और मैंने बड़े हिरण के लिए बीज को बोया। मैंने अपने बीज के चेक पर लिखा कि मैं दस पॉइंट या बड़े हिरण के लिए बो रहा हूँ। हमने उस बीज के लिए प्रार्थना की, और मैंने इसे अपनी मेज़ पर रख दिया था। यह लिफाफा वहाँ तीन दिनों तक रहा, और मैं इसे मेल नहीं कर सका। मैं जानता था कि मेरे पास दस पॉइंट के लिए विश्वास नहीं था। मेरे अंदर आठ–, छह–, या चार–नोंक वाले बॅक के लिए विश्वास था, लेकिन मुझे उस बड़े बॅक के लिए विश्वास करना कठिन हो रहा था, उस विश्वास के साथ जो कहता है कि,"मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ कि मैं दस पॉइंट या इससे भी बड़े बॅक का शिकार करूंगा।"

अब परमेश्वर के राज्य के साथ मेरा अनुभव इतना हो गया था कि मैं जान गया कि मेरे अंदर विश्वास नहीं है। तो, मैंने उस चेक को फाड़कर दूसरा चेक बनाया जिसमें लिखा था, "चार–नोंक वाला या इससे भी बड़ा" और फिर मैंने इसे मेल किया।

बाहर जाने से एक रात पहले, मैंने ड्रेनडा को बताया कि मैंने क्या किया था, मैंने उसे बताया कि "उस बड़े हिरण के लिए मेरे पास विश्वास नहीं है,"। उसने मेरी ओर देखा और कहा, "तुम हिरण के लिए विश्वास करो और मैं ट्रॉफी बक के लिए विश्वास करूंगी। परमेश्वर तुम्हारे मांगने और सोचने से बढ़कर अनगिनत रूप से कार्य कर सकता है!"

सुबह की शुरुआत गिलहरियों और पक्षियों की सामान्य सरसराहट से हुई, जंगल में पतझड़ के पत्तों की गंध मेरे मन को वापस कई हिरणों के शिकार की ओर ले गई। मैं वहाँ बहुत देर तक नहीं बैठा था, शायद 20 मिनट ही, जब मैंने एक बॅक को लकड़ियों में से आते हुए सुना। यह बॅक सीधा मेरे पेड़ की ओर आ रहा था, मैंने उस निशाने के लिए खुद को तैयार कर लिया था।

जैसे ही मृग करीब आया, मैंने देखा वह चार–नोंक वाला का था, वैसा ही जैसा मैंने सोचा था, और यह खाने में बहुत अच्छे होते हैं। बॅक 25 यार्ड के खुले इलाके में आया, मैंने तीर को छोड़ दिया। मैंने तीर को ऊपर और पीछे की ओर जाते देखा, और मुझे पता चल गया था कि अब मुझे इसका पीछा करना होगा।

वह मृग लकड़ियों से कूदता हुआ भुट्टे के खेत में गया जो लकड़ियों से घिरा हुआ

था और वह मेरी नज़रों से गायब हो गया था। फिर भी मैं उसके भागने की आवाज़ को सुन रहा था मुझे पता था कि मुझे इसे दूर तक ढूँढना है। मैंने पेड़ के पास 20 मिनट इंतजार किया और निर्णय लिया कि अब पेड़ से नीचे उतरकर तीर को ढूँढूँगा। मैं यकीन से कह सकता हूँ कि मैंने बॅक को मारा है और उस लहू के बहाव को भी देख सकता हूँ।

जैसे ही मैं लहू की बूंदों के पीछे गया, मैं उत्साहित हो गया था, क्योंकि वहाँ एक स्थान पर बहुत सारा लहू था। लेकिन 100 यार्ड के बाद, लहू सूख गया था, मैंने चारों तरफ देखा और लहू की कोई बूंद दिखाई नहीं दी। दो घंटों की खोज के बाद, मैंने समझ गया कि मृग भाग गया है। इस कारण मैं बहुत निराश हो गया। मैं उस हिरण को चोट पहुंचाकर उसे खोना नहीं चाहता था, लेकिन दूसरी बात मैं अपने निशाने से निराश था।

जैसे मैं उस भुट्टे के खेत में निराश खड़ा हुआ था, मैं अपने घर की ओर वापिस लौटकर जाने लगा लेकिन अचानक यह विचार आया। *कि मेरे पास अब भी अवसर है, जैसे मैं घर के मार्ग से जा रहा हूँ मैं गीली भूमि और भुट्टे के खेत से गुजरते हुए एक हिरण का शिकार कर सकता हूँ।*

अवसर के लिए मैंने अपने तीर को तैयार कर लिया। और जैसे ही मैंने उस गली में से धीरे धीरे कदम को बढ़ाया, अचानक एक हिरण कूदकर मुझसे टकराते हुए मेरे सामने से गया। यह नहीं जानते हुए कि मैं कौन था, हिरण रुक गया और उसने पीछे मुड़कर देखा। क्योंकि मैं छिपा हुआ था, जिस हिरण को मैं देख रहा था वह मृग था और मुझे पहचान न सका। इसे सिर्फ कुछ सेकंड लगे, लेकिन मैं उसके सींगों को देख सकता था, हालांकि, मैं बता नहीं सकता कि वे कितने थे या उसमें कितनी नोंक थीं।

मैं यह जानता था कि मेरे मन को तैयार करने के लिए मेरे पास सिर्फ कुछ सेकंड थे। वह मेरे तीर के सामान्य निशाने क्षेत्र के बाहर, 55 यार्ड दूर मेरे सामने खड़ा था। मैंने तुरंत उसकी पीठ पर निशान साधा और तीर छोड़ दिया।

जैसे ही तीर उस मृग को लगा, वह ज़ोर से नीचे गिर गया। मैं चौंक गया था। मैंने सोचा क्या यह सच में हो गया?

जैसे ही मैं उस मृग के पास गया, मैंने कहा, "यह ड्रेनडा का विश्वास है!" वह मृग बहुत विशाल था! उसके 26 सींग थे; और उसकी झुकी हुई नोंक भी थीं। मैंने कभी इतना बड़ा मृग नहीं देखा था! अगर मैं कहूँ कि मैं उत्साहित था तो मैं इस पल के साथ अन्याय करूंगा।

आप अंदाज़ा लगा सकते हैं, अब वह मृग मेरे कार्यालय की मेज़ पर है।

लेकिन मैं इस हिरण के बारे में एक मिनट के लिए बात करना चाहता हूँ। यह कैसे और क्यों आया?

हालांकि मेरा निशाना चूँक गया था तब भी यह चार–नोंक वाला मृग सही समय पर आ गया। लेकिन ड्रेनडा ने कहा कि वह एक ट्रॉफी बॅक के लिए विश्वास कर रही थी।

अब, ड्रेनडा को मुझसे फ़ायदा हुआ। वह शिकार नहीं करती, तो उसके लिए बड़ा ट्रॉफी बॅक एक सामान्य हिरण की तरह आसान ही है। क्योंकि वह शिकार नहीं करती, तो उसके पास कोई ऐसा विचार नहीं था कि यह असंभव है। मैंने कभी बड़ा आठ–नोंक वाला मृग अपनी संपत्ति के आस पास नहीं देखा था, लेकिन उसका विश्वास जगह के आस पास क्या है या नहीं इस पर आधारित नहीं था। उसे विश्वास था कि परमेश्वर उसके लिए ला सकता है।

यह शिकार हिरणों के सहवास के ऋतु में हुआ, इसे कामोत्तेजना में होना कहते हैं, और मृग अपने साथी को ढूँढने के लिए मीलों दूर तक यात्रा करते हैं। तो यह संभव है कि कामोत्तेजना में आप सामान्य रूप से न् दिखने वाले मृगों को देख सकते हैं, यहाँ ऐसा ही हुआ।

ड्रेनडा के विश्वास ने उस मृग को लाया हालांकि मेरे अंदर उस ट्रॉफी बॅक के लिए विश्वास नहीं था।

मैं चाहता हूँ आप इसे फिर से पढ़ें—मेरे पास ट्रॉफी बॅक के लिए बिलकुल भी विश्वास नहीं था!

मैं जानता हूँ कि आप क्या सोच रहे हैं—*रुक जाओ, गैरी, मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है। अगर तुम्हारे पास उस मृग के लिए विश्वास नहीं था, तो वह क्यों आया?*

उसी तरह से जैसे याकूब और यूहन्ना की नावें पतरस के विश्वास से भर गई थीं।

यह साझेदारी की सामर्थ है।

मैं आपको एक और उद्धारण देना चाहता हूँ, और तब हम इसके बारे में बात करेंगे।

मैं जब जब तुम्हें स्मरण करता हूं, तब तब अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं।

> *और जब कभी तुम सब के लिये बिनती करता हूं, तो सदा आनन्द के साथ बिनती करता हूं। इसलिये, कि तुम पहिले दिन से लेकर आज तक सुसमाचार के फैलाने में मेरे सहभागी रहे हो। और मुझे इस बात का भरोसा है, कि जिस ने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा।*
>
> *उचित है, कि मैं तुम सब के लिये ऐसा ही विचार करूं क्योंकि तुम मेरे मन में आ बसे हो, और मेरी कैद में और सुसमाचार के लिये उत्तर और प्रमाण देने में तुम सब मेरे साथ अनुग्रह में सहभागी हो।*
>
> –फिलिपियों 1:3–7

पौलूस का कहना है कि वह फिलिपी में स्थित कलीसिया को आनंद के साथ स्मरण करता है क्योंकि उन्होंने उसकी सेवकाई में बनी रहने वाली साझेदारी दिखाई। वह आगे कहता है कि, उनकी साझेदारी के कारण, अब वे उस अनुग्रह के सहभागी हैं जो उसकी सेवकाई में थी।

क्या आपको याद है, हमने कहा कि अनुग्रह परमेश्वर की सशक्तता है या परमेश्वर की क्षमता है जो पौलूस पर उसके कार्य को पूरा करने के लिए थी? फिलिपी की कलीसिया याकूब और यूहन्ना के समान उसके कार्य की कीमत चुकाने में उनके साथ थी, इसलिए वे उस अनुग्रह और अभिषेक के भागी थे जो उनकी सेवकाई पर थी।

आइए अब हम अध्याय चार में जाएं और आप साझेदारी के द्वारा आनेवाले उस अद्भुत परिणाम को देखेंगे।

> *तौभी तुम ने भला किया, कि मेरे क्लेश में मेरे सहभागी हुए। और हे फिलप्पियो, तुम आप भी जानते हो, कि सुसमाचार प्रचार के आरम्भ में जब मैं ने मकिदुनिया से कूच किया तब तुम्हें छोड़ और किसी मण्डली ने लेने देने के विषय में मेरी सहयता नहीं की। इसी प्रकार जब मैं थिस्सलुनीके में था; तब भी तुम ने मेरी घटी पूरी करने के लिये एक बार क्या वरन दो बार कुछ भेजा था। यह नहीं कि मैं दान चाहता हूं परन्तु मैं ऐसा फल चाहता हूं, जो तुम्हारे लाभ के लिये बढ़ता जाए। मेरे पास सब कुछ है, वरन बहुतायत से भी है: जो वस्तुएं तुम ने इपफ्रुदीतुस के हाथ से भेजी थीं उन्हें पाकर मैं तृप्त हो गया हूं, वह तो सुगन्ध और ग्रहण करने के योग्य बलिदान है, जो परमेश्वर को भाता है। और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा।*
>
> –फिलिपियों 4:14–19

पौलूस ने हाल ही में फिलिपियों की कलीसिया के द्वारा उनका दूसरा दान प्राप्त किया था। सुनिए वह फिर से उनसे क्या कहता है, "*मेरा* परमेश्वर तुम्हारी सारी घटी को पूरी करेगा।"

ध्यान दें कि पौलूस ने ऐसा नहीं कहा कि, "*तुम्हारा* परमेश्वर तुम्हारी सारी घटी को पूरी करेगा क्योंकि तुमने मेरे प्रति उदारता दिखाई है।" **नहीं!** उसने कहा, "अब, *मेरा* परमेश्वर तुम्हारी सारी घटी को पूरी करेगा!"

आप देख सकते हैं कि, फिलिपियों की साझेदारी पौलूस के साथ थी, और एक साथी होने के नाते, वे उस अनुग्रह का भाग हुए जो पौलूस के कार्यों के ऊपर था।

याकूब और यूहन्ना के समान जिन्होंने पतरस के विश्वास द्वारा इतनी मछलियाँ पकड़ी, पौलूस घोषित कर रहा है कि *उसके* विश्वास के द्वारा उनकी सारी जरूरतें पूरी होंगी!

आशा है कि आप इस सिद्धांत के लाभ को देख सकते हैं।

आइए कल्पना करें कि आपको एक कार की जरूरत है, और आप हमारी सेवकाई के साथ साझेदारी में हैं। कलपना कीजिए कि कार की रकम $30,000 है। अब, जब आप गैरीकीस.कॉम पर बीज को बोते हैं, तो आपको साझेदारी के लाभ प्राप्त होते हैं—आप हमारी सेवकाई के अनुग्रह और अभिषेक में भागीदार होते हैं।

एक सेवकाई होने के नाते, हम $30,000 पर आसानी से सहमत हो सकते हैं, क्योंकि हमने पहले भी $ 30,000 की जरूरत को पूरा किया है। हमारे पास $30,000 के लिए आसानी से विश्वास है क्योंकि हम वर्ष में कई अरब खर्च करते हैं। लेकिन उस दिन, मुझे याद है कि मैंने $30,000 के लिए परमेश्वर पर विश्वास किया था, क्योंकि उस समय यह एक बड़े पहाड़ के समान था।

तो, यदि आप मुझसे पूछेंगे कि क्या मैं $30,000 के लिए परमेश्वर पर विश्वास कर सकता हूँ, उत्तर है हाँ बिल्कुल। तो पौलूस के समान, जब हम सहमति में होते हैं और भागीदार होते हैं, तब मैं घोषणा कर सकता हूँ कि आपकी ज़रूरतें पूरी होंगी, आपके विश्वास के कारण नहीं बल्कि *मेरे* विश्वास के कारण।

अब निश्चयी, जब आप $30,000 के प्रति बीज को बोते हैं तब आपको विश्वास में होने की ज़रूरत है, और आपका विश्वास केवल परमेश्वर के वचन में ही नहीं बल्कि हम में भी होना चाहिए। आपको मुझ पर विश्वास होना चाहिए, इस बात का विश्वास कि मैं अभिषिक्त हूँ और परमेश्वर द्वारा बुलाया गया हूँ, और यह कि मैं सच्चाई से काम करता हूँ, और आपको मेरे जीवन और सेवकाई में इसके परिणाम *दिखाई* देने चाहिए। यदि आप जानते हैं कि हम क्या कर रहे हैं और हम कहाँ से आए हैं, तो आप यह भी जानते होंगे की मेरे पास $30,000 के लिए विश्वास भी है!

हो सकता है आपके पास $30,000 के लिए विश्वास न हो, लेकिन हम साझेदारी में काम कर सकते हैं और इसके द्वारा अद्भुत बातों को देख सकते हैं। ऐसा ही उस मृग के लिए भी हुआ था। मेरे बाहर जाने के एक रात पहले ड्रेनडा ने कहा था, "तुम मृग के लिए विश्वास करो और मैं उस ट्रॉफी मृग के लिए विश्वास करूंगी।" इसी प्रकार साझेदारी काम करती है।

तो मैं आपसे इस प्रश्न के द्वारा कुछ मूल नियमों को बताना चाहता हूँ: यदि आप एक कंप्यूटर कंपनी की शुरुवात करते, क्या आपको अपना भागीदार बनने के लिए ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत होती जिसके पास कोई पैसे नहीं है और अपनी कंप्यूटर विज्ञान की शिक्षाओं में पहले स्तर में ही है या फिर ऐसा कोई जिसने करोड़ों के कंप्यूटर का

व्यवसाय खड़ा किया हो और आपकी कंपनी के लिए उसके पास आर्थिक सहायता हो?

नि:संदेह यहाँ कई बातें हैं, मैं यहाँ सिर्फ एक चित्रण बता रहा हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि, ऊपरी रूप से, आप कोई ऐसे व्यक्ति को चुनेंगे जिसके पास अनुभव हो, और जिसके पास साबित ट्रैक रिकार्ड हो, और कभी घाटे में न गया हो! ऐसा ही होता है जब आप सेवकाई की साझेदारी में बोते हैं।

यदि किसी के साथ भागीदार होने में परमेश्वर की अगुवाई हो रही है तो यह अलग बात है। इस प्रकार की अगुवाई मेरी सारी बातों से बढ़कर है। कई बार, परमेश्वर अपने कार्यों में भागीदार होने के लिए आपकी अगुवाई करेंगे, लेकिन कभी कभी आपको चुनाव करना पड़ता है। मैं विशेष करके बोने के विषय में बात कर रहा हूँ कि यह एक चुनाव है, फसल देखने के लिए बोना और अगले स्तर पर जाने की इच्छा रखना भी एक चुनाव है।

मैं ऐसे कार्यों में बोता हूँ जिसमें मेरे जीवन के विशेष कार्य के लिए मुझे आवश्यक धन में तेजी प्राप्त हो सके। एक नियम जिसे मैं नहीं तोड़ता वह है कि मैं हमेशा ऐसे कार्यों में बोता हूँ जो विश्वास और सहमति को समझते है कि कब मुझे अपनी फसल में तेज़ी को लाना है। इस प्रकार के देने को लक्षित देना कहते हैं और इसे गरीबों को देने के साथ न जोड़ें।

ज़रूरतमंदों को देना भी परमेश्वर का हृदय है, और इसमें प्रतिफल भी है, लेकिन मैं ऐसे कार्य के साथ साझेदारी की खोज कर रहा हूँ जिसमें विश्वास का सबूत है, जिससे मैं जान सकूँ कि मेरे साथ सहमत होने के लिए इनमें क्षमता है कि नहीं।

इसके बारे में सोचें: यदि मैं ऐसे व्यक्ति से माँगू जो $3 प्रति घंटा कमाता हो और वह निराश हो और वर्षो से वह इतना घटी में है कि मेरे साथ $10 अरब के लिए भी सहमत नहीं हो सकता है, तब यहाँ असली सहमति के क्या अनुमान हैं?

अब, मैं किसी के साथ भी सेवकाई कर सकता हूँ, और मैं इसी के लिए बुलाया भी गया हूँ, लेकिन जब सहमति की बात आती है, तब सहमति ज़रूर होनी चाहिए। एक किसान किसी भी खराब भूमि पर अपने बीज को नहीं बो सकता है। वह सही भूमि की खोज करता है जिसकी ज़रूरत उसकी फसल को है। मैं यहाँ पृथ्वी पर किसी और के विश्वास के साथ, किसी और के अभिषेक के साथ साझेदारी के बारे में बात कर रहा हूँ।

मैंने एक और बात की खोज की है कि जब मैं परमेश्वर के कार्य में बोता हूँ जिसमें एक सा फल है तो मैं अपने लिए परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ।

उद्धारण के लिए, मेरी कंपनी के पास दो हवाई जाहज़ हैं। पहले वाले को लाने से

पहले, मैंने परमेश्वर के कार्य में बोया था, ऐसी सेवकाई में जहां मैं जानता हूँ कि अतीत में मैंने उन्हें करोड़ों डॉलर के जाहज़ दिए थे। जब मैं कहता हूँ कई, तो मेरा मतलब है बहुत सारे; और उन सभी का भुगतान नकद पैसों से किया गया था। जब जाहज़ की बात आई तब उनके परिणाम मुझे दिखाई दे रहे थे। मैं जानता था कि वह आसानी से एक जाहज़ के लिए मेरे साथ सहमत हो पाएंगे और मेरे साथ ऐसा होने के लिए विश्वास भी करेंगे। मैं ऐसी सेवकाई के साथ साझेदारी नहीं कर रहा था जो कहता कि जाहज़ बहुत महंगे हैं, या फिर यह खरीदने योग्य नहीं हैं, या फिर यह कि जाहज़ को खरीदना शैतान की ओर से है। यह किसी भी प्रकार की सहमति नहीं है। नहीं, लेकिन मैं ऐसी सेवकाई के साथ सहमति में होना चाहता था जो जान सके कि मैं कहाँ हूँ, और जाहज़ के लिए परमेश्वर पर मेरे साथ विश्वास कर सके, और उनमें इस बात को साबित करने के लिए फल भी दिखाई दें।

मैं जब 19 वर्ष का था तब ही से एक विमानचालक था और देशभर में 3,000 फुट के रनवे पर जाहज़ चलाना सीख लिया था। मैंने अपने जीवन भर जाहज़ किराए पर लिए थे जब एक दिन मैंने सोचा, कि हे तुम जानते हो? *मुझे अपने हवाई जाहज़ के लिए बीज बोना है और परमेश्वर पर विश्वास करना है।*

और मैंने ऐसा ही किया। मैं जानता था कि मैं किस हवाई जाहज़ के लिए बीज को बो रहा हूँ, तो मैंने अपने चेक पर उसी विमान के बारे में लिखा, और ड्रेनडा और मैं इसपर सहमत हुए। मैंने उस चेक को सेवकाई में भेजा और इसका वर्णन किया।

एक महिना बीतने के लिए, डॉक्टर के पास मेरी रूटीन जांच थी। जैसे मैं उस दिन डॉक्टर से बात कर रहा था, उन्होंने कहा, "क्या तुम ऐसे किसी व्यक्ति को जानते हो जो विमान को खरीद सकता है?"

मैं इस प्रश्न से अचंभित था, क्योंकि मेरे सम्पूर्ण जीवन में किसी ने मुझसे यह नहीं पूछा कि क्या मैं किसी को जानता हूँ जो विमान खरीद सकता है। मैंने फिर उनसे पूछा कि यह कैसा विमान था, और यह वही विमान था जिसके लिए मैंने बीज को बोया था।

नि:संदेह इसने मेरे ध्यान को आकर्षित किया। मैं गया और मैंने उस विमान को देखा, और उसके मालिक से संपर्क किया, और वह मुझे विमान पर ले गया। यह एकदम सही था। उस समय, सिर्फ एक समस्या थी --- मेरे पास उसका भुगतान करने के लिए पैसे नहीं थे।

लेकिन परमेश्वर के पास योजना थी। पिछली पतझड़ में, (और अब मार्च था), मुझे पिता जी ने एक घर दिया था जिसे मैं वसंत ऋतु में एक कार्यालय भवन बनाने जा रहा था। मेरे पिता ने मुझे बताया था कि उन्होंने ठंड के मौसम से पहले ही पानी बंद कर दिया था, तो मैंने कभी इसकी जांच नहीं की थी।

हाल ही में कुछ दिनों पहले जब मैं उस विमान को देख रहा था, तभी मेरे भाई ने मुझे कॉल करके बताया कि मेरा घर पूरी रीति से खराब हो गया है। वह मुझे बताने लगा कि सूखी दीवार खराब हो गई थी और अधिकतर दीवारें गिर गईं थीं।

असल में पानी बंद नहीं किया गया था और ठंड के मौसम में पाइप जम गए थे। अब यह मार्च का महिना था और गर्मी हो रही थी, और घर में पानी पता नहीं कब से बह रहा था, कम से कम दो सप्ताहों से।

मेरा भाई इस बात को नहीं जानता था कि मैंने एक निर्माण करने वाली कंपनी के साथ अनुबंध तय कर लिया था कि उस घर की सूखी दीवारों को और बाहर के किनारे के भाग को हटा दें ताकि हम घर को मेरे नए कार्यालय के रूप में पुन:निर्माण की प्रक्रिया में ला सकें।

और अब, यहाँ एक अच्छी बात हुई: बीमा कंपनी ने पानी के नुकसान की भरपाई कर दी, और उसी नकद पैसों का उपयोग मैंने विमान को खरीदने के लिए किया।

विमान नकद पैसों से खरीदा गया था!

तो याद रखें, साझेदारी ऐसा सामर्थी सिद्धांत है जिसके बारे में आप जानना चाहेंगे और उसका लाभ भी उठाएंगे।

अध्याय 6

# दशमांश का रहस्य

मुझे अक्सर लोगों से ई–मेल प्राप्त होते हैं जो मुझे यह समझाने की कोशिश करते हैं कि राज्य का यह नियम—यानि दशमांश—अब समाप्त हो गया है और अब वैध नहीं है।

हालांकि, मैंने राज्य के इस सिद्धांत को इतना महत्वपूर्ण जाना है कि मैंने इस पर पूरे अध्याय को समर्पित किया है।

मैं जानता हूँ कि आप कलीसिया के जीवन को अच्छे से जानते हैं, और आपने दशमांश के बारे में भी सुना है। लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि जो आपने सुना है हो सकता है वह सम्पूर्ण रूप से सही नहीं है, और इससे पहले कि हम आगे बढ़े यह ज़रूरी है कि हम दशमांश से संबंधित कुछ पुरानी धार्मिक मांसिक्ताओं को सही करें।

सबसे पहले, यदि आपको इसकी जानकारी नहीं है तो, दशमांश शब्द का मतलब है दसवां भाग। इस शब्द का उपयोग परमेश्वर के लोगों की आय का वर्णन करने के लिए किया गया था, उन्हें दसवां हिस्सा या दशमांश को परमेश्वर के काम के लिए देना था।

अब, दशमांश की यह परिभाषा बहुत सरल है, और मैं इस अध्याय के इस विषय की गहराई में जाना चाहता हूँ। लेकिन अभी के लिए, यदि यह विचार आपके लिए नया है, तो, परमेश्वर को दसवां भाग देने को दशमांश कहते हैं।

दूसरी बात जब अधिकतर लोग दशमांश के बारे में सोचते हैं, तब वे पुराने नियम और मूसा की व्यवस्था के बारे में भी सोचते हैं जहां दशमांश इस्राएल राष्ट्र में सभी नागरिकों के लिए ज़रूरी था।

आज मसीह की देह में दशमांश को लेकर बहुत गड़बड़ी है, कि यह क्या है, और क्या यह अब भी प्रभावशाली है या यीशु के आने के बाद समाप्त हो गया है।

आपने मुझे यह कहते हुए सुना होगा, जब परमेश्वर ने मुझे राज्य कैसे काम करता है, यह सीखने के लिए कहा, तब मैं एक आत्मिक वैज्ञानिक बन गया था। मैं जानना चाहता था कि सारी बातें कैसे कार्य करती हैं, और दशमांश सबसे बड़ा प्रश्न था

जिसका उत्तर मुझे देना था।

तो आइए हम दशमांश की ओर देखें, कि वह कहाँ से आया है, और क्या करता है, और आज के लिए यह क्यों जरूरी है।

हालांकि हम मूसा की व्यवस्था में इसे लिखित आवश्यकता के रूप में देखते हैं, लेकिन दशमांश की शुरुआत मूसा की व्यवस्था से नहीं हुई। इसका आरंभ जानने के लिए, हमें उत्पत्ति और आदम और हवा की ओर जाना होगा।

जैसा पहले भी बताया गया है, आदम को बनाया गया और परमेश्वर के राज्य की ओर से पृथ्वी पर शासक के रूप में स्थापित किया गया।

> *तू ने उसे स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया; तू ने उस पर महिमा और आदर का मुकुट रखा और उसे अपने हाथों के कामों पर अधिकार दिया। तू ने सब कुछ उसके पांवों के नीचे कर दिया: इसलिये जब कि उस ने सब कुछ उसके आधीन कर दिया, तो उस ने कुछ भी रख न छोड़ा, जो उसके आधीन न हो:*
> –इब्रानीयों 2:7–8अ

आदम को आदर और महिमा के मुकुट से सजाया गया था, और पृथ्वी पर ऐसा कुछ भी नहीं था जो उसके आधीन न हो। *मुकुट को रखा* यह पद हमें कार्य कैसे होता है इसका चित्र दिखाता है।

यदि आप एक नैसर्गिक राजा को देखेंगे, तो वह एक मुकुट को पहनता है, हालांकि, वह सिर्फ एक मनुष्य है, लेकिन मुकुट इस बात को दर्शाता है कि सम्पूर्ण सरकार उसके शब्दों पर चलती है। तो आदम इसी प्रकार था। वह पृथ्वी पर सम्पूर्ण अधिकार के साथ राज्य करता था, उसके कार्यो के पीछे स्वर्ग की सहायता थी। हमें यह याद रखना है कि वह खुद में, केवल एक मनुष्य था और सिर्फ नियुक्त किए गए अधिकार में कार्य करता था। उसके पास परमेश्वर के राज्य की महिमा(सामर्थ) थी और आदर (पदवी और अधिकार) था जो उसकी सहायता करता था।

रोमांचक रूप से, हम देखते हैं कि जब आदम को बनाया गया तब शैतान पहले ही से पृथ्वी पर था, क्योंकि वह मनुष्य की रचना से पहले पृथ्वी पर फेंका गया था। शैतान इस निचले स्तर के प्राणी (नैसर्गिक में) को तुच्छ जानता था जो उस पर परमेश्वर के राज्य की ओर से राज कर रहा था। वह आदम से इस अधिकार को छीनने का तरीका ढूँढना चाहता था, ताकि वह उसके राज करने के अधिकार को नष्ट कर दे।

निश्चयी शैतान के पास आदम के पद को कम करने या उसे निकाल देने का कोई अधिकार नहीं था, तो उसने हवा को भरमाने की योजना इस बात पर विश्वास करने

के लिए बनाई कि परमेश्वर पर भरोसा नहीं किया जा सकता है और यह कि उसे और आदम को परमेश्वर के विरुद्ध बलवा करके शैतान के पीछे हो लेना चाहिए।

शैतान की योजना सफल हो गई थी। आदम और हवा ने परमेश्वर के विरुद्ध विरोध किया और अपने अधिकार के स्थान को खो दिया था। उस समय, क्योंकि सम्पूर्ण पृथ्वी आदम के अधिकार की आधीनता में थी, जहां तक परमेश्वर के आत्मिक अधिकार की बात है, आदम ने असल में परमेश्वर को पृथ्वी से बाहर कर दिया था, और मनुष्य परमेश्वर से अलग हो गया था।

उस समय में आत्मिक रूप से बहुत कुछ हुआ था, लेकिन मेरे पास यहाँ उन सारी बातों को बताने का समय नहीं है क्योंकि मैं दशमांश के विषय पर केंद्रित रहना चाहता हूँ। तो, आइए हम उस समय में वापिस जाएं जब आदम और हवा गिर गए और देखते हैं फिर क्या हुआ।

> *और आदम से उसने कहा, तू ने जो अपनी पत्नी की बात सुनी, और जिस वृक्ष के फल के विषय मैं ने तुझे आज्ञा दी थी कि तू उसे न खाना उसको तू ने खाया है, इसलिये भूमि तेरे कारण शापित है: तू उसकी उपज जीवन भर दु:ख के साथ खाया करेगा: और वह तेरे लिये कांटे और ऊंटकटारे उगाएगी, और तू खेत की उपज खाएगा; और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा; क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है, तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा।*
>
> –उत्पत्ति 3:17–19

जल्दी से, हम देखेंगे कि मनुष्य ने अपने प्रबंध को खो दिया था (उसे बगीचे के बाहर निकाल दिया गया था), इसके बाद उसका उद्देश्य बस गुज़ारा करना था, और फिर उसे अपने दर्द भरे काम और पसीने के साथ गुज़ारा करना था। परमेश्वर ने उसे यह भी बताया कि एक दिन वह भूमि में ही मिल जाएगा, और वह *मर* जाएगा। मृत्यु और दर्द भरे गुज़ारे के विचार से आदम बहुत अनजान था, फिर डर और आशाहीनता ने इस संसार में प्रवेश किया।

जैसे आप देख सकते हैं, और जैसा आदम ने जाना, कि संसार एकदम से बदल गया है।

अब मैं लूका 4 में जाना चाहता हूँ जहां हम एक और बहुत महत्वपूर्ण बदलाव को देखेंगे।

*तब शैतान उसे ले गया और उस को पल भर में जगत के सारे राज्य दिखाए। और उस से कहा; मैं यह सब अधिकार, और इन का विभव तुझे दूंगा, क्योंकि वह मुझे सौंपा गया है: और जिसे चाहता हूं, उसी को दे देता हूं। इसलिये, यदि तू मुझे प्रणाम करे, तो यह सब तेरा हो जाएगा।*

–लूका 4:5–7

इस पद में, शैतान दावा करता है कि पृथ्वी के राज्यों (राष्ट्रों) का सारा धन उसके अधिकार क्षेत्र में है और यह कि सारा अधिकार उसे दिया गया है। और इस वाक्य में वह सही है, क्योंकि यह आदम था जिसने उसे अपने विरोध के द्वारा अधिकार दिया था।

इस वचन पर ध्यान दें यह कहता है कि राष्ट्रों का सारा वैभव या विश्व के राज्य अब उसके अधिकार क्षेत्र में थे। राष्ट्र का वैभव क्या है? यह *धन* है।

पृथ्वी के क्षेत्र में सारे धन का एक राज्य है, एक राष्ट्र, इस पर मुहर है, तो सारा पैसा पृथ्वी के राज्य के अधिकार क्षेत्र का भाग है या इसके आधीन है। शैतान, अब दावा करता है कि राष्ट्रों के पैसें, या फिर धन, अब उसके अधिकार क्षेत्र में है, और वह दावा करता है कि वह जिसे चाहे उसे दे सकता है। सरल रूप से, शैतान राष्ट्रों के धन और संपन्नता के अधिकार क्षेत्र पर दावा करता है। यह बहुत महत्वपूर्ण है, जैसे कि हम जानते हैं, दशमांश का बहुत ही विशेष उद्देश्य इससे जुड़ा है।

*अब आदम अपनी पत्नी हव्वा के पास गया तब उसने गर्भवती हो कर कैन को जन्म दिया और कहा, मैं ने यहोवा की सहायता से एक पुरूष पाया है। फिर वह उसके भाई हाबिल को भी जन्मी,*

*और हाबिल तो भेड़–बकरियों का चरवाहा बन गया, परन्तु कैन भूमि की खेती करने वाला किसान बना। कुछ दिनों के पश्चात कैन यहोवा के पास भूमि की उपज में से कुछ भेंट ले आया। और हाबिल भी अपनी भेड़–बकरियों के कई एक पहिलौठे बच्चे भेंट चढ़ाने ले आया और उनकी चर्बी भेंट चढ़ाई; तब यहोवा ने हाबिल और उसकी भेंट को तो ग्रहण किया, परन्तु कैन और उसकी भेंट को उसने ग्रहण न किया। तब कैन अति क्रोधित हुआ, और उसके मुंह पर उदासी छा गई।*

*तब यहोवा ने कैन से कहा, तू क्यों क्रोधित हुआ? और तेरे मुंह पर उदासी क्यों छा गई है? यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी? और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है, और उसकी लालसा तेरी और होगी, और तू उस पर प्रभुता करेगा।* –उत्पत्ति 4:1–7

ठीक है, तो वहाँ क्या चल रहा था? यह संतानों की पहली पीढ़ी थी। वे दान क्यों दे रहे थे? उस समय तो ऐसा करने के लिए किसी व्यवस्था में लिखा नहीं था, तो वे ऐसा क्यों कर रहे थे?

हम अंदाज़ा लगा सकते हैं, कि आदम और हवा जो उनके माता पिता थे, उन्होंने उन्हे दान देना *सिखाया* था। हम यह भी कल्पना कर सकते हैं कि परमेश्वर कोई कार्य मात्र रीति रिवाज़ के तौर पर नहीं करता है लेकिन यहाँ एक *ठोस* कारण होना चाहिए था कि आदम और हवा ने उनके बच्चों को दान देना क्यों सिखाया था।

यदि आप अगले वचन में देखेंगे तो, आप जानेंगे कि उन दो लड़कों ने भेंट के लिए क्या लाया इसमें एक बड़ा अंतर था। अब, इसी बात पर अटके न रहें कि उन्हें क्या देना था, एक ने पशु को दिया और दूसरे ने पेड़ पौधों को, क्योंकि इसमें कोई समस्या नहीं है। समस्या यह थी कि जो उनके पास था वह उन्होंने *कैसे* दिया और सबसे पहले तो वे इसे क्यों कर रहे थे।

ध्यान दीजिए कि, कैन ने अपनी भूमि के फलों में से "कुछ" दिया था। लेकिन हाबिल ने "अपने पशुओं के पहलौठे की चर्बी दान में लाई थी"। क्या आप अंतर को देख सकते हैं? एक किस्से में, यह "कुछ" था उसकी तुलना में जो "उत्तम भाग" था, जो पशुओं के पहलौठों की चर्बी थी।

हाबिल ने चर्बी का भाग क्यों लाया, और पहलौठे में से ही क्यों?

परमेश्वर ने आदम को भेंट के लिए आवश्यक बातें बताई होगी।

क्या आप देख रहे हैं? यह पहली बार था जब दशमांश देखा जा सकता है।

यदि आप मूसा की व्यवस्था में दशमांश का अध्यानन करेंगे, तो यह हमेशा से सबसे **उत्तम** में से **पहला** 10% रहा है। इस कहानी में, हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि हाबिल ने दशमांश, *पहला* और *उत्तम* दिया था। हालांकि, कैन अपनी उपज में से *"कुछ"* देकर परमेश्वर का आदर करने में भी खुश नहीं था, तो उसने निर्णय लिया कि वह अपनी उपज में से "कुछ" लाएगा, जो पहला और उत्तम नहीं है।

कैन जानता था कि उसे दशमांश के रूप में क्या और कैसे देना चाहिए क्योंकि परमेश्वर ने उससे यह कहा कि, *"यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी? और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है, और उसकी लालसा तेरी और होगी, और तू उस पर प्रभुता करेगा।"*

लेकिन कैन ने परमेश्वर के उस प्रोत्साहन को ठुकरा दिया जो सिखाई हुई बातों का पालन करने के लिए कह रहा था और बल्कि हाबिल ने अपने भाई की हत्या भी कर दी। हो सकता है, उसने सोचा हो कि हाबिल के रास्ते से हटने के बाद, वह दोनों भूमि और मवेशियों पर कब्ज़ा कर सकता है, या फिर उसकी लालच ने उसको अपनी

उपज में से थोड़ा ही लाने के लिए उकसाया, बहुत सारी भावनाओं का सामना करते हुए जिससे उसका हृदय परमेश्वर से दूर हो रहा था। मैं सिर्फ अनुमान लगा रहा हूँ। एक बात जो हम जानते हैं वह है कि कैन उस तरह से दशमांश देना नहीं चाहता था जैसा उसे सिखाया गया था।

इस समय, हो सकता है आप पूछेंगे कि, "पहली बात, दशमांश ही क्यों? परमेश्वर ने उनसे दशमांश लिया ही क्यों?" मैं उन प्रश्नों का उत्तर दूंगा, लेकिन, प्रश्नों मे जाने से पहले आइए हम देखते हैं कि हम दशमांश के बारे में और क्या सीख सकते हैं।

अगली बार हम दशमांश शब्द को यहाँ कार्य में देखते हैं, जहां असल में इसका उपयोग हुआ है।

> *जब वह कदोर्लाओमेर और उसके साथी राजाओं को जीत कर लौटा आता था तब सदोम का राजा शावे नाम तराई में, जो राजा की भी कहलाती है, उससे भेंट करने के लिये आया। जब शालेम का राजा मेल्कीसेदेक, जो परमप्रधान ईश्वर का याजक था, रोटी और दाखमधु ले आया। और उसने अब्राम को यह आशीर्वाद दिया, कि परमप्रधान ईश्वर की ओर से, जो आकाश और पृथ्वी का अधिकारी है, तू धन्य हो। और धन्य है परमप्रधान ईश्वर, जिसने तेरे द्रोहियों को तेरे वश में कर दिया है। तब अब्राम ने उसको सब का दशमांश दिया।*
>
> –उत्पत्ति 14:17–20

एक प्रश्न जो हमें यहाँ पूछना चाहिए वह है: अब्राहम ने दशमांश देना कैसे जाना और क्यों?

नि:संदेह, दशमांश देना आदम के समय से पीढ़ियों तक पहुँच गया था। और हम जानते हैं कि दशमांश के बारे में आदम को विरोध के बाद खुद परमेश्वर ने सिखाया था। यहाँ हम दशमांश के वास्तविक शब्द को देखते हैं, जो दर्शाता है कि दसवां भाग दिया गया था।

कई लोग यह कहेंगे कि दशमांश मूसा की व्यवस्था का भाग था, यानि नए नियम का विश्वासी दशमांश को देने की ज़रूरत के आधीन नहीं है। जिन दो घटनाओं का वर्णन मैंने किया, कैन और हाबिल और फिर अब्राहम, इस बात को साबित करते हैं कि दशमांश मूसा की व्यवस्था के लिखे जाने से *पहले* से दिया जा रहा है। ओ, मैं इससे सहमत हूँ, दशमांश मूसा की व्यवस्था में लिखा हुआ है, और इस्राएल के राष्ट्र को यह देना अनिवार्य था। लेकिन दशमांश ऐसा कुछ था जिसे राष्ट्र मूसा के आने के

पहले ही से दे रहा था।

तो मूसा की व्यवस्था में दशमांश के विषय में क्यों लिखा गया? जब मूसा की व्यवस्था को लिखा गया था, तब यह इस्राएल के नए राष्ट्र के जीवनशैली को स्थापित करने के लिए था, जो हाल ही में मिस्र से बाहर आया था। सभी कानूनी और लिखित आचार संहिता में शासकीय आवश्यकताओं को निर्धारित किया जा रहा था, जिससे लोग अपने जीवन को वैसे ही बिताऐं। इसीलिए, दशमांश को मूसा की व्यवस्था में यह निश्चित करने के लिए लिखा गया था कि यह राष्ट्र के जीने की रीति का भाग हो। हम यह जानेंगे कि परमेश्वर क्यों चाहता था कि यह एक मिनट में किया जाए, लेकिन आइए हम दशमांश के कुछ और उद्धारणों को देखें।

> *इसलिये अब सेनाओं का यहोवा यों कहता है, अपनी अपनी चाल–चलन पर ध्यान करो। तुम ने बहुत बोया परन्तु थोड़ा काटा; तुम खाते हो, परन्तु पेट नहीं भरता; तुम पीते हो, परन्तु प्यास नहीं बुझती; तुम कपड़े पहिनते हो, परन्तु गरमाते नहीं; और जो मजदूरी कमाता है, वह अपनी मजदूरी की कमाई को छेदवाली थैली में रखता है॥*
>
> *सेनाओ का यहोवा तुम से यों कहता हे, अपने अपने चालचलन पर सोचो। पहाड़ पर चढ़ जाओ और लकड़ी ले आओ और इस भवन को बनाओ; और मैं उसको देखकर प्रसन्न हूंगा, और मेरी महिमा होगी, यहोवा का यही वचन है। तुम ने बहुत उपज की आशा रखी, परन्तु देखो थेड़ी ही है; और जब तुम उसे घर ले आए, तब मैं ने उसको उड़ा दिया। सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, ऐसा क्यों हुआ? क्या इसलिये नहीं, कि मेरा भवन उजाड़ पड़ा है और तुम में से प्रत्येक अपने अपने घर को दौड़ा चला जाता है? इस कारण आकाश से ओस गिरना और पृथ्वी से अन्न उपजना दोनों बन्द हैं। और मेरी आज्ञा से पृथ्वी और पहाड़ों पर, और अन्न और नये दाखमधु पर और ताजे तेल पर, और जो कुछ भूमि से उपजता है उस पर, और मनुष्यों और घरैलू पशुओं पर, और उनके परिश्रम की सारी कमाई पर भी अकाल पड़ा है॥*
>
> –हाग्गै 1:5–11

इस पद में, भविष्यवक्ता हाग्गै इस्राएल राष्ट्र को बंधुआई से आने के बाद मंदिर का पुन:निर्माण न करने के लिए फटकारता है। वे सफल नहीं हो रहे हैं, वे घटी में हैं, फसल अच्छी नहीं है, और सम्पूर्ण राष्ट्र परेशान है। परमेश्वर इस्राएल राष्ट्र से कह रहा है कि, **अपने चाल चलन** पर ध्यान दो, यह बताते हुए कि वह ऐसा कुछ कर रहे हैं या

ऐसा कुछ नहीं कर रहे हैं जिसके द्वारा घटी आ रही है।

परमेश्वर कहता है, "**इस कारण** *आकाश से ओस गिरना और पृथ्वी से अन्न उपजना दोनों बन्द हैं।*" परमेश्वर कहता है कि **उनके** कार्यों के कारण परमेश्वर को आकाल को बुलाना पड़ा। वे सब अपने घरों को बना रहे थे और परमेश्वर के मंदिर को उजड़ा हुआ छोड़ दिया था। यह दर्शाता है कि वे दशमांश नहीं दे रहे थे।

देखिए, दशमांश को लेवियों के पास—याजकों के पास—लाया जाना था और फिर इसका उपयोग मंदिर की सेवकाई के लिए होना था। क्योंकि लेवियों के पास दशमांश नहीं आ रहा था, और मंदिर का निर्माण नहीं हो रहा था, परमेश्वर को उनके कार्यों के कारण अपने आशीष के हाथ को हटाना पड़ा।

आप इस बात को समझ लें कि इस्राएल राष्ट्र से अपने आशीष के हाथ को हटाना परमेश्वर की इच्छा नहीं थी। बल्कि उनके पास कोई चुनाव नहीं था, क्योंकि दशमांश के मामले में यह कानूनी समस्या थी।

जैसे हम दूसरे अध्याय में पढ़ते हैं, तो हम देखते हैं कि, लोग भविष्यवक्ता के वचनों को सुनने लगे।

> *अब सोच–विचार करो कि आज से पहिले अर्थात जब यहोवा के मन्दिर में पत्थर पर पत्थर रखा ही नहीं गया था, उन दिनों में जब कोई अन्न के बीस नपुओं की आशा से जाता, तब दास ही पाता था, और जब कोई दाखरस के कुण्ड के पास इस आशा से जाता कि पचास बर्तन भर निकालें, तब बीस ही निकलते थे। मैं ने तुम्हारी सारी खेती को लू और गरूई और ओलों से मारा, तौभी तुम मेरी ओर न फिरे, यहोवा की यही वाणी है। अब सोच–विचार करो, कि आज से पहिले अर्थात जिस दिन यहोवा के मन्दिर की नेव डाली गई, उस दिन से ले कर नौवें महीने के इसी चौबीसवें दिन तक क्या दशा थी? इसका सोच–विचार करो। क्या अब तक बीच खत्ते में है? अब तक दाखलता और अंजीर और अनार और जलपाई के वृक्ष नहीं फले, परन्तु आज के दिन से मैं तुम को आशीष देता रहूंगा॥*
>
> –हागगे 2:15–19

क्योंकि उन्होंने मंदिर को पहले स्थान पर रखा, परमेश्वर ने उन्हें उस दिन उस घड़ी को याद रखने के लिए कहा क्योंकि अब वे अपनी संपन्नता में एक अद्भुत बढ़ोतरी को देखने जा रहे थे। परमेश्वर चाहता था कि वे उस स्थान को याद रखें जो उन्हें बदलाव को याद रखने के लिए उत्साहित और प्रेरित करेगी जिससे वे दशमांश देना बंद

न करें, परमेश्वर के फायदे के लिए नहीं बल्कि उनके खुद के फ़ायदे के लिए।

कुछ ऐसी वास्तविक कुंजियाँ हैं जो आपको समझ में आएंगी, लेकिन पहले मैं चाहता हूँ कि आप यह जान लें कि दशमांश एक *कानूनी* समस्या है। जब वे दशमांश नहीं दे रहे थे, परमेश्वर *को* अपना हाथ हटाना पड़ा, इसलिए नहीं क्योंकि वे *चाहते थे* लेकिन इसलिए कि उन्हें *ऐसा करना ही* पड़ा।

> *क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं; इसी कारण, हे याकूब की सन्तान तुम नाश नहीं हुए। अपने पुरखाओं के दिनों से तुम लोग मेरी विधियों से हटते आए हो, ओर उनका पालन नहीं करते। तुम मेरी ओर फिरो, तब मैं भी तुम्हारी ओर फिरूंगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है;*
>
> *परन्तु तुम पूछते हो, हम किस बात में फिरें?*
>
> *क्या मनुष्य परमेश्वर को धोखा दे सकता है? देखो, तुम मुझ को धोखा देते हो, और तौभी पूछते हो कि हम ने किस बात में तुझे लूटा है?*
>
> *दशमांश और उठाने की भेंटों में। तुम पर भारी शाप पड़ा है, क्योंकि तुम मुझे लूटते हो; वरन सारी जाति ऐसा करती है। सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे; और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि ऐसा कर के मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोल कर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूं कि नहीं। मैं तुम्हारे लिये नाश करने वाले को ऐसा घुड़कूंगा कि वह तुम्हारी भूमि की उपज नाश न करेगा, और तुम्हारी दाखलताओं के फल कच्चे न गिरेंगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है॥ तब सारी जातियां तुम को धन्य कहेंगी, क्योंकि तुम्हारा देश मनोहर देश होगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है॥*
>
> –मलाकी 3:6–12 (एनकेजेवी)

यहाँ पर हम एक अलग भविष्यवक्ता को राष्ट्र को फटकार लगाते हुए देखते हैं, जो कहता है कि वे लोग परमेश्वर को उनके लोगों को आशीष देने की क्षमता से रोक रहे हैं। वह कहता है—सम्पूर्ण राष्ट्र—एक श्राप में है क्योंकि वे कुछ बातों का पालन नहीं कर रहे हैं। उन्हें निर्देश दिया गया है कि सारा दशमांश भंडार में लाया जाए, जिससे परमेश्वर के भवन में कोई कमी न रहे।

फिर से कहूँगा कि, दशमांश को लेवियों के पास लाया लाना था, और फिर याजकों के पास। लेकिन यहाँ लोग थोड़ा ला रहे थे लेकिन सारा दशमांश नहीं ला रहे थे (कैन के पाप को याद करें)। प्रभु लोगों से कह रहा है कि यदि वे सारा दशमांश

लाएंगे तब स्वर्ग की आशीष फिर से उनकी हो जाएगी। स्वर्ग के पास उनके बीच में रहने का कानूनी अधिकार होगा। परमेश्वर उनसे कहता है कि उन्हें ऐसी आशीष प्राप्त होगी जिसे वे रख नहीं पाएंगे।

ठीक है, आइए यहीं रुक जाएं और आगे जाने से पहले इसके बारे में एक मिनट बात करें।

अब तक, हमने देखा कि दशमांश देना आरंभ ही से शुरू हो गया था, और अब हम जानते हैं कि यह क्यों शुरू हुआ था। यहाँ हम देखते हैं कि दशमांश को नष्ट करने वाला, शैतान, और परमेश्वर के लोगों के बीच में परमेश्वर को कानूनी अधिकार देता है कि वह आकर उसकी ताड़ना करें।

विशेष करके, परमेश्वर कह रहा है, " शैतान! अपने हाथ को हटा, तू उनकी चीजों को छू नहीं सकता!"

देखिए जब आदम गिरा, तब शैतान उसे गृह पर भूखा मार सकता था। लेकिन, तुरंत, परमेश्वर ने आदम और हवा को बचाने के लिए दशमांश को बीच में रख दिया। जब आदम और हवा ने दशमांश देने का निर्णय लिया, तब वे परमेश्वर को पहला स्थान देने लगे। वे परमेश्वर का चुनाव करने लगे।

आइए याद रखें कि शैतान को पृथ्वी पर इसी तरह से प्रवेश मिला। आदम और हवा को यकीन दिलाकर कि वे परमेश्वर के बजाय उस पर विश्वास करें, इसके द्वारा उसे कानूनी(जायज़) प्रवेश मिला। तो दशमांश देने के द्वारा—परमेश्वर को 10% देने के द्वारा—इस बात ने परमेश्वर को आदम और हवा के प्रबंध की रक्षा करने का कानूनी अधिकार दिया।

**दशमांश को आदम और हवा के कानूनी बाड़े के समान कार्य करने के लिए रखा गया था, और यह आज भी हमारे लिए कानूनी ढाल का काम करता है।**

हमें यह याद रखना है कि दशमांश ऐसा नियम था जो शैतान की सीमाओं के भीतर पृथ्वी पर मनुष्य के प्रबंध से संबंधित था। इसने उनकी आत्मिक पुन:स्थापना में कोई बदलाव को नहीं लाया था। नहीं, इसके लिए पाप के बलिदान को चढ़ाना था। लेकिन दशमांश ने मनुष्य के प्रबंध को चुराने से शैतान को रोकने के लिए परमेश्वर को अनुमति दी, और इससे वे पृथ्वी पर बने रहे।

कई लोग कहते हैं कि दशमांश एक पुराने नियम की व्यवस्था है और अब समाप्त हो गई है, जिसे यीशु के बलिदान ने पूरा कर दिया है। लेकिन हमने देखा कि दशमांश

का नियम मूसा की व्यवस्था के लिखे जाने से पहले, मनुष्य के गिरने के समय से है।

**दशमांश को आदम और हवा के कानूनी बाड़े के समान कार्य करने के लिए रखा गया था, और यह आज भी हमारे लिए कानूनी ढाल का काम करता है।**

दशमांश पृथ्वी के क्षेत्र का नियम है और यह तब तक कार्य में रहेगा जब तक शैतान इस पृथ्वी पर बना है, जैसा वह आज भी है। जब तक शैतान यहाँ है, दशमांश का नियम तब तक प्रभाव में रहेगा।

दूसरी बात जो आप कलीसिया में देखेंगे वह यह है कि लोग दशमांश दे रहे हैं लेकिन फिर भी सम्पन्न नहीं हो रहे हैं। लोग सोचते हैं कि यदि वे दशमांश देंगे, प्रभु की आशीष उन्हें उमड़ती हुई सफलता का आनंद उठाने में मदद करेगी, इतना कि वे रख भी नहीं पाएंगे। जब वे दशमांश देना शुरू करते हैं और संपन्नता को नहीं देखते हैं, वे इस परिणाम पर आते हैं कि दशमांश कार्य नहीं करता है। लेकिन उनका अनुमान सही नहीं है, और हमें इस वचन पर ध्यान देना है कि ऐसा क्यों होता है।

परमेश्वर ने लोगों से कहा कि यदि वे दशमांश देंगे तो, *"मैं तुम्हारे लिये नाश करने वाले को ऐसा घुड़कूंगा कि वह **तुम्हारी** भूमि की **उपज** नाश न करेगा, और **तुम्हारी दाखलताओं** के फल कच्चे न गिरेंगे, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है॥"*

क्या आप देख सकते हैं? यह कहता है कि स्वर्ग की खिड़कियां खुल जाएंगी और परमेश्वर *उनकी* उपज को आशीष देंगे। मैं यह समझाना चाहता हूँ कि *आपको* अपने दशमांश के बाड़े के अंदर कुछ और भी उगाना है।

केवल दशमांश खुद में आपको सफल नहीं बनाएगा। यह सिर्फ उसकी रक्षा करता है जो आप दशमांश के बाड़े के अंदर उगाते हैं।

तो यदि आपके पास तीन टमाटर के पौधे हैं, और वे सफल हो रहे हैं। लेकिन यदि आपके पास सिर्फ तीन टमाटर के पौधे ही हैं, तो निःसंदेह आपके पास तीन कमाल के पौधे होंगे, लेकिन आप बहुत अधिक सम्पन्न नहीं होंगे।

यह ऐसा है कि जो *आप* बाड़े के अंदर बोते या बनाते हैं वही आपकी उमड़ती हुई बहुतायत को लाता है।

दुखद रूप से, गलत शिक्षाओं के साथ, परमेश्वर के बहुत से लोग दशमांश देते हैं और फिर ठंडी चाय को लेकर बहुतायत की आशीष का इंतज़ार करते हैं। बहुतायत तब शुरू होगी जब हम प्रक्रिया में अपने योगदान को समझ पाएंगे।

तो फिर से आइए हमने जो सीखा, उसे याद करें।

1. दशमांश पृथ्वी पर मनुष्य के गिरने के कारण आरंभ ही से आया था।
2. इसे मूसा की व्यवस्था में इसीलिए लिखा गया क्योंकि मूसा की व्यवस्था

में, इस्राएल कैसे अपने जीवन को बिताए, इस बात को दर्शाता था। परमेश्वर निश्चित होना चाहता था कि वह उन्हें आशीष दे, इसलिए इसे नियम में लिखा, जिससे लोग इसे करते रहें। दशमांश का नियम समाप्त नहीं हुआ है। लेकिन दशमांश की जायज़ ज़रूरत समाप्त हो गई है। अब, हमारे पास दशमांश देने और इसके लाभ का आनंद उठाने का चुनाव है।

3. दशमांश का नियम पृथ्वी क्षेत्र का नियम है और यह तब तक रहेगा जब तक शैतान पृथ्वी पर है।
4. दशमांश अपने आप ही आपको सफल नहीं बनाएगा, लेकिन यह दशमांश के बाड़े में शैतान को आपके बोने ओर निर्माण करने के बीच में दखल देने से रोकने के लिए परमेश्वर को अनुमति देता है।
5. दशमांश इस बात को भी निर्धारित नहीं करता कि आप स्वर्ग जाएंगे या नहीं। यदि आप यीशु के नाम को पुकारेंगे तो आप स्वर्ग जाएंगे। लेकिन दशमांश पृथ्वी पर आपकी सफलता पर प्रभाव डाल सकता है।
6. दशमांश परमेश्वर के भंडार के लिए है। पुराने नियम में, इसने याजकों को जो सेवकाई में थे, भोजन दिया और उनका ध्यान रखा। आज यह कुछ अलग बात नहीं है। दशमांश आपकी स्थानीय कलीसिया को जाना चाहिए। परमेश्वर ने दशमांश को नियुक्त किया है कि वह सेवकाई को संभाले।

   मेरे पास ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि उन्हें अपनी कलीसिया नहीं पसंद और वे पूछते हैं कि क्या उन्हें अपना दशमांश उधर देना चाहिए। मेरा उत्तर क्या है? मैं कहता हूँ कि नई कलीसिया को ढूंढें, ऐसी कलीसिया जो विश्वास और परमेश्वर के राज्य के बारे में सिखाती है।

   यदि आप कलीसियाओं के बीच में हैं, तो आप उस सेवकाई में दशमांश दे सकते हैं जिससे आपको आत्मिक भोजन मिलता है, लेकिन एक अच्छी कलीसिया में होना परमेश्वर का उत्तम दान है। यदि आपके क्षेत्र में कोई कलीसिया नहीं, तो आप उस स्थान पर दशमांश दे सकते हैं जहां से आपको वचन प्राप्त होता है।
7. आप अपने दशमांश की नाम धराई नहीं कर सकते। उद्धारण के लिए, जैसे आप दशमांश देते हैं, आप यह नहीं कह सकते कि, "मैं अपने दशमांश को बीज के रूप में _____ के लिए बो रहा हूँ।" दशमांश का कार्य नियुक्त है। आप दान के विषय में लिख सकते हैं लेकिन दशमांश के लिए नहीं।

8. दशमांश आप जो कमाते हैं उसका 10% है। यह कर के *पहले* आता है। याद करें, परमेश्वर ने मलाकी में कहा, "सारा दशमांश भंडार में ले आओ।" नौ प्रतिशत दशमांश नहीं है। छह प्रतिशत दशमांश नहीं है। 10% दशमांश है। यदि आप कहें, कि "मैं 10% देने की हिम्मत नहीं कर सकता," परमेश्वर इस्राएल को जो करने के लिए कह रहा था वही करें, जब वे सम्पूर्ण दशमांश नहीं दे रहे थे तब उसने कहा: "मुझे परख कर देखो,"। अपने दशमांश को विश्वास के साथ दें, यह जानते हुए कि परमेश्वर उसका आदर करेगा।
9. मैं कैसे जानूँ कि मुझे किस में से दशमांश देना है? मेरा नियम यह है: क्या आपकी कोई ऐसी आय है जिस पर कर लागू होता है?
10. यदि इसमें कर लागू होता है, तो इसका दशमांश दें। क्या मेरे व्यवसाय का दशमांश दूँ? फिर से कहूँगा, क्या इसमें कर लागू होता है? मैं अपने व्यवसाय की सम्पूर्ण आमदनी पर दशमांश नहीं देता हूँ। मैं अपने व्यवसाय से जैसा चाहता हूँ वैसा बोता हूँ, लेकिन यह दशमांश नहीं है। यदि मैं अपने व्यवसाय से पैसे निकालता हूँ, तो मैं उस भाग का दशमांश देता हूँ जितना मैं व्यवसाय से कमाता हूँ।
11. अगर मेरे पास इस समय कोई कलीसिया नहीं है तो क्या कर सकते हैं? तो जब तक आपको कलीसिया न मिल जाए तब तक जो आपको आत्मिक भोजन दे रहा है उसे दें। हाँ, कई लोग इस आधुनिक लाइवस्ट्रीम और फेसबुक लाइव संचालन के समय में दूर स्थित कलीसिया को अपनी मूल कलीसिया के रूप में देखते हैं। यदि आपके नगर में कोई अच्छी बाइबल पर विश्वास करनेवाली कलीसिया नहीं है, तो आप दूर स्थित कलीसिया में दे सकते हैं। कई लोगों ने इसी कारण गावों में फेथलाइफचर्च.ऑर्ग को अपनी गृह कलीसिया बना लिया है।

ठीक है आइए आगे बढ़ें।

प्रभु ने मुझे दिखाया कि अधिकतर मसीही अपने दशमांश को एक बिल के रूप में उधार देते हैं (यदि वे दशमांश देते हैं, अधिकतर तो नहीं देते)। इसका अर्थ है वे जो कर रहे हैं उसमें कोई विश्वास को नहीं दिखाते हैं बल्कि इसलिए कर रहे हैं कि उन्हें बस दशमांश चुकाना है और सामान्य रूप से इसे बिल की तरह भरते हैं।

वैसे दशमांश देना आपके लिए अच्छा है, लेकिन आप हमेशा अपने दशमांश को विश्वास में दें। नहीं तो, आपका देना विश्वास पर आधारित नहीं होगा बल्कि कानूनी

स्तर से प्रेरित होगा।

ऐसा हो कि परमेश्वर का हर वचन आपके लिए परमेश्वर के इरादों का प्रकाशन हो। दशमांश कोई भारी बोझ नहीं है और इसे देने में आपको कोई खेद नहीं होना चाहिए। परमेश्वर आपसे कुछ *लेने* की कोशिश नहीं कर रहा है, बल्कि, वह आपको कुछ *लाकर* देना चाहता है। हमें दशमांश के लाभ पर विश्वास करना और समझकर इसका आनंद उठाना है। दशमांश आराधना का कार्य है जो घोषित करता है कि परमेश्वर ही स्रोत है। इसके लाभ को अच्छे से परिभाषित किया गया है, जब हम दशमांश देते हैं तब हमें इसे प्राप्त करने के लिए विश्वास होना चाहिए।

मेरी कलीसिया में आने वाले एक परिवार को जो हमेशा दशमांश देते हैं, उन्हें यही सलाह देता हूँ। मैं उन्हें यह भी सलाह देता हूँ कि, कलीसिया में आने से पहले, उन्हें अपने दशमांश पर हाथ रखकर उसपर लाभों की घोषणा करनी चाहिए, यह घोषणा करें कि स्वर्ग के झरोखे खुले हुए हैं और शैतान को मेरी फसल से घुड़का गया है। उन्हें यह भी घोषणा करना चाहिए कि शैतान उनसे चुरा नहीं सकता और जिस पर भी वे हाथों को रखेंगे वह सफल होगा, यीशु के नाम में।

अब अंत में, दशमांश की चर्चा को समाप्त करते हुए नए नियम में दशमांश के विषय में देखेंगे। ओ, हाँ, दशमांश का वर्णन यहां भी है! नीचे दिए गए वचन पिछले वचनों से हैं।

> *जब वह कदोर्लाओमेर और उसके साथी राजाओं को जीत कर लौटा आता था तब सदोम का राजा शावे नाम तराई में, जो राजा की भी कहलाती है, उससे भेंट करने के लिये आया। जब शालेम का राजा मेल्कीसेदेक, जो परमप्रधान ईश्वर का याजक था, रोटी और दाखमधु ले आया। और उसने अब्राम को यह आशीर्वाद दिया, कि परमप्रधान ईश्वर की ओर से, जो आकाश और पृथ्वी का अधिकारी है, तू धन्य हो। और धन्य है परमप्रधान ईश्वर, जिसने तेरे द्रोहियों को तेरे वश में कर दिया है। तब अब्राम ने उसको सब का दशमांश दिया।*
>
> –उत्पत्ति 14:17–20

अब देखते हैं कि इब्रानियों का लेखक दशमांश के बारे में क्या कहता है।

> *ह मलिकिसिदक शालेम का राजा, और परमप्रधान परमेश्वर का याजक, सर्वदा याजक बना रहता है; जब इब्राहीम राजाओं को मार कर लौटा जाता*

*था, तो इसी ने उस से भेंट करके उसे आशीष दी। इसी को इब्राहीम ने सब वस्तुओं का दसवां अंश भी दिया: यह पहिले अपने नाम के अर्थ के अनुसार, धर्म का राजा, और फिर शालेम अर्थात शांति का राजा है। जिस का न पिता, न माता, न वंशावली है, जिस के न दिनों का आदि है और न जीवन का अन्त है; परन्तु परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप ठहरा॥*

*अब इस पर ध्यान करो कि यह कैसा महान था जिस को कुलपति इब्राहीम ने अच्छे से अच्छे माल की लूट का दसवां अंश दिया। लेवी की संतान में से जो याजक का पद पाते हैं, उन्हें आज्ञा मिली है, कि लोगों, अर्थात अपने भाइयों से चाहे, वे इब्राहीम ही की देह से क्यों न जन्मे हों, व्यवस्था के अनुसार दसवां अंश लें। पर इस ने, जो उन की वंशावली में का भी न था इब्राहीम से दसवां अंश लिया और जिसे प्रतिज्ञाएं मिली थी उसे आशीष दी। और उस में संदेह नहीं, कि छोटा बड़े से आशीष पाता है। और यहां तो मरनहार मनुष्य दसवां अंश लेते हैं पर वहां वही लेता है, जिस की गवाही दी जाती है, कि वह जीवित है।*

–इब्रानियों 7:1–8

कृपया इन वचनों पर ध्यान दें जो कहता है कि, *"यहाँ मरनहार मनुष्य दसवां अंश लेते हैं,"* यहाँ ये पुराने नियम के लेवियों के बारे में बता रहे हैं। फिर यह आगे को कहता है, *"पर वहाँ वही लेता है, **जिस की गवाही दी जाती है, कि वह जीवित है।"***

मलकिसदेक धार्मिकता का राजा था, शांति का राजा, जो बिना माता पिता के था, जिसके दिनों की न कोई शुरुआत और न जीवन का अंत था,जो परमेश्वर के पुत्र के प्रतीक था, सदा का याजक है। उस दिन अब्राहम के सामने जो खड़ा था, वह मलकीसदेक खुद यीशु मसीह था। उस समय उसे यीशु के नाम से नहीं जाना जाता था।

याद करें कि, यूसुफ को स्वर्गदूत द्वारा बताया गया कि एक बालक जन्म लेगा और उसका नाम यीशु रखना। यीशु नाम का अर्थ है उद्धारकर्ता, जैसा उसका नाम दर्शाता है वैसा ही उसने हमारे लिए किया भी है। मसीह यीशु के आखिर का नाम नहीं है। जब हम यीशु मसीह कहते हैं, तब हम वास्तव में कहते हैं कि अभिषिक्त उद्धारकर्ता। यीशु जब अब्राहम के सामने खड़ा था तब उसे यीशु के नाम से नहीं जाना जाता था, क्योंकि उस समय यह योजना अब भी शैतान से छिपी थी।

तो, मलकीसदेक एक सरल सा नाम था जो दर्शाता था कि वह कौन है, धार्मिकता का राजा और शांति का राजकुमार। हालांकि, भविष्यवाणी के रूप में, मलकीसदेक रोटी और दाखरस देने के द्वारा अब्राहम के भविष्य की घोषणा कर रहा था, यह नई वाचा के बारे में बात करती है, (रोटी, हमारे लिए उसकी तोड़ी गई देह थी, और

दाखरस, हमारे लिए दिया गया उसका लहू था) जो उत्पत्ति 12 में अब्राहम की संतानों के साथ बांधी जाने वाली थी।

दशमांश को लेकर, इब्रानियों कहता है कि दशमांश अब उसके द्वारा लिया जाता है, "जो गवाही देता है कि वह जीवित है।" अब यीशु दशमांश को लेते हैं, जो जीवित रहने की गवाही देते हैं! वह राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है।

तो, याद रखें, दशमांश का नियम आज भी प्रभावशाली है। एक बात जो नहीं बदली है वह है याजकीयता। पुराने नियम में, लेवियों का गोत्र परमेश्वर के कार्य के लिए दशमांश को लेता था। आज, यीशु (जो यहूदा के गोत्र आया, लेवीय के नहीं, याजकीयता में एक नए क्रम की स्थापना को दर्शाता है) अपनी कलीसिया से सेवकाई के कार्य के लिए दशमांश को लेता है। नि:संदेह, मैंने जाना कि यीशु, व्यक्ति के रूप में, यहाँ दशमांश नहीं ले रहे हैं। लेकिन याद रखें बाइबल कहती है कि कलीसिया मसीह की देह है, इसका मतलब है कि यहाँ उसकी कानूनी अभिव्यक्ति, जैसे हमारी देह हमें कानूनी अभिव्यक्ति देती है। जैसे हम उनकी कलीसिया को, उसकी देह को देते हैं, हम असल में यीशु को दे रहे हैं। लेवीय, तब पुराने नियम की अधीनता में, परमेश्वर की सेवकाई की ओर से दशमांश लेते थे, और कलीसिया अब परमेश्वर की सेवकाई की ओर से दशमांश लेती है।

**दशमांश आपके जीवन के आस पास की कानूनी सुरक्षा है जो शैतान को आपके प्रबंध को छीनने से रोकता है।**

फिर से याद करते हुए, दशमांश आपके जीवन के आस पास की कानूनी सुरक्षा है जो शैतान को आपके प्रबंध को छीनने से रोकता है। याद रखें, सिर्फ दशमांश ही खुद आपको सम्पन्न नहीं करेगा! आपकी संपन्नता इस बात पर निर्भर है कि आप बाड़े के *अंदर* क्या करते हैं!

दशमांश आपके आर्थिक जीवन में एक महत्वपूर्ण नियम है। इसलिए मैंने राज्य के इस महत्वपूर्ण नियम को सिखाने के लिए इतना समय लिया।

तो, अगली बार जब आप कलीसिया में रहेंगे और यदि पास्टर कहता है कि अब यह समय दशमांश को लेने का है, तब आपको आनंद से आवाज उठानी चाहिए, क्योंकि अब आप दशमांश के लाभों को जानते हैं।

अध्याय 7

# आपको बटुए की ज़रूरत है : भाग एक

मेरे परम मित्रों में से एक, पास्टर पीटर मॉर्टलॉक, न्यू ज़ीलैंड के औकलैंड में स्थित सिटी इम्पैक्ट चर्च के पास्टर हैं। उन्होंने एक अद्भुत सेवकाई को खड़ा किया है जो न्यू ज़ीलैंड में सबसे विशाल कलिसियाओ में से एक है।

कई वर्षो की हमारी इस दोस्ती के दौरान, हमने सम्पूर्ण उतरी अमरीका और न्यू ज़ीलैंड में 20 या अधिक मोटरसाइकिल की यात्राओं को तय किया है। यह वही दोस्त है जिसने मुझे हार्ली खरीदने के लिए उत्साहित किया था। मैं वर्षो से हॉन्डा गाड़ी का चालक था, लेकिन जब भी हम यात्रा करते थे, वह हमेशा मुझसे हारली को किराए पर लेने के लिए विनती करता था। पहले तो, मुझे हारली इतनी पसंद नहीं थी जितनी मेरी होंडा पसंद थी, लेकिन यदि आप हारली बाइक के बारे में जानते हैं तो, आपको पता होगा कि उन्होंने कुछ वर्ष पहले अपनी डिजाइन में काफी बड़े बदलाव किए हैं, जो मुझे अच्छा लगे। इसलिए, इस पिछले वर्ष में, ड्रेनडा ने मुझे एक नई हारली दी, जिस पर हमें यात्रा करना पसंद है।

हमारी यात्राओं के दौरान, मैंने ध्यान दिया कि पास्टर पीटर के पास अक्सर चमड़े का झोला होता है—मैं इसे आदमी का झोला कहता हूँ—जो उनके कंधों पर होता है। एक दिन मेरे बटुए पर बैठने के बाद उन्हें सूजन हो गई थी, तो मैंने उनके झोले के बारे में उनसे पूछा। इस बात की चर्चा ने उन्हें मेरे जन्मदिन पर मुझे वह झोला देने के लिए प्रेरित किया। यह यूरोप और न्यू ज़ीलैंड के समान यहाँ के राज्यों में प्रसिद्ध नहीं है, लेकिन मुझे यह पसंद है।

मुझे अक्सर ऐसा लगता है कि मैंने अपना चश्मा खो दिया है, इसे नीचे रखकर भूल जाता हूँ कि मैंने इसे कहाँ रखा है। लेकिन जब से मैंने पुरुषों के झोले का, या पुरुषों के बटुए का उपयोग करना शुरू कर दिया है, तब से मैंने इसका जोड़ा कभी नहीं खोया है। अब मैं पूरी रीति से समझ गया हूँ कि महिलाएं बटुए को लेकर चलना क्यों पसंद करती हैं। क्योंकि सब कुछ उसी में पाया जाता है। यह अद्भुत है। अब, मैं आपको पुरुषों के बटुए को खरीदने के लिए उत्साहित नहीं कर रहा हूँ बल्कि मैं सलाह देता हूँ

कि आप इस बारे में सोचें ।

क्या आपको पता है कि यीशु ने हमें बटुए को लेकर चलने के लिए कहा है:

> *और तुम इस बात की खोज में न रहो, कि क्या खाएंगे और क्या पीएंगे, और न सन्देह करो। क्योंकि संसार की जातियां इन सब वस्तुओं की खोज में रहती हैं: और तुम्हारा पिता जानता है, कि तुम्हें इन वस्तुओं की आवश्यकता है। परन्तु उसके राज्य की खोज में रहो, तो ये वस्तुऐं भी तुम्हें मिल जाएंगी।*
>
> *हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दे। अपनी संपत्ति बेचकर दान कर दो; और अपने लिये ऐसे बटुए बनाओ, जो पुराने नहीं होते, अर्थात स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं और जिस के निकट चोर नहीं जाता, और कीड़ा नहीं बिगाड़ता। क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा॥*
>
> –लूका 12:29–34

मुझे ऐसा नहीं लगता कि यीशु यहाँ किसी फैशन स्टैट्मन्ट पर ज़ोर दे रहा है, बल्कि, आपको इस प्रक्रिया को समझने की आवश्यकता है। (और हम झोले शब्द को बटुए में बदल सकते हैं।)

यीशु यह समझाना चाहता था कि आपको अपने धन के लिए प्रवेश अनुमति चाहिए।

उद्धारण के लिए, मेरे बैंक में लाखों डॉलर हो सकते हैं, लेकिन अगर मुझे इसका उपयोग करने की अनुमति नहीं है तो यह मेरे किस काम का, सही है न? इसीलिए आप अपने बटुए को अपने साथ लेकर घूमते हैं—यह आपके धन के प्रति अनुमति का मार्ग है।

अपने बटुए को खोना सबसे परेशानी भरी बात हो सकती है। मैं हमेशा इस बात का ध्यान रखता हूँ कि ऐसा कभी न हो। मेरा बटुआ, जो मेरे झोले में है, हमेशा मेरे पास रहता है।

जिन वचनों का वर्णन मैंने यीशु के वचनों से किया है, इनमें आप अपने धन के संबंध में काफी सारी बुद्धिमत्ता और प्रमुख राज्य सिद्धांत को पाएंगे। सबसे पहले, यह पद, "चिंता मत करो" एक से ज़्यादा बार इसका उपयोग हो चुका है। यीशु ने हमें बताया कि परमेश्वर हमारी ज़रूरतों के बारे में सब कुछ जानता है और उसने हमें विशेष दिशा दिखाई है कि हम उसके प्रबंध के प्रति अनुमति कैसे प्राप्त करें।

*इसलिये तुम चिन्ता करके यह न कहना, कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे, या क्या पहिनेंगे? क्योंकि अन्यजाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए। इसलिये पहिले तुम उसे राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।*

यीशु चिंता न करने के लिए इसलिए कह रहे थे क्योंकि परमेश्वर ने इसका इंतजाम किया है; परमेश्वर जानता है कि आपको क्या चाहिए। लेकिन तब यीशु कुछ निर्देशों को देते हैं।

*इसलिये पहिले तुम उसे राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।*

यीशु यह कहना चाहता था कि परमेश्वर के पास इसका उत्तर है, लेकिन इस पर कानूनी रूप से दावा करने के लिए एक प्रक्रिया है। परमेश्वर के पास इसका उत्तर है, इससे पहले आप इस पर दावा करें **लेकिन** परमेश्वर का राज्य कैसे काम करता है आपको यह जानना ज़रूरी है।

ध्यान दें कि यीशु ने पहले परमेश्वर की नहीं लेकिन *राज्य* की खोज करने के लिए कहा। मुझे लगता है हम में से अधिकतर लोगों ने इस वचन का अनुवाद इस प्रकार किया है कि पहले परमेश्वर की खोज करो, लेकिन यहाँ ऐसा नहीं कहा गया है। यीशु ने इस बात को बहुत स्पष्ट किया है। यदि सिर्फ खोज करने से परमेश्वर हमारा उत्तर होता, तो वह यह कहता कि "*परमेश्वर* की खोज करो, और यह सारी बातें तुम्हें दी जाएंगी।" परमेश्वर जानता है कि आपको क्या चाहिए, लेकिन स्वर्ग के पास जो है वह जायज़ रूप से पृथ्वी के क्षेत्रों में, आपको प्राप्त होने से पहले, इसे एक कानूनी प्रक्रिया से जाना होता है।

मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि परमेश्वर का राज्य एक ऐसी सरकार है जिसका राजा है। राजा का अधिकार और उसकी इच्छा, राज्य के नियमों के अधिकार क्षेत्र के द्वारा, राज्य के हर नागरिक के ऊपर लागू होती है।

परमेश्वर के राज्य से संबंधित मेरी पिछली चार पुस्तकों में से, मैंने राज्य जीवन, आस्था और अधिकार क्षेत्र के पहलुओं की समीक्षा करने में समय बिताया है। ऐसा मैंने क्यों किया? क्योंकि यह सिद्धांत आपकी सफलता और राज्य के जीवन के विषय में आपकी समझ के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मैंने अपनी सभी पुस्तकों में राज्य के इन

प्रमुख भागों का समीक्षण किया है, यह जानते हुए कि कई लोग किसी एक पुस्तक को चुनेंगे लेकिन उन्हें उस बुनियादी ज्ञान को जानना ज़रूरी है जिसने मेरे जीवन को परिवर्तित किया है।

आपको यह सीखने की आवश्यकता है कि राज्य कैसे काम करता है!

इस अध्याय में उपलब्ध जानकारी आपकी वित्तीय क्रांति श्रेणी में स्थित अन्य पुस्तकों से ली गई है। यदि आपने इन सभी को पढ़ा है तो, आप अध्याय आठ में जाने के लिए तैयार हैं। यदि आपने इन्हें नहीं पढ़ा है, या राज्य की इन बुनियादी और महत्वपूर्ण सिद्धांतों को फिर से याद करना चाहते हैं तो, मेरे साथ अध्याय सात में बने रहें।

## अधिकार क्षेत्र की समस्या

जैसा मैंने पहले भी बताया है, कि मैं ओहीओ की 60 एकड़ की सबसे सुंदर भूमि के देश में रहता हूँ। वास्तव में पहले मेरे पास 55 एकड़ थे, लेकिन मेरे पड़ोसी ने मुझे, भूमि का एक हिस्सा जो मेरी भूमि से लगकर था, बेच दिया, जिससे कुल 60 एकड़ हो गए। पिछले 22 वर्षो से हमने इस भूमि पर बहुत मज़े किए। हिरणों का शिकार करने के लिए लकड़ियों का होना, बतखों का शिकार करने के लिए गीली मिट्टी, और खरगोश और तीतर का शिकार करने और हमारी चार पहियों की गाड़ी को चलाने के लिए हरे भरे खेत का होना, सब एक आशीष है।

यदि आप मेरी जगह को ध्यान से देखेंगे तो, आप पाएंगे कि आपको संपत्ति की सीमाओं में **प्रवेश निषेध** के संकेत मिलेंगे। यह संकेत इसलिए हैं कि लोग जान जाएं कि मेरी संपत्ति की रेखा कहाँ से शुरू होती है। ओहीओ में नियम ऐसा कहता है कि यदि कोई व्यक्ति मेरी भूमि पर है तो जितनी बार वो मेरी भूमि पर उपस्थित है उतनी बार उसके पास एक लिखित अनुमति पत्र हो। यदि उसके पास नहीं है तो, इसका अर्थ घुसपैठ होता है और कानूनी रूप से उन्हें बाहर फेंका जा सकता है और उनपर कानूनी प्रक्रिया में धाराएं और जुर्माना लग सकता है।

तो संक्षिप्त में...

**जहां आपका कानूनी अधिकार क्षेत्र नहीं है वहां आप कब्ज़ा नहीं कर सकते हैं।**

तो, जैसा मैंने कहा, एक लिखित अनुमति पत्र का होना, जिस पर मेरे हस्ताक्षण हो, यह आपको मेरी संपत्ति में कानूनी रूप से प्रवेश देगी। यदि किसी ने आपको मेरी संपत्ति के भीतर रोक कर पूछा कि आप यहाँ किस लिए आए हैं और यदि आप यह कहेंगे कि मैंने आपको अनुमति दी है कि आप यहाँ शिकार कर सकते हैं, तो यह अनुमति के लिए काफी नहीं है। नियम यह कहता है कि प्रवेश के लिए आपके पास

हस्ताक्षणित एक पत्र होना चाहिए।

यही प्रक्रिया बैंक में भी लागू होती है, यदि आप बैंक जाकर अपने पैसों की मांग करेंगे; तो वे आपकी पहचान की मांग करेंगे (आईडी)। जब आप उसके उत्पाद का भुगतान करने के लिए अपने क्रेडिट कार्ड का उपयोग करते हैं, तब एक रीटेल क्लर्क को भी, आपकी पहचान के बारे में पूछने का अधिकार है। किसी आईडी को दिखाने से यह मतलब नहीं कि वे आपके अकाउंट में आपको प्रवेश अनुमति नहीं देंगे; बल्कि यह आपके सामान तक धोकाधड़ी से पहुँचने वालों से आपको सुरक्षित रखेगा।

**जो आपका है उसे प्राप्त करना सीखें। तब यह सारी बातें जिनकी आपको ज़रूरत है आपको दी जाएगी।**

जब यीशु ने पहले राज्य की खोज करने के बारे में कहा, तब वास्तव में वह यह कहना चाहता था, कि *"राज्य के नियमों का अध्ययन करो जिससे तुम कानूनी और प्रभावशाली रूप से अपने कानूनी अधिकारों के भीतर राज्य के नागरिक के समान इसको संचालित करना जानो।"* जो आपका है उसे प्राप्त करना सीखें। तब यह सारी बातें जिनकी आपको ज़रूरत है आपको दी जाएगी।

दूसरा उद्धारण होगा, यदि मेरे पास मेरे बेटे के लिए एक ट्रस्ट फंड है। जब वह एक तय आयु तक पहुंचेगा और उसके अकाउंट में इन पैसों को देने के लिए कानून अनुमति प्राप्त हो जाएगी, तब मुझे उसे बताना होगा कि किस बैंक में यह फंड हैं, और उसे खाते से पैसों को निकालना, और खाते में फिर जमा कैसे करें यह सिखाना होगा। हालांकि जायज़ रूप से यह उसका खाता है, फिर भी कानूनी रूप से खाते में पहुँच प्राप्त करने के लिए उसे नियम की प्रक्रिया से होकर जाना होगा।

मैं यहाँ जो कहना चाहता हूँ इसे संक्षिप्त में बताता हूँ। जब यीशु ने राज्य की खोज करने के बारे में कहा, तब वह राज्य के नियमों और प्रक्रियाओं के बारे में बताते हुए यह कह रहा था कि यदि कानूनी रूप से जो हमारा है उसे हासिल करना है तो राज्य कैसे कार्य करता है इसे सीखें। तो, जैसे आपने मेरे बैंक के खाते के उद्धारण में देखा, हो सकता है आपके धन पर आपका कानूनी अधिकार है लेकिन फिर भी आप इसे प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं, क्योंकि इसे प्राप्त करने के लिए आपने कानूनी प्रक्रिया का पालन नहीं किया है। उद्धारण के लिए, यदि आप अपनी आईडी घर पे छोड़कर बैंक में गए, तो वे आप ही के खाते से आपको पैसे निकलने की अनुमति नहीं देंगे हालांकि यह आप ही के पैसे हैं।

राज्य में अधिकार क्षेत्र के मुद्दे को समझना, राज्य में प्रभावी ढंग से संचालन के लिए पूर्व शर्त है।

मुझे यकीन है कि आपने इस प्रकार की कहानी को ज़रूर सुना होगा: यदि ऐसा कोई प्रसिद्ध व्यक्ति है वह बीमार हो जाता है, और उनके लिए प्रार्थना करने के लिए लोग बुलाए जाते हैं। लाखों लोग के उस व्यक्ति की चंगाई के लिए प्रार्थना में लग जाने के बावजूद, उसकी मृत्यु हो जाती है। ऐसा क्यों होता है?

या फिर कोई आपसे कहता है कि उनके प्रार्थना करने के बावजूद उनकी दादी की मृत्यु हो गई, और वे जानना चाहते हैं कि ऐसा क्यों हुआ। या कोई आपको बोलता है कि उन्होंने एक आर्थिक ज़रूरत के लिए बीज को बोया फिर भी वे घटी में क्यों जा रहे हैं। क्या इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर हैं?

इससे पहले कि मैं इनका उत्तर दूँ, आइए हम मान लें कि आत्मिक क्षेत्र में हमें सारी बातों की जानकारी नहीं है, और मैं यह नहीं कहता कि मुझे सब कुछ पता है। हालांकि, परमेश्वर के वचन पर आधारित, हम जानते हैं कि अगर कोई बीमार है, तो यीशु ने उसकी चंगाई के लिए पहले ही दाम को चुका दिया है। हम जानते हैं कि अगर हम उदारता से देते हैं तो, बाइबल कहती है कि हम प्राप्त भी करेंगे। फिर भी प्रतिदिन, हम परमेश्वर का वचन जिस प्रकार लिखा हुआ है वैसा लोगों के जीवन में पूरा होता हुआ नहीं देखते हैं। तो क्या इसके लिए परमेश्वर पर दोष लगाया जाए?

जैसे मैं इस अध्याय में इस विषय पर चर्चा करूंगा, आप इस प्रश्न का उत्तर, **नहीं** के रूप में पाएंगे। यदि यह नहीं है, तो समस्या क्या है? आखिर, अधिकतर लोग समस्याओं के लिए परमेश्वर ही पर दोष लगाते हैं। वे जानते हैं कि परमेश्वर के पास बुरी बातों को रोकने की सामर्थ है और फिर भी उसने ऐसा होने से नहीं रोका, तब वे विचार करने लगते हैं कि वह रोकना ही नहीं *चाहता था*। "परमेश्वर भले लोगों के जीवन में बुरी बातें होने की अनुमति देते हैं" सभी गलत शिक्षाएं इसी से आती हैं। लोग इस प्रकार विश्वास करने लगते हैं कि परमेश्वर ने इस कार्य को रोका नहीं या इसके बीच में दखल नहीं दिया, उसने ही इसकी अनुमति दी होगी। लेकिन यदि आप में इस बात की समझ है कि परमेश्वर भला है और वह कभी झूठ नहीं बोल सकता, तब आप जान जाएंगे कि समस्या परमेश्वर में नहीं है, बल्कि कहीं और है; और फिर आप उत्तर की खोज में लग जाएंगे।

जैसे ही आप एक ऐसे कमरे में चलते हैं जिसमें अंधेरा है, तब आप तुरंत ही बिजली कंपनी ने बिजली काट दी, ऐसा दावा नहीं करते। नहीं, बल्कि आप पहले बत्ती चालू करने के बटन को ढूंढते हैं, और बल्ब की जांच करते हैं कि यह सही से काम कर रहा है कि नहीं। इस बात से आपको समझ आता है कि, समस्या आपकी ओर से है।

यदि आपके पास इस बात का ज्ञान होता कि किसी भी बात में परमेश्वर की गलती *कभी भी नहीं* हो सकती है, जिस प्रकार उसने हमें अपने वचन और प्रतिग्याएं दी हैं

जो हमारे प्रति परमेश्वर की इच्छा को प्रगट करती है, तब आप उस शॉर्ट सर्किट की खोज करेंगे जो परमेश्वर के उत्तर को रोक रहा है।

मत्ती 17:14–23 में जब यीशु के शिष्य उस लड़के में से दुष्टआत्मा को नहीं निकाल सके तब उनकी मानसिकता ऐसी ही थी। इसके बजाय कि, "परमेश्वर ने उस दुष्टआत्मा को वहाँ क्यों छोड़ा?" उन्होंने यीशु से पूछा, "हम इसे निकाल क्यों न सके?" जब परिस्थितियाँ परमेश्वर के वचन के विरुद्ध उठती हैं तब हमारा प्रश्न इसी प्रकार होना चाहिए।

तो मैं फिर से कहूँगा, यह महत्वपूर्ण है कि हम पहले यह जान लें, कि परमेश्वर भला है, और दूसरा यह कि, वह झूठ नहीं बोलता। यदि आपको सीखना है कि राज्य कैसे काम करता है तो आपको बाइबल का अध्यनन करना चाहिए। याद करें, बाइबल की वह महान कहानियाँ कुछ कारण से लिखी गई हैं—इसमें यीशु आपको कुछ दिखाना चाहता है।

फिर से कहूँगा, परमेश्वर का राज्य एक राज्य है और यह ऐसे नियमों और सिद्धांतों के साथ कार्य करता है जो कभी बदलते नहीं। यह सिद्धांत, जैसा कि मैंने बताया, सीखे जा सकते हैं और उपयोग किए जा सकते हैं जैसे एक किसान नैसर्गिक क्षेत्रों में, बीज बोने और काटने के समय के नियमों को समझता है और सफल होने के लिए इनका उपयोग करता है। क्योंकि राज्य नियमों से चलता है, जो सभी नागरिकों को समझने के लिए और राज्य में इनका उपयोग करने के लिए दिए गए हैं, इन्हें कोई भी सीख सकता है।

कभी कभी, यह नियम कैसे काम करते हैं इसे जानना किसी के लिए जीवन और किसी के लिए मृत्यु हो सकता है।

मार्क और हैनाह हमारी कलिसिया में आए और उन्हें एक संतान चाहिए थी। उस समय तक, हैनाह को डॉक्टरों द्वारा सूचित किया गया था कि उसके शरीर में कई समस्याएं होने के कारण, गर्भवती होना या बच्चे को अपने गर्भ में रखना असंभव होगा। लेकिन परमेश्वर की भलाई के बारे में सुनने से और फेथ लाइफ चर्च में राज्य का नियम सीखने के दौरान, उसने जाना कि वह गर्भवती हो गई थी। वह बयान से बाहर आश्चर्यचकित और खुश थी। लेकिन ज़्यादा समय नहीं हुआ था, तब ही उसे अपने पेट के निचले भाग में तेज़ दर्द उठने लगा, कभी कभी इतना तेज़ दर्द होता था कि वह बेहोश भी हो जाती थी।

कई बार ऐसा होने के बाद, हैनाह कुछ बातों की जांच कराना चाहती थी, तो वह डॉक्टर के दफ्तर में गई। उसका डॉक्टर वहाँ नहीं था, लेकिन डॉक्टर ने कॉल के द्वारा बताया कि अल्ट्रासाउन्ड कराने की ज़रूरत थी। डॉक्टर ने एक जमे हुए खून का

बड़ा हिस्सा देखा और उसे बताया कि उसका गर्भ गिर गया था। और कोई धड़कन सुनाई नहीं दे रही थी।

डॉक्टर ने उसे अगले दिन बुलाया जिससे उसके मरे हुए बच्चे को गर्भ से बाहर निकाला जाए, लेकिन हैनाह ने इस बात से इंकार किया। इसके बजाय, उसके पति, मार्क, ने उसे परमेश्वर के वचन के साथ उत्साहित किया और परमेश्वर की प्रतिग्याएं और बच्चे से संबंधित बातों में वह परमेश्वर के वचन पर हिम्मत न हारे, इस बात से उसे उत्साहित किया।

उस सप्ताह के अंत में हैनाह ने कलिसिया में प्रार्थना कराई और वह इस बात से निश्चित हो गई थी कि डॉक्टर के शब्दों के बावजूद वह एक स्वस्थ बच्चे को जन्म देगी।

उस सोमवार, वह अपनी व्यक्तिगत डॉक्टर के पास गई थी क्योंकि उसका पिछला डॉक्टर उस दिन कार्यालय में उपलब्ध नहीं था। जैसे डॉक्टर अल्ट्रासाउन्ड की स्क्रीन पर देख रही थी तब कुछ दिन पहले किए गए स्कैनस् को देखकर दंग रह गई। तब उसने हैनाह से यह शब्द कहे, "मैं यह काम 30 वर्षो से कर रही हूँ, और मैंने ऐसा होते हुए पहले कभी नहीं देखा। मैं पिछले स्कैन में जमे हुए खून का बड़ा टुकड़ा और धड़कन को गायब देख रही हूँ। लेकिन जैसे मैं आज देख रही हूँ, जमे हुए खून का बड़ा टुकड़ा गायब है, और गर्भ में एक स्वस्थ बच्चा है जिसकी धड़कनें एकदम स्वस्थ हैं।"

कुछ महीनों के बाद, हैनाह ने एक सुंदर बेटी को जन्म दिया, जिसका नाम उसने इवलीन रखा। एक दिन इवलीन के अर्थ को जानने की उत्सुकता के साथ, उसने खोज की और यह जानकर बहुत चकित हुई कि उस नाम का असल मतलब *जीवन* था! जैसे मैं आज इसे लिख रहा हूँ, हैनाह के अब दूसरी संतान है और उसका जन्म किसी भी दिन निकट है।

इस अद्भुत कहानी में सच में परमेश्वर का ही कार्य था। लेकिन एक आत्मिक वैज्ञानिक होने के नाते, आपको इस समय कुछ सवालों के बारे में सोचना चाहिए: "कि ऐसा क्यों हुआ? क्या हैनाह परमेश्वर की मनपसंद लड़की थी? क्या परमेश्वर ने बस ऐसे ही उसके बच्चे को चंगा करने के लिए उसे चुना था?" यह ऐसे प्रश्न हैं जिसका उत्तर मिलना ही चाहिए।

फिर से, एक औसत मसीही, के लिए यह एक चमत्कार है। लेकिन मैं लोगों को उत्साहित करूंगा कि वे "चमत्कार" शब्द के बारे में फिर से सोचें, क्योंकि इसका मतलब है सामान्य से बढ़कर होना। हालांकि, परमेश्वर के राज्य मे, यह बस राज्य के नियमों का परिणाम था।

यदि मैं किसी पत्थर को फेंकूँगा और यह भूमि पर गिरे, तो यदि मैं चिल्लाकर कहता

हूँ कि, "**वाह**, क्या तुमने इसे देखा? पत्थर भूमि पर गिरा! यह चमत्कार है!" तब आप मुझे मूर्ख कहेंगे। आप इस बात से सहमत नहीं होंगे कि यह एक चमत्कार था क्योंकि आप जानते हैं यह गुरूत्वाकर्षन के नियम का परिणाम है, और यह *सबके* लिए इसी तरह से कार्य करता है। पत्थर हमेशा भूमि पर ही गिरेगा।

तो, आत्मिक वैज्ञानिक होने के नाते, हमें उस घटना के सुराग ढूँढने चाहिए, आत्मिक सुराग जो नियम को प्रगट करेंगे या उस राज्य के नियम को जो कहानी में था।

लूका अध्याय 8, बाइबल की सबसे महान कहानियों में से एक है, जो विश्वास और अधिकार क्षेत्र के विषय में कुछ उत्तरों की खोज करने में हमारी मदद करेगी।

> *जब वह जा रहा था, तब लोग उस पर गिरे पड़ते थे॥ और एक स्त्री ने जिस को बारह वर्ष से लोहू बहने का रोग था, और जो अपनी सारी जिविका वैद्यों के पीछे व्यय कर चुकी थी और तौभी किसी के हाथ से चंगी न हो सकी थी। पीछे से आकर उसके वस्त्र के आंचल को छूआ, और तुरन्त उसका लोहू बहना थम गया।*
>
> *इस पर यीशु ने कहा, मुझे किस ने छूआ जब सब मुकरने लगे,*
>
> *तो पतरस और उसके साथियों ने कहा; हे स्वामी, तुझे तो भीड़ दबा रही है और तुझ पर गिरी पड़ती है।*
>
> *परन्तु यीशु ने कहा: किसी ने मुझे छूआ है क्योंकि मैं ने जान लिया है कि मुझ में से सामर्थ निकली है।*
>
> *जब स्त्री ने देखा, कि मैं छिप नहीं सकती, तब कांपती हुई आई, और उसके पांवों पर गिरकर सब लोगों के साम्हने बताया, कि मैं ने किस कारण से तुझे छूआ, और क्योंकर तुरन्त चंगी हो गई। उस ने उस से कहा, बेटी तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है, कुशल से चली जा।*
>
> –लूका 8:42–48

इस कहानी में, हम ऐसी स्त्री को देखते हैं जो कई वर्षो से रोगी थी और अच्छी नहीं हो पा रही थी। यीशु के पीछे से आते हुए, उसने उसके कपड़े की छोर को छुआ और वह तुरंत चंगी हो गई। अब, इस कहानी में राज्य के संचालन के बहुत ठोस चिन्ह हैं जिससे हम सीख सकते हैं और जिन उत्तरों को हम ढूंढ रहे हैं, उन्हें यह प्रगट करेगा।

सबसे पहले, जो लोग भीड़ में यीशु के आस पास थे सभी उसे छू रहे थे, जैसे कहानी में बताया गया है कि वह लगभग भीड़ में दबा जा रहा था। जब यीशु ने पूछा कि, "किसने मुझे छुआ?" पतरस इस प्रश्न पर चौंक गया क्योंकि, फिर से कहूँगा,

उसे *सभी* छू रहे थे। लेकिन यीशु ने इस विशेष व्यक्ति के बारे में कहा जिसने उसे अलग रीति से छुआ था—उसने पवित्र आत्मा की सामर्थ को अपने से बाहर निकलते हुए महसूस किया था।

इस कहानी को पढ़ने के बाद, आपकी आत्मा में सभी प्रकार की घंटियाँ और सींटियाँ बजनी चाहिए कि रुक जाएं और इस बात पर ध्यान दें। इस समय, आपके दिमाग को तुरंत असंख्य प्रश्नों के साथ जांच पड़ताल में शामिल होना चाहिए। एक आत्मिक वैज्ञानिक होने के नाते, हमें यह जानना होगा कि और किसी को नहीं लेकिन सिर्फ *इस* स्त्री को क्यों चंगा किया गया। मैं अंदाज़ा लगा सकता हूँ कि वहाँ ऐसे बहुत लोग थे जो शारीरिक रूप से उसे छू रहे थे और वे रोगी भी थे, लेकिन फिर भी उन्हें चंगाई प्राप्त नहीं हुई। तो, हमें यह पूछना चाहिए कि, "उस समय जितने लोग यीशु को छू रहे थे उनमें से क्यों सिर्फ इस स्त्री में अभिषेक बहा और दूसरों में नहीं?"

धर्म पर आधारित पारंपरिक उत्तर हो सकता है कि वह इसलिए चंगी हुई क्योंकि यीशु ने उसे चंगा किया। लेकिन क्या सच में उसने ऐसा किया? जब वह चंगी हुई तब क्या यीशु इरादे के साथ उसके लिए प्रार्थना कर रहे थे? क्या उसने उस स्त्री पर अपने हाथ को रखा? क्या उसने उसके शारीर से रोग को निकल जाने की आज्ञा दी? उत्तर है नहीं। वास्तव में, यीशु यह जानता भी नहीं था कि वह स्त्री वहाँ उपस्थित थी। उसे पूछना पड़ा कि किसने उसे छुआ।

तो, उस समय क्या यीशु ने उस स्त्री को चंगा करने के लिए चुना? फिर से कहना चाहता हूँ, यीशु नहीं जानता था कि वह स्त्री वहाँ है। तो वह कैसे चंगी हुई? वह क्यों चंगी हुई? एक आत्मिक वैज्ञानिक होने के नाते, हम इस विचार को खारिज कर सकते हैं कि वह परमेश्वर की विशेष संतान थी या उसका यीशु के साथ एक खास रिश्ता था, क्योंकि प्रेरितों के काम 10:34 कहता है कि परमेश्वर किसी में पक्षपात नहीं करता।

हम यह भी कल्पना कर सकते हैं कि क्योंकि यीशु नहीं जानता था कि स्त्री वहाँ है, तो उसके चंगा होने के निर्णय में उस दिन यीशु का कोई भाग नहीं था। हम इस बात पर सहमत हो सकते हैं कि वह अभिषेक का सोता था, लेकिन उस समय के लिए वह उस स्त्री के चंगा होने के निर्णय का भाग नहीं था।

यीशु हमें बताता है कि किस तरह से उस स्त्री ने राज्य के अधिकार और सामर्थ को स्पर्श किया। तब यीशु ने कहा, *"बेटी तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है, कुशल से चली जा।"* यह वाक्य हमें वह सब बताता है जिसे हमें जानने की ज़रूरत है और हमारे प्रश्नों का उत्तर देता है कि उस दिन उसने चंगाई को क्यों और कैसे प्राप्त किया। आत्मिक वैज्ञानिक होने के रूप में, आइए हम इस कहानी की गहराई में जाएंगे और देखेंगे कि उसने अपनी चंगाई को क्यों प्राप्त किया, इस बात के सुराग की खोज करेंगे।

पहली बात यह है कि, यीशु ने उसे बेटी बुलाया, यानि वह इस्राएल राष्ट्र का हिस्सा थी, यानि अब्राहम की संतान थी। अब्राहम की संतान होने के नाते, उसके पास अब्राहम द्वारा दी गई आशीषें थीं और उस वाचा के लाभ थे जो परमेश्वर ने अब्राहम के साथ बांधी थी।

> *कि यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा का वचन तन मन से सुने, और जो उसकी दृष्टि में ठीक है वही करे, और उसकी आज्ञाओं पर कान लगाए, और उसकी सब विधियों को माने, तो जितने रोग मैं ने मिस्रियों पर भेजा है उन में से एक भी तुझ पर न भेजूंगा; क्योंकि मैं तुम्हारा चंगा करने वाला यहोवा हूं॥*
>
> –निर्गमन 15:26

तो जब यीशु ने उसे बेटी कहा, इसका अर्थ था कि उसके पास उस वाचा में शामिल सारे कानूनी अधिकार थे जो अब्राहम ने परमेश्वर के साथ बांधी थी। लेकिन यह सच्चाई अकेले ही उसकी चंगाई का कारण नहीं है, जैसे उस दिन यीशु को छूने वाले सभी लोगों के पास यह अधिकार थे। तो परमेश्वर के राज्य की सामर्थ के बहाव के पीछे कुछ और कारण होना चाहिए। यीशु आगे हमें उस स्त्री के चंगाई का एक और कारण बताता है। यीशु ने कहा यही वह कारण था जिससे उसने व्यक्तिगत रूप से चंगाई को प्राप्त किया।

उसने कहा यह उसका *विश्वास* था जिसने उसे चंगा किया।

तो अब हम वह कारण जानते हैं जिससे उसने चंगाई को प्राप्त किया—चंगाई प्राप्त करना उसका कानूनी अधिकार था क्योंकि वह अब्राहम की संतान थी, और उसका विश्वास ही वह बटन था जिसने उस क्षण परमेश्वर के सामर्थ को उसके शरीर में बहने की अनुमति दी।

यह वास्तविकता कि वह बेटी थी इसकी तुलना उस बिजली की कंपनी के साथ की जा सकती है जिसने बिजली को लाया और आपके घर में उसके तार पहुँच रहे हैं। बिजली का प्रबंध है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि आपकी बत्ती जल जाएगी।

आपको रोशनी लाने से पहले बटन को दबाना होगा।

तो, अब्राहम की जायज़ पीढ़ी होने के नाते, इस स्त्री के पास चंगाई का अधिकार था। हालांकि, क्योंकि पृथ्वी पर और उसके अपने जीवन का एक अधिकार क्षेत्र होने के कारण, उसे व्यक्तिगत रूप से सामर्थ को प्राप्त करने के लिए बटन को दबाना पड़ा।

लेकिन बटन कहाँ है? हम इसे कैसे चालू कर सकते हैं?

यह जानने के लिए, हमें अपनी शर्तों को परिभाषित करने की आवश्यकता है।

## विश्वास क्या है?

विश्वास ऐसा शब्द है जिसे मसीही सामान्य रूप से उपयोग करते हैं, और मुझे यकीन है कि कई लोग, अधिकतर, नहीं जानते कि विश्वास असल में क्या है, इसकी आवश्यकता क्यों है, कैसे जानें कि वे विश्वास में हैं, और विश्वास को कैसे प्राप्त किया जाए। यदि विश्वास ही वह बटन था जिसके द्वारा अभिषेक बहा और यह स्त्री चंगी हुई, तो हमें विश्वास के बारे में गहराई से खोज करने की ज़रूरत है!

हम रोमियों 4 में विश्वास की परिभाषा को पाते हैं।

> *उस ने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, इसलिये कि उस वचन के अनुसार कि तेरा वंश ऐसा होगा वह बहुत सी जातियों का पिता हो। और वह जो एक सौ वर्ष का था, अपने मरे हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास में निर्बल न हुआ। और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की। और निश्चय जाना, कि जिस बात की उस ने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरी करने को भी सामर्थी है।*
>
> –रोमियों 4:18–21

आइए हम इस कहानी को समझें। अब्राहम और सारा संतान नहीं प्राप्त कर पा रहे थे। मेरा यह मतलब नहीं है कि उसे गर्भ धारण करने में समस्या थी और उन्हें कोशिश करते रहना चाहिए था। मेरा कहना है कि वे लगभग 100 वर्ष के थे, और सब समाप्त हो गया था। उनकी देह के द्वारा अब कोई संतान नहीं हो सकती थी; यह असंभव था! फिर भी परमेश्वर ने अब्राहम से एक संतान का वादा किया, जब कि नैसर्गिक में यह बेहत असंभव था।

बाइबल बताती है कि यह एक अलग बात है कि अब्राहम को इस बात पर *पूरा आश्वासन था* कि नैसर्गिक सच्चाईयों के बावजूद परमेश्वर ने जो कहा है उसे पूरा करने की सामर्थ उसके पास थी। यहाँ विश्वास की हमारी परिभाषा है: पूरी तरह से आश्वस्त होना कि परमेश्वर ने जो प्रतिज्ञा की है उसको पूरा करने की सामर्थ भी उसके पास है।

मैं इस तरह कहता हूँ कि : **"आपका हृदय स्वर्ग के साथ सहमत होता है।"** केवल परमेश्वर जो कहता है उसके साथ मानसिक सहमति ही नहीं बल्कि *पूरी तरह से आश्वस्त होना*।

## हमारी विश्वास की परिभाषा यह है कि

मेरे साथ ज़ोर पुकार कर कहें ताकि यह आपके अंदर बस जाए : विश्वास पूरी रीति से आश्वस्त होना है उसके लिए जो परमेश्वर कहता है। यह स्वर्ग के साथ हमारे हृदय और हमारे मन की सहमति है, पूर्ण आश्वासन।

## विश्वास की आवश्यकता क्यों है?

परमेश्वर जब चाहे तब अस्पतालों में सभी को चंगा क्यों नहीं करता है? वह युद्धों को क्यों नहीं रोकता है? वह हम तक सुसमाचार को पहुंचाने के लिए स्वर्गदूतों को क्यों नहीं भेजता है? मुझे यकीन है कि आपने इन प्रश्नों को पहले सुना होगा। इसका उत्तर है कि वह ऐसा नहीं कर सकता है।

ऐसा नहीं है कि परमेश्वर के पास ऐसा करने की सामर्थ नहीं है। लेकिन उसके पास ऐसा करने के लिए *अधिकार क्षेत्र* नहीं है।

मैं जो कह रहा हूँ उसे समझने के लिए, आइए हम इब्रानियों में देखें।

> *वरन किसी ने कहीं, यह गवाही दी है, कि मनुष्य क्या है, कि तू उस की सुधि लेता है?*
>
> *या मनुष्य का पुत्र क्या है, कि तू उस पर दृष्टि करता है? तू ने उसे स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया; तू ने उस पर महिमा और आदर का मुकुट रखा और उसे अपने हाथों के कामों पर अधिकार दिया।*
>
> *तू ने सब कुछ उसके पांवों के नीचे कर दिया: इसलिये जब कि उस ने सब कुछ उसके आधीन कर दिया, तो उस ने कुछ भी रख न छोड़ा, जो उसके आधीन न हो: पर हम अब तक सब कुछ उसके आधीन नहीं देखते।*
>
> –इब्रानियों 2:6–8

परमेश्वर ने मनुष्य को जब पृथ्वी पर रखा तब उसे सम्पूर्ण कानूनी अधिकार क्षेत्र को सौंप दिया था। ऐसा कुछ नहीं था जो उसके अधिकार क्षेत्र में न हो। वह पृथ्वी पर पूरे न्याय क्षेत्र और अधिकार के साथ राज्य करता था। अधिकार के साथ राज्य करने की उसकी क्षमता को स्वर्ग से सहायता प्राप्त होती थी, जिसके कारण उसे यह प्राप्त हुआ था। संक्षिप्त में, वह परमेश्वर के राज्य द्वारा नियुक्त किए अधिकार के साथ राज्य करता था। उसने उस राज्य का मुकुट पहना था, जो परमेश्वर की महिमा, उसके अभिषेक, और आदर या अधिकार की पदवी को दर्शाता था।

अब, नि:संदेह, उसने असल में धातु से बना हुआ मुकुट नहीं पहना था, लेकिन उसके पास फिर भी मुकुट था, अधिकार के संदर्भ में। यह कैसा दिखता है इसे अच्छे से समझने के लिए, एक स्वाभाविक राजा के बारे में सोचें। हालांकि, वह एक स्वाभाविक व्यक्ति है, और उसके नैसर्गिक मनुष्यत्व में उसके पास कोई खास शक्ति नहीं है, जब वह मुकुट को पहनता है, तो इस बात को दर्शाता है कि केवल अपना नहीं बल्कि सम्पूर्ण राज्य और सरकार का प्रतिनिधि है। उसके शब्दों में सिर्फ इसलिए अधिकार है क्योंकि उसकी सामर्थ और उस राज्य और सरकार के सभी नैसर्गिक साधनों का समर्थन उसके साथ है।

**स्वर्ग के पास पृथ्वी पर कोई अधिकार क्षेत्र नहीं है जब तक एक पुरुष या स्त्री का हृदय स्वर्ग क्या कहता है इसकी ओर पूर्ण रीति से आश्वासित न हो, जिसे विश्वास कहते हैं।**

यदि आप जिले के प्रधान को यातायात को निर्देशित करने की कल्पना करें, तो आप देखेंगे कि वह एक बड़े ट्रॅकटर– ट्रैलर ट्रक को अपने सिर्फ कुछ शब्दों से रोक देगा, "कानून के नाम पर, रुक जाओ!"

हाँ, ट्रक एक मनुष्य से बड़ा होता है, और मनुष्य, खुद में, ट्रक की तुलना में कुछ नहीं है। लेकिन ट्रक एक व्यक्ति की वजह से नहीं रुकता बल्कि उस मुहर के कारण जो उस व्यक्ति पर है, जो उसकी सरकार को दर्शाता है। इस मामले में, सरकार उस व्यक्ति से बड़ी है जिसने उसका चिन्ह पहना है। उस ट्रक चालक को, उस *व्यक्ति* का कोई डर नहीं है, लेकिन उस सरकार का डर है जिसका वह प्रतिनिधित्व कर रहा है, इसलिए ट्रक रुक जाता है। यहाँ भी ऐसा ही होता है। आदम ने पृथ्वी पर रची गई सारी चीजों पर राज्य किया। परमेश्वर की सामर्थ और शासन, महिमा और आदर के मुकुट द्वारा दर्शाया गया, जिसने मनुष्य को यह आश्वासन दिया कि परमेश्वर के राज्य की ओर से उसके वचन राज्य करेंगे।

*स्वर्ग तो यहोवा **का** है, परन्तु पृथ्वी उसने **मनुष्यों को दी है**।*
–भजन संहिता 115:16

पृथ्वी पर मनुष्य के अधिकार क्षेत्र का सिद्धांत, राज्य के नियम के बारे में आपकी समझ के लिए महत्वपूर्ण है, विशेष करके यह कि किसी परिस्थिति में परमेश्वर के लिए कानूनी अधिकार क्षेत्र को प्राप्त करना क्यों ज़रूरी है।

*यीशु ने उन से कहा, कि भविष्यद्वक्ता अपने देश और अपने कुटुम्ब और अपने घर को छोड़ और कहीं भी निरादर नहीं होता। और* ***वह वहां कोई सामर्थ का काम न कर सका****, केवल थोड़े बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया॥ और उस ने उन के अविश्वास पर आश्चर्य किया और चारों ओर के गावों में उपदेश करता फिरा॥*

–मरकुस 6:4–6

यदि मैं लोगों से यह पूछूँगा कि क्या यीशु सब कुछ कर सकता है, वे कहेंगे हाँ वह कर सकता है। यदि मैं फिर उनसे पूछूँगा कि क्या बाइबल में ऐसी कोई जगह है जहां यीशु ने कोशिश की लेकिन चमत्कार न कर सका, तब वे क्या कहेंगे?

मैं आपसे कहता हूँ कि वे कहेंगे कि बाइबल में ऐसी कोई जगह नहीं थी, लेकिन आपने अभी इसे पढ़ा है। यीशु उन्हें चंगा न कर सका। एक आत्मिक वैज्ञानिक होने के नाते, मैं जानना चाहूँगा कि ऐसा क्यों हुआ।

सरल रूप से उत्तर है कि—वह बस नहीं कर सका, और अब आप जानते हैं कि क्योंकि उनके पास विश्वास नहीं था, स्वर्ग के साथ कोई सहमति नहीं थी, और इसलिए स्वर्ग के पास उस परिस्थिति के लिए कोई कानूनी अधिकार क्षेत्र नहीं था।

हमने जिस बात की खोज की उसे आप स्पष्ट रूप से समझ जाएं।

**स्वर्ग के पास पृथ्वी पर कोई अधिकार क्षेत्र नहीं है जब तक एक पुरुष या स्त्री का हृदय स्वर्ग क्या कहता है इसकी ओर पूर्ण रीति से आश्वासित न हो, जिसे विश्वास कहते हैं।**

जैसे कि हमने पिछले उद्धारण में देखा, आइए हम कल्पना करें कि आप किसी को जानते हैं जो बीमार था, और वह विश्व भर में चर्चित था। लाखों लोगों से उसके लिए प्रार्थना की विनती की गई और उन्होंने प्रार्थना की भी, लेकिन फिर भी उस व्यक्ति की मृत्यु हो गई। क्या परमेश्वर का वचन असफल हो गया? नहीं। यह असंभव है। तो, हमें कहीं और हमारे उत्तर को ढूँढना होगा।

*प्रार्थना करते समय अन्यजातियों की नाईं बक बक न करो; क्योंकि वे समझते हैं कि उनके बहुत बोलने से उन की सुनी जाएगी। सो तुम उन की नाईं न बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहिले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या क्या आवश्यक्ता है।*

–मत्ती 6:7–8

कई लोग विश्वास करते हैं कि जितने अधिक लोग प्रार्थना करेंगे, उतना अधिक परमेश्वर सुनेगा और और कार्य करेगा। मुझे आशा है कि अभी तक मैंने इस बात को अच्छे से समझा दिया है कि यह पूरी तरह से गलत है। और जब मैं कहता हूँ कि वहाँ कोई विश्वास नहीं था, मुख्य रूप से, मैं उनके बारे में बात कर रहा हूँ जिन्हें परमेश्वर से चंगाई को प्राप्त करना था। आपको इस बात से सहमत होना होगा कि मरकुस अध्याय 6 की कहानी में यीशु के पास बहुत विश्वास था, फिर भी वह उन्हें चंगा नहीं कर सका।

तो अगर आप और मैं उस बीमार दोस्त के बारे में बात कर रहे हैं जिसके लिए लाखों लोग प्रार्थना कर रहे थे, मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि, "*वह* (बीमार दोस्त) क्या *कह* रहा है?"

हो सकता है किसी के लिए 20 *करोड़* लोग प्रार्थना कर रहे हो, लेकिन यदि जो बीमार है वह कहता है कि वह मरने वाला या वाली है, तो वह मर जाएगा या वह मर जाएगी।

फिर से कहूँगा, आइए हम मरकुस 6 में देखे गए उद्धारण पर ध्यान दें। हम जानते हैं कि यीशु के पास चंगा करने के लिए विश्वास था, लेकिन वह लोगों के लिए कुछ नहीं कर सका, क्योंकि उनके पास विश्वास नहीं था।

मेरे पास बहुत सारे लोग यह कहते हुए आते हैं कि उनकी दादी या दादा या कोई रिश्तेदार बीमार है, और वे बताते हैं कि उन्होंने उनके लिए काफी प्रार्थनाएं की, लेकिन फिर भी कुछ नहीं हो रहा है। मैं उनसे अक्सर सवाल करता हूँ कि, "आपकी दादी क्या कह रही हैं? आपके दादा क्या कह रहे हैं? क्या उन्हें विश्वास है?"

आप देख सकते हैं कि, आपके पास दूसरे व्यक्ति पर आत्मिक अधिकार नहीं है। आप उनके साथ सेवकाई कर सकते हैं, लेकिन उन्हें भी इसमें कार्यरत होना होगा। एक बात जो मैं लोगों को करने के लिए कहता हूँ जब मैं उनके लिए प्रार्थना करता हूँ वह है कि वह उस चित्र को बदल दें। मैं उस चित्र के बारे में बात कर रहा हूँ जो वह अपने मनों में अपनी परिस्थिति को लेकर बनाते हैं। मैं उस चित्र को मृत्यु से जीवन में बदल देना चाहता हूँ।

> *और यूहन्ना को उसके चेलों ने इन सब बातों का समचार दिया। तब यूहन्ना ने अपने चेलों में से दो को बुलाकर प्रभु के पास यह पूछने के लिये भेजा; कि क्या आनेवाला तू ही है, या हम किसी और दूसरे की बाट देखें?*
>
> *उन्होंने उसके पास आकर कहा, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने हमें तेरे पास यह पूछने को भेजा है, कि क्या आनेवाला तू ही है, या हम दूसरे की बाट जोहें?*

*उसी घड़ी उस ने बहुतों को बीमारियों; और पीड़ाओं, और दुष्टात्माओं से छुड़ाया; और बहुत से अन्धों को आंखे दी। और उस ने उन से कहा; जो कुछ तुम ने देखा और सुना है, जाकर यूहन्ना से कह दो; कि अन्धे देखते हैं, लंगड़े चलते फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं, बहिरे सुनते हैं, मुरदे जिलाये जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।*

–लूका 7:18–22

ध्यान दें कि यीशु ने किसी वचन का वर्णन नहीं किया है। वह कह सकता था कि "लौट जाओ और जाकर यूहन्ना को यह या वह वचन सुनाओ।" लेकिन नहीं, उसने उन्हें यूहन्न को वह सारे भले काम बताने के लिए कहा जो परमेश्वर के राज्य के सामर्थ और अधिकार के साथ हो रहे थे।

किसी दोस्त या परिवार के सदस्य की सहायता करने के लिए, आप भी ऐसा ही करेंगे। अपने किसी दोस्त को जो बीमार है एक कहानी बताएं कि यीशु ने किस प्रकार दूसरों को चंगाई दी। यदि संभव है तो, उसी बीमारी से संबंधित यीशु की चंगा करने वाली कहानी को बताएं जिससे आपका दोस्त पीड़ित है। परिस्थिति का यह चित्र देना उन्हें प्रेरित करेगा और आशा को लाएगा। आशा अक्सर अपने साथ एक चित्र को लेकर चलती है, और यह वह चित्र है जिसे आप अपने दोस्त या परिवार के सदस्य को दिखाना चाहेंगे, कि उस बीमारी के लिए चंगाई भी है।

एक बार यदि आपका दोस्त या परिवार का सदस्य इसे देख लेगा तो उसके लिए चंगाई संभव हो जाएगी, तब वे आपसे पूछेंगे कि ऐसा कैसे हो सकता है। यही वह अवसर होगा जिसका आप लंबे समय से इंतज़ार कर रहे थे—तब वे परमेश्वर के वचन और राज्य के सिद्धांतों के निर्देशों को प्राप्त करने के लिए अपने आपको खोल देंगे। आप उन्हें राज्य में लाना चाहेंगे पहले तो इसलिए कि वे नया जन्म नहीं पाए हैं, और दूसरा, आप उनके साथ कुछ समय चंगाई के विषय में लिखे गए वचनों को समझाने में बिताएंगे। अगर हो सकता है तो, उनके साथ कुछ पत्रिका या लेख छोड़ दें ताकि आपने उन्हें जो बताया उसे वे मन में बसा लें। हमने सैंकड़ों लोगों को ऐसा ही करने के द्वारा हर प्रकार की बीमारी से चंगा होते हुए देखा है। दूसरी चीज़ जो मैं उनके लिए प्रार्थना करने से पहले करता हूँ वह यह है कि, मैं उनसे पूछता हूँ कि उन्हें क्यों ऐसा लगता है कि हमारे प्रार्थना करने से वे चंगे हो जाएंगे। मैं चाहता हूँ कि उनका विश्वास मात्र किसी प्रार्थना के कार्य पर नहीं बल्कि वचन पर बना रहे।

अब हम जानते हैं कि विश्वास क्या है—यह स्वर्ग के साथ सहमति है, परमेश्वर के शब्दों का पूरा आश्वासन है। अब हम यह भी जानते हैं कि पृथ्वी पर परमेश्वर को

उस व्यक्ति के द्वारा जिसकी सहमति स्वर्ग के साथ है, कानूनी अधिकार क्षेत्र देने के लिए, विश्वास की आवश्यकता होती है।

## हम विश्वास को कैसे प्राप्त करते हैं?

*सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।*
–रोमियों 10:17

परमेश्वर के वचन को सुनने से कैसे विश्वास आता है? इसकी क्या प्रक्रिया है? क्या केवल सुनने से मनुष्य की आत्मा में विश्वास उत्पन्न होता है?

यह समझने के लिए कि विश्वास कैसे आता है और रोमियों 10:17 क्या कहना चाहता है, हम मरकुस अध्याय 4 को देख सकते हैं। मैं हमेशा कहता हूँ कि यदि आप अपनी बाइबल को हवा में उछालते हैं, तो यह तुरंत मरकुस अध्याय 4 पर खुलनी चाहिए, यानि यह इतना महत्वपूर्ण है!

यीशु ने मरकुस 4:13 में कहा कि यदि यीशु जिन बातों को इस दृष्टांत में सिखा रहे हैं उसे आप नहीं समझ पा रहे तो आप बाइबल के *अन्य किसी* दृष्टांत को नहीं समझ पाएंगे। मैं कहता हूँ कि यह इतना ज़रूरी है! यह अध्याय इतना महत्वपूर्ण क्यों है? क्योंकि यह हमें बताता है कि स्वर्ग कैसे पृथ्वी क्षेत्र के साथ जुड़ जाता है, कैसे वह अपने अधिकार क्षेत्र को प्राप्त करता है, और यह कहाँ होता है। इस अध्याय में जो हो रहा है उसे जानने से ज़्यादा ज़रूरी आपके जीवन में और कुछ नहीं है।

इस अध्याय में, यीशु हमें मनुष्य की आत्मा में विश्वास कैसे उत्पन्न होता है इस विषय में तीन दृष्टांत बताता है, जैसा कि आप जानते हैं, जो पृथ्वी पर राज्य करने के लिए स्वर्ग की कानून ज़रूरत है।

इस अध्याय में जो तीन कहानियाँ हैं वह हैं, बीज बोने वाले का दृष्टांत, बीज बिखेरने वाले का दृष्टांत, और राई के बीज की कहानी।

आइए हम मरकुस अध्याय 4 में यीशु द्वारा सुनाई गई दूसरी कहानी को देखते हैं, बीज बिखेरने वाले की कहानी।

> *फिर उस ने कहा; परमेश्वर का राज्य ऐसा है, जैसे कोई मनुष्य भूमि पर बीज छींटे। और रात को सोए, और दिन को जागे और वह बीज ऐसे उगे और बढ़े कि वह न जाने। पृथ्वी आप से आप फल लाती है पहिले अंकुर, तब बाल, और तब बालों में तैयार दाना। परन्तु जब दाना पक जाता है, तब वह तुरन्त हंसिया लगाता है, क्योंकि कटनी आ पहुंची है॥* –मरकुस 4:26–29

सबसे पहले हमें शब्दों को परिभाषित करना है। यीशु किस *बीज* के बारे में बात कर रहा है, और भूमि क्या है? यीशु असल में उसी अध्याय में इन दोनों शब्दों को बीज बोने वाले के दृष्टांत में परिभाषित करता है।

बीज परमेश्वर का वचन है, और भूमि मनुष्य का हृदय, या इंसान की आत्मा है। तो, इस दृष्टांत में, यीशु कहता है कि मनुष्य अपने हृदय में परमेश्वर के वचन को डालता है। फिर, *अपने आप से ही*, भूमि, या मनुष्य का *हृदय*, विश्वास को उत्पन्न करने लगता है या स्वर्ग के साथ सहमत हो जाता है। यह मनुष्य की आत्मा की स्वाभाविक प्रक्रिया और कार्य है—जो आप इसमें डालेंगे वह बढ़ेगा।

इससे पहले मैं आगे बढ़ूँ, यह गंभीर है और आपको विश्वास की हमारी परिभाषा को याद रखना है जो कहती है कि—*किसी पुरुष या स्त्री का हृदय जब स्वर्ग के वचनों से पूरी रीति से आश्वस्त रहता है* उसे विश्वास कहते हैं।

एक बात जो आपको यहाँ याद रखनी है वह यह है कि स्वर्ग के साथ सहमति रखना, परमेश्वर के वचन के साथ मानसिक रूप से सहमत होना दोनों अलग बातें हैं। बाइबल बताती है कि अब्राहम *पूर्ण रूप से आश्वस्त था*। आपको इसका स्पष्ट चित्रण मिलें कि पूर्ण रूप से आश्वस्त का क्या मतलब है इसे जानने के लिए, आइए मान लीजिए, मैंने आपसे न्यू यॉर्क शहर की एम्पाइअर स्टेट बिल्डिंग के ऊपर से छलांग लगाने के लिए कहा है। आप इसे करने की कोशिश करें इसलिए, मैं आपसे यह भी कहता हूँ कि अगर आप अपने हाथों को ज़ोर से फड़फड़ाएंगे तो आप उड़ते हुए पृथ्वी पर सुरक्षित पहुँच जाएंगे। यह सुनते ही आप मेरे मुँह पर हसेंगे, क्योंकि आप **जानते** हैं कि ऐसा करने से आपका क्या हाल होगा। आप परिणाम को अच्छे से जानते हैं। पूर्ण रूप से आश्वस्त रहना ऐसा ही होता है। आप *जानते* हैं कि आप आश्वस्त हैं, कि और कोई संभावना नहीं है—यदि आप कूदेंगे तो मर जाएंगे।

तो आइए एक और परिस्थिति को लेते हैं और देखते हैं कि आप इसे समझ पाते हैं कि नहीं। आइए हम अंदाज़ा लगाएं कि आपके शरीर में, बड़ी सी दिखाई देने वाली गांठ है, और डॉक्टर ने बताया है कि जीवित रहने के लिए आपके पास बस एक महिना है। आपको कैन्सर (कर्क रोग) है। असल में, डॉक्टर यह भी कहता है कि जिस प्रकार का कैन्सर आपको है वह बहुत दुर्लभ है और ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो इसके साथ जीवित बच पाया है।

अब, आप जानते हैं कि 1 पतरस 2:24 क्या कहता है।

> *वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिस से हम पापों के लिये मर कर के धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं: उसी के मार*

*खाने से तुम चंगे हुए।*

–1 पतरस 2:24

यह वचन हमें उत्तर देता है, लेकिन आपके और मेरे पास एक गंभीर समस्या है: आप अंधकार के राज्य, विकृति और मृत्यु में पले बड़े हैं, यह हमारे चारों ओर है। हम डर के राज्य में पले बड़े हैं और हम डर जो कहता है उससे पूर्ण रूप से आश्वस्त हैं। उस ऊपर के, उल्लेख में, हमें इस बात से प्रशिक्षित किया गया है कि कैंसर मृत्यु को लाता है। हमारे मीडिया संचालन में हर जगह इसका सबूत है,और यह सच है। तो हम अपनी सहमति को कैसे बदलेंगे। हम परमेश्वर जो कहता है उससे पूर्ण रूप से आश्वस्त कैसे बनेंगे। वास्तव में, हम अपने आपको खरीद नहीं सकते। लेकिन परमेश्वर का वचन जीवित और सामर्थ से परिपूर्ण है, और इसे आपकी आत्मा में बोए जाने से, यह खुद से, आपकी आत्मा में स्वर्ग के साथ सहमति को उत्पन्न करता है।

*फिर उस ने कहा; परमेश्वर का राज्य ऐसा है, जैसे कोई मनुष्य भूमि पर बीज छींटे। और रात को सोए, और दिन को जागे और वह बीज ऐसे उगे और बढ़े कि वह न जाने। **पृथ्वी आप से आप फल लाती है** पहिले अंकुर, तब बाल, और तब बालों में तैयार दाना। परन्तु जब दाना पक जाता है, तब वह तुरन्त हंसिया लगाता है, क्योंकि कटनी आ पहुंची है॥*

–मरकुस 4:26–29

अपने आप ही, भूमि,(आपका हृदय) सहमति को उत्पन्न करता है। ध्यान दें कि आप विश्वास के लिए प्रार्थना नहीं कर सकते हैं, बल्कि यह आपके हृदय और वचन का कार्य है। जैसे हम इस पद में देखते हैं, हम देख सकते हैं कि हमारे हृदय और स्वर्ग की सहमति एक प्रक्रिया है। यह तुरंत नहीं होती। यह वचन पहले तो हमें यह बताता है कि, जब हमारा हृदय वचन को स्वीकारता है, विश्वास एक नए पौधे के नए अंकुर के समान खिलता और बढ़ता है। फिर वह डंडी के समान बड़ा होता है, और तब यह सिर बन जाता है। सिर ऐसा स्थान है जहां बीज, या फल, बढ़ना शुरू होते है । पौधे की बढ़त के इस पड़ाव में भी आपको खाने के लिए कुछ दिखाई नहीं देता। पौधा अभी परिपक्व नहीं हुआ है, कोई पके हुए फल अभी नहीं लगे हैं, लेकिन यह बढ़ता जा रहा है।

तो परमेश्वर के वचन के साथ भी ऐसा ही है। जब विश्वास बढ़ता है तब स्वाभाविक क्षेत्र में बढ़त के कोई बादलाव दिखाई नहीं देते हैं। अभी तक कोई सहमति नहीं है,

लेकिन निश्चित हो जाएं कि पौधा बढ़ *रहा है*, विश्वास उत्पन्न हो *रहा है*, और सहमति हो *रही है*। जब सिर के ऊपरी भाग में पूरी रीति से बीज परिपक्व हो जाता है, या पक जाता है, तब समझ जाइए कि फसल पक गई है, सहमति हो गई है और अब यहाँ विश्वास है।

जब आप भूमि में एक बीज को बोते हैं, तब अंकुरण की प्रक्रिया द्वारा, पौधा बढ़ने लगता है, लेकिन अब तक कोई फल नहीं होता है। जब तक पौधा सही वातावरण में होता है वह बढ़ता रहता है। जैसे ही वह परिपक्व हो जाता है, अपने फलों को निकालता है।

उद्धारण के लिए मान लीजिए कि आप भुट्टे की खेती कर रहे हैं। भुट्टे का पौधा भुट्टे के अंकुर को निकालता है, लेकिन पहले तो, यह भुट्टे का छोटा सा अंकुर होता है, जिसमें आपके खाने योग्य कोई पके हुए भुट्टे नहीं हैं। लेकिन एक समय के बाद, भुट्टे परिपक्व होकर पक जाता है। इस मुद्दे पर ध्यान दें! फिलहाल मक्के के दाने का बालीधान जमीन में बोए गए मकई के दाने से मेल खाता है, इसमें एक सहमति है।

**जब पौधे के सिर में मौजूद बीज परिपक्व हो जाएगा, तो वह बिलकुल—बिल्कुल—उस बीज की तरह दिखाई देगा, जो बोया गया था।**

जब आप एक भुट्टे के पौधे को उगाएंगे, तो बालीधान का परिपक्व बीज उस बीज के साथ मेल खाएगा जिसे आपने उगाया था। वे एक से हैं। वे एक समान दिखने लगेंगे और एक ही जैसा इसका स्वाद भी होगा इतना कि आप इसमें तुलना नहीं कर पाएंगे।

तो आइए मैं आपको समझता हूँ कि यीशु क्या कह रहा है। जब हम परमेश्वर के वचन को सुनते हैं (रोमियों 10:17), तब हम असल में अपने आत्मिक मनुष्यत्व, हमारे हृदयों में परमेश्वर के वचन को फैलाते हैं। यदि हम इस वचन को अपने हृदय में रखते हैं, तो यह बढ़ता है और परिपक्व हो जाता है, और जब वह परिपक्व हो जाता है, तब हमारा हृदय स्वर्ग जो कहेगा उससे आश्वस्त रहेगा। अब उस व्यक्ति के द्वारा जो पूर्ण रूप से आश्वस्त है, स्वर्ग और पृथ्वी मेल खाते हैं, और स्वर्ग ने अब पृथ्वी क्षेत्रों में कानून अधिकार क्षेत्र को प्राप्त किया है। हमारे विचार और विश्वास स्वर्ग के शब्दों के साथ मेल खाते हैं। यह कोई मानसिक बात नहीं है। यह ऐसा ही है जैसा हम जानते हैं कि पत्थर को फेंका जाए तो वह ज़मीन पर ही गिरेगा इसी प्रकार यह भी है। स्वर्ग पृथ्वी पर वचन को बोता है जो परमेश्वर की इच्छा और सहमति को लाता है। यदि स्वर्ग कहता है कि आप चंगे किए गए हैं, तो जब वचन आपके हृदय को परिपक्व करता है, तब आपको केवल स्वर्ग की ही आवाज़ सुनाई देगी। अब और कोई डर नहीं। जब आप अपनी आँखों को बंद करेंगे, तब आप चंगाई को देखेंगे! इसीलिए इब्रानियों 11:1 (केजेवी) कहता है,

*अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।*

इसे आप नैसर्गिक रूप में अभी देख नहीं पाएंगे, लेकिन आपने इसे आत्मा में देखा है; और यह हाथों से स्पर्श किया जा सकता है इतना असली है। इस सहमति को विश्वास कहते हैं, और यह विश्वास आपके जीवन में उस चित्र को, इस पृथ्वी के क्षेत्रों में पूरा करेगा!

लेकिन मरकुस अध्याय 4 यहीं समाप्त नहीं होता है। यह अध्याय हमें कैसे हमारे हृदय स्वर्ग के साथ सहमत होते हैं और विश्वास की उपस्थिति होती है, यह सिखाने के बाद, हमें फल की फसल की कटनी के लिए निर्देश देता है।

*परन्तु जब दाना पक जाता है, **तब वह तुरन्त हंसिया लगाता है**, क्योंकि कटनी आ पहुंची है॥*

–मरकुस 4:29

ध्यान दें कि अगर हृदय स्वर्ग के साथ सहमत है और विश्वास भी है, फिर भी कई बार कोई कार्य नहीं होता है। ऐसा क्यों है? जैसे मैं बताता आ रहा हूँ, कि पृथ्वी के क्षेत्र में यहाँ कुछ कानून अधिकार क्षेत्र मौजूद हैं।

क्या आपको लूका 8 में लहू बहने वाली स्त्री के बारे में की गई बातें याद है? याद करें कि, यीशु कहता है कि, "बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है।" मैंने आपको बताया था कि जब यीशु ने "बेटी", शब्द का उपयोग किया तब वह स्वर्ग में उसके स्थान के विषय में बात कर रहा था। वह अब्राहम की बेटी थी। उसके पास जायज़ अधिकार थे। मैंने इसकी तुलना आपके घर में बिजली घर से सीधा तारों के आने से की थी। सामर्थ उपलब्ध है, लेकिन आपको फिर भी व्यक्तिगत रूप से बत्ती के बटन को दबाना होगा। इसी रीति से, एक बार यदि विश्वास स्थापित होता है तो, सामर्थ उपलब्ध होती है, लेकिन तब तक कुछ नहीं होता जब तक आप बटन को चालू नहीं करते।

**आपको** पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य की सामर्थ को लाना है, क्योंकि सिर्फ आप ही, पृथ्वी पर उपस्थित एक पुरुष या एक स्त्री ही कानून रूप से ऐसा कर सकते हैं। यह दृष्टांत बताता है कि आप कैसे बचाए गए, जैसा रोमियों 10:10 में इसका वर्णन किया गया है।

*क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है।*

–रोमियों 10:10

मनुष्य हृदय से परमेश्वर के वचन पर विश्वास करता है और धर्मी ठहराया जाता है। न्याय में धर्मी ठहराना, न्याय के अधिकार क्षेत्र का कानून शब्द है। तो, किसी पुरुष या स्त्री का हृदय जब स्वर्ग के साथ सहमत होता है—जब वे स्वर्ग जो कहता है उस पर विश्वास करते हैं—तब वे स्वर्ग और पृथ्वी दोनों के सामने धर्मी ठहरते हैं। अब स्वर्ग के लिए उनके जीवनों *में* बहना जायज़ हो जाता है और उनके जीवनों के *द्वारा* परमेश्वर के राज्य की ओर से स्वर्ग पृथ्वी पर प्रभाव डालता है। लेकिन यह अजीब है, हालांकि यह अब जायज़ है और वे विश्वास में हैं, फिर भी कुछ नहीं हो रहा है। आप कहेंगे कि "लेकिन, गैरी, मुझे लगा कि आपने कहा कि यदि मैं विश्वास में हूँ तो, यह स्वर्ग को अधिकार क्षेत्र का नियंत्रण देता है।" यह सही है, लेकिन विश्वास के होने के बाद किसी को यहाँ स्वर्ग के अधिकार को भेजना होगा। आइए एक बार फिर से हम वचनों में देखते हैं।

*क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है,* ***और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है****।*

–रोमियों 10:10

एक बार जब आप विश्वास में हैं, या धर्मी ठहराए गए हैं, तब स्वर्ग के लिए पृथ्वी पर आना अब कानून हो गया है। लेकिन ध्यान दें कि यह कहता है कि *मूँह* से अंगीकार करने के द्वारा आप बचाए जाते हैं। क्या आप इसके दो भाग देख सकते हैं? स्वर्ग का काम है कि आपके हृदय में वचन को लाना जहां यह पृथ्वी पर सहमति को उपजाता है। तो, एक बार जब सहमति होती है, या विश्वास होता है, तब आपको सहमति पर कार्य करना चाहिए जिससे स्वर्ग जो कहता है उसे प्राप्त करने के लिए अपनी परिस्थिति में स्वर्ग के अधिकार को लाएंगे।

**एक बार जब आप विश्वास में हैं, या धर्मी ठहराए गए हैं, तब स्वर्ग के लिए पृथ्वी पर आना अब कानून हो गया है।**

मरकुस 4 में जो वचन है, यह कहता है कि जब फसल आती है, तब मनुष्य (पृथ्वी पर) हंसिया लगाता है। एक बार विश्वास होने के बाद परमेश्वर के वचन पर

कार्य करना ज़रूरी है जिससे असली फसल को प्राप्त किया जाए।

एक पल के लिए मैं पीछे जाकर मरकुस 4 में बताए गए, हंसिया के बारे में बताना चाहता हूँ। मुझे यकीन है कि विश्व की अधिकतर कलिसियाओं में हंसिया को कैसे उपयोग करते हैं यह सिखाया नहीं जाता, यानि उन्हें जो फसल चाहिए उसे काटना सिखाया नहीं जाता है। मैं भी यह नहीं जानता था जब तक परमेश्वर ने मुझे यह सिखाना शुरू नहीं किया कि राज्य कैसे काम करता है। राज्य की इस महत्वपूर्ण प्रक्रिया में मेरा पहला प्रकाशन कई वर्षो पहले प्राप्त हुआ था जब एटलांटा कलिसिया की बुधवार रात की सभा में मुझे आमंत्रित किया गया था।

कलिसिया उतनी बड़ी नहीं थी, लेकिन मुझे इससे कोई दिक्कत नहीं थी। मुझे बस लोगों को राज्य के बारे में सिखाना पसंद है। जैसे ही मैं कलिसिया में पहुंचा, मैंने एक अनोखी बात पाई कि दरवाज़े बंद थे और वहाँ कोई नहीं था। सभा शुरू होने के लिए सिर्फ दस मिनट बाकी थे।

मैंने अपने पीछे एक बहुत तेज़ ट्रक की आवाज़ सुनी, और मैंने देखा कि पुराना पिकअप ट्रक चर्च की गली के पीछे से आ रहा है। मैंने इसके बारे में ज़्यादा नहीं सोचा। आखिर मैं एटलांटा में था।

जैसे मैं इंतज़ार कर रहा था, एक पुरुष बिल्डिंग के पीछे से चलते हुए मेरे पास आया और उसने अपना परिचय पास्टर के रूप में दिया। उन्होंने आने में देरी के लिए क्षमा मांगी, लेकिन उनका पुराना ट्रक चालू नहीं हो रहा था। उन्होंने मुझे बताया कि इसे शुरू करने के लिए उन्हें पहाड़ से नीचे गाड़ी को लुड़काना पड़ा क्योंकि इसका क्लच खुला हुआ था। वह इसके बारे में और बताने लगे कि कभी कभी यह चालू ही नहीं होती, तो उन्हें कलिसिया के लिए पाँच मील चलकर जाना पड़ता है।

मैं मानता हूँ कि मैं इस बातचीत से थोड़ा अचंभित हो गया था। उन्होंने आगे बताया कि उनकी सेवकाई वास्तव में मुख्य रूप से एक आउटरीच सेवकाई थी और वह हर महीने उसी स्थान से हजारों लोगों को, अक्सर एक महीने में 10,000 से अधिक को भोजन खिलाते थे।

जैसे वह पास्टर बातें कर रहे थे, मैं दुखी हो रहा था। यहाँ एक ऐसा परमेश्वर का जन है जो महीने में लगभग 10,000 लोगों को खिलाता है, और उसके पास एक ढंग की कार भी नहीं है? इस बात का ध्यान मैं रख सकता था। मेरे पास घर पर एक 20,000 मील पर चलाई हुई कार थी जो मैं उन्हें देना चाहता था।

मैंने उन्हें अपनी योजना बताई और यह कि मैं एटलांटा में अपने एक कर्मचारी को गाड़ी के साथ भेजन वाला था। नि:संदेह, वह बहुत खुश हुए। उस रात को मैंने उन्हें और उनकी छोटी सी कलिसिया को परमेश्वर का राज्य सिखाने में समय बिताया और

यह कि पैसों से संबंधित यह कैसे कार्य करता है। मैं जानता था कि जिन्हें राज्य की ज़रूरत है उनके लिए यह कितना मायने रखता है।

जब मैं घर गया, मैंने एटलांटा जाने के लिए एक गाड़ी को तैयार किया। जब कार को लेने मेरा कर्मचारी आने वाला था, तब मैं जानता था कि मैं स्वर्ग में आत्मिक लेन देन कर रहा हूँ। मैं जानता था कि जैसे मैं परमेश्वर के राज्य में कार को भेज रहा हूँ, मैं परमेश्वर पर एक ऐसी गाड़ी के लिए विश्वास कर रहा था जिसकी आवश्यकता मुझे थी।

अब, मैं कार का व्यक्ति नहीं हूँ, यानि मुझे कारों में कोई दिलचस्पी नहीं है। कुछ लोगों को है, लेकिन मुझे नहीं है। तो जैसे मेरा कर्मचारी इसे लेने आया था, मैंने अपने हाथ को उस कार पर रखा, और मैंने साधारण रूप से कहा, "हे पिता, मैं इस कार को एटलांटा में इस कार्य के लिए दे रहा हूँ। जैसे मैं इसे भेजता हूँ, मैं इसे बीज की तरह बोता हूँ और विश्वास करता हूँ कि मैं एक ..... को प्राप्त करूंगा" मैं किसी गाड़ी के बारे में जो मुझे चाहिए थी, स्पष्ट रूप से सोच नहीं पा रहा था, तो मैंने कहा कि, "मैं अगली बार फिर कभी, आपको इसका नाम बताऊँगा!"

वैसे अगले कुछ महीनों के लिए, मैंने किसी कार के बारे में ज़्यादा सोचा नहीं, लेकिन एक दिन सुबह मैंने ड्रेनडा से पूछा कि उसे कौन सी कार चाहिए थी। कुछ समय सोचने के बाद, उसने कहा कि कोई भी कन्वर्टबल कार अच्छी होगी। मैंने उससे पूछा कि उसे किस प्रकार की कन्वर्टबल कार चाहिए, और हम दोनों में से कोई भी किसी अच्छे से मॉडल के बारे में सोच नहीं पाए। क्योंकि मैं ड्रेनडा के लिए कार खरीदने जा रहा था, तो मुझे यह निश्चित करना था कि उसे वह कार पसंद आए, तो मैंने उसे ऑनलाइन पर ढूँढने के लिए या आस पास में देखकर बताने के लिए कहा कि किस प्रकार कि कन्वर्टबल कार वह लेना चाहती है। तब तक, हमने अपनी नई गाड़ी की इच्छा के बारे में किसी को नहीं बताया था, लेकिन जैसे हम अपनी गाड़ी में जा रहे थे हम उस कार को ढूँढने लगे जो हमारे ध्यान को आकर्षित करेगी।

एक दिन हम दोपहर के भोजन के लिए एक स्थानीय होटल में रुके थे, और अचानक, ड्रेनडा ने चिल्लाकर ज़ोर से कहा, "यह वही है!"

मैंने पूछा, "क्या वही है?"।

तब उसने पार्किंग के स्थान की ओर इशारा करके कहा कि "जो कार मुझे पसंद है।" मैंने वहाँ बीएम डब्ल्यू श्रेणी 6 सीआई कन्वर्टबल कार को देखा, और नि:संदेह यह बहुत सुंदर थी। लेकिन यह उतनी ही महंगी ज़रूर होगी। मैंने उसकी पसंद की सराहना की और उसे बताया कि यह सच में बहुत सुंदर कार थी।

अब आपको यह जानना होगा कि ड्रेनडा और मैं कारों पर बड़ी रकम को खर्च नहीं करते हैं।जैसा कि मैंने बताया, मैं कभी भी कारों में दिलचस्पी रखने वाला व्यक्ति नहीं

था। वित्तीय में होने के नाते, मैं यह जानता हूँ कि इसका मूल्य कितनी जल्दी घटता है और हमेशा एक से दो वर्ष पुरानी कार को लेना ही समझदारी है। तो मेरी योजना थी कि मैं सबसे बढ़िया उपयोग किए हुए की खोज करूँ।

एक सप्ताह के बाद, मेरी कलिसिया से एक व्यक्ति ने मुझे कॉल करके कहा कि, "मैंने ड्रेनडा की कार को ढूंढ लिया है!" मैं चकित रह गया क्योंकि हमने उस बीएमडब्ल्यू के बारे में जो हमने उस दिन भोजन के समय देखी थी, किसी को नहीं बताया था।

मैंने उससे पूछा कि यह कौन सी कार है, उसने कहा कि यह बीएमडब्ल्यू श्रेणी 6 सीआई कन्वर्टबल कार है। उसने बताया कि जैसे वह गाड़ी चलाते हुए जा रहा था, उसने इसे देखा, और प्रभु ने उससे कहा कि यह ड्रेनडा की गाड़ी है।

मैंने उससे कहा कि "ठीक है, अब मेरा ध्यान आकर्षित हुआ,"। यह कार एक साल पुरानी थी और अच्छी स्थिति में थी। मैंने इसके लिए नकद पैसे दिए। ड्रेनडा को अपनी कार मिल गई थी। लेकिन यह कैसे हुआ? आइए हम कहानी की तुलना सीखे गए विश्वास और हंसिया लगाने से करते हैं।

जब मैंने अपनी कार को दे दिया था, तब मैं विश्वास में था। लेकिन जब ड्रेनडा ने ज़ोर से कहा कि, "यह वही है!" तब वह इस पर हंसिया रख रही थी और कुछ दिनों के बाद ही कार आ गई थी।

हालांकि मैंने उसे चिल्लाकर कहते हुए सुना कि, "यह वही है!" मैंने कभी उसकी घोषणा को मरकुस अध्याय 4 और उस हँसिये के साथ नहीं जोड़ा था। लेकिन इस अगली कहानी ने मेरे अंदर इसे स्पष्ट कर दिया था।

मैंने कई बार बताया है कि मैं 60 एकड़ की भूमि का मालिक हूँ। और 10 एकड़ भूमि गीली मिट्टी से भरी है। मुझे पतझड़ में शिकार करना पसंद है, लेकिन हालांकि मैंने हाई स्कूल में बत्तखों का शिकार किया था, फिर भी मैंने यहाँ ओहियो में बत्तख का शिकार नहीं किया था। एक वर्ष, दलदल पानी से भरा हुआ था, और बत्तखें बड़े झुंडों में उसमें उड़ रहीं थी। दिन में सैंकड़ों बतख रात को बसेरा करने के लिए आती थीं। तो एक रात मैं बाहर गया और मैंने अपनी बंदूक ली और रात के भोजन के लिए बतखों को मारने में अच्छा समय बिताया। उस पतझड़ में, मेरे दोनों लड़कों ने और मैंने बतखों का अच्छा शिकार किया था।

एक बात जिसे मैंने देखा, हालांकि, ऐसा कई बार हुआ है, कि बतखें मेरे बंदूक के निशाने की सीमा में थीं। जब कानून रूप से आप बतख का शिकार करते हैं, तब आपको पारंपरिक लेड शॉट के विपरीत केवल स्टील शॉट का उपयोग करने की अनुमति है। लेड शॉट स्टील शॉट से भारी होता है और अपनी ऊर्जा को काफी दूर

तक बरकरार रखता है, बत्तख का शिकार करते समय दूर के निशाने में यही समस्या उठती है। लेकिन पतझड़ के दौरान, जैसे मैं कुछ बतख के शिकारियों से बात कर रहा था, उन्होंने मुझे इन नई बंदूकों के बारे में बताया जो विशेष करके बतखों का शिकार करने के लिए बनाई गई थीं। वे भारी निशाने को लगाने में सक्षम थीं और उनमें छिपने की भी क्षमता थी। मैं इनमें से एक खरीदना चाहता था, लेकिन अब दिसंबर आ गया था और बतखों की ऋतु जा रही थी, तो मैंने इसके बारे में ज़्यादा नहीं सोचा।

मैं हमारे स्थानीय खेल के सामान की दुकान कैबेला के पास जनवरी की शुरुआत में किसी चीज़ के लिए रुका, और मुझे उन बत्तख का शिकार करने वाली बंदूकों की याद आ गई जिन्हें मैं देखना चाहता था। इसलिए, मैं बंदूक काउंटर के पास से चला गया, और मैंने जलपक्षी शिकार को समर्पित नई बंदूकों के एक पूरे खंड को देखा। मुझे याद है, बिना सोचे–समझे, जो मुझे सबसे अच्छा लग रहा था उसकी ओर मैंने अपनी उंगली करते हुए ज़ोर से कहा। "प्रभु, मेरे पास यह वाली होगी।" जैसे मैं कह रहा था मैं इसके बारे में सोच भी नहीं रहा था; यह बस मेरे मूँह से निकल गया। बत्तख का मौसम पतझड़ तक फिर से नहीं आएगा, इसलिए मौसम थोड़ा करीब आने तक मैं बंदूक खरीदने की योजना नहीं बना रहा था।

दो सप्ताह बाद, मुझे एक व्यावसायिक सम्मेलन में बोलने के लिए आमंत्रित किया गया। जैसे ही मैंने समाप्त किया, वहाँ के सीईओ मुझे धन्यवाद देने के लिए आए और उन्होंने कहा कि उनके पास मेरे लिए एक उपहार है। अद्भुत रूप से, उन्होंने वही बंदूक मुझे दी—*एकदम वही मॉडल*—जिसकी ओर मैंने हाथ को बढ़ाया था कैबेला की दुकान में। नि:संदेह मैं इस उदार उपहार से बहुत अचंभित था, लेकिन साथ ही मैं यह भी जानता था कि यह कोई संयोग नहीं है। मुझे याद है मैंने कैबेला की दुकान में क्या कहा था और अब मुझे समझ आया कि मैंने ऐसा क्यों किया था। मैंने इस पर हंसिया लगाया था!

इस अध्याय में आपने जो पढ़ा है उसे समझने के लिए, जैसा कि मैंने पहले भी बताया कि, परमेश्वर से कुछ भी और सब कुछ प्राप्त करने के लिए इन बातों को समझना आपके लिए *महत्वपूर्ण* है। सब कुछ जिसे आप परमेश्वर से प्राप्त करते हैं उसे इसी प्रक्रिया से गुज़रना होता है, तो निश्चित कर लें कि आपने जो अभी पढ़ा उसे आप समझ लें। ज़रूरत पड़े तो इसे फिर से पढ़ें! यह महत्वपूर्ण है!

अध्याय 8

# आपको बटुए की ज़रूरत है : भाग दो

हमें पिछले अध्याय में लंबी यात्रा को तय करना पड़ा क्योंकि मैं जानता हूँ कि आपको परमेश्वर के राज्य के बारे में सब कुछ समझने के लिए यह आवश्यक था। फिर से कहूँगा, अधिकतर मसीहों को पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य की कानूनी कारवाई की कोई समझ नहीं है, परमेश्वर के राज्य में उनका जायज़ स्थान क्या है उन्हें इसकी कोई समझ नहीं है। अब आप जान गए हैं कि मुझे विश्वास और अधिकार क्षेत्र के विषयों को समझाने की इस लंबी यात्रा पर आपको क्यों ले जाना पड़ा। क्योंकि बुनियादी समझ के बिना, लूका इन वचनों में क्या कह रहा है आपको यह समझ नहीं आएगा, वह यहाँ कह रहा है कि परमेश्वर के राज्य की खोज करो और सारी चीजें तुम्हें दी जाएंगी।

जब कि अब आप इसका अर्थ जानते हैं, तो आइए हम पिछले वचनों की ओर जाते हैं।

> *और तुम इस बात की खोज में न रहो, कि क्या खाएंगे और क्या पीएंगे, और न सन्देह करो। क्योंकि संसार की जातियां इन सब वस्तुओं की खोज में रहती हैं: और तुम्हारा पिता जानता है, कि तुम्हें इन वस्तुओं की आवश्यकता है। परन्तु उसके राज्य की खोज में रहो, तो ये वस्तुऐं भी तुम्हें मिल जाएंगी।*
>
> *हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दे। अपनी संपत्ति बेचकर दान कर दो; और अपने लिये ऐसे बटुए बनाओ, जो पुराने नहीं होते, अर्थात स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं और जिस के निकट चोर नहीं जाता, और कीड़ा नहीं बिगाड़ता। क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा॥*
>
> –लूका 12:29–34

फिर से एक बार कहूँगा, पिता पहले ही से आपकी आवश्यकताओं को जानते हैं,

और जो कुछ आपको चाहिए पिता ने पहले ही से उसका प्रबंध किया है और यह पहले से ही आपका है, लेकिन आपको स्वर्ग से प्राप्त करने की कानूनी प्रक्रिया को जानना और समझना ज़रूरी है, उन बातों का आनंद उठाने के लिए जो परमेश्वर के पास है।

वचन 32 बताता है कि राजा के पुत्र या पुत्री होने के नाते आप ने एक अद्भुत विरासत को पाया है। वह कहता है, "***पिता को तुझे राज्य देना भाया है***।"

> *आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं। और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जब कि हम उसके साथ दुख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं॥*
>
> –रोमियों 8:16–17 (केजेवी)

पौलूस कहता है कि हम मसीह के संगी वारिस हैं। एक पुत्र या पुत्री होने के नाते, आपके पास विरासत है, राज्य है।

कुछ समय के लिए इस बारे में सोचें। आपके पास राज्य में जो कुछ है पहले ही से उन सभी पर आपका अधिकार है। आपको भीख मांगने की ज़रूरत नहीं है। यह पहले ही से आपका है।

ओ, काश आप इस वाक्य को सामर्थी रूप से थाम लेते। इसीलिए 2 कुरिन्थियों 1:20 ऐसा कहता है:

> *क्योंकि परमेश्वर की जितनी प्रतिज्ञाएं हैं, वे सब उसी में हां के साथ हैं: इसलिये उसके द्वारा आमीन भी हुई, कि हमारे द्वारा परमेश्वर की महिमा हो।*
>
> –2 कुरिन्थियों 1:20

इस कारण मेरी पिछली पुस्तक में, *आपकी वित्तीय क्रांति: प्रबंध का सामर्थ*, मैंने आपको बताया था कि प्रभु की प्रार्थना कानूनी मांग या याचिका प्रारूप में है। वह मांग नहीं रहा जब यह कहता है, "*प्रतिदिन की रोटी हमें* दे।" यह कोई प्रश्न नहीं है; बल्कि यह एक याचिका है।

जैसे मेरे बच्चों को नाश्ते की मांग करने के लिए मुझसे भीख मांगने की ज़रूरत नहीं है (वे इस प्रकार करते हैं कि जैसे वे इसके मालिक हैं, "पिता जी, ज़रा हमें अंडे दीजिए।"), ऐसा ही परमेश्वर के राज्य में भी है—आपके पास यीशु के द्वारा सारी बातों के लिए कानून अधिकार है।

राज्य में जो कुछ है उन सब पर कानून पहुँच होने के अलावा, आप राज्य के नागरिक भी हैं, जो कई अधिक लाभों को दर्शाता है, जैसे यूनाइटेड स्टेट्स में आपकी नागरिकता के साथ आपको कई लाभ भी प्राप्त होते हैं, जिसके लाभ आप इसके अलावा प्राप्त नहीं कर सकते थे।

> *इसलिये तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए।*
>
> –इफिसियों 2:19

अंतत: आइए हम उस बटुए के बारे में बात करते हैं! याद है यीशु ने कहा कि आपको बटुए की आवश्यकता है?

> *अपनी संपत्ति बेचकर दान कर दो; और अपने लिये ऐसे बटुए बनाओ, जो पुराने नहीं होते, अर्थात स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं और जिस के निकट चोर नहीं जाता, और कीड़ा नहीं बिगाड़ता। क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा॥*
>
> –लूका 12:33–34

अपने लिए बटुए को लो, स्वर्ग में ऐसा धन पाने के लिए जो कभी नष्ट नहीं होगा और जहां कोई इसे आपसे छीन नहीं सकता। आइए इस एक बात को अपने मन में स्पष्ट कर लें कि: यीशु यह नहीं कह रहा है कि आपके पास जो कुछ है उसे बेच दें और स्वर्ग जाने तक घटी में रहें। याद करें कि, पौलूस ही ने 2 कुरिन्थियों 9 में, जहां वह कहता है कि हम हर प्रकार से धनी किए जाएंगे ताकि हम हर अवसर पर उदार हो सकें। तो, जान लें कि पौलूस यह नहीं बताता कि पैसों का होना या आपके पास चीजों का होना पाप है या गलत है। यीशु कह रहा है कि यदि पैसे और चीजें आपको अपने पास *रखती* हैं तो, तब आपके लिए बेहतर होगा कि आप इन्हें बेच दें और अपने हृदय को ऐसे खज़ाने के साथ एक करें जिसे आप खो नहीं सकते और यह अनंतकाल का है।

हमने बचपन से पैसों को मूर्ति के रूप में पूजा है। पैसे हमारे जीवन की ज़रूरतों को पूरा करते हैं; हालांकि, बहुतों ने यह जाना है, कि पैसा एक भयंकर देवता है। इसीलिए पौलूस तिमुथियुस को बताता है कि लोगों को जो धनवान है, देने और उदार रहने के लिए चेतावनी दे जिससे वे आत्मिक रूप से स्वस्थ रह सकें। हृदय के लिए पैसों को देवता के रूप में देखना आसान था। उदार होना लालच का इलाज है। इसे अक्सर करते रहें।

*इस संसार के धनवानों को आज्ञा दे, कि वे अभिमानी न हों और चंचल धन पर आशा न रखें, परन्तु परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिये सब कुछ बहुतायत से देता है। और भलाई करें, और भले कामों में धनी बनें, और उदार और सहायता देने में तत्पर हों। और आगे के लिये एक अच्छी नेव डाल रखें, कि सत्य जीवन को वश में कर लें॥*

–1 तिमुथियुस 6:17–19

ध्यान दें कि पौलूस तिमुथियुस से *आज्ञा* देने के लिए कहता है, *सलाह* देने के लिए नहीं, उन्हें जो देने में धनी हैं और बांटने में इच्छुक हैं। याद रखें, पैसों की ज़रूरत है, लेकिन यह जीवन नहीं है।

## तो आपका खज़ाना कहाँ है?

देना न केवल आपके हृदय को परमेश्वर और लोगों के प्रति कोमल बनाता है, बल्कि यह आपके हृदय पर पैसे की पकड़ को भी ढीला करता है। आप जो कुछ हृदय के सामने रखेंगे वह इससे घृणा करेगा या इसकी आराधना करेगा, तो हम अपने हृदय को उद्देश्य के बिना भटकने नहीं दे सकते हैं। हमें अपने हृदयों को इस रूप में प्रशिक्षित करना है कि परमेश्वर हमारे स्रोत हैं। देना उस लालच का विरोध करता है जो हमारे हृदय में आसानी से प्रवेश करती है।

तो हमें सब कुछ क्यों देने की ज़रूरत है? हमारे देने के बिना ही परमेश्वर हमें आर्थिक रूप से मदद क्यों नहीं कर सकते हैं? यह एक अच्छा सवाल है, और हमें इसका उत्तर लूका अध्याय 4 में प्राप्त होता है।

पहली बात है कि, परमेश्वर के पास कोई पैसे नहीं हैं, जैसा मैंने पहले भी बताया था। दूसरी बात यह है, कि उन्होंने आदम को पृथ्वी पर सम्पूर्ण और पूरा अधिकार दिया है, जैसा इब्रानियों 2:7–8 में इसका वर्णन है।

*तब शैतान उसे ले गया और उस को पल भर में जगत के सारे राज्य दिखाए। और उस से कहा; मैं यह सब अधिकार, और इन का विभव तुझे दूंगा, क्योंकि वह मुझे सौंपा गया है: और जिसे चाहता हूं, उसी को दे देता हूं। इसलिये, यदि तू मुझे प्रणाम करे, तो यह सब तेरा हो जाएगा।*

*यीशु ने उसे उत्तर दिया; लिखा है; कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर; और केवल उसी की उपासना कर।*

–लूका 4:5–8

वचन का यह भाग तब घटित होता है जब शैतान जंगल में यीशु की परीक्षा ले रहा था। शैतान यीशु से कहता है कि सारा अधिकार और संसार के राष्ट्रों का वैभव उसे दिया गया है। और हाँ, यह सच है। आदम के पास वह पदवी थी, लेकिन जब उसने परमेश्वर के राज्य के प्रति छल किया तब उसने इसे शैतान को दे दी।

राष्ट्रों का वैभव उसका धन है, और राष्ट्रों के धन पर राज्य करने की क्षमता अब शैतान द्वारा शासित थी। इसे अच्छे से समझें कि—इस वाक्य में ऐसा नहीं कहा गया है कि शैतान ने पृथ्वी के वैभव पर स्वयं *अधिकार* को प्राप्त किया। पृथ्वी और जो कुछ इसमें है सब परमेश्वर का है। लेकिन इसमें ऐसा नहीं कहा गया है कि शैतान के पास राष्ट्रों की धन–संपत्ति पर *कानून दावा* है।

यदि आप पैसे के एक भाग को देखेंगे, तो इस पर हमेशा किसी राष्ट्र की मुहर होती है जिसके पास उस मुद्रा पर सम्पूर्ण अधिकार है। आदम ने जो किया उसके कारण, परमेश्वर किसी राष्ट्र की मुद्रा पर अपना जायज़ दावा नहीं कर सकता है। हालांकि यदि परमेश्वर पृथ्वी के क्षत्रों में किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश कर सकता है जो उन पर विश्वास करता है और उनके अधिकार और अधिकार क्षेत्र में अपने धन को बोने के लिए इच्छुक है, तो परमेश्वर इसके द्वारा जायज़ प्रवेश को प्राप्त करके उस परिस्थिति में कदम रख सकता है।

हालांकि, मैं फिर से कहूँगा, परमेश्वर के पास कोई पैसे नहीं हैं, तो जब मैं कहता हूँ कि वह हमारे धन में शामिल हो सकता है तो ऐसा कहने से मेरा क्या मतलब है? हालांकि परमेश्वर किसी प्रकार के जादू को करके पैसों को नहीं लाएगा (शैतान के जायज़ दावे के कारण यह गैर कानूनी होगा), लेकिन वह धन को बनाने या उसे प्राप्त करने में आपकी मदद कर सकता है।

**परमेश्वर को हमारा देना पारस्परिकता का द्वार खोल देता है, जो कि राज्य में बहुत महत्वपूर्ण नियम है। हम वही काटते हैं जो हम बोते हैं।**

उन्ही कहानियों के समान जिसका वर्णन मैंने पहले इस पुस्तक में किया था, उदारता स्वर्ग को कानूनी अधिकार देती है, जब कोई अपनी आर्थिक परिस्थिति में देते हैं तब उन्हें दिशा निर्देशों को प्राप्त करने में उदारता मदद करती है। क्या आपको लूका अध्याय 5 में मछली की कहानी याद है? पतरस का इच्छापूर्वक यीशु को प्रचार करने के लिए अपने व्यवसाय की नाव को देने से लेकर, पवित्र आत्मा के लिए कानून द्वार खोलने तक, जहां गहरे जल से मछलियाँ प्राप्त हुई थीं।

परमेश्वर को हमारा देना पारस्परिकता का द्वार खोल देता है, जो कि राज्य में

बहुत महत्वपूर्ण नियम है। हम वही काटते हैं जो हम बोते हैं।

तो लंबी कहानी को संक्षिप्त करते हुए, हम परमेश्वर के राज्य और कार्य में देने के द्वारा अपने लिए बटुओं को तैयार करते हैं। हमारा देना स्वर्ग के धन तक हमें पहुँच देता है, इसीलिए पौलूस "देने" को हमारा बटुआ कहता है। यह हमारे जीवनों में सारी बातों को बदल देता है। अब हम और अधिक अपनी समझ के द्वारा सीमित नहीं हैं। परमेश्वर, खुद सम्पन्न होने में हमारी मदद कर रहा है।

> *कि तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिये जो हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करवाती है, धनवान किए जाओ।*
>
> –2 कुरिन्थियों 9:11

ध्यान दें कि बाइबल कहती हैं आप धनी *किए जाएंगे*, यह नहीं कि आपको धनी बनने के लिए अपनी शक्ति और बुद्धि के साथ *कठिन परिश्रम करना होगा*। नहीं, आपके पास अब एक नया साथी है—पवित्र आत्मा—और वह आपसे कहीं अधिक जानता है।

मुझे याद है कि जब हम घटी में थे, वह नौ वर्ष तनाव भरे थे। पैसे, या मैं कहूँगा पर्याप्त पैसे न होने का डर, इसकी पकड़ मेरे हृदय पर मज़बूत थी। हालांकि मैं एक मसीही था, फिर भी मैंने परमेश्वर पर इतना भरोसा नहीं किया था जिससे मेरा हृदय पृथ्वी की श्राप की प्रणाली से अपनी निष्ठा को बदल दे। मैं गलत धन पर भरोसा कर रहा था! उस समय, मेरा भरोसा सिर्फ खुद पर था, और निश्चित होने के लिए यह गलत चुनाव था।

परमेश्वर मुझे यह सिखाना चाहता था कि उनके अनुग्रह और क्षमता को प्राप्त करने के लिए कैसे बटुए का प्रबंध करना चाहिए। और हालांकि मुझे लगता है जितने मुझे जानते हैं वे जानते है कि परमेश्वर ने इसे किया है, अगर आप यह नहीं जानते कि परमेश्वर ने इसे कैसे किया था तो मैं इस कहानी को फिर से दोहराना चाहता हूँ। आप जानते हैं कि परमेश्वर काफी अच्छी रणनीति बनानेवाले हैं; वह जानते हैं कि हम तक उन्हें कैसे पहुंचना है।

मुझे हिरण का शिकार करना बहुत पसंद है लेकिन मैं वर्षो से खाली हाथ लौट रहा हूँ। मैं बाहर जाकर, ठंड में बैठता हूँ, और ऐसा प्रतिदिन करता हूँ लेकिन कुछ हाथ नहीं आता। मुझे बस शिकार ही करना पसंद नहीं था; बल्कि मुझे अपने बच्चों को इसे खिलाना भी था और निश्चय मैं हिरण का मांस उन्हें खिला सकता था। हालांकि अतीत में मुझे कुछ सफलताऐं ज़रूर मिलीं, हिरण का कोई अच्छा शिकार करके कुछ मांस घर लाए हुए, मुझे कई वर्ष बीत गए थे।

एक दिन, जैसे मैं आने वाले हिरण के मौसम के बारे में सोच रहा था, मैंने प्रभु की आवाज़ सुनी। वह कह रहा था, कि "हिरण का शिकार कैसे करते हैं क्यों न तुम इस वर्ष मुझे सिखाने की अनुमति दो?"

इसने मुझे चकित कर दिया था। मैंने कहा, *"इस वर्ष मैं हिरण को कैसे पकड़ूँ मुझे दिखा दे?"* इसका क्या मतलब है? उन शब्दों के बारे में प्रार्थना करते हुए, उस हिरण की फसल को काटने के उद्देश्य से, मैं एक आर्थिक बीज या उपहार को बोने के लिए उत्साहित हो गया था। मुझे ऐसा लगा कि प्रभु मुझसे यह कह रहा है कि, इससे पहले कि मैं शिकार के लिए बाहर जाऊँ, जब मैं हिरण के लिए बीज को बोऊँगा, तब मुझे विश्वास करना होगा कि मैंने इसे प्राप्त कर लिया है, मरकुस 11:24 के अनुसार।

> *इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिये हो जाएगा।*
>
> –मरकुस 11:24

हालांकि एक मसीही होने के नाते, मैंने हमेशा देने के द्वारा अपनी कलिसिया की सहायता की है, लेकिन इस प्रकार का बोना, जिसमें केंद्रित इरादा हो और यह विश्वास करते हुए कि जब मैं प्रार्थना करूंगा तब मुझे यह प्राप्त होगा, यह एक नई बात थी।

मैंने एक चेक को लिया और मेमो भाग में लिखा कि "मेरे 1987 हिरण के लिए"। मैंने उस पर हाथ रखा और घोषणाएं की, कि जैसे मैं ऐसी सेवकाई को मेल कर रहा हूँ, जिस पर मेरा भरोसा है, वैसे ही मैंने अपने हिरण को भी प्राप्त कर लिया है।

मैं वास्तव में उस समय टुल्सा, ओक्लाहोमा शहर की सीमा में रह रहा था, शिकार करने के लिए कोई जगह नहीं थी, लेकिन चर्च में मेरा एक दोस्त था, उसने मुझे धन्यवाद देने के त्योहार पर अपनी दादी के घर आने के लिए आमंत्रित किया, उसने बताया कि खेत के आस पास कुछ हिरण दिखाई दिए थे। इसलिए, मैं परिवार का भोजन और संगति का आनंद लेने के लिए और हिरण को मेरे झोले में प्राप्त करने के लिए धन्यवाद देने के एक महान पर्व की सुबह को रवाना हुआ।

मेरा दोस्त यह नहीं जानता था कि उसे मुझे कहाँ जाने के लिए कहना चाहिए, पर वहाँ एक चरागाह थी जो लकड़ियों से घिरी हुई थी, और उसने मुझे बाहर चरागाह में जाकर बड़े विशाल पेड़ के पास बैठने की सलाह दी।

अब मैं चाहता हूँ कि आप इसे समझें। मैं एक ऐसी चराई में बैठा था जिसके बीच में एक बड़ा सा पेड़ था। जैसे ही मुझे इसकी समझ प्राप्त हुई, मैंने सोचा कि, *बाहर खुले में बैठने से यह नहीं होगा। मुझे बैठने के लिए कोई बेहतर स्थान ढूँढना पड़ा।*

जैसे मैं उठकर लकड़ियों की ओर बढ़ने के बारे में सोच ही रहा था, वैसे ही मेरे पीछे पेड़ की दूसरी ओर क्या चल रहा था इससे मैं अनजान था। मेरी जानकारी के बिना, खेत में मेरे पीछे से एक मृग दौड़ रहा था। मेरे और उस हिरण के बीच एक पेड़ था, इसलिए वह मृग मुझे देख नहीं सकता था, और मैं उसे देख नहीं पा रहा था। तब मृग ज़ोर से इस पेड़ की ओर भागा, उसे मेरी खुशबू आई, और वह अचानक रुक गया यह जानने के लिए कि क्या हो रहा है।

जैसे ही मृग रुक गया और पेड़ के आस पास देखने लगा, हमारी नजरें मिली। यह मृग केवल पाँच यार्ड दूर था! समय को बर्बाद न करते हुए मृग ने उच्च गियर में स्थानांतरण किया। एक ऊंची पुकार के साथ, इसने पूरी गति के साथ दौड़ लगाई।

अब, मैं यह मानता हूँ कि मैं अच्छा निशानेबाज़ नहीं हूँ। एक सफ़ेद पुंछ वाले मृग पर निशाना साधते हुए जो अपनी पूरी तेज़ गति में मुझसे दूर भाग रहा था, इसमें मुझे कोई बड़ा लक्ष्य प्राप्त नहीं हुआ। दूसरी बात यह है, कि एक 30–06 के स्कोप आउट से ऑफ्हैन्ड निशाने को खींचना, यह कोई आसान बात नहीं थी। लेकिन जब मैंने ट्रिगर को खींचा, तब मृग गिर पड़ा और उसमें कोई हलचल न हुई। मैं अचंभित था! बंदूक की गूंज से, मेरा दोस्त बाहर आया और जैसे उसने इसे पड़ा हुआ देखा तब मेरे मृग शिकार के लिए मुझे बधाई दी। प्रभु ने जो मुझे बताया था वह मैंने अपने दोस्त को नहीं बताया था, लेकिन मैंने उसकी ओर देखकर कहा, "कि मुझे नहीं लगता कि यह हिरण मेरे महान शिकार की क्षमता के कारण मारा गया।"

मैंने कागज़ का टुकड़ा लिया जिस पर मैंने उस दिन लिखा था जिस दिन मैंने अपने शिकार के कोट में से एक चेक को लिखा था। इसमें लिखा था कि, "मुझे विश्वास है कि मैंने अपने 1987 के हिरण, को यीशु के नाम में प्राप्त कर लिया है।" मैंने उसमें दिनांक और समय लिखा था जिसके लिए मैंने प्रार्थना की थी। मैंने यह कागज़ अपने दोस्त को दिया और तब उसे बताने लगा कि प्रभु ने मुझसे क्या कहा था।

इस घटना ने मेरे ध्यान को आकर्षित किया था। नि:संदेह मैं जानता हूँ कि उस मृग को प्राप्त करना परमेश्वर का ही कार्य था। जब आप ऐसा कुछ देखते हैं, आपका मन अनुमान लगाने लगता है कि हो सकता है यह संयोग से हो गया हो। लेकिन पिछले 34 वर्षो से, मैंने इसी रीति से अपने हिरण को प्राप्त किया है जैसा मैंने 1987 में किया था, बिना असफल हुए, कई बार तो लकड़ियों में एक घंटे के अंदर इसे प्राप्त करता हूँ।

परमेश्वर ने उस दिन गन्नेसरत की झील में पतरस, याकूब और यूहन्ना तक पहुँचने के लिए इसी मार्ग का उपयोग किया। बाइबल कहती है कि जब वे देख रहे थे तब वे अचंभित हो गए।

*क्योंकि इतनी मछिलयों के पकड़े जाने से उसे और उसके साथियों को बहुत अचम्भा हुआ। और वैसे ही जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना को भी, जो शमौन के सहभागी थे, अचम्भा हुआ:*

*तब यीशु ने शमौन से कहा, मत डर: अब से तू मनुष्यों को जीवता पकड़ा करेगा। और व नावों को किनारे पर ले आए और सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए॥*

–लूका 5:9–11

वे इतने अचंभित थे कि वे सब कुछ छोड़ कर यीशु के पीछे चल दिए। उन्होंने सब बातों को करने का बेहतर तरीका जान लिया था, एक बेहतर तरीका।

जैसा परमेश्वर ने मुझे अपने राज्य के बारे में दिखाया था और कैसे बटुए का प्रबंध किया जाए (स्वर्ग में मेरे खज़ाने का प्रवेश मार्ग) जिसकी मुझे ज़रूरत है, मेरे हाथ में जो है उससे बढ़कर मेरे हृदय ने स्वर्गीय सामग्रियों में मेरे विश्वास को बढ़ा दिया है।

परमेश्वर ने मुझे सिखाया कि जिसकी मुझे आवश्यकता है उसके लिए मैं कुछ भी बो सकता हूँ, और वह मुझे पैसों को बनाने की योजना या इसे प्राप्त करने की योजना देगा।

मेरे पास यहाँ उन सारी अद्भुत बातों के बारे में बांटने का समय नहीं है जो मैंने राज्य के परिणाम के रूप में देखा है, लेकिन मैं यह कह सकता हूँ कि ड्रेनडा और मैंने आर्थिक रूप से कुछ अद्भुत बातें होते हुए देखी हैं। पूरी रीति से और सम्पूर्ण रीति से घटी में होने से लेकर आर्थिक रूप से मुक्त होने तक और वर्षो तक सेवकाई में लाखों की सहायता करने तक यह बेहत अद्भुत है।

जैसे मैं राज्य के बारे में सीखने लगा था, तब विशेष फसल के लिए विश्वास में बोना परमेश्वर द्वारा सिखाई गई पहली बात थी। हालांकि इस पुस्तक में सब कुछ सिखाने के लिए मेरे पास समय की कमी है, लेकिन मेरी अन्य पुस्तकों में, आपको कहानियाँ मिलेंगी कि राज्य कितना स्पष्ट है और आपके बीज को कितना स्पष्ट होना चाहिए। मेरी *वित्तीय क्रांति : प्रबंध का सामर्थ* यह पुस्तक आपके विश्वास को बढ़ाने के स्तरों को पूरा करती है और कैसे स्पष्ट रूप से आप बीज को बो सकते हैं इस पुस्तक से अधिक उस पुस्तक में बताया गया है। मैं आपको उत्साहित करूंगा कि इसकी एक कॉपी प्राप्त करें और इस विषय के बारे में और अधिक सीखें।

यह पुस्तक राज्य के कुछ मुख्य सिद्धांतों को सिखाता है जो परमेश्वर ने मुझे देने और उदार रहने के बारे में सिखाया था। मुझे आशा है कि यह सिद्धांत आपको प्रोत्साहित करेंगे और आपको अधिक सीखने के लिए प्रेरित करेंगे और जैसा परमेश्वर आपको बनाना चाहते हैं वैसा बनने में आपकी मदद करेंगे।

अध्याय 9

# माप का नियम

कई महीने पहले, ड्रेनडा और मैंने किसी अन्य सेवकाई में $15,000 बोए थे। जैसे मैं अपने विश्वास को कार्यरत करने वाला था, तब ही पवित्र आत्मा ने मुझे 2 कुरिन्थियों 9:10–11 के बारे में याद दिलाया, और मैं इस वचन को कुछ दिनों तक अपने दिमाग से निकाल नहीं पाया था।

> *सो जो बोने वाले को बीज, और भोजन के लिये रोटी देता है वह तुम्हें बीज देगा, और उसे फलवन्त करेगा; और तुम्हारे धर्म के फलों को बढ़ाएगा। कि तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिये जो हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करवाती है, धनवान किए जाओ।*
>
> –2 कुरिन्थियों 9:10–11

मैं उस भाग का अध्यनन कर रहा था, जहां यह कहता है कि परमेश्वर बोने वाले को बीज देता है और भोजन के लिए रोटी, और "भोजन के लिए रोटी" यह बात अचानक मुझे आकर्षित करने लगी। मैंने जाना कि कई लोग जब देना चाहते हैं, तो डर का सामना करते हैं क्योंकि वे इस पद को समझते नहीं। कई लोगों को लगता है कि जब वे देते हैं, तो वे ऐसा कुछ दे रहे हैं, जिसे देना उन्हें बहुत महंगा पड़ेगा। लेकिन परमेश्वर ने मुझे यह याद दिलाया कि न केवल वह बोने के लिए बीज देता है बल्कि वह भोजन के लिए रोटी भी देता है, या व्यक्तिगत रूप से एक व्यक्ति को जिस चीज़ की ज़रूरत होती है। नि:संदेह, मैं इसे पहले ही से जानता था, लेकिन मुझे लगा कि परमेश्वर चाहता है कि मैं लोगों को यह बताऊँ कि—वह दोनों ही देता है, और हमें देने के लिए डरने की कोई ज़रूरत नहीं है।

एक रात को, $15,000 बोने के कुछ सप्ताह बाद ही, मैं बस बत्ती बंद करके अपने सिर को बिस्तर पर रखने जा ही रहा था कि, अचानक, मेरे मन में कुछ स्टॉक्स को देखने का विचार आया, कि बाज़ार में उनकी कितनी बढ़त हो रही थी। जैसे ही मैंने

अपने अकाउंट को खोला, मैंने देखा कि इनमें से कुछ तो बढ़ गए थे।

मैं अपना फोन नीचे रखने ही वाला था कि मेरी दृष्टि एक ऐसे स्टॉक पर गई जिसे मैंने खरीदा नहीं था। मैंने इस स्टॉक को पहले देखा था, और एक बार इसे खरीदने से पहले मैंने इसके बारे में खोज भी की थी। लेकिन जब मैंने इसके पिछले प्रदर्शन के बारे में खोजबीन की, तब मैंने जाना कि पिछले 12 महीनों से यह नुकसान में था, तो मैंने इसे वहीं छोड़ दिया।

लेकिन किसी कारण से, इस रात को, यह स्टॉक मुझे बड़ा आकर्षित कर रहा था। अद्भुत रूप से, मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मुझे इसमें से कुछ खरीद लेना चाहिए, जो मेरे व्यक्तित्व से एकदम अलग सा था। तो, मैंने आगे बढ़कर इस स्टॉक में $1,500 की खरीदारी की और फिर अपना फ़ोन रख दिया।

मैंने और ड्रेनडा ने कुछ समय तक बातें की, और मैंने उसे इस स्टॉक के बारे में बताया जो मैंने खरीदा था। फिर, मैंने उसे दिखाने के लिए अपना फोन उठाया। जब मैंने इसे देखा, मैं दंग रह गया था। यह एक घंटे में पूरा 100 प्रतिशत बढ़ गया था! जैसे हम गिनती को ऊपर जाते हुए देख रहे थे हम जागते रहे और बाते करते रहे।

अगले तीन घंटों में, यह स्टॉक बढ़ते हुए $17,000 के स्तर तक हो गया, जहां यह रुक गया। फिर मैंने ड्रेनडा को बताया कि, "यह हमारा $15,000 है!"

मैंने तुरंत उस स्टॉक को बेच दिया और बढ़त को प्राप्त कर ली। अगली सुबह को स्टॉक की बढ़त फिर से नीचे चली गई थी और उस घटना के बाद इतने महीनों में फिर कभी इस स्टॉक ने उस स्तर की बढ़त को हासिल नहीं किया। यह सबसे अजीब बात थी जो मैंने देखी। मैं जानता हूँ कि यह पवित्र आत्मा था जिसने मुझे उस स्टॉक को प्रकाशित किया, और मैंने ड्रेनडा से कहा कि इसके द्वारा परमेश्वर हमारे बीज को लौटा रहा था। परमेश्वर बोने वाले को बीज देता है, और वह भोजन के लिए रोटी देता है! क्या आप जानते हैं, मुझे परवाह नहीं कि वह इसे कैसे करता है, लेकिन वह इसे हमेशा करता है!

लेकिन यह मेरे लिए बहुत दिलचस्प था। उस स्टॉक को बेचने के बाद और मेरे अकाउंट में धन प्राप्त करने के बाद, मैंने सोचा, कि *अगर मुझे पता होता कि यह इतना ऊपर जाएगा, तो मैं $1,500 से अधिक डालता*। 20/20 के दर्शन को देखते हुए। हाँ, मैं $10,000 इसमें डाल सकता था, या फिर आपका मन यह विचार करता है कि, *क्या होता अगर मैं इसमें $100,000 डालता? उस रकम के बारे में सोचें जो मैं इस निवेश के द्वारा प्राप्त करता।* लेकिन मैंने इसमें $100,000 नहीं डाले। न ही मैंने इसमें $10,000 डाले। मैंने इसमें $5,000 भी नहीं डाले; मैंने सिर्फ $1,500 डाले। मेरा मुनाफा सीमित हो गया था। मैंने $1,500 डाले, और मुझे अधिक बढ़त

मिलती तो और अच्छा लगता लेकिन मैंने इसमें केवल $1,500 ही डाले थे।

बाइबल हमें लूका 6:38 में बताती है कि मैंने उस रात और अधिक धन को क्यों नहीं कमाया।

> *दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा: लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा॥*
>
> –लूका 6:38

देखिए, मैंने जो माप ठहराया, मेरे माप के अनुसार ही मुझे वापिस प्राप्त हुआ—उस रात जो सामर्थ मुझे प्राप्त होनी वाली थी, वह मेरे देने से सीधा संबंधित था। मैंने माप को ठहराया, और उसी माप से, मैंने मुनाफे को पाया। यीशु कहता है कि यही सिद्धांत आपके देने पर भी लागू होता है।

बाइबल में एक कहानी है जिसके बारे में मैं आपको बताना चाहता हूँ। हम इस कहानी से माप के नियम के बारे में काफी कुछ सीख सकते हैं।

> *विष्यद्वक्ताओं के चेलों की पत्नियों में से एक स्त्री ने एलीशा की दोहाई देकर कहा, तेरा दास मेरा पति मर गया, और तू जानता है कि वह यहोवा का भय माननेवाला था, और जिसका वह कर्जदार था वह आया है कि मेरे दोनों पुत्रों को अपने दास बनाने के लिये ले जाए।*
>
> *एलीशा ने उस से पूछा, मैं तेरे लिये क्या करूं? मुझ से कह, कि तेरे घर में क्या है?*
>
> *उसने कहा, तेरी दासी के घर में एक हांड़ी तेल को छोड़ और कुछ तहीं है।*
>
> *उसने कहा, तू बाहर जा कर अपनी सब पड़ोसियों खाली बरतन मांग ले आ, और थोड़े बरतन न लाना। फिर तू अपने बेटों समेत अपने घर में जा, और द्वार बन्द कर के उन सब बरतनों में तेल उण्डेल देना, और जो भर जाए उन्हें अलग रखना।*
>
> *तब वह उसके पास से चली गई, और अपने बेटों समेत अपने घर जा कर द्वार बन्द किया; तब वे तो उसके पास बरतन लाते गए और वह उण्डेलती गई। जब बरतन भर गए, तब उसने अपने बेटे से कहा, मेरे पास एक और भी ले आ,*
>
> *उसने उस से कहा, और बरतन तो नहीं रहा। तब तेल थम गया।*
>
> *तब उसने जा कर परमेश्वर के भक्त को यह बता दिया। ओर उसने कहा,*

*जा तेल बेच कर ऋण भर दे; और जो रह जाए, उस से तू अपने पुत्रों सहित अपना निर्वाह करना।*

–2 राजा 4:1–7

यह एक महान कहानी है जिसमें राज्य का बहुत सारा प्रकाशन छिपा हुआ है।

एक स्त्री भविष्यवक्ता के पास मदद के लिए जाती है। यह स्त्री कर्ज़ में है और अपने लड़कों को खोने वाली है। लेकिन दिलचस्प रूप से, भविष्यवक्ता अपने भंडार में से धन निकालकर नहीं देता है। बल्कि, वह उस परिस्थिति में बड़ा ही अजीब सवाल पूछता है: "तेरे घर में क्या है?"

मुझे लगता है कि इस प्रश्न ने उस स्त्री को चौंका दिया था क्योंकि आप उस स्त्री के उत्तर में आश्चर्य को देखते हैं। उसने कहा कि "मेरे पास कुछ नहीं है!"। उसने "कुछ नहीं" इस बात पर ज़ोर दिया है। लेकिन वह बताती है कि उसके पास है। उसके पास ज़्यादा कुछ नहीं था, बस थोड़ी मात्रा में जैतून का तेल था। भविष्यवक्ता को यही सुनना था। यही तो वह उत्तर था। लेकिन उसने जो निर्देश दिए उस पर ध्यान दें।

*उसने कहा, तू बाहर जा कर अपनी सब पड़ोसियों खाली बरतन मांग ले आ, और थोड़े बरतन न लाना।*

थोड़े बर्तन न लाना। तो यह कितने थे? मुझे लगता है आप सहमत होंगे कि, उसे कितने बर्तन इकट्ठा करने चाहिए थे यह बात वाद विवाद का एक विषय बन सकती है क्योंकि केवल वह स्त्री ही परिभाषित कर सकती है कि उसके लिए यह कितना मायने रखता था। उसे जल्द ही यह पता चलने वाला था कि उसने पर्याप्त बर्तन इकट्ठा नहीं किए।

*तब वह उसके पास से चली गई, और अपने बेटों समेत अपने घर जा कर द्वार बन्द किया; तब वे तो उसके पास बरतन लाते गए और वह उण्डेलती गई। जब बरतन भर गए, तब उसने अपने बेटे से कहा, मेरे पास एक और भी ले आ, उसने उस से कहा, और बरतन तो नहीं रहा। तब तेल थम गया।*

ध्यान दीजिए कि तेल बहना बंद हो गया था—बर्तनों की कोई खास गिनती के कारण नहीं बल्कि बर्तनों के समाप्त होने के कारण। जब सब बर्तन भर गए थे, तब उसने अपने बेटे से एक और बर्तन लाने के लिए कहा, लेकिन उसने बताया कि अब कोई भी बर्तन नहीं बचा था। मुझे यकीन है कि वह अपने कार्य को जारी रखना पसंद

करती, लेकिन उसने इतने ही बर्तन इकट्ठा किए थे। उसकी बढ़त परमेश्वर के द्वारा नहीं बल्कि उसकी अपनी सोच के द्वारा रुक गई थी।

निश्चयी उसे इच्छा होगी कि काश उसके पास और बर्तन होते, बहुत सारे बर्तन। और यदि वह पहले ही यह समझ जाती कि क्या होने वाला है, तो मुझे लगता है कि वह पूरे शहर में हर दरवाज़े को खटखटाकर बर्तनों को इकट्ठा कर लेती। हो सकता है वह बर्तनों को इकट्ठा करने के लिए अन्य शहरों में भी विनती को भेजती।

इस कहानी का परिणाम तो अच्छा ही हुआ : उसके कर्ज़ का भुगतान हुआ, और तेल को बेचने के बाद जो कुछ बच गया उससे उसके परिवार का गुज़ारा हुआ।

लेकिन यदि उसके पास ज़्यादा होता तो इसका परिणाम क्या होता? वह *सारे* लोगों का कर्ज़ चुका कर, एक बड़े टाउन स्क्वेर को बनाती, और कई लोगों की मदद भी करती।

तो उसने सिर्फ उतने ही बर्तन क्यों इकट्ठा किए? जहां तक मुझे लगता है उत्तर यह है कि उसकी मानसिकता केवल गुज़ारा करने की थी। वह सिर्फ उस तनाव के मुद्दे पर केंद्रित थी—यानि वह जिस कर्ज़ में थी और उसके बेटों का पालन पोषण करने के लिए उसे जितनी ज़रूरत थी उसने उतना ही सोचा था। उस दबाव के आगे सोचने के बजाय, वह बस इससे छुटकारा पाने पर ध्यान दे रही थी। मुझे लगता है कि अगर वह हज़ार बर्तनों को भी इकट्ठा करती तो, वे सब भर दिए जाते। लेकिन उसने खुद अपने माप को ठहराया!

परमेश्वर हम सबको यही अवसर देता है जैसा उसने उस स्त्री को दिया था। हम सबको इसका चुनाव करना चाहिए कि हम कितने माप को ठहराएंगे।

जैसे हम इस अध्याय के मुख्य वचन को देखते हैं, मैं आपको कुछ समझाना चाहता हूँ।

> *दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा: लोग पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा॥*
>
> –लूका 6:38

मैं सबको इस वचन के पहले भाग का, विवरण देना चाहता हूँ—कि यदि हम देंगे, तो उमड़ती हुई बहुतायत को प्राप्त करेंगे। लेकिन कई बार, हम आखरी भाग को पढ़ने में असफल हो जाते हैं, यह भाग कहता है कि *जिस माप से हमने दिया है, हम वैसा ही* काटेंगे।

यह सिद्धांत आपके और मेरे लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों है? आइए मैं आपको एक उद्धारण देता हूँ।

मान लीजिए कि आप एक किसान है जिसने अभी शुरुआत की है, और मैंने आपसे कहा था कि मुझे गेंहू के 5000 बुशल खरीदने हैं। मैं और आप प्रति बुशल के एक दाम पर सहमत हुए, और आपने फसल के लिए अपनी 10 एकड़ की भूमि पर गेंहू बोना शुरू कर दिया।

मुझे लगता है आप जानते हैं कि इसका परिणाम क्या होगा। हमारे अनुबंध को पूरा करने के लिए जितने बुशल गेंहू की मांग है उसे आप पूरा नहीं कर पाएंगे। क्यों? क्योंकि आपको यह नहीं पता कि गेंहू के 5,000 बुशल के लिए कितनी एकड़ भूमि की ज़रूरत होती है।

## कितने मसीही हैं जो बाज़ार तक अपनी फसल को पहुंचाने के लिए ट्रकों को तैयार कर रहे हैं लेकिन उन्होंने टमाटर के केवल दो ही पौधे लगाए हैं?

किसान के उद्धारण में जो माप है, इसकी तुलना उतनी एकड़ भूमि की गिनती है जिसमें उसने उगाया है। उस स्त्री के किस्से में, यह बर्तनों की गिनती थी जो उसने इकट्ठा किए थे। यीशु के उद्धारण में, यह हमारे बोने की मात्रा है।

तो, यदि जिस फसल की अपेक्षा हम कर रहे हैं उस माप के साथ जो हमने ठहराया है संभव नहीं है, तो हम निराश हो जाते हैं, और संभव है कि छोटी समझ के लोग परमेश्वर पर उसके वचन की असफलता के लिए भी दोष लगाएंगे।

तो यहाँ पर करोड़ों डॉलर का प्रश्न है: यदि किसी किसान को गेंहू के 5000 बुशल की ज़रूरत है और उसे नहीं पता कि उसे कितने एकड़ भूमि में उगाना होगा, तब उसे क्या करना चाहिए?

## ऐसे किसान से पूछें जिसे पता है!

अब इस सिद्धांत को वास्तविक जीवन में लागू करें।

यदि एक परिवार को $300,000 का कर्ज़ चुकाना है, और वे जानते हैं कि उन्हें बीज बोने की और एक दम्पत्ति होने के नाते सहमत होकर विश्वास करने की ज़रूरत है। लेकिन उन्हें कितना बोना चाहिए? मेरे पास अक्सर यह प्रश्न आता है। उन्हें $300,000 की फसल के माप को ठहराने के लिए कितना बोने की ज़रूरत है? उन्हें इसका कोई अंदाज़ा नहीं है। इसलिए उन्हें किसी ऐसे व्यक्ति से पूछना होगा जो यह जानता हो, और वह है पवित्र आत्मा।

हम सब ने कई बार पवित्र आत्मा को प्रश्नों का उत्तर देते हुए सुना है। अक्सर

अच्छी शिक्षा के बिना, हम उस धीमी सी आवाज़ को अनसुना करते है यह कहते हुए कि हम यह नहीं कर सकते। उद्धारण के लिए, जैसे आप एक्सवाईजेड के लिए बो रहे हैं, और आपको ऐसा लगा कि आपको $1,000 बोना चाहिए। अचानक आपका मन बीच में बोलता है कि, "नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता" या इससे भी बदतर कहता है कि, "हे शैतान, दूर हो जा।"

एक बात जिसके लिए आप निश्चित हो सकते हैं वह यह है कि शैतान कभी आपको परमेश्वर के राज्य में ज़्यादा बोने के लिए नहीं कहेगा। वह राज्य के नियमों से पूरी तरह से परिचित है। तो, इस मामले में, क्योंकि आपने अभी माप को तय करने के सिद्धांत में विश्वास उत्पन्न नहीं किया है, इसलिए जब आपका मन वाद विवाद करे, तब आप दीजिए और अपने सामान्य $100 ही दीजिए। और, नि:संदेह, गेंहू के उद्धारण के समान, आपकी फसल में घटी को देखेंगे।

अब इससे पहले कि मैं आगे बढ़ूँ, मुझे एक बात स्पष्ट करनी है:

आप जो दे रहे हैं वह इससे तय नहीं होता कि आप कितनी राशि को बो रहे हैं!

लूका 21:1–4 को देखें :

> *फिर उस ने आंख उठाकर धनवानों को अपना अपना दान भण्डार में डालते देखा। और उस ने एक कंगाल विधवा को भी उस में दो दमडिय़ां डालते देखा। तब उस ने कहा; मैं तुम से सच कहता हूं कि इस कंगाल विधवा ने सब से बढ़कर डाला है। क्योंकि उन सब ने अपनी अपनी बढ़ती में से दान में कुछ डाला है, परन्तु इस ने अपनी घटी में से अपनी सारी जीविका डाल दी है॥*

ध्यान दीजिए कि यीशु ने कहा उस दिन जितने धनवानों ने बहुत सारे दान दिए उससे अधिक इस दरिद्र विधवा ने दिया है। धनवानों के पास और अधिक धन था, लेकिन बाइबल कहती है कि उन्होंने अपनी बहुतायत में से दिया, या हम कह सकते है कि अपने अतिरिक्त धन में से दिया। लेकिन उस विधवा ने अपने सम्पूर्ण जीवन से दे दिया और इसमें एक महान विश्वास का उपयोग हुआ है।

अधिक में से देने के लिए कोई विश्वास की ज़रूरत नहीं होती। नि:संदेह, आपकी बहुतायत में से उदारता से देना एक भली बात है, लेकिन उस दिन, लोग देख सकते थे कि सभी क्या दे रहे थे, और धनी लोग, अक्सर, लोगों को दिखाने के लिए और अपने लोगों के बीच धार्मिक पदवी प्राप्त करने के लिए देते थे।

तो माप को तय करने की सही परिभाषा यह नहीं कि हम कितने धन देते हैं। यह इसका बहुत बड़ा भाग है लेकिन यह केवल एक मात्र ज़रूरत नहीं है।

हमें यह याद रखना है कि जो बात एक व्यक्ति के लिए "बड़ी" हो वह ज़रूरी नहीं कि दूसरे के लिए भी उतनी ही बड़ी होगी।

पिछले दिनों में, हज़ारों डॉलरों को देना, मेरे लिए **बड़ी** धन राशि थी। वास्तव में, जब हमने शुरुवात की, हमें कुछ महीनों के लिए इसे दान के रूप में देना पड़ा। लेकिन जैसे हमारी क्षमता बढ़ती गई, और जैसे हमारा विश्वास और भरोसा बढ़ता गया हम और अधिक दे पा रहे हैं।

मैं लोगों को यह कहता हूँ: कि जब आप किसी प्रबंध के लिए बोते हैं, तब कुछ समय लें और पवित्र आत्मा से पूछें कि कितना बोना है और कहाँ बोना है।

अक्सर, प्रतिदिन की ज़रूरतों के लिए अधिक विश्वास नहीं लगता बल्कि विशाल छुटकारों के लिए अधिक विश्वास की आवश्यकता होती है, जैसे आपके घर के भुगतान के लिए आपको अधिक विश्वास चाहिए। जब मैं बड़ी बातों के लिए बोता हूँ, तब मैं चाहता हूँ कि मैं इसे *महसूस* करूँ। मेरे कहने का मतलब है कि मुझे अतिरिक्त पैसों में से नहीं देना है। मुझे इतना बोना है कि मुझे इसमें विश्वास की हलचल *महसूस* हो। रकम इतनी बड़ी होनी चाहिए कि मेरा देह बेचैन हो जाए और मेरा मन मुझसे कहने लगे कि, *क्या सच में तुम इतना देना चाहते हो?*

मैंने जाना है कि जब आप पवित्र आत्मा से पूछेंगे तो वह आपको रकम बताएगा; बस इस बात के लिए निश्चित हो जाए कि आप सच में उसकी सुनना चाहते हैं।

मुझे अक्सर इस क्षेत्र में मदद की ज़रूरत होती है। क्योंकि मैं बिल भरता हूँ, ड्रेनडा के लिए पवित्र आत्मा से यह सुनना कि हमें कितना बोना चाहिए आसान होता है और उसे कोई संदेह नहीं होता है। क्या आपको फैथ लाइफ कॅम्पस में पहली बार बोए गए $200,000 की वह कहानी याद है?

वैसे, मैंने आपको उस कहानी की बाकी बातें नहीं बताई थी। यह तीन वर्षों का समर्पण था, कोई कर्ज़ नहीं बल्कि एक लक्ष्य जिसे हमने समय पूरा होने तक देने के लिए तय किया था। जब वह दिन आया तब हम अपने इरादों को स्पष्ट कर रहे थे और हमने अपने बीज को बोया, मैं सच में सिर्फ $150,000 देना चाहता था। लेकिन ड्रेनडा ने मुझे बताया कि उसने सुना कि हमें $200,000 देना चाहिए। मैंने उसकी बात को अनसुना किया और अपने $150,000 पर बना रहा। असली सभा में, उसने फिर मुझसे विनती की कि हम $200,000 देंगे, लेकिन मैंने फिर से इंकार किया।

उस दिन हमारे बीज बोने के पहले ही, मेरी कलीसिया में एक किसान खड़ा हुआ और उसने बोलने की अनुमति मांगी। उसने सभी को उत्साहित किया कि वह अपनी फसलों के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखें। वह समझाने लगा कि, एक किसान होने के नाते, वह गुज़ारा करने के लिए बोने और काटने के नियमों पर निर्भर है और उसने

पाया कि यह नियम भरोसेमंद है। फिर वह कहने लगा कि, पहली बार, जब आप $200,000 देंगे तो आपको यह गंदगी में फेंकने के समान, मूर्खता का कार्य लगेगा क्योंकि एक बार इसे फेंक दिया तो, इसे वापस प्राप्त करने का कोई तरीका दिखाई नहीं देगा। लेकिन उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि, बोने और काटने का नियम हमेशा ऐसी फसल के साथ प्रबल होता है, जो खेत में बोने के लिए खर्च किए गये, $200,000 से बहुत बड़ी होती है।

ड्रेनडा ने मुझे धीरे से धक्का दिया। और मैंने इस इशारे को समझ लिया ---- यह $200,000 था, और हमने इतना ही बोया। और क्या आपको याद है कैसे परमेश्वर ने उस उपराष्ट्रपति को उस वर्ष हमें जल्दी मुनाफा देने के लिए उत्तेजित किया था ---- वह रकम भी $200,000 की थी। हमें इस बीज को बोने के लिए कुछ भी कीमत नहीं चुकानी पड़ी। जैसे मैंने पिछले अध्याय में बताया कि, वह मुनाफा इतने वर्षो से आज तक वैसा ही है और इसने हमें $2 मिलियन की आय दी।

देखिए, ड्रेनडा को सारे बिल की जानकारी नहीं थी, जिसके कारण उसके मन में डर का कोई स्थान नहीं था। उसने बस परमेश्वर की आवाज़ को सुना था। और सच में, मुझे भी बस यही करना चाहिए था। लेकिन यह पहली बार था जब हमने उस रकम के आस पास कुछ बोया था, जब मैं $150,000 को थामे हुए था, तो हाँ, मैं डर को स्थान दे रहा था। मैं अपनी पत्नी के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ, जिसने मुझे उस बड़ी रकम के लिए परमेश्वर पर भरोसा करने के लिए उत्साहित किया।

बोने के लिए *हमेशा* विश्वास की आवश्यकता होती है, *हमेशा*। तो आइए हम परमेश्वर से उन सारी फसलों को प्राप्त करें और डर को इसे प्राप्त करने से रोकने न दें।

> *इसे याद रखें: जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा।*
>
> –2 कुरिन्थीयों 9:6

इस पद में, पौलूस किसी दूसरी कलीसिया के लिए दान ले रहा है, और वह लोगों को उस सिद्धांत के बारे में याद दिला रहा है जो उसने उन्हें पहले ही सिखाया था, कि वे जो बोएँगे और जिस माप से बोएंगे वही काटेंगे। पौलूस माप को तय करने के सिद्धांत को बताता है।

जब पतरस ने उस दिन झील पर यीशु को अपनी नाव दी, हमने देखा कि याकूब और यूहन्न दोनों कि नावें पतरस के साथ उनकी साझेदारी के कारण, उसी फसल से भर गई थी जिसे पतरस के विश्वास ने लाया था। लेकिन मैं आपसे यह पूछना चाहता हूँ

कि: यदि पतरस के पास उसके व्यवसाय में उस दिन 1,000 नावें होती, तब कितनी नावें भर जाती?

यदि आपने 1,000 कहा, तो आप सही हैं।

फिर से, हम देखते हैं कि एक माप यहाँ तय किया गया था। माप वह *बर्तन* है जिसे परमेश्वर भर सकता है। तो, मैं आपको बड़े दर्शन के साथ माप को तय करने के लिए उत्साहित करूंगा। आप पीछे मुड़कर यह कहना नहीं चाहेंगे कि, "वाह, यह स्टॉक तीन घंटों में हज़ार प्रतिशत बढ़ गया। काश मैंने इसमें और डाला होता।"

तो, उस रात पवित्र आत्मा द्वारा खरीदने के लिए बताए जाने के बावजूद मुझे किसने सिर्फ $1,500 डालने के लिए कहा था? वैसे, मेरे मामले में, ऐसा है कि मैंने परमेश्वर से रकम के बारे में नहीं पूछा था। मैं बस अपने मन के अनुसार काम कर रहा था, और मैंने परमेश्वर की आवाज़ को खो दिया।

अब, कृपया करके इस कहानी के कारण बाहर जाकर स्टॉक का झुंड न खरीदें। जैसे मैंने पहले भी बताया है, कि मैं निवेश बाज़ार में अधिक पैसे नहीं डालता। लेकिन परमेश्वर ने उस रात अपनी बात को साबित किया—वह बोनेवाले को बीज देता है और भोजन के लिए रोटी, और यह हमें याद दिलाता है कि *हम* अपने माप को तय करें।

अगली बार जब परमेश्वर किसी कार्य में देने के लिए कहें तो मुझे आशा है कि आपको यह कहानी याद रहेगी।

आइए हम परमेश्वर को हमें प्रशिक्षित करने की अनुमति दें।

मुझे याद है जब फ्लोरिडा में 2009 के धमाके में संपत्ति की कीमतों में गिरावट आई थी। तब तट के पास हमारे कुछ दोस्त रहते थे, और हम उनसे अक्सर मिला करते थे। उस समय में, सम्पूर्ण फ्लोरिडा में घर बिक्री के लिए तैयार खड़े थे। एक दिन जैसे हम समुद्र तट पर हम अपने दोस्त के साथ बाते कर रहे थे, उसने कहा, "मैं आपको कुछ दिखाना चाहता हूँ।"

हम एक घर की ओर चलकर गए जिस पर बिक्री का चिन्ह था। उस संपत्ति पर दो घरों की कीमत सिर्फ $695,000 थी। (हाँ, आप इसे सही पढ़ रहे हैं, समुद्र तट पर दो घर $695,000 में। और इसमें सामान भी था। मुझे लगता है हम दोनों सहमत होंगे कि यह तो एक लूट है।) एक को किराए पर दिया गया था और यह बड़ी रकम को भी उत्पन्न कर रहा था, क्योंकि यह घर समुद्री तट पर थे। लेकिन उस समय मैं इतने धन को खर्च करने के बारे में बिल्कुल भी नहीं सोच रहा था, और मैंने उन्हें नहीं खरीदा। (मैं जानता हूँ मैं जानता हूँ कि यह कोई समझदारी की बात नहीं है।) मेरे दोस्त के पास पहले ही से कई घर थे और उस समय उसे दो और घरों की रखवाली नहीं करनी थी। मेरा मतलब है कि, वह हमें सीधा उन घरों के पास ले गया। ऐसा हर दिन

नहीं होता कि कोई अरबपति आपको इस प्रकार के स्थान मे ले जाकर कहे कि, "मैं ऐसा ही करता।" नि:संदेह ड्रेनडा तो कह रही थी कि हमें यह खरीदना चाहिए लेकिन मैं अपनी बात से हिला नहीं।

आप इसके परिणाम का अनुमान लगा सकते हैं। वह दो घर कुछ वर्षो बाद $3 मिलियन में बेचे गए थे।

**तो जब आप बोते और अपने माप को तय करते हैं तब डर को बोलने का मौका न दें। साहसी हो जाएं।**

क्या आप जानते हैं कि सबसे निराशाजनक और खराब बात क्या थी? कि मैंने उस दिन उसके बारे में प्रार्थना भी नहीं की। मैंने पवित्र आत्मा की बुद्धि को अलग अनदेखा किया। मैंने अपनी पत्नी और अपने दोस्त के ज्ञान को अनदेखा किया, जो कि बहुत बुद्धिमान हैं। मैंने फिर भी यह नहीं कहा क्योंकि मैं जानता था कि उस समय अर्थव्यवस्था के घटने के साथ इसमें हमारे सारा नकद धन चला जाएगा, मुझे ऐसा करने में उलझन हो रही थी। लेकिन जैसे मैंने कहा, मैंने परमेश्वर से इसके बारे में नहीं पूछा था, जो कि सबसे महंगी गलती थी।

दुर्भाग्यवश, मैंने कई फसलों (सब नहीं लेकिन बहुत सारी) को खो दिया, और परमेश्वर ने इस विषय में मेरे साथ व्यवहार किया।

एक दिन कई वर्ष पहले,जैसे ड्रेनडा रिज़ॉर्ट में ही थी, वह अचानक भागते हुए केनेथ कोपलेंड की ओर गई, और उन्होंने अपने और अपनी पत्नी ग्लोरिया के साथ ड्रेनडा को नाश्ते पर आमंत्रित किया।

मेज़ पर, केनेथ ने कहा कि उनके पास ड्रेनडा और मेरे लिए एक वचन है। ड्रेनडा ने इसे मेरे लिए अपने फोन पर रिकार्ड कर लिया क्योंकि उस यात्रा में मैं उसके साथ नहीं था। उन्होंने ऐसा कुछ कहा था:

> "मैंने आपके पास कई घर और ज़मीनें लाई, लेकिन आपने मुझे अनुमति नहीं दी।"

वाह, यह तो एक डांट थी। लेकिन जैसे मैं कई सारी बातों के बारे में सोच रहा था जिसके लिए मैंने ना कहा, मैंने अपनी गलती को जाना। तो, मैंने ठान लिया कि उस दिन से, मैं फिर कभी अपनी फसल को नहीं खोऊँगा। जैसे ही मैंने यह निर्णय लिया, यह अद्भुत था कि परमेश्वर ने मेरे पास वो सारी चीजें लाई जिसके लिए मैंने बोया था।

तो जब आप बोते और अपने माप को तय करते हैं तब डर को बोलने का मौका न

दें। साहसी हो जाएं। आपको पता भी नहीं चलेगा कि कैसे परमेश्वर इन सारी बातों को पूरा करेंगे, जैसे 2 राजा 4 में उस स्त्री ने भी कल्पना नहीं की होगी कि वह तेल बहता ही रहेगा। अगर ऐसा होता, तो उसकी कहानी एकदम सम्पूर्ण रीति से कुछ अलग ही होती। हम आज तक उस विधवा के तेल के उस व्यवसाय के बारे में पढ़ते हैं, जिसके कारण वह अरबपति बन गई। अंतत: याद रखें कि आप हमेशा महान और इससे भी महान फसल में बोते रहेंगे। आप कल की फसल से आज जी रहे हैं, तो जब आप बोएंगे तब इस बात को याद रखें।

यह भी याद रखें कि, बोने के तुरंत बाद हमेशा अंधकार जैसा होता है। बीज का भंडार खाली सा लगता है और पौधे अब तक बढ़ते हुए दिखाई नहीं देते। लेकिन आप परमेश्वर के वचन को थामे रहें, और मजबूती से खड़े रहें, और परमेश्वर जिस फसल को आप तक ला रहा है उसके विषय में जानकारी और दिशा निर्देश के लिए आत्मा में प्रार्थना करें।

मैं इस कहानी का अंत एक कहानी के साथ करना चाहता हूँ जिसे मैंने कई बार बताया है लेकिन इसे दोहराना ज़रूरी है। इसमें मेरा एक विक्रेता है, वर्षों पहले, जब मैं माप को तय करने के सिद्धांत को सीख रहा था। वह नए घर को बना रहा था, और जैसे नए घर के बनाने में होता है, बजट काफी ऊपर चला गया था। अक्सर कुछ न कुछ जोड़ा या बदला जाता है जिससे अंतिम कीमत बढ़ जाती है।

वैसे, इस मामले में, मेरे दोस्त ने पहले ही बैंक द्वारा दिया गया सारा धन समाप्त कर दिया था, और उसके पास कमी हो गई। यदि मैं ध्यान से याद करूँ तो, उसके पास रसोई के केबिन के लिए भी पैसे नहीं थे। मुझे लगता है उसे कुछ लगभग $25,000 कम पड़ गए थे।

एक रात को, मेरा एक प्रतिनिधि दूसरे प्रतिनिधि के साथ जो घर बना रहा था, एक आराधना सभा में गया। संदेश के अंत में, प्रचारक किसी विशेष कारण के लिए दान ले रहा था, मुझे इसकी जानकारी नहीं है, लेकिन जो बिक्री प्रतिनिधि घर बनाने वाले दूसरे प्रतिनिधि के साथ गया था, वह उस रात किसी बात को लेकर संघर्ष कर रहा था।

तब उसने बताया कि वह व्यक्ति जो उसका घर बना रहा था कलीसिया के सामने की ओर गया और अपने दान को दिया और फिर पीछे आकर अपनी सीट पर बैठ गया। लेकिन वह परेशान लग रहा था। उसने फिर मुझे बताया कि वह व्यक्ति उठा और फिर से आगे की ओर गया और फिर कुछ पैसे दिए। वापिस अपनी सीट पर आते हुए, इस बार वह और परेशान दिखाई दिया। कुछ मिनट तक वह बैठा रहा, और फिर, एक तड़प के साथ वह फिर से आगे की ओर गया और फिर से अधिक दान दिया। इस बार

जब वह वापिस आया, तब वह शांत लग रहा था और उसकी परेशानी चली गई थी।

उस महीने, वह प्रतिनिधि जो घर बना रहा था उसने गवाही दी कि उस रात वह उस धन को बो रहा था जिसकी ज़रूरत उसे उस रसोई केबिन का भुगतान करने के लिए थी। अगर मैं ठीक से याद करूँ तो, निर्माता ने केबिन को 50% की छूट दी, जिससे वह व्यवसाय को पूरा करके उस अंतिम बिल का भुगतान कर सका।

तो उस रात क्या हो रहा था: प्रतिनिधि जो मेरे दोस्त का घर बना रहा था उसने मुझे बताया कि जब तक उसने तीसरी बार उठकर सब कुछ नहीं दे दिया तब तक उसके मन में शांति नहीं थी। देखिए, वह $25,000 का भुगतान करने के लिए प्रार्थना कर रहा था, और पवित्र आत्मा उस फसल को लाने के लिए माप को तय करने में उसका मार्गदर्शन कर रहा था।

तो, अगली बार जब आप बीज को बोए तब राज्य के इस बेहत महत्वपूर्ण नियम को याद रखें, जो है माप का नियम।

अध्याय 10

# एक उदार राजा

मुझे यकीन है कि हमने यह किया है। यदि कोई हमारे पास आकर हमें बधाई देता है तो हम उसे कहते हैं कि, "ओ, मैंने तो इसे गराज की बिक्री से $5 में खरीदा है।"

हम ऐसा क्यों कहते हैं? हमारे पास यदि कोई अच्छी वस्तु है तो इससे हमें शर्म क्यों आती है? यह दिलचस्प और दुखद भी है कि जब हमने इस देश में 20 वर्ष पहले अपने नए घर का निर्माण किया, हमने असल में प्रार्थना की कि यह अंदर से बड़ा दिखाई दे और बाहर से छोटा दिखाई दे। हम तो नए पास्टर थे, और हमें लगा कि अगर हम एक बड़ा घर बनाएंगे तो लोगों को ठेस पहुंचेगी। उस समय, हम किसी कलीसिया से आय नहीं ले रहे थे—हम घर बनाने के लिए जिस धन का उपयोग कर रहे थे वह हमारे व्यवसाय का ही था—लेकिन कुछ कारण से, हमें लगा कि लोग ऐसा सोचेंगे कि हमने यह धन कलीसिया से लिया है। तो, हमने 7,700 वर्ग फुट के स्थान में घर बनाया, लेकिन यदि आप घर को देखेंगे तो, यह एक साधारण दो मंजिला घर की तरह दिखाई देता है।

बाद में, हमने यह जाना कि हम कितने मूर्ख थे। हम परमेश्वर की आशीष से क्यों शर्म करें?

मैंने इसी समानता का उपयोग अपनी सभाओ में किया।

मान लीजिए कि मैं गंदे मैले कपड़े पहनकर रेंगते हुए मंच पर आकर यह ऐलान करता हूँ कि आज उत्सव का दिन है; आज मैंने और ड्रेनडा ने घर का भुगतान कर दिया है। फिर यदि मैं यह कहूँ कि हमने इसे बनाने के लिए बहुत मेहनत की (कभी कभी सप्ताह में 80 घंटे), लेकिन हमने यह कर दिखाया।

सभी इस पर तालियाँ बजाएंगे और शोर मचाएंगे। क्यों? क्योंकि किसी ने सच में प्रणाली को हरा दिया है। अब यह एक तरीका है।

लेकिन यदि मैं मंच पर आकर यह कहूँ कि, "आज, एक अनजान व्यक्ति मेरे पास आया और उसने मुझे $1 मिलियन दिए, और तब हमने अपने घर का पूरा भुगतान कर दिया।"

सभी यह कहेंगे कि यह सही नहीं था। क्यों? क्योंकि हम इसी पृथ्वी पर दर्दनाक परिश्रम और पसीने के श्राप की प्रणाली में बड़े हुए हैं। इसी रीति से हमें अपने प्रबंध को प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है। नि:संदेह यह गुलामी की प्रणाली है, क्योंकि अधिकतर लोग असली आर्थिक स्वतंत्रता का अनुभव कभी नहीं करते हैं। और इसी कारण, अधिकतर लोग अपने असली उद्देश्य, अपने आत्मिक डीएनए को नहीं ढूंढ पाते, अधिकतर आर्थिक निर्णय *धन* के आस पास बनाया जाते हैं न कि *उद्देश्य* के आस पास। लोग अपने स्वप्नों और अपने जुनून का पीछा करने के लिए आज़ादी चाहते हैं, लेकिन बहुतों के लिए, ऐसा कभी नहीं होता।

कुछ वर्ष पहले, परमेश्वर ने दुगने भाग को लेकर मेरे साथ व्यवहार किया और बताया कि यह हमारा कैसे होता है। दुगना भाग हमें पृथ्वी पर गुज़ारा करने की श्राप की प्रणाली से और दर्द भरे परिश्रम और पसीने भरे गुज़ारे से हमें स्वतंत्र करता है।

संक्षिप्त में, दुगने भाग का मतलब है *पर्याप्त से ज़्यादा* होना। हमारे पास पर्याप्त से ज़्यादा होना हमें कर्ज़मुक्त जीवन जीने में मदद करता है और अपने जीवन को धन के लिए बेचने के बजाय परमेश्वर के लिए कार्य करने में मदद करता है।

हालांकि मैं वर्षो से अपनी सभाओं में दुगने भाग के बारे में बाते करता आ रहा हूँ, मुझे ऐसा लगा कि प्रभु इसके बारे में मुझे कुछ दिखाना चाहता है जिसे मैंने अब तक नहीं समझा है। मैं जानता था कि जितना मैं देख सकता हूँ यह उससे ज़्यादा है, और मैंने पवित्र आत्मा से पूछा कि मुझे और दिखाए।

मैं दुगने भाग से संबंधित वचनों का अध्यनन करने लगा और प्रभु का इंतज़ार किया कि वह मुझे दिखाए कि मैंने क्या खोया है। वैसे, वह जो मुझे समझाना चाहता था उसके द्वारा उसने अद्भुत रूप से मेरा ध्यान आकर्षित किया जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

एक सज्जन पुरुष जिनसे मैं कभी नहीं मिल था उन्होंने मुझे कॉल किया, वह हमारी सेवकाई के साझेदार भी हैं। मेरी पुस्तकों को पढ़ने के बाद, उन्होंने जाना कि मुझे शिकार करना पसंद है, तो उन्होंने कॉल करके मुझसे कहा कि, "मैं आपके लिए एक बंदूक खरीदना चाहता हूँ। आपके पास कौन सी बंदूक नहीं है?"

उस समय, मेरे पास सामान्य ऑल राउन्ड साधारण बंदूक थी जिसका उपयोग मैं हिरण से बतख के शिकार तक, तीतर और खरगोश के शिकार में भी करता था। मेरे पास 20 गेज दो भागों वाली बंदूक थी जो मेरे पिता जी ने मुझे तब दी थी जब मैं 16 वर्ष का था। लेकिन जितनी बार मैंने शिकार करने की पत्रिकाओं में नीचे और ऊपर जितनी बंदूकें देखी, वे सुंदर थीं। उनके पास हमेशा सुंदर उत्कीर्णन और परिपूर्ण लकड़ी की सामग्रियाँ होती थी और इन्हें हमेशा पूर्णता के साथ तैयार किया जाता था।

तो मैंने उससे कहा, कि मेरे पास यह सब कभी नहीं थी लेकिन मुझे हमेशा एक बंदूक ज़रूर चाहिए थी। मैं चकित रह गया था जब उसने कहा कि वह मुझे एक बंदूक भेज देगा। यह निश्चयी बहुत असामान्य था, और मैं आश्चर्यचकित था।

निश्चयी, एक सप्ताह बाद, मेरी कलीसिया के कार्यालय में एक बक्सा आया और जब मैंने इसे खोला तो, यहाँ एक नहीं बल्कि *दो* सबसे सुंदर बंदूकें थी और ऐसी मैंने पहले कभी नहीं देखी थीं।

मैंने तुरंत ही अपने साथी को कॉल किया और उसे इतने अद्भुत उपहार के लिए धन्यवाद दिया।

अगले सप्ताह, उसने दो और बंदूकें भेज दी! अब मेरे पास पहली बार मेरी अपनी चार उत्तम बंदूकें थीं। मैंने फिर से उसे कॉल किया, और उसने कहा कि, लोग उसे कॉल करके उपहार के लिए कभी धन्यवाद नहीं देते; और क्योंकि मैंने ऐसा किया, तो उसने सोचा कि दो और बंदूकें मुझे दे। नि:संदेह, मैं जानता था कि यह परमेश्वर का कार्य था। मेरा मतलब है, एक बार में दो बंदूकें आई, और मैं परमेश्वर से दुगने भाग के लिए प्रार्थना कर रहा था।

वैसे, लंबी कहानी को संक्षिप्त करते हुए, बंदूकें मेल के द्वारा जोड़ी में आने लगी, अब मेरे पास लगभग **चौदा** सबसे उत्तम श्रेणी की बंदूकें थीं। यह सस्ती बंदूकें नहीं थीं। यह कई हज़ार डॉलरों की बंदूकें थीं।

फिर मुझे दो पर्ल व्हाइट कैडीलेक एसकैलेड एसयूवी दी गई।

उस समय, हम दस–वर्ष–पुरानी होंडा पायलट चला रहे थे, जो हमें अच्छी लगती थी (होंडा की कारें हमेशा उत्तम होती हैं), लेकिन वे एसकैलेड नहीं हैं।

ड्रेनडा को कुछ वर्षो से लूयी वित्तन पर्स चाहिए था, और मैंने कुछ वर्ष पहले उसे क्रिसमस के खास उपहार के रूप में एक पर्स दिया था। लेकिन इस वर्ष उसके जन्मदिन पर, उसने—सही अनुमान लगाया—उसे *दो* लूयी वित्तन पर्स मिले, दोनों अलग अलग लोगों से।

इसी ऋतु में हमें अपना दूसरा विमान भी प्राप्त हुआ, इसके साथ दो समुद्री तट पर घर, और इससे भी ज़्यादा, क्रिसमस पर, दो काले मिंक कोट भी प्राप्त हुए, जिसकी कीमत $10,000 थी।

मैं यहाँ थोड़ा रुककर कहना चाहूँगा कि यहाँ मैं दिखावा नहीं कर रहा हूँ, क्योंकि मैंने इनमें से कुछ भी नहीं लिया है !!! बंदूकें बस प्रकट हो गईं। दो व्हाइट एसकैलेड बस प्रकट हो गईं। दो बटुए बस प्रकट हो गए। दो काले मिंक कोट बस प्रकट हो गए।

दो घर, निश्चयी, इसमें विशेष करके शामिल थे, लेकिन हमने कुछ वर्ष पहले ही समुद्र पर घर के लिए बीज को बोया था। मैं यह नहीं जानता था और ड्रेनडा ने उस

समय नहीं लेकिन कुछ वर्ष बाद मुझे बताया था। ड्रेनडा को रियल एस्टेट पत्रिका में एक घर बहुत पसंद आया था। उसे याद है कि उसने उस तस्वीर की ओर इशारा करते हुए कहा, "प्रभु, मुझे यह चाहिए।" उस समय, हमारे पास कई अधिक आर्थिक खर्चे और प्रोजेक्ट थे, इसलिए हम उस फ्लोरिडा के घर के लिए नकद राशि नहीं दे सकते थे, लेकिन हम जानते थे कि यह सही समय पर हमे मिल जाएगा।

एक दिन जब मैं सुबह दौड़ रहा था, तब प्रभु ने मुझसे कहा कि, *"कल के दिन ड्रेनडा को फ्लोरिडा में नए घर को खरीदने के लिए भेज दो।"* कल के दिन हमारा कोई ज़रूरी काम था, फिर भी मैंने कहा, "वाह। ठीक है, प्रभु।"

तो, ड्रेनडा फ्लोरिडा चली गई और वहाँ पर उसने 25 से अधिक अलग अलग घरों को देखा। जितने घरों को उसने देखा, उनमें से एक घर उसे अपनी ओर आकर्षित करता रहा जैसे वह उसी का हो।

मैं वहाँ पहुंचा और उसके साथ उस घर को देखने गया और मैं सहमत हुआ कि सच में यह घर परिपूर्ण था। (इन सब बातों में, ड्रेनडा भूल गई थी कि उसने रियल एस्टेट पत्रिका में उसी घर की ओर इशारा करके घोषणा की थी कि, वह इस घर की मालकिन होगी। उस बात को लगभग तीन वर्ष बीत गए थे, और हमने इस घर को पहले कभी नहीं देखा था।)

जिस घर पर ड्रेनडा ने इशारा किया था हमने उसके अनुबंध को तैयार किया; और एक दिन, जैसे हम ओहीओ में अपने घर में बैठे अनुबंध संबंधित जांच कर रहे थे, ड्रेनडा ने अचानक चिल्लाकर कहा, " वही मेरा घर है!"

मैं अचंभित रह गया क्योंकि हम अनुबंध पर थे और सारी बातें तय हो रही थी। "निश्चयी यह तुम्हारा ही है।" मैंने कहा।

उसने कहा, "आप समझ नहीं रहे हैं। यह *वही घर* है जिस पर मैंने कई वर्ष पहले रियल एस्टेट पत्रिका में घोषणा की थी।"

तब मुझे याद आया कि, तीन वर्ष पहले जिस रियल एस्टेट की पत्रिका को वह देख रही थी उसमें इसी शहर में स्थित घरों के बारे में लिखा था। क्या यह वही घर था? ड्रेनडा को यकीन था कि यह वही घर है, और वह इस घर की उन विशेषताओं के बारे में बताने लगी जिसने कुछ वर्षो पहले उसके ध्यान को आकर्षित किया था। सारी बातें इस घर से मेल खा रही थीं। तो, मैंने थोड़ी जांच की और जाना कि, जिस घर को हम खरीद रहे थे वह इस वर्ष और उस वर्ष में भी बिक्री के लिए था जब ड्रेनडा ने इसकी ओर इशारा करके कहा था कि वह इस घर को खरीदेगी। लेकिन मैंने यह देखा कि, कुछ कारण से, वास्तव में उसकी इस घोषणा के बाद कि वह इस घर को खरीदेगी, इसके बाद यह बाज़ार से गायब हो गया था।

जैसे मैंने इस घर के इतिहास के बारे में अध्यनन किया तो जाना, कि इतने समय से यह बाज़ार में नहीं था सिर्फ कुछ दिन पहले यह फिर से बिक्री के लिए उपलब्ध हुआ था। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि पवित्र आत्मा ने मुझे ड्रेनडा को अगले दिन ही फ्लोरिडा में भेजने के लिए क्यों कहा!

तो हमने, उस समुद्री तट के घर को खरीदा, और आखिर ड्रेनडा को अपना घर मिल गया, जिसका सपना उसने अपने जीवन भर देखा था! तब उसी वर्ष हमने कैनेडा में समुद्री तट के पास अपना दूसरा घर भी लिया। वाह! कमाल हो गया।

अगर आपने ध्यान दिया है तो आप पाएंगे कि, सब कुछ जो परमेश्वर ने हमें दिया वह सबसे उत्तम या सबसे महंगी वस्तु थी। जो कुछ हुआ उन सब को लेकर हम आश्चर्यचकित थे। लेकिन प्रभु ने मुझसे कहा कि, *"मैं जानता हूँ कि तुम्हें चौदा बंदूकों की* ***जरूरत*** *नहीं है। मैं जानता हूँ कि तुम्हें दो व्हाइट एसकैलेड की ज़रूरत नहीं है..."* और उसने सारी सूची दिखाई।

फिर प्रभु ने कहा, *"मैं नहीं चाहता कि मेरे बच्चे ज़रूरतों को लेकर चिंता करें। वे सम्पूर्ण भूमि के मालिक हैं, और मेरी संतानों को भली चीजें देना मेरे लिए आनंद की बात है।"*

**उसने मुझे याद दिलाया कि वह पर्याप्त से भी अधिक का परमेश्वर है, दुगने भाग का परमेश्वर।**

उसने मुझे याद दिलाया कि वह पर्याप्त से भी अधिक का परमेश्वर है, दुगने भाग का परमेश्वर। फिर वह कहने लगा कि उसके लोग बड़ा नहीं सोचते, बड़े सपने नहीं देखते, और परमेश्वर जो उनके लिए कर सकता है उसे वह सीमित कर रहे हैं।

प्रभु जो हमें दिखा रहा था उन बातों से मैं और ड्रेनडा चकित रह गए थे। हमने जाना कि हमें लोगों को दुगने भाग के बारे में बताना चाहिए। दुगने भाग का यह मतलब नहीं कि सारी बातों के दो हिस्से—प्रभु मेरा ध्यान केंद्रित करने के लिए यह कह रहे थे। बल्कि दुगने भाग का मतलब है *पर्याप्त से भी ज़्यादा*।

तब परमेश्वर ने मुझे बताया कि मुझे इसे अपनी कलीसिया तक पहुंचाना होगा, और मुझे उन्हें यह बताना था कि कैसे परमेश्वर ने हमें सारी चीजें दी और यह कैसे संभव हुआ।

अब, मैं और ड्रेनडा हमारे पास जो कुछ है उसे लेकर हम काफी व्यक्तिगत हैं, क्योंकि चीजों में जीवन नहीं है, और निश्चयी हम कभी भी जिन चीजों की आप खोज कर रहे हैं उनको प्राप्त करने या बनाने में आपको उत्साहित नहीं करना चाहते हैं। और हमने इन बातों की खोज कभी नहीं की; बल्कि परमेश्वर ने इन्हें भेजा। तो, हमने

कलीसिया में 11 सप्ताहों का समय लेकर दुगने भाग के बारे में सिखाया, और मुझे लगता है मेरे द्वारा सिखाई गई किसी अन्य शृंखला से बढ़कर इस शिक्षा ने लोगों के धन पर शानदार असर को लाया है।

लेकिन क्या आप जानते हैं? कि मैंने जो सिखाया उसके कारण कई लोगों ने निराश होकर कलीसिया को भी छोड़ दिया था। उन्होंने सोचा कि मुझे उन सारी बंदूकों, या दो एसकैलेड, या समुद्री तट पर दो घरों, या दो विमानों, या दो सुंदर कोट की आवश्यकता नहीं थी। उन्हें बस ऐसा लगा कि मैं बस *चीजों* को बढ़ा चढ़ाकर बोल रहा हूँ और घमंड कर रहा हूँ।

लेकिन उन्होंने पूरे मुद्दे को खो दिया—परमेश्वर हमें दिखा रहा था कि वह पर्याप्त से भी ज़्यादा का परमेश्वर है। उसका राज्य नैसर्गिक क्षेत्रों के समान गुज़ारे में नहीं है। उसका राज्य पर्याप्त से भी ज़्यादा का राज्य है, और वह अपनी संतानों का बड़ा ख्याल रखने में आनंद लेता है।

मुझे लोगों को याद दिलाना पड़ा कि यह सब मैंने नहीं किया है। परमेश्वर ने इसे किया और इसलिए नहीं किया कि—हर व्यक्ति महंगी गाड़ियों को चलाए लेकिन इसलिए किया कि वह चाहता है कि हम उसे रोकना और सीमित करना बंद कर दें। वह चाहता है कि हमारी न कहने की आदत बंद हो जाए, उसे उन कार्यों में सीमित करना बंद कर दें जो वह करना चाहता है। वह चाहता है कि हम जानें कि वह पर्याप्त से अधिक का परमेश्वर है।

उदार बनने की हमारी चर्चा में यह ज्ञान बहुत ही महत्वपूर्ण है। आपके पास उदार होने के लिए कुछ होना चाहिए, विशेष करके हर अवसर पर उदार रहने के लिए। मैं जानता हूँ कि परमेश्वर ने मेरे ध्यान को आकर्षित किया, और मैंने सीखा कि परमेश्वर की भलाई से कभी शर्मिंदा नहीं होना है।

इसके बाद की पतझड़ में, एक स्थानीय पास्टर ने मुझसे पूछा कि क्या वह मेरी भूमि पर शिकार कर सकते हैं। मैं सभी से कहता हूँ कि मैं तब तक शिकार की अनुमति नहीं देता जब तक मुझे और मेरे बच्चों को अपना हिरण प्राप्त न हो जाए, फिर मैं ऋतु जाने से पहले बाकी लोगों को अनुमति देता हूँ। वैसे उस पतझड़ में, हमने अपने हिरण को फ्रीज़र में रखा था, तो मैंने पास्टर को आमंत्रित किया।

जिस दिन वह आए, मैं उनसे बाहर मिला और वह किस दिशा में शिकार कर सकते हैं इस बारे में उन्हें मैंने कुछ निर्देश दिए। मैंने देखा कि वह एक पुरानी चिड़िया मारने वाली बंदूक का उपयोग कर रहे थे, यानि निशाना लगाने के लिए उसमें सिर्फ एक ब्रास बीड थी। यह हिरणों के शिकार के लिए नहीं बनी थी। इसके लिए आपको बहुत नज़दीक जाना होगा, क्योंकि चिड़िया मारने वाली पुरानी बंदूकें हिरणों की हलचल

के लिए सही नहीं होती हैं। वैसे, नि:संदेह, इनका उपयोग कर सकते हैं, जैसे मैंने भी अपने शिकार के समयों में किया है।

लेकिन जैसे मैं वहाँ बैठकर उनसे बातें कर रहा था, मुझे याद आया कि परमेश्वर ने जो बंदूकें मुझे भेजी थी वे हिरणों के शिकार के लिए एकदम सही थी। बल्कि, वे सबसे अच्छी थी। मैंने पवित्र आत्मा को यह कहते हुए महसूस किया कि, *"क्यों न तुम इस पास्टर को हिरण का शिकार करने वाली वह बंदूक दे दो जो तुम्हें दी गई थी? तुम्हारे पास कुछ और भी हैं, लेकिन उसके पास शिकार करने के लिए कोई अच्छी बंदूक नहीं है।"*

तो, मैंने उन्हें एक बंदूक दे दी, और वह इतने खुश हुए। उस उपहार ने उनसे परमेश्वर की भलाई के बारे में बात की और उन्हें परमेश्वर के लिए उत्साहित भी किया।

क्या आपको याद है जो मैंने आपसे कुछ अध्याय पहले कहा था—कुछ राशि और कुछ चीजों को जिसे आपने पकड़ कर रखा है, यह आपके लिए नहीं हैं? परमेश्वर ने यह आपको इसलिए दिया है कि आप किसी दूसरे की ज़रूरत को पूरा कर सकें।

मैंने सब कुछ यह बताने के लिए कहा है कि: आप एक उदार राजा के साथ एक उदार राज्य में रहते हैं, लेकिन आप कभी राज्य की बातों का लाभ नहीं उठा पाएंगे, यदि आप गरीबी की उस आत्मा को तोड़ न दे जो आपको सारी चीज़ों को जमा करने के लिए कहता है। मैं जानता हूं कि आपने संभवतः जमाखोरों के बारे में टीवी कार्यक्रम को देखा होगा जहां वे वास्तव में हस्तक्षेप करते हैं। घर कबाड़ से इतना ठसाठस भरा होता है कि आप इसके बीच से चल भी नहीं सकते हैं। कई बार, घरों को फिर से तोड़कर इसका पुन:निर्माण करना पड़ता है क्योंकि यह इतनी खराब हालत में होते हैं। ऐसा ही हमारा हृदय भी है जब यह लालच से भर जाता है और बस ज़रूरत के दिन के लिए सब जमा करके रखना चाहता है। धन और संपत्ति पर हमारी पकड़ ढीली होना ज़रूरी है।

जब आपके पास गुज़ारा करने के लिए भी कुछ नहीं है तब उदार होना कठिन होता है। परमेश्वर चाहता है कि आप जाने कि उनके घर में बहुतायत है, तो उदार रहने से निश्चिंत रहें। आपकी उदारता लोगों को परमेश्वर के राज्य में आमंत्रित करती है और उनके हृदयों को परमेश्वर की भलाई और उदारता के लिए खोल देती है। याद रखें, यह परमेश्वर की भलाई है जो लोगों को पश्चाताप करने के लिए अगुवाई करती है।

> *स्वर्ग का राज्य किसी गृहस्थ के समान है, जो सबेरे निकला, कि अपने दाख की बारी में मजदूरों को लगाए। और उस ने मजदूरों से एक दीनार रोज पर ठहराकर, उन्हें अपने दाख की बारी में भेजा।*

*फिर पहर एक दिन चढ़े, निकल कर, और औरों को बाजार में बेकार खड़े देखकर, उन से कहा, तुम भी दाख की बारी में जाओ, और जो कुछ ठीक है, तुम्हें दूंगा; सो वे भी गए।*

*फिर उस ने दूसरे और तीसरे पहर के निकट निकलकर वैसा ही किया। और एक घंटा दिन रहे फिर निकलकर औरों को खड़े पाया, और उन से कहा; तुम क्यों यहां दिन भर बेकार खड़े रहे?*

*उन्हों ने उस से कहा, इसलिये, कि किसी ने हमें मजदूरी पर नहीं लगाया।*

*उस ने उन से कहा, तुम भी दाख की बारी में जाओ।*

*सांझ को दाख बारी के स्वामी ने अपने भण्डारी से कहा, मजदूरों को बुलाकर पिछलों से लेकर पहिलों तक उन्हें मजदूरी दे दे।*

*सो जब वे आए, जो घंटा भर दिन रहे लगाए गए थे, तो उन्हें एक एक दीनार मिला। जो पहिले आए, उन्होंने यह समझा, कि हमें अधिक मिलेगा; परन्तु उन्हें भी एक ही एक दीनार मिला। जब मिला, तो वह गृहस्थ पर कुडकुड़ा के कहने लगे। कि इन पिछलों ने एक ही घंटा काम किया, और तू ने उन्हें हमारे बराबर कर दिया, जिन्हों ने दिन भर का भार उठाया और घाम सहा?*

*उस ने उन में से एक को उत्तर दिया, कि हे मित्र, मैं तुझ से कुछ अन्याय नहीं करता; क्या तू ने मुझ से एक दीनार न ठहराया? जो तेरा है, उठा ले, और चला जा; मेरी इच्छा यह है कि जितना तुझे, उतना ही इस पिछले को भी दूं। क्या उचित नहीं कि मैं अपने माल से जो चाहूं सो करूं? क्या तू मेरे भले होने के कारण बुरी दृष्टि से देखता है?*

*इसी रीति से जो पिछले हैं, वह पहिले होंगे, और जो पहिले हैं, वे पिछले होंगे॥*

–मत्ती 20:1–16

तो यीशु इस दृष्टांत में क्या बता रहा है? सबसे पहले तो हमें, यह जानने की ज़रूरत है कि ग्रहस्थ पिता को दर्शाता है, और जिस फसल को वह चाहता है वह सोयाबिन या भुट्टे की नहीं हैं। यह मनुष्य का प्राण है। मज़दूर हमें दर्शाते हैं, जिन्हें खेत में भेजा गया है। मुझे लगता है यीशु चाहता है कि हम यहाँ दो बातों को देखें। सबसे पहले, ध्यान दें कि ग्रहस्थ कितनी इच्छा से मदद की खोज कर रहा है।

*स्वर्ग का राज्य किसी गृहस्थ के समान है, जो सबेरे निकला, कि अपने दाख की बारी में मजदूरों को लगाए। कितनी*

वह मज़दूरों को ढूँढने के लिए सवेरे जल्दी उठता है, और वह पूरा दिन यहाँ वहाँ ढूँढता रहता है कि कोई उसकी बारी में मदद करने आ जाए। उसके कार्यों में एक तीव्रता है। फसल पक गई है और अब इसे काटना ज़रूरी है नहीं तो यह नष्ट हो जाएगी। ध्यान दें कि वह दिन समाप्त होने से पहले एक घंटे के लिए एक मज़दूर को रखता है।

> *फिर उस ने दूसरे और तीसरे पहर के निकट निकलकर वैसा ही किया। और एक घंटा दिन रहे फिर निकलकर औरों को खड़े पाया, और उन से कहा; तुम क्यों यहां दिन भर बेकार खड़े रहे?*
>
> *उन्हों ने उस से कहा, इसलिये, कि किसी ने हमें मजदूरी पर नहीं लगाया। उस ने उन से कहा, तुम भी दाख की बारी में जाओ।*

अब इस दृष्टांत का रहस्य यहाँ है: उसने आखरी मज़दूर को सबसे पहले मजदूरी क्यों दी? वचन 15 में इसका उत्तर पाया जाता है।

> *जिन मज़दूरों को दिन के पाँच बजे ठहराया था और हर एक को एक दीनार मिला। तो जिन्हें पहले ठहराया गया था, उन्होंने अधिक की अपेक्षा की। लेकिन उनको भी एक ही दीनार प्राप्त हुआ। जब उन्हें मज़दूरी मिली तब वे ग्रहस्थ के विरोध में कुड़कुड़ाने लगे। "इन दोनों को आखिर में ठहराया गया और इन्होंने केवल एक घंटा ही काम किया, और तूने इनको हमारे बराबर कर दिया जिन्होंने पूरे काम का बोझ उठाया और दिन की गर्मी में काम किया।"*
>
> *लेकिन उसने उनमें से एक को उत्तर दिया, "मैं तुम्हारे साथ अन्याय नहीं कर रहा हूँ। क्या तुम एक दीनार के लिए काम करने में सहमत नहीं हुए थे? अब अपनी मज़दूरी लो और जाओ। जिसे आखिर में ठहराया गया उसे मैं उतना ही देना चाहता हूँ जितना तुम्हें दिया है। क्या मेरे पास अपने धन के साथ जैसा मैं चाहूँ वैसा नहीं कर सकता? या क्या तुम मेरी उदारता के कारण बुरी दृष्टि से देखते हो?"*

## क्या तुम मेरी उदारता के कारण बुरी दृष्टि से देखते हो?

जैसे हम इस दृष्टांत में पढ़ते हैं, हम सोच सकते हैं कि, हे, यह सही नहीं है! जब हम डॉलरों को कमाने के लिए पृथ्वी के श्रापित घंटों की मानसिकता से इसे देखते हैं तो हो सकता है आप सही हैं। लेकिन जैसे मैंने पहले भी बताया, कि यह परमेश्वर की मानसिकता नहीं है। ग्रहस्थ निश्चित करना चाहता था कि जो मज़दूर दिन के अंत में

आए थे उन्हें अधिक दिया जाए जिससे वे उसकी उदारता को देखकर अगले दिन उसके साथ काम करना चाहें। उससे भी ज़्यादा, ग्रहस्थ यह चाहता था कि वे अपने मित्रों के पास जाएं और अपनी मज़दूरी के बारे में सबको बताएं कि वह उनके प्रति कितना उदार है। तो, इस दृष्टांत का परिणाम क्या है? परमेश्वर लोगों के व्यवसाय में हैं, और यदि आप उसके व्यवसाय मे शामिल हो जाएं तो, वह बहुत उदार है और आपको महान रूप से प्रतिफल भी देगा।

**परमेश्वर लोगों के व्यवसाय में हैं, और यदि आप उसके व्यवसाय मे शामिल हो जाएं तो, वह बहुत उदार है और आपको महान रूप से प्रतिफल भी देगा।**

## क्या आप परमेश्वर से उदारता से प्राप्त कर सकते हैं?

यीशु हमें बाइबल में प्राप्त करने के बारे में सबसे अद्भुत दृष्टांतों को बताता है, मैं जानता हूँ आपने इसे सुना है, यह है उड़ाऊ पुत्र का दृष्टांत।

मैं चाहता हूँ कि आप इसे पढ़ें, फिर हम इसके बारे में बात करेंगे। मेरे साथ बने रहें। हम लगभग इस पुस्तक के अंत में आ गए हैं, और मैं नहीं चाहता कि आप यह सुने बिना जाएं। हम लूका 15 में इस कहानी को पाते हैं। यह बड़ा वचन है लेकिन कृपया करके इसे पढ़ने के लिए समय को बिताऐं।

> *फिर उस ने कहा, किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। उन में से छुटके ने पिता से कहा कि हे पिता संपत्ति में से जो भाग मेरा हो, वह मुझे दे दीजिए। उस ने उन को अपनी संपत्ति बांट दी।*
>
> *और बहुत दिन न बीते थे कि छुटका पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके एक दूर देश को चला गया और वहां कुकर्म में अपनी संपत्ति उड़ा दी। जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया। और वह उस देश के निवासियों में से एक के यहां जा पड़ा : उस ने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिये भेजा। और वह चाहता था, कि उन फलियों से जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट भरे; और उसे कोई कुछ नहीं देता था।*
>
> *जब वह अपने आपे में आया, तब कहने लगा, कि मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहां भूखा मर रहा हूं। मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उस से कहूंगा कि पिता जी मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है। अब इस योग्य नहीं रहा कि*

*तेरा पुत्र कहलाऊं, मुझे अपने एक मजदूर की नाईं रख ले। तब वह उठकर, अपने पिता के पास चला:*

*वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा।*

*पुत्र ने उस से कहा; पिता जी, मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है; और अब इस योग्य नहीं रहा, कि तेरा पुत्र कहलाऊं।*

*परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा; फट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहिनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी, और पांवों में जूतियां पहिनाओ। और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खांए और आनन्द मनावें। क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया है : खो गया था, अब मिल गया है: और वे आनन्द करने लगे।*

*परन्तु उसका जेठा पुत्र खेत में था : और जब वह आते हुए घर के निकट पहुंचा, तो उस ने गाने बजाने और नाचने का शब्द सुना। और उस ने एक दास को बुलाकर पूछा; यह क्या हो रहा है? उस ने उस से कहा, तेरा भाई आया है; और तेरे पिता ने पला हुआ बछड़ा कटवाया है, इसलिये कि उसे भला चंगा पाया है। यह सुनकर वह क्रोध से भर गया, और भीतर जाना न चाहा : परन्तु उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने लगा। उस ने पिता को उत्तर दिया, कि देख; मैं इतने वर्ष से तरी सेवा कर रहा हूं, और कभी भी तेरी आज्ञा नहीं टाली, तौभी तू ने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया, कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द करता। परन्तु जब तेरा यह पुत्र, जिस ने तेरी संपत्ति वेश्याओं में उड़ा दी है, आया, तो उसके लिये तू ने पला हुआ बछड़ा कटवाया।*

*उस ने उस से कहा; पुत्र, तू सर्वदा मेरे साथ है; और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा ही है। परन्तु अब आनन्द करना और मगन होना चाहिए क्योंकि यह तेरा भाई मर गया था फिर जी गया है; खो गया था, अब मिल गया है॥*

–लूका 15:11–32

पहले, तो हमें यह समझना है कि छोटा पुत्र ने अपने पिता के घर को क्यों छोड़ा। उत्तर है क्योंकि उसके मन में अपने पिता के प्रति गलत विचार था, जैसे उसके बड़े पुत्र में भी था। क्या आपको याद है कि, बड़े भाई ने कहा कि वह सम्पूर्ण जीवन अपने पिता की गुलामी करते हुए रहा और फिर भी उसे एक छोटा मेमना तक नहीं मिला अपने दोस्तों के साथ उत्साह मनाए। बड़े भाई के लिए, पिता एक कठोर स्वामी था। हो सकता है आप पूछेंगे कि बड़ा भाई भी छोटे पुत्र के साथ छोड़कर क्यों नहीं गया?

यह सिर्फ मेरा विचार है, लेकिन यहूदी रीति में, जेठा पुत्र अपने पिता के मरने के बाद दुगने भाग का हकदार होता है। लेकिन छोटे पुत्र के पास यह लाभ नहीं थे। तो, मेरा सोचना है कि जेठे पुत्र के पास वह था जो एक दिन उसका ही होने वाला था, और उसने जाना कि यह बात वहाँ रहने के लिए काफी थी।

छोटा बेटा किसी हरी चराई की खोज में था जिससे वह अपने पिता के शासन से निकाल जाए, तो उसने विरासत से अपना भाग लिया और चला गया। लेकिन जब उसने घर को छोड़ा, उसने खुद को ऐसे संसार में पाया जिसकी अपेक्षा उसने कभी नहीं की थी। जैसे ही उसका धन समाप्त हो गया, उसने जाना कि जिस देश में वह भागा था वह पूरी रीति से कंगाली में है। सारे देश में भयंकर आकाल हुआ। भोजन के लिए उत्सुकता के कारण, उसने ऐसा कुछ किया जो उसके लिए बहुत अजीब था। उसने भोजन के बदले में अपने आप को किराए के मज़दूर की तरह बेच दिया। यह पहली बार था जब उसके जीवन में किराए की मानसिकता का जन्म हुआ। पहले तो, उसका भरपूर ख्याल रखा जाता था इसके कारण नहीं कि वह कौन था, और न ही उसके कार्यो के कारण। अब जब काम करने के लिए उसे मजबूर किया गया, तो उसे सूअरों को खिलाने के अलावा और कोई काम न मिला, एक सबसे अशुद्ध और यहूदियों के लिए सबसे खराब काम। बाइबल कहती है कि वह इतना भूखा था कि वह सूअरों के बचे हुए भोजन के लिए ललचाता था, लेकिन किसी ने उसे कुछ नहीं दिया। इसका क्या कारण था? क्योंकि वह सभों की तरह एक ही नाव में था, घटी और गुज़ारे की स्थिति में। क्या इनमें से कोई शब्द आपको जाना पहचाना लगता है? लेकिन एक दिन जब उसे होश आया और उसने याद किया कि मेरे पिता के घर में सेवकों को भी पर्याप्त से ज़्यादा भोजन मिलता है।

> *जब वह अपने आपे में आया, तब कहने लगा, कि मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहां भूखा मर रहा हूं। मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उस से कहूंगा कि पिता जी मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है। अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं, मुझे अपने एक मजदूर की नाईं रख ले।*

यह जानते हुए कि मेरे घर में भरपूर भोजन है, वह अपने पिता के घर को लौट गया एक पुत्र के नाते नहीं बल्कि एक मज़दूर बनकर, एक किराए का मज़दूर बनकर। उसने तय किया कि वह अपनी गलती और पाप को अपने पिता के सामने मान लेगा और फिर उससे विनती करेगा कि उसे एक मज़दूर के समान रख ले। हालांकि, जब

वह घर पहुंचा, उसका पिता बाहर ही खड़ा था। जैसे ही उसके पिता ने उसे देखा, वह उसकी ओर दौड़ा और उसे गले लगाकर उसे चुंबन दिया।

*तब वह उठकर, अपने पिता के पास चला: वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा।*

आइए हम यहाँ जो हो रहा है उसे अच्छे से समझ लें, क्योंकि यह कहानी पिता परमेश्वर और हमारे बारे में है। यह पुत्र सीधा सूअरों के खेत से आया था। यहूदी नियम के अनुसार, उसे अशुद्ध माना जाता था। लेकिन जिस क्षण पिता ने उसे गले लगाया, वह भी अशुद्ध हो गया, लेकिन उसने ऐसा अपने पुत्र के प्रेम में किया। छोटे पुत्र को उसकी मूर्खता के लिए डांटने और फटकारने के बजाय, पिता ने उसे सबसे उत्तम वस्त्र से ढँक दिया। फिर उसने उसकी उंगली में अंगूठी पहनाई, जिसका मतलब है पुत्र के रूप में उसका अधिकार फिर से लौटा दिया गया था। फिर, उसने उसके पाँवों में जूतियाँ पहनाई जिसका अर्थ है कि उसके पास सम्पूर्ण राज्य पर प्रवेश अधिकार था। आप इसे रूत 4:7 में पाएंगे।

*(अगले समय में इस्राएल में छुड़ाने के बदलने के विषय में सब पक्का करने के लिये यह व्यवहार था, कि मनुष्य अपनी जूती उतार के दूसरे को देता था। इस्राएल में गवाही इसी रीति होती थी।)*

और आखिर में, उसके लिए पला हुआ बछड़ा मंगाया जिसे पकाकर वे आनंद मनाएं।

यह छोटा पुत्र एक किराए का मज़दूर बनने की अपेक्षा में आया था, लेकिन पिता ने उसके पुत्रत्व को वापिस लौटा दिया।

*पुत्र ने उस से कहा; पिता जी, मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है; और अब इस योग्य नहीं रहा, कि तेरा पुत्र कहलाऊं।*

*परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा; फट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहिनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी, और पांवों में जूतियां पहिनाओ। और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खांए और आनन्द मनावें। क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया है : खो गया था, अब मिल गया है: और वे आनन्द करने लगे।*

लेकिन कहानी का अगला भाग मैं चाहता हूँ कि आप देखें।

> *परन्तु उसका जेठा पुत्र खेत में था : और जब वह आते हुए घर के निकट पहुंचा, तो उस ने गाने बजाने और नाचने का शब्द सुना। और उस ने एक दास को बुलाकर पूछा; यह क्या हो रहा है? उस ने उस से कहा, तेरा भाई आया है; और तेरे पिता ने पला हुआ बछड़ा कटवाया है, इसलिये कि उसे भला चंगा पाया है।*
>
> *यह सुनकर वह क्रोध से भर गया, और भीतर जाना न चाहा : परन्तु उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने लगा। उस ने पिता को उत्तर दिया, कि देख; मैं इतने वर्ष से तरी सेवा कर रहा हूं, और कभी भी तेरी आज्ञा नहीं टाली, तौभी तू ने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया, कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द करता। परन्तु जब तेरा यह पुत्र, जिस ने तेरी संपत्ति वेश्याओं में उड़ा दी है, आया, तो उसके लिये तू ने पला हुआ बछड़ा कटवाया।*
>
> *उस ने उस से कहा; पुत्र, तू सर्वदा मेरे साथ है; और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा ही है। परन्तु अब आनन्द करना और मगन होना चाहिए क्योंकि यह तेरा भाई मर गया था फिर जी गया है; खो गया था, अब मिल गया है॥*

जब बड़ा पुत्र घर आया, तो जैसे ही उसे पता चला कि क्या हो रहा है उसने भीतर आना न चाहा। ध्यान दें कि जेठा पुत्र क्या कहता है। "*मैं इतने वर्ष से तेरी **सेवा** कर रहा हूं, और कभी भी तेरी आज्ञा नहीं टाली, तौभी तू ने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया, कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द करता।*" वह कहना चाहता था कि उसका पिता एक कठोर स्वामी है और उसने अपने आपको को क्या कहा? एक सेवक या गुलाम! लेकिन उसके पिता ने उसे वचन 31 में क्या कहा? मेरा पुत्र! मेरा मुद्दा यही है।

आप परमेश्वर के प्रति इसी मानसिकता में बड़े हुए हैं जैसी मानसिकता इन दो पुत्रों के पास उनके पिता के लिए थी, कि वह एक कठोर स्वामी है, यानि उसकी सेवा करने में कोई प्रतिफल नहीं है। धर्म ने आपको सिखाया है कि स्वीकारे जाने के लिए आपको परमेश्वर के लिए काम करना पड़ेगा। जब उसके पिता ने बिना ताड़ना दिए उसे गुलाम नहीं बल्कि पुत्र के रूप स्वीकार लिया, तब छोटे पुत्र के मन में पिता के प्रति मानसिकता बदल गई। जेठे पुत्र का पिता के साथ संबंध उसके कार्यों पर निर्भर था, इसलिए उसने गुलामी के समान कार्य किया और चीजों को सही करने की कोशिश की। जब आप अपने कार्यों के चशमें से अपनी पहचान को देखते हैं, तब आप हमेशा घटित हो जाएंगे, और आप अपने आस पास के लोगों का न्याय करेंगे जो आपसे कभी

खुश नहीं रहेंगे। लेकिन सच्चाई यह थी कि, जेठा पुत्र अपने आप पर ही कठोर स्वामी था इस हद तक कि वह पिता की भलाई को स्वीकार न कर सका। जब उसने अपने पिता को अन्यायी कहा और यह कहा कि उसने कभी भी उसके मित्रों के साथ आनंद मनाने के लिए बछड़ा तक नहीं दिया, तब उसका पिता यह कहता है।

> *उस ने उस से कहा; पुत्र, तू सर्वदा मेरे साथ है; और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा ही है।*

उसने यह नहीं कहा कि "मेरे गुलाम"। बल्कि उसने उसे पुत्र कहा! एक पुत्र संपत्ति का मालिक होता है; वह एक परिवार है। एक गुलाम के पास कोई विरासत नहीं होती। आप देख सकते हैं कि, जेठे पुत्र के पास राज्य की सारी बातों पार अधिकार था। लेकिन पिता के प्रति उसका दृष्टिकोण और उसके अपने अनुचित विचारों ने उसे आनंद उठाने नहीं दिया उन बातों का जो पहले ही से उसका था, क्योंकि वह खुद को एक किराए के मज़दूर के रूप में देख रहा था।

मैंने यह बातें बताने के लिए इतना समय क्यों लिया? क्योंकि किराए के मज़दूरों को परमेश्वर से प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है! उन्हें हमेशा ऐसा लगता है कि उन्हें कृपादृष्टि को कमाना होगा; क्योंकि वे कम हो गए हैं, उन्हें लज्जा आती है, वे डर जाते हैं और पिता से ग्रहण करने में अयोग्य समझते हैं। जब तक आप खुद के बारे में इस मानसिकता को सही नहीं करते, तब तक आप कभी भी पिता से प्राप्त नहीं कर पाएंगे। और याद रखें यदि हमें पिता की तरह उदार होना है तो हमें उनसे प्राप्त भी करना होगा।

आप परमेश्वर के साथ अपने सही संबंध को कमा नहीं सकते; यह आपके लिए एक प्रेम का उपहार है। मुझे मत्ती 3:16–17 जिस प्रकार बताता है यह मुझे पसंद है।

> *और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया; और उस ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और देखो, यह आकाशवाणी हुई : "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।"*

यह वही समय था जब यीशु अपनी सेवकाई की शुरुआत कर रहा था। अब तक उसने ऐसा एक भी काम नहीं किया था जिससे वह उसके प्रति परमेश्वर की सराहना को कमा सके, लेकिन परमेश्वर ने क्या कहा इस पर ध्यान दीजिए। कि वह उससे प्रेम

करता है और वह उससे अत्यंत प्रसन्न है।

क्या आपको वे दो चोर याद हैं जो यीशु के साथ उस क्रूस पर थे? एक ने कहा कि, "जब तू अपने राज्य में आए तब मुझे याद रखना।" यीशु ने उत्तर दिया, "मैं सच सच कहता हूँ, आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।" इस बात के योग्य उसने कौन सा काम किया था? **कुछ भी नहीं!**

जब हम यीशु के नाम को पुकारते हैं, बाइबल कहती है कि हम नया जन्म पाते हैं और अंधकार के राज्य से परमेश्वर के राज्य में कदम रखते हैं। इसे प्राप्त करने के लिए हमने क्या किया था? **कुछ भी नहीं।**

तो जैसे मैं इस अध्याय को समाप्त करता हूँ, कृपया याद रखें कि मैं उन सारी चीजों में से किसी के योग्य न था जो परमेश्वर ने मुझे उस वर्ष दी थी। वह मुझे यह समझने में मदद कर रहा था कि जब मैंने यीशु के नाम को पुकारा था तब ही मैंने सम्पूर्ण राज्य को प्राप्त कर लिया था। मुझे इसे कमाने की ज़रूरत नहीं है। मुझे बस परमेश्वर की भलाई और उदारता को स्वीकार करने की ज़रूरत है। एक बार यदि आप उसकी उदारता को प्राप्त करने में सफल हो गए, तो आप उसकी भलाई की मदद से उदार बन सकेंगे।

अध्याय 11

# जो उदार हैं उनके लिए प्रतिगयाएं

बिल और उसकी पत्नी, एप्रिल, का 14 वर्षों से पाइपलाइन का एक छोटा सा पारिवारिक व्यवसाय है। फेथ लाइफ चर्च के सदस्य होने के नाते, उन्होंने वर्षों से खुद को बढ़ते हुए देखा है और विजय की कहानियों का अनुभव किया है। तो, जब उन्होंने सुना कि समाज पर बड़े प्रभाव को लाने के लिए हम फेथ लाइफ चर्च को विस्तारित करने जा रहे हैं, तब वे मदद के लिए तुरंत आ गए।

एप्रिल ने बताया कि वह प्रोजेक्ट के प्रति $10,000 देने के लिए पूरी रीति से तैयार थी, लेकिन जब बिल दुकान से घर को लौटा और उसने बताया कि प्रभु ने उससे यह कहा है कि हमें $10,000 नहीं बल्कि $75,000 चाहिए, यह सुनकर एप्रिल दंग रह गई।

वे नहीं जानते थे कि इतनी रकम कैसे दे पाएंगे, फिर भी एप्रिल, उस विस्तार के कार्य के लिए $75,000 देने के लिए सहमत हो गई। लेकिन, उनके पास न तो वह रकम थी और न ही कोई सुझाव था कि रकम कहाँ से आएगी।

कुछ सप्ताहों बाद, शहर के पानी प्रबंध संगठन ने कॉल करके उनसे कहा कि वे एक विशाल प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं और उनसे पूछा कि क्या वे इस पर बोली लगाने में रूचि रखते हैं। उन्होंने कहा हाँ और फिर वे शहर में कार्य से संबंधित कानूनी कारवाई और कागज़ संबंधित काम करने लगे। एप्रिल ने बताया कि अनुबंध 100 पृष्ठों से अधिक लंबा था, और उन्हें एक बॉन्ड भी प्राप्त करना था। यह सारे कार्यों को करने के लिए एक बड़ी प्रक्रिया थी, लेकिन उन्होंने इसे कर दिया। उन्हें पता चला कि वे एकमात्र कंपनी थीं जिसने परियोजना पर बोली प्रस्तुत की थी, और उन्हें पता नहीं था कि आवेदन करने के लिए उनसे कैसे या क्यों संपर्क किया गया था।

जैसे ही इस दम्पत्ति ने उस अनुबंध को जमा किया, सिटी ने उन्हें कॉल करके कहा कि उन्हें लगा कि उनकी कंपनी इस काम के लिए बहुत छोटी है और उन्हें 75 दिनों में 200 घरों के काम को भी पूरा करना है। लेकिन फिर कुछ चर्चा के बाद, उन्होंने सिटी को बताया कि वह खुद ही इसे संभाल लेंगे।

बिल का कहना है कि यह एक ऐसा प्रोजेक्ट था जिसमें पूरी टीम ने देर रात के साथ–साथ शनिवार को भी काम किया। लेकिन क्या आप जानते हैं? कि उस दम्पत्ति ने इसे समय पर पूरा भी किया और चर्च प्रोजेक्ट के लिए $75,000 भी उदारता से दे सके और उन्होंने इस प्रक्रिया में अपने सभी उपभोक्ता के ऋणों का भी भुगतान किया। इस कार्य से वे आश्चर्यचकित रह गए थे!

देखिए, बिल और एप्रिल के लिए परमेश्वर के पास एक बड़ी योजना थी जितना उन्होंने खुद के लिए भी नहीं सोचा था। परमेश्वर अपने प्रति उनके हृदय को जानता था, लेकिन वह उन्हें खींचना चाहता था, उनकी क्षमता को खींचना चाहता था।

अब, सरकारी काम के लिए मंजूरी मिलने और शहर के लिए एक सफल अनुबंध को पूरा करने के बाद, उन्हें भविष्य में और भी बड़े अनुबंधों के लिए दरवाज़े खुले।

परमेश्वर को लोगों की सीमाओं को खींचना पसंद है। वह हमारी क्षमता को जानता है, लेकिन अक्सर हम अपनी क्षमता को नहीं जानते और अधिकतर हमें प्रेरणा की ज़रूरत होती है। आपको इसी नमूने की आदत डालनी है।

> *क्योंकि यह उस मनुष्य की सी दशा है जिस ने परदेश को जाते समय अपने दासों को बुलाकर, अपनी संपत्ति उन को सौंप दी। उस ने एक को पांच तोड़, दूसरे को दो, और तीसरे को एक; अर्थात हर एक को उस की सामर्थ के अनुसार दिया, और तब पर देश चला गया। तब जिस को पांच तोड़े मिले थे, उस ने तुरन्त जाकर उन से लेन देन किया, और पांच तोड़े और कमाए। इसी रीति से जिस को दो मिले थे, उस ने भी दो और कमाए। परन्तु जिस को एक मिला था, उस ने जाकर मिट्टी खोदी, और अपने स्वामी के रुपये छिपा दिए।*
>
> –मत्ती 25:14–18

हमने इस दृष्टांत को पहले भी पढ़ा है, लेकिन ऐसा कुछ दिखाना चाहता हूँ जो हमने पहले कभी नहीं देखा।

ध्यान दें कि जब स्वामी ने अपने सेवकों को सारा काम सौंप दिया, इसमें बताया गया है कि कामों को "उनकी सामर्थ के अनुसार" सौंपा गया था। जिसे पाँच तोड़े मिले उससे पाँच तोंड़ों की अपेक्षा भी की गई, यानि अभी उसके पास सिर्फ पाँच तोड़ो को संभालने की सामर्थ थी। यदि उसके पास बड़ी क्षमता होती, या काबिलियत होती, तो स्वामी उसे और देता। ऐसा ही बाकी के दो सेवकों के साथ भी हुआ।

लेकिन फिर देखिए क्या हुआ। जिस सेवक के पास पाँच तोड़े थे उसने इसे बढ़ाकर दस तोड़े कर दिए। इस प्रक्रिया में, क्या हुआ है? वैसे, आसान शब्दों में,

उसकी क्षमता, या उसकी काबिलियत, बढ़कर पाँच के स्तर से दस के स्तर तक हो गई है। ज़िम्मेदारी और कार्यों को संभालने की क्षमता उसके अंदर बढ़ गई है। वह अब स्वामी के लिए और भी अधिक मूल्यवान हो गया है और उसने अपने आपको प्रगति के स्थान के लिए तैयार कर लिया है।

अब, स्वामी की बुद्धिमानी यहाँ यह है कि। वह पाँच तोड़े वाले सेवक के चरित्र को जानता था। वह जानता था कि उसके अंदर नए स्तर पर बढ़ने के लिए सामर्थ है। हालांकि उस स्वामी ने सेवक को सिर्फ पाँच तोड़े दिए, यह उसकी वर्तमान स्तर की क्षमता थी, जो कार्य उसने पाँच तोड़े वाले सेवक को सौंपा था, वह सेवक की शुरुआत, यानि आरंभ से ज़्यादा फसल को ला सकता था और यह उसे कार्यों को संभालने के नए स्तर की क्षमता के लिए तैयार करने वाला था।

स्वामी जानता था कि अपने सेवक को अपने लिए और मूल्यवान बनाने का एक ही तरीका है कि वह अपनी क्षमता को बढ़ाए और यह जाने कि उसमें कितनी क्षमता है। परमेश्वर हमारे जीवनों को भी अधिक मूल्यवान बनाने के लिए और हमें अपनी मंजिल के प्रति प्रशिक्षित करने के लिए इसी प्रक्रिया का उपयोग करता है।

> *जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है, वह बहुत में भी सच्चा है: और जो थोड़े से थोड़े में अधर्मी है, वह बहुत में भी अधर्मी है।*
>
> –लूका 16:10

जैसे मैंने पिछले अध्याय में भी बताया, कि कोई काम छोटा नहीं होता। आप इनमें से हर के द्वारा बढ़ते हैं, और हर एक कार्य आपकी क्षमता को अगले कार्य के लिए बढ़ाता है।

मैं इस प्रक्रिया से कई बार गया हूँ। हर बार, मैंने यह सोचा है कि, *नहीं, मैं इसे नहीं कर सकता। मैं नहीं जानता कि कैसे करूँ या मेरे पास समय नहीं है*। लेकिन जितनी बार मैं यह कहता हूँ कि, "हाँ, मैं बढ़ रहा हूँ", तब मैं अपनी क्षमता तक पहुँचने में और बलवंत हो जाता हूँ।

लोग मेरे जीवन की ओर देखकर कह सकते हैं कि, *ओ, इनके लिए तो कर्ज़ से बाहर आना, टीवी पर आना, एक व्यक्तिगत विमान को खरीदना तो बहुत आसान होगा। वाह, क्या जीवन है इनका*। वैसे मैं इस बात से सहमत हूँ—सच में क्या जीवन है; यह एक अच्छा और महिमामय जीवन है! लेकिन आप नहीं जानते कि मेरा जीवन यहाँ तक कैसे पहुंचा। आपके पास इसे जानने का धीरज भी नहीं जितना धीरज इसमें लगा है, कई बार भयंकर दबाव में रहने से लेकर इस ऊंचे स्तर की क्षमता तक।

और मैं अभी भी बढ़ रहा हूँ, और परमेश्वर मुझे और बड़े कार्य सौंपता रहता है। मुझे लगता है कि कई बड़े प्रोजेक्ट के द्वारा मेरी सीमाओं को बड़ा किया जा रहा है और उसके लिए काफी सारे धन की ज़रूरत को पूरा करने के लिए, मेरी क्षमता बढ़ रही है। लेकिन मैं दुनिया के लिए दबाव (और कभी–कभी गड़बड़ी) का व्यापार नहीं करूंगा, क्योंकि यह परमेश्वर की प्रशिक्षण प्रणाली है जो मुझे वह सब पूरा करने में मदद करती है जिसे पूरा करने के लिए मुझे बुलाया गया है।

यदि मैं आपको थोड़ी सी सलाह दे सकता, तो वह यह होती कि **हार न मानें!** परमेश्वर को अनुमति दें और वह आपको उस व्यक्ति में रूपांतरित करेगा जो आपको होना चाहिए था।

परमेश्वर हमेशा बचाने आता है। वह कभी असफल नहीं होता। आपका भविष्य आपके सामने है, और आपको इसका पीछा करना है।

## क्या आप परमेश्वर को अनुमति देंगे कि वह आपकी सीमाओं को बढ़ाए?

मैं एक बुधवार की रात की सभा में था। मेरी बेटी इस प्रार्थना की अगुवाई कर रही थी तब ही वह अचानक रुक गई, और उसने मेरी ओर देखा, और भविष्यवाणी करने लगी। उसने यह कहा:

> प्रभु यह कहता है कि, "तुम्हारे लिए फसल बहुत बड़ी है। मैं तुम्हारी सीमाओं को बढ़ा रहा हूँ। सिर्फ मेरी आत्मा से तुम जान पाओगे कि क्या होने वाला है। क्या तुम एक कदम आगे बढ़ाकर, ऐसी बातों में जो कठिन है, तुम्हारी समझ के बाहर हैं और असंभव हैं, मुझे अगुवाई करने दोगे?"

मैंने सोचा कि, *ओ नहीं, मैं जानता हूँ कि इसका क्या मतलब है*। यह मेरे साथ पहली बार नहीं हो रहा था।

मैं इस बात की सराहना करता हूँ कि परमेश्वर मुझे पूछ रहा था कि क्या तुम मुझे कठिन हालातों में और असंभव बातों में अपनी अगुवाई करने दोगे। मैं जानता हूँ कि यह अद्भुत कहानियाँ बन सकती हैं जब हम इन कठिनाइयों से जाते हैं और परमेश्वर हमेशा सही समय पर उपस्थित हो जाता है।

लेकिन मैं सीमाओं के बढ़ने के दर्द को भी समझ सकता हूँ, उस स्थान पर जाने के लिए कीमत को चुकाना जहां आप पहले कभी नहीं गए हों। लेकिन, और यह एक बड़ा **लेकिन** है, मैं परमेश्वर की भलाई और उनकी बढ़त की प्रणाली को जानता हूँ, तो मैंने इसके लिए तुरंत **"हाँ!"** कह दिया।

परमेश्वर आपके अंदर की क्षमता को बाहर लाना चाहता है। इसी रीति से आप अपनी मंज़िल तक पहुँच पाएंगे। वह आपकी सीमाओं को बढ़ाना चाहता है! परमेश्वर हमारी सीमाओं को कैसे बढ़ाता है? *दबाव से*।

यदि आप एक गुब्बारे को फुलाएं और फिर उसकी हवा को छोड़ दें, तो इस स्थिति में गुब्बारा खिंचता है; और बड़ा होता है। आपके और मेरे साथ भी ऐसा ही होता है। जैसे ही हम दबाव का सामना करते हैं और हार नहीं मानते, तब हमारी क्षमता बढ़ती है। क्षमता का मतलब है बड़े प्रोजेक्ट और बड़े चेक भी प्राप्त करना। क्या आप जानते हैं कि, उदारता के बारे में बातें करने में सिर्फ तब तक ही बड़ा मज़ा आता है जब तक परमेश्वर आपको $100,000 देने के लिए नहीं कहता। या अपनी पसंदीदा कार देने के लिए। परमेश्वर पर आपके भरोसे को बढ़ते रहना चाहिए, और आपकी क्षमता की बढ़त होनी चाहिए।

कुछ सप्ताह बाद, जब मैंने परमेश्वर को उस सभा में हाँ कहा, मैंने जाना कि यह किस लिए था। हमारा टेलिविज़न प्रसारण, जो हर सप्ताह होता था, लेकिन फिर हमें *रोज़* प्रसारण का प्रस्ताव मिला। हो सकता है यह अद्भुत लगे, लेकिन इस प्रकार के बदलाव में जाने के लिए कुछ समस्याएं भी थी। पहली बात यह थी कि हमारे प्रसारण की कीमत अचानक 500% बढ़ गई थी, और उस समय हम एक सप्ताह की कीमत ही मुश्किल से भर पा रहे थे। दूसरी बात यह थी कि, हमें सप्ताह में पाँच कार्यक्रमों को बनाना और एडिट करना पड़ता था, और हमारे पास इसके लिए टेलिविज़न विभाग भी नहीं था। उस समय, हमने अपने एक टेलीविज़न कार्यक्रम प्रति सप्ताह के लिए एक कंपनी से सेवाएं प्राप्त की थीं जो उस वर्तमान महीने के लिए प्रति सप्ताह चार कार्यक्रम रिकॉर्ड करती थी। वे कार्यक्रम की छँटाई करके उसे एडिट करती थी, और कार्यक्रम को संपर्को तक पहुंचाती थी, और सारा काम करती थी। लेकिन फिर मैंने जाना कि मुझे इन सारे कार्यो को संभालने के लिए इसे अपने घर पर लाना होगा। और सबसे बड़ी समस्या यह थी कि ड्रेनडा और मुझे टीवी विभाग की स्थापना करना नहीं आता था। लेकिन फिर हमने यह सोचना शुरू किया कि हम यह कैसे करेंगे।

धन के भाग की ओर अगर देखें तो, हम नाउ सेंटर, हमारी कलीसिया के कॅम्पस को बना ही रहे थे, और हमारे पास टेलिविज़न विभाग को बनाने के लिए कोई अतिरिक्त धन नहीं बचा था। निर्माण करने के भाग में अगर देखें तो, हमें कैमरे के सामान खरीदने थे और इसे चलाने के लिए लोगों को भी ढूँढना था। कई दिन ऐसे थे जब यह कार्य हमें असंभव लगता था। लेकिन परमेश्वर विश्वासयोग्य था और वह ड्रेनडा और मुझे प्रोत्साहित करता था, जिससे हम आगे बढ़ते रहे।

हमारी सबसे बड़ी बाधा चार महीने बाद आई जब हमें पता चला कि हम अपने

प्रसारण के बिलों में आधा मिलियन डॉलर पीछे हैं। यह विशेष करके बहुत कठिन था क्योंकि हमारे टेलिविज़न कार्यक्रम का नाम ही *धन से संबंधित बातों को ठीक करना* था।

मैं इस बात पर विचार कर रहा था कि क्या हम टीवी पर बने रह पाएंगे या नहीं। मुझे लगा कि अगर मैं प्रसारण के बिल का भुगतान नहीं कर सका तो मैं ईमानदारी से काम जारी नहीं रख पाऊंगा। उस समय मुझे कई शंकाओं से युद्ध करना पड़ा। लेकिन फिर से कहूँगा कि, परमेश्वर विश्वासयोग्य है, और उस समय ड्रेनडा सबसे बड़ा प्रोत्साहन थी।

उस सप्ताह एक स्वप्न में, परमेश्वर ने मुझे दिखाया कि सारे बिलों का भुगतान एक बड़ी रकम से किया जाएगा, जो मैं कह सकता हूँ कि नैसर्गिक रूप से असंभव है। लेकिन उस सप्ताह कलीसिया में, $500,000 आ गए, और प्रसारण के बिल वर्तमान तक पहुँच गए थे और तब से यह ऐसे ही चल रहे हैं।

वाह, यह बहुत ही रोमांचक यात्रा थी!!

उस प्रक्रिया के द्वारा हम बदल गए। अब हम रोज़ दो टीवी कार्यक्रम करते हैं और सुसमाचार को पहुंचाने के लिए कई मिलियन खर्च करते हैं। जब हम पीछे उन समस्याओं की ओर देखते हैं, जिनका हमने सामना किया था, तो आज यह उतनी बड़ी दिखाई नहीं देती। हमने जो अध्याय एक में सीखा उसे आपको हमेशा याद रखना है: परमेश्वर का अनुग्रह आपके साथ कार्य कर रहा है! इतने वर्ष परमेश्वर के साथ चलने के बाद, मुझे अब समझ आया है कि पौलूस अपनी हर पत्री में इन शब्दों के साथ आरंभ क्यों करता है:

**"हमारे परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिलती रहे।"**

हमें यह याद रखना है कि हम अकेले नहीं हैं। उसका अनुग्रह, जो अलौकिक सामर्थ है, हमारे जीवनों में कार्य करता है। हाँ कहने के लिए और अनजान बातों में कदम रखने के लिए हिम्मत चाहिए, लेकिन यह योग्य है; मैं इस बात की गवाही दे सकता हूँ।

ड्रेनडा और मैंने विश्व भर में सुसमाचार का प्रचार करते हुए यात्रा की है। हमने नए नियम में दर्ज चमत्कारों को अपनी आँखों के सामने होते हुए देखा है। हमने हजारों लोगों के जीवनों को परिवर्तित होते हुए देखा है और उनकी भूमि पर उत्तम चीजों को खाया है। उद्देश्य से बढ़कर कोई जगह नहीं!

मेरी प्रार्थना आपके लिए यह है कि आप परमेश्वर द्वारा दिए गए हर एक भले काम

में बढ़ते जाएं, और आप यह याद रखें कि उदार होना कितना ज़रूरी है।

समाप्त करते हुए, यहाँ मेरा पसंदीदा भजन है:

> *याह की स्तुति करो। क्या ही धन्य है वह पुरूष जो यहोवा का भय मानता है, और उसकी आज्ञाओं से अति प्रसन्न रहता है! उसका वंश पृथ्वी पर पराक्रमी होगा; सीधे लोगों की सन्तान आशीष पाएगी। उसके घर में धन सम्पत्ति रहती है; और उसका धर्म सदा बना रहेगा। सीधे लोगों के लिये अन्धकार के बीच में ज्योति उदय होती है; वह अनुग्रहकारी, दयावन्त और धर्मी होता है। जो पुरूष अनुग्रह करता और उधार देता है, उसका कल्याण होता है, वह न्याय में अपने मुकद्दमें को जीतेगा। वह तो सदा तक अटल रहेगा; धर्मी का स्मरण सदा तक बना रहेगा। वह बुरे समाचार से नहीं डरता; उसका हृदय यहोवा पर भरोसा रखने से स्थिर रहता है। उसका हृदय सम्भला हुआ है, इसलिये वह न डरेगा, वरन अपने द्रोहियों पर दृष्टि करके सन्तुष्ट होगा। उसने उदारता से दरिद्रों को दान दिया, उसका धर्म सदा बना रहेगा और उसका सींग महिमा के साथ ऊंचा किया जाएगा। दुष्ट उसे देख कर कुढेगा; वह दांत पीस– पीसकर गल जाएगा; दुष्टों की लालसा पूरी न होगी।*
>
> –भजन संहिता 112:1–10

मुझे दुष्टों के परेशान होनेवाला भाग बहुत पसंद है। परमेश्वर के पास ही अंतिम वचन होता है। सफलता ही सबसे बड़ा बदला होता है।

अगर आपको मेरी कहानी पता है तो, आप जानते हैं कि मैं हाई स्कूल में 1.3 ग्रेड पॉइंट औसत से असफल हो गया था। जब परमेश्वर ने मुझे प्रचार की बुलाहट के बाद कॉलेज जाने के लिए कहा, तब मैं इसके लिए तैयार नहीं था।

अंग्रेजी के क्लास में, मेरी परीक्षा थी। मेरे अध्यापक ने मुझे परिणाम में एक बड़ा अक्षर "एफ" दे दिया और इसमें एक नोट था जिसमें लिखा था कि, "क्या तुम कभी हाई स्कूल भी गए थे?" मुझे एक शिक्षक से वह सीखना पड़ा जो मैंने हाई स्कूल में कभी नहीं सीखा था।

**राज्य कैसे कार्य करता है इसे सीखें, और आप उस अच्छे जीवन का आनंद उठाएंगे जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की है!**

जब मेरी पहली पुस्तक आई, तब मुझे उसी अंग्रेजी के अध्यापक से एक मेल आया। उसमें लिखा था कि, "क्या यह वही गैरी कीस है जो मेरी कक्षा में पढ़ता था?" वह इस

पुस्तक को देखकर दंग रह गया था।

सुनिए, परमेश्वर को आपके सभी दोस्तों को आश्चर्यचकित करने की अनुमति दें!

एक दिन एक व्यक्ति जिसके साथ मैं हाई स्कूल में जाता था मेरी वित्तीय कंपनी के पास जाते हुए रुक गया और उसने कहा कि, "मुझे यह समझ नहीं आ रहा। गैरी तो हाई स्कूल में असफल हो गया था, और अब वह विश्व भर में टीवी पर कैसे आता है?"

मुझे ऐसी कहानियाँ बहुत पसंद हैं, और परमेश्वर को भी ऐसी कहानियाँ पसंद हैं! तो याद रखिए, आपकी कहानी अभी समाप्त नहीं हुई है। उदार रहने के लिए मेहनत करें जिससे आप जहां जाएं परमेश्वर के हृदय को वहाँ प्रदर्शित करें। राज्य कैसे कार्य करता है इसे सीखें, और आप उस अच्छे जीवन का आनंद उठाएंगे जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की है!

– गैरी कीस

> *क्योंकि इस सेवा के पूरा करने से, न केवल पवित्र लोगों की घटियां पूरी होती हैं, परन्तु लोगों की ओर से परमेश्वर का बहुत धन्यवाद होता है। क्योंकि इस सेवा से प्रमाण लेकर वे परमेश्वर की महिमा प्रगट करते हैं, कि तुम मसीह के सुसमाचार को मान कर उसके आधीन रहते हो, और उन की, और सब की सहायता करने में उदारता प्रगट करते रहते हो। ओर वे तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं; और इसलिये कि तुम पर परमेश्वर का बड़ा ही अनुग्रह है, तुम्हारी लालसा करते रहते हैं। परमेश्वर को उसके उस दान के लिये जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो॥*
>
> –2 कुरीनथियों 9:12–15

यदि आपको फॉरवर्ड फाइनैन्शल ग्रुप के बारे में या सुरक्षित धन निवेश तरकीबों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना है तो, forwardfinancialgroup.com पर संपर्क करें या हमें 1-(888)-397-3328 पर कॉल करें।

यदि आप हमारी वित्तीय क्रांति की सभाओं के बारे में जानना चाहते हैं या यदि आप किसी सभा का आयोजन करना चाहते हैं तो, कृपया करके हमें (740) 964-7400 पर कॉल करके कार्यकारी ऑफिस के बारे में पूछें।

# गैरी किसी द्वारा अन्य पुस्तके

पावर ऑफ़ एलिजेंस (अधीनता की सामर्थ)
पावर ऑफ़ रेस्ट (विश्राम की सामर्थ)
पावर ऑफ़ जेनरॉसिटी (उदारता की सामर्थ)
पावर ऑफ़ स्ट्रेटेजी (रणनीति की सामर्थ)
पावर ऑफ़ प्रोविजन

अपनी भाषा में अधिक
निःशुल्क शिक्षण डाउनलोड
करने के लिए
**FLNFree.com**
पर जाएं!

अपनी भाषा में और अधिक निःशुल्क शिक्षण संसाधन चाहते हैं?
**FLNFree.com** पर जाएँ

## परमेश्वर चाहता है कि आप धन्य और समृद्ध हों ताकि आप हर अवसर पर उदार हो सकें!

जब तक आप आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं हो जाते, तब तक आप कभी भी स्वतंत्र नहीं हो सकते। और जैसा कि ड्रेंडा और मैंने पिछले 30 सालों से कहा है, जब तक आप पैसे की समस्या को ठीक नहीं कर लेते, तब तक आप कभी नहीं जान पाएंगे कि आप वास्तव में कौन हैं और अपने जीवन के आध्यात्मिक उद्देश्य की ओर नहीं बढ़ पाएंगे।

**आप स्वतंत्र हो सकते हैं!**

मैंने इसे साबित किया है, और हज़ारों अन्य लोगों ने भी ऐसा किया है। परमेश्वर की कृपा आपकी मदद करने के लिए आपके साथ है। कुछ ऐसे काम हैं जिन्हें करने के लिए आपको बुलाया गया है, जिन्हें आप बिना पैसे के कभी पूरा नहीं कर पाएँगे। आपको न केवल अपने और अपने परिवार के लिए परंतु इसलिए भी वित्तीय रूप से स्वतंत्र होना चाहिए ताकी लोग यह देख सकें कि परमेश्वर का राज्य आपके जीवन में काम कर रहा है।

**लोग जवाब की तलाश में हैं। वे असली चीज़ की तलाश में हैं। उन्हें धर्म नहीं, बल्कि राज्य देखने की सख्त ज़रूरत है।**

परमेश्वर भला है, और वह उदार है! जब हम उदार होते हैं, तो हम लोगों के साथ परमेश्वर के हृदय को साझा कर रहे होते हैं। बहुत गर्म दिन में ठंडे पानी की एक घूँट लेने की तरह, उदार होना गरीबी के रेगिस्तान में फंसे हुए संसार को राहत और आशा प्रदान करता है।

गैरी कीसी द्वारा लिखित आपकी वित्तीय क्रांति श्रृंखला की इस पांचवीं और अंतिम पुस्तक में, जानें कि आप किस प्रकार परमेश्वर के कार्यों में उसके साथ भागीदार बन सकते हैं और सफलता के अविश्वसनीय नए स्तरों का अनुभव कर सकते हैं।

उदारता के शक्तिशाली राज्य सिद्धांत और यह कैसे कार्य करता है, इसकी स्पष्ट समझ प्राप्त करें, इस उल्लेखनीय पुस्तक में जो नए रहस्योद्घाटन, परमेश्वर के वचन से शक्तिशाली उदाहरणों और गैरी और अन्य लोगों के बारे में प्रेरणादायक व्यक्तिगत कहानियों से भरी हुई है, जिन्होंने अपने जीवन में उदारता की सामर्थ को लागू किया और परिणामस्वरूप भारी परिवर्तन का अनुभव किया।

**उदारता लोगों को उनके प्रति आपके और परमेश्वर के हृदय को दिखाती है।**

गैरी कीसी एक लेखक, वक्ता, उद्यमी, वित्तीय विशेषज्ञ और पादरी हैं, जिन्हें लोगों को जीवन में जीतने में मदद करने का जुनून है, खासकर विश्वास, परिवार और वित्त के क्षेत्रों में। गैरी और उनकी पत्नी, ड्रेंडा ने कई सफल व्यवसाय बनाए हैं, और फेथ लाइफ नाउ के संस्थापक हैं, जो दो टेलीविज़न कार्यक्रम – फिक्सिंग द मनी थिंग और ड्रेंडा, विश्वव्यापी सम्मेलन और व्यावहारिक संसाधन बनाता है। कीसी ओहायो के कोलंबस के पास फेथ लाइफ चर्च के पादरी भी हैं।

GKM GARY KEESEE MINISTRIES
garykeesee.com